राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित
महाश्वेता देवी की अन्य कृतियां

उपन्यास—ग्राम बांग्ला (दो खंड), शालगिरह की पुकार पर, श्री श्रीगणेश महिमा, 1084वें की मां जंगल के दावेदार अग्निगर्भ

कहानी संग्रह—मूर्ति ईंट के ऊपर ईंट, घहराती घटाएँ

भीषण युद्ध के बाद

महाश्वेता देवी

अनुवाद
डॉ॰ माहेश्वर

राधाकृष्ण

पहला संस्करण
1987

मूल्य
50 रुपये

आवरण
चंचल

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2/38, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110002

मुद्रक
नागरी प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली 110032

जाति-वर्ण-धर्म निर्विशेष भारत के
बहुत-से दु खी, उत्पीड़ित और
सघर्षरत मनुष्यो द्वारा उनके दु ख को
दूर करने मे अक्षम
मुझे 'अपना आदमी' मानना
मेरे जीवन का श्रेष्ठतम पुरस्कार है।

क्रम

पानी

लाल रग की ऊबड-खावड तथा परती जमीन के बीच बाकुली गाव किसी लाल रग के गमले म लगाय पौधे सा लगता है। हेलीकाप्टर पर सवार 'आपरेशन-बाकुली' के प्रभारी अफसर को एसा ही लगा था। रिपोट मे लिखा था कि वहाँ का भूखड बेसिन की शक्ल का है। एक विशाल बेसिन के पेट म बाकुली गाँव है। चारो ओर की जमीन ऊँची और गोल है। पूव म डेढ मील दूर पर नहर है। गाँव मे उन्नीस परिवार हैं, जिनकी सदस्य सख्या एक सौ नौ है। धान पैदा होता है। खेती की जमीन बसिन के किनारो के बाहर है। एक बडा इमली का पेड, कई एक जामुन, कटहल, शिरीष और पलाश के पड है। यहाँ का धम देवता का थान बडा प्रसिद्ध है। सारी खेती योग्य जमीन का मालिक है लक्ष्मण सामत। गाव मे उन्नीसो परिवार लक्ष्मण के बटाईदार है। पानी की बडी किल्लत है। लक्ष्मण के मकान की चारदीवारी के भीतर दो कुए और एक नलकूप हैं। गाव का पुराना पोखरा अब सूख गया है। उसमे सिफ कीचड रह गयी है। चार मील पश्चिम मे एक तेज धार वाली नदी बहती है। जब बाकुली गाँव पर हमारी नजर पडी उस समय भी लक्ष्मण सामत के मकान और धान के टाल से धुआ निकल रहा था।

उसके बाद 'आपरेशन बाकुली' आसमान से जमीन पर उतरा था। सारी व्यवस्था टेलीफोन और रेडियो द्वारा की गयी थी।

गोकुल, निरापद और तारिणी लक्ष्मण सामत के टाल से धान के पूले खीच खीच कर इमली के पेड के नीचे जमा कर रहे थे। गोकुल का बाप खडा खडा उन्हे गाली दे रहा था।

गोकुल ने सरयू से कहा था कि रात हो, दिन हो, जब भी मुमकिन हो वहा से भागना होगा। भागन का रास्ता देखकर आ। अँधेरे मे जायेंगे।"

सरयू भागकर अँधेरे मे मिल गयी थी।

बहुत देर बाद लौटा था तो उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसन बताया था कि किसी ओर से निकलने का रास्ता नही था। सभी ओर से गाव को घेर लिया गया था।

उस समय तक 'आपरेशन बाकुली' किसी और के हाथ मे चला गया था,

जिसका हुक्म था, "देखना, एक मक्खी तक न निकलने पाये।"

मवर अट्ठारह परिवारो न देखा चारो ओर से गोल दायरा बना कर कतार के कतार आदमी एक जाल सा बनाये बाकुली की ओर उतर रहे है। धीरे धीरे जाल छोटा होता जा रहा है।

सरयू को और कुछ याद नही है। बहुत सारे लोग उतर रहे है। दृढ़ सकल्प से भरे, पवित्र प्रतिज्ञा करके नि शब्द आगे बढते आ रहे हैं। ककडो पर बूटो की कडर कडर आवाज, जैसे ककड प्रतिवाद कर रहे हो। कडर कर, कडर कर, कडर कर। आवाज सुनकर रोते हुए बच्चे चुप हो गये। शिशुओ की आँखो म विस्मय और गहरा हो आया। गोकुल ने फुसफुसा कर सरयू से कहा, 'पोखरे के किनारे की झाड झोप मे भाग नही पायी ?"

नही। सरयू ने एक डग भी आगे नही बढाया। ककडो पर भारी बूट आगे बढते रहे। हाल्ट ! हुक्म। ' किसका नाम गोकुल दास है ? ' यान्त्रिक स्वर। फिर सरयू की चेतना पर एक काला परदा लटक आया। निस्तर, विद्वेषपूर्ण एक अबाध्य परदा। "किसका नाम गोकुलदास है ?" परदा और नीचे उतर आया।

परदा उतर रहा है। उतरता ही आ रहा है। सरयू ने बेहद कोशिश की— परदे को उठाकर देखे समझ ले, 'किसका नाम गोकुल दास है ? इस प्रश्न के बाद क्या हुआ था वह जान नही पायी। स्मृति पर से भारी परदा जरा भी इधर-उधर नहीं हुआ। भीषण अबाध्य, विद्वेषपूर्ण प्रतिवाद मे जमाट बाँधे पडो रही परदा। जस सरयू की स्मति कोई सेंसर की हुई चिट्ठी हो। थोडी लिखावट बची है। बाकी काली स्याही से ढकी हुई है। कुछ पढ़ा जा रहा है। बीच के काले अँधेरे के बाद जब सरयू की स्मृति स्पष्ट होती है तब उसे आस पास की दुनिया और बाकुली एकदम बदली दिखाई देती है।

गाँव म बूढे बुढ़ियो, लडकियो और शिशुओ को मिलाकर कुल बाइस लोग बचे हैं। बाकी सब खतम। कोई घर अपनी जगह नही है। आकाश राख मे ढँक गया है। दोनो कुएँ ईट-पत्थर स ऊपर तक भर गय हैं। नलकूप जहाँ से उखाडा गया वहाँ एक ताजे बडे घाव की तरह जमीन विदीर्ण हो गई है। इमली के पेड के अलावा बाकी सब पेड जलकर राख हो गय हैं। सूखा चल रहा था। सब कुछ सूखकर काठ पहले ही हो रहा था।

आपरेशन-बाकुली सक्सेसफुल !!

गमले के पूर्वी कोने पर नहर का रास्ता रोककर एक अस्थायी अलमुनियम का कमरा है। सूय जब पूव म उगता है, तब उसकी आँखें सफेद हुई रहती हैं, जब करोडों फारेन हाइट उष्मा उडेलते हुए सूय ऊपर उठता है तो सरयू देखती कि अलमुनियम का यह कमरा चाँदी की तरह दमकने लगता और कमरे की खिडकी म देवता-सा गौर वर्ण, तेजस्वी एक युवक आँखो म दूरबीन लगाए बैठा होता।

कमरे के नीचे गहरा नलकूप बिठाया गया था। कमरा और नलकूप कांटेदार तार से घिरे थे। कुली दिन भर नल चलाते। पानी निकालते। अलमुनियम के कमरे की छत पर फूस की छाजन और ऊपर से मोमजामा लगाया हुआ था। दिन मे दस-बारह बार कुली छत को होज पाइप द्वारा तर करते। कमरे को ठण्डा रखने की और कोई व्यवस्था नही थी। इस साल इलाके म भयानक सूखा पडा है। फागुन से आषाढ तक एक भी बूद नही पडी। सूय प्रतिदिन करोडो फारेनहाइट ऊष्मा ढाल रहा है, तो ढालता ही जा रहा है। आठ बजते-न-बजते दूर क्षितिज पर हवा गरम होकर नाचने लगती जैसे पूरे दिगत मे प्रेत नाच रहे हो। हवा मे बालू उडते और आकाश धूसर तथा भयकर दिखाई देता।

लक्ष्मण सामत का लडका शरदिन्दु उस देवतुल्य युवक के पास बैठा रहता। उस कमरे म रहने वाले बाकुली के अस्थायी भगवान से सवाद चालू रखता।

"इस गाँव के उस ओर, नहर किनारे की जितनी जमीन है सब हमारी है। पिताजी ने खरीदी है।"

"खेती होती है?"

"इस साल नही हुई। पानी नही हुआ इस साल।"

"नहर म पानी नही था?"

"नहर का पानी कौन लेगा?"

"वे लोग?"

"किसी के पास एक साथ तीन बीघा जमीन भी नही है। फिर पानी का पैसा कौन देगा। उनका तो यह हाल है कि पाच कट्ठा जमीन यहाँ है, तो एक बीघा डेढ मील दूर।"

"तुम्हारे पिता ले सकते थे पानी?"

"नही। जमीन है लम्बी चौडी, पैसा भी है, फिर भी वे पानी नही ले सकते थे।"

"क्यो?"

शरदिन्दु इस बात का उत्तर नही देता, पर उसके बाप ने इसका उत्तर उसे बताया था। समझाया था।

कहा था, "देखता हूँ तू भी गोकुल की तरह पगला रहा है। अभी तक वह चीख रहा था। अब तू चीखने लगा।"

उसके पिता नही चाहते थ कि पानी लेकर खेती करके बटाईदारों को प्रति बीघा ज्यादा धान देना पडे। अपनी खोराकी पाने वाले बाबू लोग भी नही चाहते कि फसल अच्छी हो और भुखमरी खतम हो। क्योंकि भुखमरी रहती है तो सहायता-खरात आती है।

उसके पिता ने कहा था, "नहर का पानी लाकर पूरा इलाका डुबा दे सकता

हूँ, पर मुझे उसकी जरूरत नहीं है। मेरे पास कुएं हैं। खेती के लिए सरकार ने हम हैन्ड पाइप दिखा दिया है। मैं घर मे नलकूप बिठा रहा हूँ। पानी! पानी लेकर क्या होगा? शरत! तू मुझे धान मत दिखा। धान बेचकर क्या मिलेगा? बीस हजार? पानी नहीं लूगा, धान नहीं होगा तो देखना इसी साल तेरे सामने बैठकर दस गाँवों के लोगों को पचीस हजार रुपये उधार दूगा। उधार दूगा और सूद लूगा। इसी सूद से यह सब सम्पत्ति हुई है। नहर म पानी है यह बात क्या मैं नहीं जानता?"

"उनसे क्या कहूँ?"

"वह तू सोच! अकाल पड़ने वाला है। सदर जाना होगा। खैरात का पैसा तो गोकुल के कहने पर नहा आयेगा। हम, ग्राम प्रधान को जाकर रिपोर्ट करना होगा, तभी आयेगा।"

शरदिन्दु बाहर आ जाता है। गोकुल से क्या कहा जाय? सूखा बड़ा भयानक पड़ा है। पानी न मिलने से धान का चारा सूख रहा है। नहर मे बहुत पानी है। पानी मिलेगा तभी धान के पौधे बढ़ेंगे। सभी की आँखों के सामने नहर मे अपार जल राशि लहराती आगे बढ़ जाती है। उसका गर्जन दूर-दूर तक किसानों के कानों म पड़ता है। फिर भी पानी के अभाव मे खेती सूख रही है। नहर के दोनों तटों पर प्यासी धरती की छाती प्यास से फट जायेगी और नहर मे ? क्या कहेगा वह गोकुल से?

'तो क्या कहा तुम्हारे पिताजी ने?' गोकुल का प्रश्न, 'नहर का पानी नहीं लेंगे?'

"पिताजी कहते हैं नहर का पानी लेने म बड़ी झंझट है। शहर जाकर सदर दफ्तर म अर्जी देना होगा बीडी (बी० डी० ओ०) साहेब को बताना होगा, ऊपर से पानी का सरकारी पैसा जमा करना होगा। बड़ी परेशानी है उसम।"

और जो मर रहे हैं वे मर जाय, क्यों?"

तभी लक्ष्मण सामंत बाहर आया। 'कौन है? गोकुल हो क्या? क्या हुआ भाई?'

'आप नहर का पानी क्यों नहीं ले रहे हैं?'

"मेरी सामर्थ्य नहीं है। तुम लोगों की हो तो जाकर ले लो। अर्जी लिखो। मेरे घर म नलकूप बिठाने की अर्जी भी तो तुम्हीं ने लिखी थी। तुम अर्जी तो अच्छी ही लिखते हो। पानी का सरकारी पैसा भी इकट्ठा कर लो। मैं बीडी आफिस म दे आऊँगा।

"जमीन आपकी है और पानी का पैसा हम देंगे?

"मेरी तो सामर्थ्य नहीं है, भाई।'

'हम लोगों की सामर्थ्य है?

"तुम्हारी सामर्थ्य बहुत है। नलकूप लगाते समय मुझे तुम्हारी ताकत का पता चल गया था। उस समय तुमने यह नही सोचा था कि मेरी जमीन है या तुम्हारी अपनी। यह सोचते तो क्या नलकूप लगने देता बीड़ी। वह तो बह रहा था—नहर तो है ही। नलकूप की जरूरत क्या है?"

'आप बड़े आदमी हैं। आपकी चारों ओर पहुँच है। इसीलिए सरकार आपकी कोठी पर नलकूप लगा देती है। ठीक है पानी आप नही लेंगे। और जो लोग बिना खाए मरेंगे उनका क्या होगा?

भाई यह जो मरने की बात तुमने की यह तो बहुत गलत बात है। मैंने कभी वाकुली में किसी को मरने दिया है कभी? खाना न हो तो पैसे कौन देता है? धान कौन देता है? मकान कौन देता है? एं?'

पानी के बिना धान जल जाय, फिर भी आप नहर का पानी नही लेंगे?

"भाई मैं तो पुराने जमाने का आदमी हूँ। तुम जवान लोगों का दिमाग दूसरे तरह का है। बुरा मत मानना, एक बात कहता हूँ। भगवान वर्षा न करें तो पोखरे के पानी से खेती होती है? कही हुआ है ऐसा!"

कूड़ा-सीमा में हो रहा है।'

'बेकार का तर्क करने से कोई फायदा नही गोकुल। बात से बात बढ़ती है। अब तुम्ही बताओ हमेशा जब सूखा पड़ता था तो देवता के थान पर पूजा देने से वर्षा हो जाती थी। इस बार क्यों नही हुई?'

'मैं क्या जानूं क्यों नही हुई?'

'मैं बताता हूँ, तुम जो पटर पटर मुंह में आता है बोलते हो उसी से हुआ है। देवता के नाम पर तुम्हारे मुंह से फट से कुबोल निकलता है। तुम्हारे साथ वाकुली में पाप आया है।'

तो फिर यह आखिरी निर्णय है आपका?

"हाँ।"

गोकुल चला गया। पिता ने शरदिंदु को बुलाकर कहा था, 'शरत! यह चिट्ठी ले और सदर चला जा। जब तक मेरा संवाद न मिले वहीं रहना। गोकुल का कोई ठिकाना नही है। इसीलिए तेरी माँ और बहू को सदर में ही रखता हूँ। बस से चला जा। जाकर सदर में रिपोर्ट लिखा दे।"

सदर में ही शरदिंदु को खबर मिली थी कि उसका बाप इस दुनिया से कूच कर गया है और उसके घर में आग लगी हुई है।

शरदिंदु ने सारी बातें बताई उस नेत्र-तुल्य तेजस्वी व्यक्ति से। अंत में कहा, 'पिताजी भी बड़े जिद्दी थे। उसी पानी के कारण सारा झमेला हुआ।'

'वे रात में कहाँ जाते हैं?"

'पोखरे में। वहां गड्ढ खोदते हैं। सवेरे जाकर पानी लाते हैं। आप चिंता

मत करिए, सर। सवेरा होने तक पानी निकल आता है।"

'फिर वे गांव छोड़कर क्यों जा रहे हैं ?"

बाकुली में बैठी सरयू निभर साव से वही प्रश्न कर रही थी, 'गांव छोड़कर क्यों नहीं चले जाते ?"

'कहां जाऊं ?'

"शहर चले जाओ। और कुछ नहीं तो भीख मांगकर पेट भर लेना।"

"तुम सब क्या करोगे ?'

'हम भी भीख मांगेंगे और क्या करेंगे ?"

'किसी ने पानी नहीं दिया ?"

"नहीं, कुडसीमा म लोग हमारे नाम से डरते हैं। साहेब नहाता है। कितना पानी गिरकर बह जाता है। वह पानी भी हमें दिया उन्होंने। तुम तो जमीन पर माचिस की तीली स लकीर खींचकर बता देते थे कि किस जगह पानी है ? लोग तुम्हें कुआं खोदने के लिए बुलाकर ले जाते थे ? तुम तो जानते हो। इस सूखी धरती म पम्प बिठाने से पानी निकलेगा क्या ? वहां कितना पानी है ?"

'वहां कभी देखा नहीं।"

'यहां बठे बठे सुनती हूँ। हैंडपप चलाते हैं। रात मे नहर का पानी बह जाता है। मैं बठी सुनती रहती हूँ। आज तेरह दिन हो गये सिर पर पानी पड़े। सबकुछ भसम हो गया है।

निभर साव आंखें मूदे बैठा रहता है। जैसे वह एक आग को भीतर जकड़े बठा है। औरतें गत म पापरे की गीली मिट्टी खोदती है और पानी लाती हैं। पानी एक बडे कुंडे मे जमा होता है। निभर साव वही पानी माप मापकर सभी को देता है। सभी जला हुआ धान नाखून स तोडकर चावल निकालते हैं और खाते हैं। सभी इमली के पेड के नीचे दिन रात बैठे रहते हैं। सरयू बीच बीच म पेड पर चढ़कर इमली के पत्ते नोचकर सबको देती है। खट्टा पत्ता मुह म चबाने से सूखा मुह थोड़ा पसीजता है। गला भीगता है। पर अब शरीर म पानी नहीं रहा। इस लिए मुँह म लार भी नहीं बनती।

निभर साव कहता है, 'एक बार यहां से गय तो फिर यहां लौट नहीं पायेंगे। शरत नयी प्रजा बसा लेगा।'

"हां, नयी प्रजा बसा लेगा। बस का परमिट मिला है। पैसा सरकार देगी।'

फिर ?

'तुम्हें प्रजा क्यों रखेगा वह ? खेती कौन करेगा ? लडकियाँ बुढ़िया या बच्चे ? तुम कुछ समझते ही नहीं।

जो एक बार गांव स निकलेगा वह फिर गांव म वापिस नहीं आने पायेगा,

नही तो बाहर निकलकर मैं व्यवस्था करता।"

"क्या करते ? वर्षा कराते ?"

"जरूर व्यवस्था करता।' निमर साव जिद से कहता है।

सरयू गहरी साँस भरकर कहती है, "लोचन का परिवार, छिरिपद की माँ, सोना माझी का परिवार जा रहे हैं।"

"जा रहे हैं ?"

'शहर जायेंगे। यहाँ रहकर तो जीते जी मर जायेंगे।"

निमर साव आँखें मूदे बैठा हुआ है। एक पल बाद कहता है, 'आज की रात उन्हें और देख लेने को कहो।"

"क्यो ?"

'धम देवता की पूजा मेरे ही हाथ स होती थी। जीवन भर झूठ नही बोला। आज रात पानी के लिए पूजा करूँगा। देखू देवता पानी देता है या नही।'

"खून कौन देगा ?"

"तू देगी।'

सरयू की छाती पर जैस पत्थर की चोट पडी। गोकुल का मुख, उसकी बातें जैस छाती म बैठी हुई हैं। गोकुल का उस पर कितना विश्वास था। वह कैसे छाती चीरकर खून देगी ? कैसे जल देवता को पुकारेगी ? उसे तो इन बातो पर विश्वास नही है।'

'क्या तुझसे नही होगा ?"

सरयू की छाती नीरव रुलाई से भर गई। उसने सिर हिलाया। गोकुल ने यह तो कभी साफ नही कहा कि धम देवता झूठे हैं। वह तो कहता था, जिस काम म पाँच पचो का भला हो, वह करो। उसमे कोई हील हुज्जत ठीक नही। गोकुल की बातें याद आती है तो बूटो के नीचे दबे ककडो का कडर कर प्रतिवाद सरयू को याद आता है ? क्यो वह अभी भी सुनती है—'किसका नाम गोकुल दास है ?' क्या उसे याद आता है वह यान्त्रिक स्वर 'एइ किसका नाम गोकुल दास है ? और इस प्रश्न के साथ साथ कौन उसकी चेतना पर एक मोटा काला पर्दा खींच देता है।

'होगा।" सरयू सिर हिला कर कहती है।

निमर साव को भरोसा बँधता है। वह कहता है, बहुत खून लगता है। इसीलिए किसी से वह नहीं पाता था।"

सरयू ने सिर हिलाया बाली "[illegible] ठीक है। पानी बरसेगा ?"

हाँ बरसेगा। कभी पूजा [illegible]।"

सरयू और कुछ नहीं कहती।

आपरेशन—बाकुली सकसेफुल।' सब कुछ चुप है। कहीं युगांत हो रहा है। सब कुछ स्तब्ध है। सिर्फ नहर में पानी बहते जाने का शब्द सुन पड़ रहा है। उधर हैंड पंप चलाने का शब्द। पानी। कितना कितना पानी, नीरव अश्रुविहीन रुलाई से भरी लाल आँखें सरयू दिगंत पर टिका देती है। दिगंत पर हवा काँप रही है। जैसे आकाश में प्रेतोत्सव हो रहा है और प्रेत प्रेतनियाँ नाच रही हैं। सूर्य जल रहा है। आकाश से करोड़ों फारनहाइट ऊष्मा पृथ्वी पर उड़ेल रहा है। उड़ेलता जा रहा है। दिन के दस बज रहे होंगे।

रात के दस बज रहे थे। अचानक अलमुनियम के कमरे में रहने वाले युवक के मन में हुआ जैसे बाकुली में कुछ हो रहा है। बाकुली में बचे बाईस लोग क्या कर रहे हैं? निश्चय ही नहर और नदी की ओर जाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। दोनों तरफ पहरा है। फिर क्या कर रहे हैं वे?

युवक ने कमर में रिवाल्वर लटका लिया, हाथ में दूरबीन लिया और सीढ़ियों से नीचे आ गया। कांटेदार तार पार करके गमले के एक किनारे पर आ खड़ा हुआ। दूरबीन को आँखों से लगाया।

मटमैली चाँदनी फैली हुई थी। पर दूरबीन से सब साफ दीख पड़ रहा था। औरतें। एक बुढ़िया हाथ ऊपर किए खड़ी है। कंकाल की तरह शीर्ण आकृति किसी-किसी औरत की गोद में बच्चा था।

एक औरत बीच में खड़ी थी। वही बूढ़ा। दैट गोकुल दासेज फादर। उसने औरत की छाती पर से आँचल उतार कर कमर में लपेट दिया।

भयंकर निष्ठुर एक आदिम देवता की तरह लग रहा है बूढ़ा। बूढ़ा हाथ जोड़ कर कुछ कह रहा है। इसके बाद जो देखा उसमें युवक के मुँह से सीत्कार निकल गई। उसने देखा बूढ़ा चाकू से औरत की छाती चीर रहा है। ह्वाट क्रुएल्टी! औरत की दोनों छातियाँ काँप उठीं। बूढ़े ने उसके हाथ में एक बर्तन दिया। औरत ने दोनों हाथों से वह बर्तन अपनी छाती से सटा लिया। निश्चय ही उस बर्तन में औरत की छाती से खून गिर रहा है। फिर औरत ने अपने हाथ सिर से लगाये और नहर के पानी बहने की आवाज और रात की मटमैली चाँदनी को जैसे आर-पार चीरती हुई उसके गले से रुआसी चीत्कार सुन पड़ी। "पानी दो! पानी दो, देवता!'

'पानी दो! देवता पानी दो।" कहते-कहते औरत घूमने लगी।

हर तरह की संभावित परिस्थिति के लिए युवक को 'ब्रीफिंग' की गई थी वे लोग और कुछ हमला करें तो क्या करना होगा? वे नहर या नदी की तरफ जाने की कोशिश करें तो क्या करना होगा। सारे निर्देश युवक को दिए गए थे। पर तरह दिन तक एक गाँव को एक अंजुरी भी पानी न देने पर रात में गोकुल और निरापद का बाप मुर्गी आँखों में गोकुल की संगिनी की छाती चीर देगा और

वह औरत अपनी छाती मे से बहते खून का एक बतन मे चुआती हुई 'पानी दो, पानी दो' चिल्लायगी तो क्या करना होगा, इस बारे म उसे कोई निर्देश नहीं मिला था।

नही, इस बारे मे कोई 'ब्रीफिंग' नही हुई थी। ड्रिल-परेड करते-करते युवक का रक्त मास मन एसे हो गये थे कि ऊपर वाले क निर्देश के अलावा वह कुछ नही कर सकता था। हाल्ट-चाज ऐडवास जैसे आदेश उसके पहचाने हुए हैं और इन्हीं के अनुसार वह काम करता है। अब इस नई परिस्थिति म वह असहाय है। कुछ नही कर पा रहा है। इसीलिए अपनी जगह स्तब्ध खड़ा है। सारी रात, सारी रात वह औरत चीखती रही—"पानी दो। देवता, पानी दो।"

फिर सवेरा हुआ। सूय उगा। सफेद, क्रुद्ध, निमम सूर्य। करोडो फारेनहाइट ऊष्मा स हवा भभक कर जल उठी।

इसके बाद वे लोग गाँव छोडकर बाहर निकले। युवक अपने अलमुनियम के कमरे मे चला गया। उसन राहत की साँस ली। अब शर्रदिदु बाबुली गाँव म नयी प्रजा बसा सकेगा। व सब, बूढ़े-बुढियाँ, औरतें, बच्चे चले जा रह थ गाँव छोडकर। उनम एक भी बालक, युवा और प्रौढ नही था। कोई किशार या तरुण भी न था। होन की बात भी न थी।

रूखे और जले प्रातर का पार करके व सडक पर आ गये। बस आयगी और उन्हें ले जायेगी तो वे बस से जायेंगे। वर्ना सात मील पैदल चल कर शहर जायेंगे।

बस का इतजार करते हुए सरयू बोली। "जिन्होंने गोकुल को धराया, वे भी नहीं बचे। छाती चीर कर मैंन खून दिया, फिर भी वर्षा नही हुई। उन्होंने गोकुल का क्या धराया? मैंने भी खून क्यो दिया?"

किसी न उत्तर नही दिया। किसी के पास इस प्रश्न का उत्तर नही था। उन्होंने देखा दूर पर धूल उडाती बस आ रही थी। बस आ रही थी, लाल धूल उड रही थी। हवा जल रही थी। हवा म नहर क पानी का शोर भर रहा था।

(अमृत, पूजा अक, 1974)

तरास

बडे धूमधाम स परीक्षित दत्त का श्राद्ध हो रहा था। परीक्षित दत्त की उमर थी साठ बरस। अभी भी उनकी देह म बहुत बल था। मरने की ऐसी कोई बात न थी। फिर भी मर गये।

डकत ने उनके पाँव म हँसिया मारा था। डकत सरदार। नाम डकत था और उपाधि सरदार। वह कोई वास्तविक डकैत नही था। बचपन म खूब मोटा झोटा था। उसे कधे पर चढाकर उसकी मा जमीदार के घर गोबर लीपने जाती थी। खमोवाली जमीदार की कोठी का आँगन बहुत लबा चौडा था। बहुत ध्यान से उस मैदान को गोबर से लीपना होता था। परीक्षित के बाप उपीन दत्त खुद खडे होकर लिपाई कराते थे।

सूख जाने पर मोहिन्दर वगरह वहाँ धान फैलाते थे।

'यह लडका क्या खाता है? उपीन ने पूछा एक दिन।

भात का प्रेमी है।"

"अभी इतना मोटा है। बडा होकर डकत बनेगा।

बस, उस बच्चे का नाम डकैत ही पड गया। सरदार पदवी है। किसी ज़माने म ज़मीदारो की तरफ से बागदी लोगो ने लडाई की थी। उसी के बदले मे दस जनो को 'सरदार' की उपाधि मिली। तभी से वे सरदार कहलाने लगे और यह उनकी पदवी बन गयी।

अभी भी वे लडते हैं। ज़मीन-जायदाद उनके पास कभी न थी। ज़मीदार ने ही ज़मीन भी दी थी। अभी तक वे दत्त परिवार शेख परिवार और मन्ना परिवार की ज़मीन पर मज़दूरी करते हैं। तीस-बत्तीस साल पहले उन्हे एक बार उम्मीद हुई थी बटाईदारी मिलेगी। उन्ही दिनो वह तेभागा आदोलन चल पडा। तभी से चतुर ज़मीदारो ने फुटकर मज़दूरी पर काम कराना शुरू कर दिया। काम वे लगातार उन्ही लोगो को देते थे।

गत चार वर्षों स ज़मीदार उनके फुटकर काम का हिसाब रखते हैं, मज़दूरी देकर छुट्टी पाते हैं। यह इसलिए कि कोई यह न कह सके कि "मैं बटाईदार हूँ। नाम लिखाऊंगा।' जो करना है मजूरी पर करो। बाकी कामो के लिए मोहिन्दर

वगैरह हैं ही।

नहीं, जमीन-जायदाद को लेकर कोई लड़ाई नहीं हुई थी। दत्त ने जमीन-जायदाद के लिए परीक्षित के पाँव पर हँसिया नहीं चलाई थी।

दत्त शेख, और मन्ना के परिवारों में खूब समझौता था। घर के बताशों, बगान के केलों और पोखरी की मछलियों का आपस में आदान प्रदान चलता रहता था। फुटकर मजदूरी पर काम कराने का हिसाब रखने की बुद्धि सुशील मन्ना ने दी थी।

'खाता बनाइए। बर्गादारी और बटाईदारी का हंगामा शुरू हो गया। खेत-मजूर करके रखिएगा तो मजदूरी का रेट देना होगा।"

बात उठी भी थी। दीनू शेख पचायत का प्रधान है। गाँव क्या पूरे इलाके में उसका रुतबा और अमलदारी है। कुछ तेज-तर्रार युवकों ने—जैसे गोविन्द नस्कर ने कहा था, "खेत मजूर को सरकारी रेट पर मजूरी देनी होगी।"

"मेरे बाप! खेत मजूर कहाँ मिल गये तुम लोगों को?"

"क्यों, क्या गाँव में खेत-मजूर नहीं हैं?"

"नहीं, सब फुटकर काम करते हैं।"

"फुटकर काम करें या रोजीना करें—वे खेत मजूर ही कहलायेंगे।"

"अच्छा मेरे बाप! आजकल तो धर्म का राज है। न तुम्हारी बात रहे, न हमारी। कानून में लिखा हो तो दिखाओ। हाँ, अगर वह खेत मजूर हो फिर भी फुटकर काम कर रहा हो तो उसे सरकार रेट देगी।'

"तब तो आप खुद ही मान रहे हैं।"

"बात सुन पहले। वे हमेशा से फुटकर काम करते रहे हैं। खाता देख ले। जो चला आ रहा है उसे अगर प्रथा मान लें, जैसे बर्गादार का हक बना है तो जो फुटकर काम का नियम चला आ रहा है, वह भी प्रथा हुई कि नहीं?"

ये सब महीन बातें गोविंद के मोटे दिमाग में नहीं घुसती। वह भला लड़का है, गरीबों का दोस्त। वह ब्लाक आफिस गया। लौट कर बोला, "वाह! पचायत का क्या प्रताप है। ब्लाक आफिस की ड्यूटी है जो पचायत कर उस पर घुग्घी मारना।"

दूसरे लड़कों ने पूछा—"क्या हुआ।"

"आफिसर ने सीधे कहा कि गाव म जो प्रथा चली आ रही है, जिसका हिसाब जमींदार रख रहे हैं उसमें मैं नाक नहीं घुसाऊंगा। पर ये सब बातें आप क्या पूछ रहे हैं?"

थाने के दारोगा जी को भी अब पचायत की महिमा का पता चल गया है। वह ब्लाक आफिस में मन बहलाने आये थे। उन्होंने भी कान खड़े किए। वह भी जानना चाहते हैं कि देखें गोविंद क्या कहता है।

रहा था वह मति मिस्त्री की बहू के साथ बत्तमीजी करके परेशानी मे पड गया था। पर उसे इसकी शर्म नही है। उल्टे वह सीना फुला कर कहता फिरा 'देह मे जिसके बल है, औरत उसको चाहिए ही। इस देह को खूब खिला पिला कर बनाया है। अभी भी इसमे जान है समझो।

औरत के बारे म अपनी बदनामी स परीक्षित को ग्लानि नही है, एक तरह का गर्व ही महसूस होता है।

गोविंद ने डकैत को भरोसा दिया, खेल नही है। जमाना बदल गया है। तुम निश्चिन्त होकर जाओ। काका भी अब हस्पताल स आने ही वाले हैं। उनके रहते गाँव म कुछ ऐसा-वैसा नही हो सकता।

'हाँ वह तो है।'

डकैत ने सोचा गोविंद के काका मणि नश्कर पार्टी के पुराने आदमी हैं। बत्तीस बरस पहले हमारा आदोलन म लड़ाई की थी। पर आज उन्हें कौन पूछता है? पचायत मे अगर वे प्रधान होते तब और बात थी।

पर उसने यह सब कहा नही। कहा, 'तुम लोग हो। देखना। मैं जाता नही। पर क्या करूँ। परिवार का पेट तो भरता नही। जाना ही पडेगा। उसे भी (यानी पत्नी को) ले जाता। दोनो मिल कर खटते तो दो पैसा हाथ मे रहता। पर माँ की तबियत अच्छी नही है। बच्चो को दो कौर पका कर देने वाला कोई और है नही। बताओ को कौन देखेगा?

डकैत दुश्चिंता लेकर ही जा रहा था कि पाँव बढाते ही ठेस लगी। रास्ते मे परीक्षित के साथ कहा सुनी हो गई। बारिश के बाद झनाती धूप निकली थी। परीक्षित अपने आदमियो के साथ बस पकडने जा रहा था। दो गाँव बाद इरफान पुर की बाजार मे उसकी आटे की चक्की और चारा काटने की मशीन लगी हैं।

"क्यो रे डकत सुना है मौला जा रहा है?

डकैत के मन म सदेह ने साप की तरह फन उठाया। यह क्यो इस तरह बात कर रहा है? उसने सक्षेप मे 'हाँ' कहा।

'ठीक है। अब तू वही काम कर। मैं तो तुम लोगो को कम पैसे देता हू। सरकारी रेट नहीं देता।'

डकैत भारी मन से काम पर जा रहा था और उसका कारण था परीक्षित दत्त। उसी परीक्षित दत्त को रास्ते म देख कर उसका सिर भन्ना गया। उनके समाज म बातचीत करने का लहजा रूखा ही होता है।

डकैत ने रूखे गले से कहा, 'झूठी बात है। ऐसी बात नही कही मैंने। न आपने ही यह बात सुनी है। गोविंद बाबू स जो बात कही है वह आपसे भी पहले कई बार कह चुका हूँ कि दो रुपये म आजकल कुछ नही होता। एक किलो चावल भी नही मिलता। यह भी कहा है कि मौला और पश्चिमपाडा म पार्टी के

लडको ने सब मुश्किल आसान कर दी है। इस पर आपने कहा, "जा काम देख।"

तेरी जुबान बडी कडवा गई है रे डकैत ?"

"बाबू, पेट की आग मे जुबान का गुड सूख जाता है।

"ठीक है तुझे अब काम पर नही लूगा।"

"देखा जायेगा। आप जिसे अन्न नही देते, वे भी तो किसी तरह जीते ही हैं।"

डकैत चला गया। उसे ठेकेदार की लारी मे जाना था। परीक्षित गुम साधे रहा। इरफानगज बाजार पहुँच कर वह थाने गया। डकैत डाल डाल चलेगा तो वह पात पात। थाने म खबर दे आना ठीक है।

डकैत मौला से दो दिन बाद लौट आया। साजूमनी स बोला, "साजू, लगता है हमारी किस्मत फिर रही है। ठेकेदार ने कहा है दो दिन बाद आना फिर लगा तार डेढ महीने काम चलेगा। रोज छह रुपये मिलेंगे। खाने के लिए आटा, नमक, तेल, आलू और मिर्च मिलेगा। जिसे जितना खाना हो खाय।"

"रोटी बनाना तो आता नही तुम्हे।"

'मैं नही जानता तो जो जानता है वह बना देगा। नही तो आटा उबाल कर खा लूगा। नही तो आटा बेच कर चावल खरीद लूगा। पैसे को हाथ भी नही लगाऊँगा। हफ्तावारी पाऊँगा, तो घर दे जाऊँगा।"

माँ ने कहा, "तू मन थिर करके काम पर जा। घर मैं देख लूगी।"

फिर मौला जाने के पहले डकैत गोविंद के घर भी एक चक्कर लगा गया। हाँ, एक खबर है। मौला और पद्मचाकर के लडका ने कमाल का काम किया है। वे कानून का पता लगा कर आये हैं कि जो फुटकर काम करते है वे भी खेत-मजूर माने जाते हैं। गोविंद वगैरह का मजाक उडाते हुए उन्होंने कहा कि वे होते तो सेख, दत्त और मन्ना को देखते सरकारी रेट पर मजूरी कैसे नही देते हैं।

मणि नस्कर का पुराना खून जाग उठा। उन्होने कहा, "तू लौट के आ। मैं झट् से खेत मजूरो का एक सगठन बना लेता हू। देना होगा, खेत मजूर को मजूरी देनी ही होगी। सघर्ष के द्वारा एक शोषण मुक्त समाज का निर्माण करना होगा।"

डकैत चला गया। जाने के पहले गोविंद को बोल गया "नारियल के तेल का एक और टिन खरीद कर मेरे घर दे देना। वापिस आ कर पैसे दे दूगा।"

डकैत के हफ्तावारी लेकर लौटने के पहले ही मणि नस्कर की दौड भाग स लोगो को खेत मजूरो के सगठन बनाने की बात का पता चल गया। दीनू शेख न मणि नस्कर से कहा, 'हाँ, हाँ, मणि बाबू सगठन बनाओ। हम तुमसे कोई अलग हैं क्या ? जो करना पूरी तैयारी स करना। पार्टी का सिर नीचा नही होना चाहिए।"

परीक्षित ने कहा, "इसकी जड मे डकैत है।"

"तुम तो इधर उसकी माँ और बहू को कहा जा सकता है पाल पोस रहे हो।

"मैं गरीब का दु ख नही देख पाता।"

"सच गोबर गोइठा के लिए और पोखरी पर लौकी की लताओ की जड म राख डालने के लिए भात, केरासिन कोई देता है। डकैत की माँ तेरी किस्मत अच्छी है। तर गई तू।"

माँ साजू से कहती है, "आदमी को सिफ भात और केरासिन दिखाई देता है। तीस जानवरो का गोबर पाथना सैकडा लतरो की जड म राख दबाना कोई हँसी-खेल नही है। खटनी है। इसीलिए तो भात के साथ अब दाल और आलू की सब्जी भी मिल जाती है। एक दिन मालकिन की चोरी से परीक्षित बाबू साजू को एक नारियल द गये। साजू ने सोचा बेकार ही डकैत उस देव तुल्य आदमी पर शक करता है।

डकैत ने घर आ कर ये सब बाते सुनी और कहा, "यह आदमी सीधा नही है, यह बात याद रखना। पता नही कब चोट कर बैठे।"

कमर मे कटारी रहती है साजू के।

पर मन्ना कोठी पर जिस दिन सतोषी माता की पूजा थी और जेनरेटर लगा कर 'जै सतोषी माँ' पिक्चर दिखाई जानी थी उस दिन दत्त बाबू के घरवाले भी मन्ना कोठी जाने को छटपटा रह थ। साजूमनी को भी इसी कारण जल्दी थी। पर उसे पोखरी म धान धोकर फैलाना था। वह सब खतम कर जब वह घर पहुँची तो सास बोली "हम तो जा रहे हैं। तू भी जल्दी आ, नही तो देखने को नही मिलेगा।"

"सभी जायेंगे और घर ?"

"वह मेरी जिम्मेवारी है।"

बहुत चख चख के बाद तय हुआ कि सास थोडी देर 'छिनमा' देख कर चली आयगी, घर दखगी, तब साजू जायगी और अत तक देखेगी।

उसी दिन अचानक साजू के घर म परीक्षित घुस गया। उस दिन साजू की कमर म कटारी न थी।

डकैत को बाद म खबर मिली। गोविंद और उसके साथियो ने परीक्षित की पिटाई करने की बजाय नुची चुथी साजू को थाने ल जाना बेहतर समझा। दारोगा ने वादी साजूमनी प्रतिवादी परीक्षित दत्त क टेप कैस म बयान वगैरह के वास्ते साजू को थाने म रोक लिया।

रात म दारोगा भी प्रतिवादी पक्ष म शामिल हो गया और उसने साजू की देह को धा चबा कर सिपाही को सौंप दिया।

यह मामला बहुत दूर जा सकता था, पर साजूमनी की छिन्न भिन्न देह मे

बलात्कार के कोई चिह्न दूरबीन से देखने पर भी डाक्टर को नहीं दिखे। साजू गूंगी-बहरी हो गयी थी। आनंद सहित पुलिस की फाइल में रिपोर्ट लगाई गई कि साजूमनी ने पैसे लेकर परीक्षित को शरीर दिया था अपना। साजूमनी दुश्चरित्र है। देह बेचना उसकी आदत है।

डकैत की समझ में ये बातें नहीं आईं। गोविंद और उसके चाचा मणि मस्कर को उसने खूब गालियाँ दीं और हाथ में हँसिया लेकर परीक्षित की तलाश में दौड़ा। तभी उसने परीक्षित की टाँग में हँसिया मारी थी। हँसिया पाँव की हड्डी में जा कर बैठ गई थी। परीक्षित के नौकरों ने पहले उसे पकड़ा, फिर पुलिस ने।

परीक्षित ने पुलिस में पहले ही डायरी करा रखी थी। वहाँ लिखा था कि पहले भी डकैत चरण सरदार वल्द अलंकार चरण सरदार ने परीक्षित को जान से मारने की धमकी दी थी। और वर्तमान व्यवस्था में थाना कोई अन्याय नहीं करता। बड़ी सज्जनता और सद्भाव से काम करता है। थाना कभी भी धनी का पक्ष नहीं लेता। क्योंकि थाना भी शोषण मुक्त समाज की रचना में लगा हुआ है।

डकैत जेल चला गया। वास्तव में वही मुश्किल में पड़ गया था। क्योंकि परीक्षित बमौत मर गया। उसके पाँव में जहर फैल गया और महीना बीतते न बीतते वह सुरधाम सिधार गया। डकैत के खिलाफ केस और पक्का हो गया।

साजूमनी हस्पताल से गाँव लौटी। डकैत की निशानी—तीन महीने का गर्भ हस्पताल में ही रह गया।

सास ने पूछा, "बेटी, अब क्या होगा? हम तो भूखों मरेंगे।"

थकी-सी साजू दीवार से टिक कर बैठ गयी जैसे बहुत दूर से आई कोई अजनबी हो, बोली, "माँ, थोड़ा पानी दो।"

धीरे धीरे साजू पानी पीती रही।

"कहाँ जायेंगे? क्या खायेंगे?" सास ने फिर कहा।

"नहीं, मरेंगे क्यों?"

गोविंद ने थोड़ा चावल आटा दिया था।

"इतना ही दिया।"

"और नहीं देगा?"

"नहीं खेत में खोदकर ओल साल, शकरकंदी जो मिलेगा खायेंगे।"

"क्या कहीं और नहीं जा सकते?"

"कहाँ जाओगी अगर वह आ जाएँ।" साजू ने प्रतिवाद किया।

इस बात से बुढ़िया सँभल गयी जैसे डूबते को सहारा मिल गया हो। फिर उसने थोड़ा-सा चावल चूल्हे पर चढ़ाया और बोली, "परीक्षित बाबू का श्राद्ध होगा। बहुत लोग खायेंगे।"

साजूमनी ने गहरी साँस ली और दरवाजा बन्द करके सो गयी। कुछ भी

नही। डकत जेल में है। पता नही कब छूटे। साजू को लग रहा था कि उसके जीवन म अब कुछ नही है। अगर वे जेल से नही छूटे तब? जेल जाने के पहले डकैत साजू, साजू पुकार रहा था।

साजू वकील कर नही सकती। सुना है जो वकील नही कर पाता सरकार उसके लिए वकील कर देती है। पता नही कैसा हो वह सरकारी वकील? वादी साजूमनी और प्रतिवादी परीक्षित का कैसा उलट पलट कर हो गया या वादी सरकार प्रतिवादी डकैत चरण सरदार। और शायद केस या ही पडा रहेगा। कोर्ट मे पहुचेगा ही नही।

गाव के सभी लोग उनसे बच कर निकल जाते। निकलगे ही। क्योकि सभी की चुटियाँ दत्त, शेख और मन्ना के हाथो म हैं। साजू क्या करे? इस गाँव मे तो अब वह काम पायगी नही। मौला चली जायेगी। माटी काटन और ढोने का काम करने के लिए डकन उसे वहा ले जाना चाहता था। सवेरे साजू मणि नस्कर के पास गयी।

'हमारे ऊपर तो विश्वास करना चाहिए था।" मणि नस्कर ने कहा।

'किस बात का, बाबू?"

"तुम्हे लेकर परीक्षित के खिलाफ केस दायर करता। इधर खेत मजूरो का दल बना कर सरकारी रेट पर मजूरी दिलाता। कानून से चलना था। बस, आ कर मार ही दिया उसे। क्या, इसका नतीजा ठीक हुआ।'

'विश्वास तो किया था। आप लोग ले गये तो थाना भी गई। उसके बाद क्या हुआ जानते नही?'

"जानने से क्या होगा। सबूत चाहिए।'

थाने का दरोगा, पुलिस और दत्त ने मुझे बेइज्जत किया, पेट का हमल गिर गया, इस पर भी और सबूत चाहिए?'

"नही, इससे कुछ नही होगा। अब तुझे कैसे समझाऊँ?

रहने दो। समझाने की जरूरत नही है। सब समझती हूँ मैं। अब बोलो मरा और घर के तीन जना का पेट कैसे चलेगा?'

"देखता हूँ क्या कर सकता हूँ दीनू शेख से।

'समझ गयी।'

घर लौट कर साजू ने खती उठाया और बडे लडके से बोली, चल, देखते हैं कहीं ओल है।'

"कहाँ?"

"सूनो पाडा मे, बावला वन म चलेंगे।"

ओल नहीं मिला कहीं। करले की लतर ले कर आ रहे थे कि देखा कुछ लोग खेत म थाड़ी-सी जमीन साफ करके उसे गोबर से लीप रहे हैं।

"क्या होगा यहाँ ?"

"तरास होगा।"

'तरास क्या ?"

अब साजूमनी को याद आया कि परीक्षित का श्राद्ध पंद्रह दिन बाद होना है। नई हाँडी मे भात-दाल तरकारी, मिठाई, पान, तबाकू दे कर प्रेतात्मा का तरास दिया जाता है। एक दिया जला देते हैं। इधर तरास ले कर निकलते हैं, उधर घर म बालू फैलाकर दरवाजा मूद देते हैं। सिर्फ एक दरवाजा खुला रखते हैं। जो मरा है अगर वह साँप का जन्म ले तो बालू पर साँप के चलने का चिन्ह बन जाता है। नही तो चिड़िया के चंगुल का चिन्ह या आदमी के पाँवो के चिन्ह दिखाई देते हैं।

"तरास !" साजूमनी के मुँह से निकला।

"हाँ मा, इतना इतना खाना रखते हैं।" बड़े लड़के ने हाथ के इशारे से बताया।

"बहुत रात म, क्या?"

"हाँ, तरास देकर पीछे नही देखते। भाग जाते हैं। भूत पिशाच खाते हैं तरास, दादी माँ ने बताया था।"

"अच्छा, चल जल्दी।"

परीक्षित के श्राद्ध का दिन आया तो साजूमनी को दो दिन से खाने को कुछ नही मिला था। जंगली पत्तो का पूसा बन कर सास और बच्चो को दे कर साजू दरवाजे पर सोई हुई थी। इतनी बेइज्जती, डकैत को जेल—पेट की आग के सामने सब तुच्छ हो गया था। करैला और बैंगन की सब्जी के साथ अगर साजूमनी एक बार भर पेट खाने पाती तो उसका दिमाग काम करने लगता।

सास भुनभुनाती हुई रो रही थी। साजू ने आँखे बंद कर ली। जोर की नीद आई। नीद मे भी भात का सपना देखती रही। देखा वह और डकैत एक बड़े से थाल मे एक साथ खा रहे हैं। नीद टूटी। उस समय काफी रात हो चुकी थी। श्राद्ध का कोलाहल साफ कानो मे आ रहा था। अब वे तरास देने जायगे।

तरास ! धान के खेत म गोबर से लिपी जगह, कुशासन केले के पत्ते पर तरह-तरह के व्यंजन, तबाकू, पान। भूत पिशाच सरसो के तेल के दिए की रोशनी म वह सब खाते हैं। सुनी-सुनाई बात है—किसी ने उन्हे खाते देखा तो है नही। साजूमनी उठ बैठती है। उपवास करते-करते उसका सिर उड़ रहा है, शरीर म जैसे कोई भार नही रहा। वह क्या मनुष्य है ? साजूमनी आँचल कमर मे खोसती है और सूखे बालो की जूड़ी बनाती है।

तरास देकर कुछ लोग लालटेन लिए भयभीत कदमो से चले जा रहे थे। धान-खेत मे साजूमनी के पाँवो की धप धप हो रही थी। स्यार और कुकुर खा जायेंगे सारा खाना। साजूमनी तेजी से डगमगाते डग भर रही थी उसकी आहट

पाकर तजी से चलते लाग डर कर भाग खड़े हुए। दिए की रोशनी मे साजूमनी ने देखा ढेर सारा भात ढेर सारे व्यजन एक बडी सी हाँडी म भर रखे थे। कसे ले जायेगी वह ? कसे ढोएगी ? दो तीन आदमी यह सब उठा कर लाये थे।

भूख से साजूमनी की आते जल रही थी। उसके सामने वह सब पड़ा था, जो उम पसद था, यहाँ तक कि आम का अचार भी था। जब जिंदा था तब परीक्षित ने सब कुछ खा लिया था। सब कुछ। साजू की इज्जत, गृहस्थी की खुशी, पति का सहारा, रोजगार– उसने दस ग्यारह परिवारो को अपनी जरूरत के लिए गुलाम बना रखा था।

मर कर भी क्या परीक्षित ही खायेगा ?

सितारो की रोशनी मे, प्रेतो के लिए रखे गये अन्न को साजूमनी सरदार दूर दूर तक फले धान-खेतो की साक्षी मानकर खाती जा रही थी। पहले भर-पेट खायगी, फिर सब कुछ हाडी म भर कर घर ले जायेगी। सास को खिलायगी बच्चो को खिलायेगी। आज गरम कल बासी। बासी भात खाकर शरीर म बल होगा तो वह मौला जायेगी। काम ढढ लेगी। गृहस्थी को बरबाद नही होने दगी।

भात खाते खाते साजूमनी समझ रही थी कि उसका आचरण कितना स्वाभाविक और मानवीय है। हवा उसकी देह को छूकर उसका समथन कर रही थी। तभी एक तारा आसमान म टूटा।

वधुआ

इस साल भयानक सूखा पड़ा है। खेत सूख कर धूल हो गये हैं। धान पैदा होने की बात ही सोचना गलत है। पर काली गराय के खेतो मे पके धान की शोभा देखते हुए काली के चाकर पवन को लगा कि उसके मालिक ने शायद भूत पिशाच वश में किए हुए हैं। नही तो पास म कोई ताल नही, बडी नदी नही, तो इस सूखे मे अकेले उसके मालिक के खेत म इतना धान हुआ कैसे ? इस बार धान के कोठे एकदम भर जायेंगे। पवन न बहुत पहले ही धान के कोठे साफ-सूफ करके तैयार कर लिये हैं। पूस मे उनकी पूजा भी की थी मालकिन ने। धान कटने पर नवान्न होगा, तब नोटो की गड्डी आयेगी मालिक के हाथ मे।

हुँह नवान्न! अकाल तो आया ही चाहता है। बडान माता का अग फट गया है और उसम से खून बहा है, निश्चिता बूढ़ी देख कर आई है अपनी आँखो से। माता के फटे अग से लाल चीटियाँ निकल रही हैं। ग्राम-लक्ष्मी हैं बडान माता। अकाल आने वाला है, सो पहले ही बता रही है।

पवन की बात सुनकर स्कूल मे पढनेवाला उसका एक दोस्त कहता है—"वाह! अकाल की बात बताती है, तो यह क्यो नही बताती कि उससे बचने का क्या रास्ता है?"

'जानता है माता के अग म लाल चीटी हो गयी है?'

"चीटी तो हर कही होती है। तुम्हारा मालिक माता के थान पर दूध डालता है। क्या उससे चीटियाँ भागेंगी?"

"तू सब जानता है?"

'देखना, मैं चीटी कसे भगाता हूँ।"

"क्या करेगा?"

"लो माँ जननी, कहकर माता के सिर पर केरोसिन का तेल डाल दूगा। देखू कैसे रहती हैं चीटियाँ?'

इस बात पर पवन ने फुसफुसा कर कहा था, "सारा केरोसिन तो मालिक के घर म हैं। वह पचायत मे भी शामिल हो रहा है। उन्ही को देता है, जो उसे बनाकर रखते हैं। तू केरासिन कहाँ पायगा?

'तेरे मालिक को कहाँ से मिला ? वहीं पर हफ्तावार केरोसिन सभी को मिलता है पंचायत की रसीद दिखाने पर। हा, किसी को महीने मे एक बार देता है, किसी को दस बार। उसी से लूगा।"

'भगीरथ ! तुम उसके साथ झगडा मत करना !'

पवन का स्वर बडा कातर, बडा आत सुनायी पडता है। उसकी दोनो आँखो म डर चमकता है, दोनो मटमली आखो मे। एक बेला चना-चबैना पर और एक बेला भात खाकर साल म एक सौ बीस रुपये के करार पर कालो गराय के वहाँ चाकरी करता है। उसके लिए मालिक' शब्द से आतकित होना बहुत स्वाभाविक है।

"यह बात तू पहले नही बोला, अब बोलता है। सारे गाँव की माता है बडाम देवी। बाढ आने पर वही बचाती हैं और सूखा पडने पर भी।"

तू जो सुनकर बडा हुआ है वही तो बोलेगा। मैं अभी तक जो सुनता रहा हू वही मानता रहा हूँ।"

तो भाई, अब क्यू नही मानता तू ?'

"मन नही मानता। वह अघर बाबू तुम सबको नचाता है। मेरा बाप उसकी बात नही मानता। अभी तक वही सबको नचाता रहा है, नकसाली बनकर जेल भी हो आया बुढाप म। उसकी कहानी सभी जानते हैं। अभी भी घर म नही रहता। साइकिल लेकर घूमता रहता है। बूढो को इकट्ठा करके पढाता है। तेरा मालिक भी उससे डरता है।'

"डरत डरते तुम लोग तो कीडा-कतिगो से भी डरने लगे हो। मरा बाप अघर बाबू से क्या डरेगा ? कोई बुरा काम करता नही। अपने घर म बठकर बूढो को पढाता है। कानून की बातें सिखाता है।

किताब हाथ मे लकर क्या घूमता है जानते हो ? देखा नही, उसके घर म किताबें देखकर दारोगा कैसा नाच रहा था ?

"यह सब गौरमट की किताबें हैं। कानून की किताबें। कानून जानकर वर्गादार का हक लिया जा सकता है खेत मजूर का हक लिया जा सकता है। हम तो कुछ भी नही जानत हैं।

"मगर हम तो बर्गादार नही हैं, भगीरथ। खेत मजूर भी नहीं हैं। क्या घरवा चाकरो के लिए कोई कानून नहो है ?'

'मैं पूछूँगा अपन बाप स।'

आज मचान पर बठकर पके धान क मता का पहरा देते हुए पवन को ये सब बातें याद आ रही थी। उसन एक गहरी साँस ली। तो क्या चाकर आदमी नहो है ? वह बर्गादार या खेत मजूर नही है इसीलिए उस बचाव के लिए कोई कानून

नहीं बना ? चाकर आज भी है, पहले भी थे, पर उनकी बात किसी सरकार ने नहीं सोची। चाकर जैसा कोई जीव इस समाज में है इस बात का कोई स्वीकार नहीं करता। उसके अस्तित्व के प्रति लोग आँखें मूंदे हुए हैं।

एक छोटा बच्चा जो कुछ नहीं समझता, कैसे चाकर बन गया ? उसके बाप ने काली गराय से आठ सौ रुपए उधार लिए। न लेता तो उसकी जमीन चली जाती। आठ सौ रुपये वह लौटा नहीं पायेगा, यह जान कर उसने अपने छोटे लड़के को काली के यहाँ एक बेला चना चबैना, एक बेला भात और एक सौ बीस रुपये सालाना पर बंधक रख दिया।

बाबू लोगों ने कहा, "अभी तुम्हारा लड़का सात साल का है। अभी तो वह सिर्फ बकरी और बछड़ चराने लायक है। वह भी घर के आस-पास। अभी वह कितने पैसों का काम कर पायेगा ?"

"ठीक है चना चबैना और भात पर ही रख लीजिए। बारह साल का हो जाय तब से महीनावारी दीजिएगा। पैसा मेरे हाथ पर मत देना। उधार में से काटते जाना।

"ठीक है। चल, अँगूठा लगा कागज पर।"

यह बहुत पुरानी बात है। पवन बकरी चराता, बछड़ चराता। दिन में उसे भात मिलता। रात में अँगोछे में चना चबैना लेकर घर लौटता।

पवन रोता। कहता, "माँ रे, बापू रे! जब से जाता हूँ खड़ा रहता हूँ। बैठने नहीं देते। दोपहर बीत कर जब तीसरा पहर होता है तब भात देते हैं। भूख लगती है तो कुछ नहीं देते। लात घूसों से पिटाई करते हैं। मैं वहाँ नहीं रहूँगा।"

बाप उसे सीने से लगाकर पुचकारता और समझाता, "दुख घटा, और हैं ही कितने दिन ? तेरी उमर बीस की होते ही पैसा सोध हो जायगा। बस, तब हमारा बेटा हमारे पास रहेगा।

पवन के बाप ने अधर बाबू के बाप से हिसाब कर लिया था। अधर बाबू के बाप ने कहा था, 'बारह बरस की उमर से उन्नीस बरस की उमर तक सात बरस में असल वसूल हो जायगा। मजूरी में सूद कट जायगा। मानते हो शर्त ?"

पवन के बाप ने शर्त मान ली थी। उन्नीस बरस तो क्या आज पवन की उमर बयालीस की हो गई है। तीस बरसों में भी रात दिन खट कर वह आठ सौ रुपये का उधार नहीं लौटा पाया। आज से बाइस साल पहले पवन की शादी के वक्त और दो सौ रुपये उधार लेने पड़े थे। वह पैसे आज सूद-सहित बढ़ कर सागर बन गये हैं। पवन को कभी उसकी महीनावारी का भी पैसा अपने हाथ पर रखने को नहीं मिला। बाप की वह जमीन भी जिसके लिए वह बंधुआ बनाया गया था, गराई बाबुओं के ही पेट में समा गयी। पवन की बहू गराई बाबू के घर ही गो काढ़ती है, खेत निराती है और दूसरे काम करती है। मालकिन ने दिया

उससे बधुआ होने को कहा, पर वह नही मानी।

'बधुआ नही बनूगी। गुलाम बनाकर रख देंगे। भगीरथ के बाप ने जनम भर दुख दिया मुझे।'

वह सात पाती रोती है। काम तेज करती है। बहू न ही अधर बाबू के पीछे पडकर भगीरथ को स्कूल म भर्ती करवाया था। मालिक इस बात स बडा नाराज हुआ था। पर अधर बाबू कब परवाह करने वाले थे। उनके बाप पुराने कांग्रेसी थ। स्वदेशी आदोलन मे जेल जा चुके थे। भगीरथ उन्ही के घर भात भी खाता है। स्कूल म भर्ती होने गया था तो उसकी उमर दस साल थी। अधर बाबू ने उसस कहा था, बेटा तुम स्कूल की रोज झाडू बुहारी कर देना। यह तुम्हारा काम होगा। और यहाँ पढना भात भी मेरे घर खा लिया करना। समझे?

स्कूल अधर बाबू ही चलाते है। उन्ही के घर मे है। भात की लालच देकर छात्रो को स्कूल म टिकाये रखना भी उन्ही के दिमाग की उपज है। उनके इन कारनामा से आजिज आकर पत्नी अपने मायके म ही रहने लगी थी। अधर बाबू जिन दिनो जेल म थे, उन्ही दिनो उनकी मत्यु हो गई।

भगीरथ की तरह के अनेक बच्चे उस स्कूल म आये गये, पर भगीरथ उसे गुरु का असली चेला बन गया। अधर बाबू की चेलाई करने से क्या होगा? उनके कहने से क्या भगीरथ को कही कोई काम मिलगा? अब शायद शहर भेज-कर वे उसे टोका देना सिखायेंगे।

अधर बाबू को भगीरथ बहुत मानता है। अधर बाबू सभी को कानून सिखा रहे है जिससे सभी अपना हक समझ ले। अच्छा है। बहुत अच्छा है। पर अधर बाबू भी सब कुछ नही कर पाते। बधुआ पवन के जीवन की दासता अधर बाबू भी नही मिटा पा रहे हैं।

मचान पर बैठकर पवन बार-बार सिर हिला रहा है। आह! कितना कितना धान! आँखें जसे चौंधिया जाती हैं। लगता है सुनहरे धान-खेत नही, सोने का लहराता हुआ सागर है। एक समय अधर बाबू बहुत कुछ कर सकते थ। उन दिनों गाँव म बहुत कम रहते थ। गाँव आकर उन्होंने मालिक स कहा था, 'काली बाबू जमाना बहुत खराब है। धान कटा रहे हो। ठीक है। पर सभी को सरकारी रेट पर मजूरी देनी होगी वर्ना धान कोठार म नही रख पाओगे।

पवन ने डर स आँखें मूंद ली थी। बाप रे! मालिक से इस तरह डाँट कर बात कर रहे हैं। पर मालिक ने सब बात मान ली थी। तीन साल तक मालिक बहुत भले बने रहे। पवन को भी सब मजूरो के साथ दोपहर को छुट्टी देते थे। नाश्ते म गरम भात देते।

ये सब साहस के काम अधर बाबू ने कर दिखाए थ। पर बधुआ तो गुलाम का गुलाम रह गया। बधुआ के जीवन म तुम भी तो बहार नही ला पाये अधर

बाबू। दिन डूबते समय लौटकर मालिक के घर जाने पर जलपान म मिलेगी गाली—"साला बघुआ कामचोर।' दिन रात खटता रहूँगा। लात-जूता खाता रहूँगा। अधर बाबू, इससे मेरा उद्धार नही कर सकते तुम ?

अब तो जो चीज आँख से दीख रही है उस भी जुबान पर लाते डर लगता है। इससे कानून रोज दखते हो, बघुआ के लिए क्या कोई कानून नही है ? धान का पहरा देते अन्त मैं हिसाब करता हूँ।

सूद का हिसाब नही, भात का हिसाब। धान तो भात ही है, है कि नही ? मैं भात के सागर पर पहरा देता हूँ।

कितना भात है। कितना भात—और इसी म मेरे बाप की भी तीन कट्ठर जमीन शामिल है। तो, दुनिया म इतना भात है, फिर भी भात की खातिर पवन बघुआ क्या है ? ऐसा बेहिसाब हिसाब क्यो है ? अधर बाबू भगीरथ मरा बेटा है। तुम्हारी बात सोचकर मेरे सीने म भी हिलकोर उठती है, पर आँख स ठीक दिखाई नही पडता। और बघुआ होने स कमर टूट गयी है। इसी से सब बात नही कह पाता। डर जाता हूँ। खुद ही डर जाता हूँ कि बघुआ होकर इतनी बात क्यो सोचता हूँ ? मालिक जान पायेंगे तो चिमटी से कच्ची चमडी उखेड देंगे।

'भगीरथ, तुम्ह चिंतित देख रहा हूँ। क्या बात है ?" अधर बाबू ने पूछा।

वे दोना जगल के रास्ते पर चल रहे थे। जामू गाँव काफी अदर की तरफ है। बेले नदी के इस पार और उस पार अभी जगल है। जगल के रास्त से आन जाने से बहुत सुविधा होती है। ब्लाक आफिस, बडा स्कूल, पचायत सभी बेलेग्राम म हैं। बेले अब गाँव नही रहा, बाजार हो गया है' थाना भी वही है। वे बेले से ही लौट रहे थे। अधर बाबू इधर-उधर आ जा रहे थ इसलिए कि इस वर्ष जामू जैस पिछडे, अराजनीतिक इलाके म खेत मजूर शिविर लगाया जाय। व सेटलमट आफिस स वापिस आ रहे थ। भगीरथ चौंका नही। थोडी खिसियानी हँसी हस कर बोला, 'बापू की बात सोच रहा था।"

"क्या सोचते हो ?"

"बहुत-सी बातें मन म उठती हैं।"

"पवन को क्या हुआ है ?"

"आप तो हम लोगों के मन के [illegible] सकते हैं।"

"बात क्या है, साफ-साफ बोलो न ?"

"पहले आप का दुःख की बात इतनी नहीं कहने न। [illegible]

त इतनी नहीं सुनी पहले कभी आ [illegible]।"

'अब क्या कहता हूँ, यहा न।"

'हाँ आप कहिए मैं सुन रहा हूँ।'

चल, नदी किनारे बठते है।

आप घर चलिए। हवा बहुत ठडी हो रही है।"

चला। यहाँ तो ठड पडेगी ही। शहर मे अभी एक दम ठड नही है। बारिश न हो तो ठड बहुत कम पडती है।

जाडो म धूप अच्छी लगती है। साँझ होने पर झाड झखाड जला लेता हूँ। गराई बाबू लोग जाडो म कितने कपड पहनते हैं। बापू से कभी यह भी नही पूछते कि पवन' तेरे पास तन ढँकने को है कुछ? बापू ने एक बार कहा था—कोई फटा चिटा लप हो तो दीजिए। इस पर उनसे कहा गया बाजार से खरीद ल।

जगल पार करके वे जामू गाँव म घुसे। भगीरथ ने कहा आप चलिए, मैं केरोसिन का तेल माँ को देकर आता हूँ। नही यह ठीक नही हो रहा है। काली गराई बडा दादागीरी कर रहा है। केरोसिन देता क्यो नही?'

उसका भी क्या दोष है? हमशा का बडा किसान, हमेशा का दादा है इस इलाके का। कैस झट से पचायत म घुस पडा, एँ? पार्टी के दिलीप, राजेन बाबू सभी ने जान-बूझकर सब मान लिया। और तुम लोगो ने क्या देखा? इस सरकार के पहल भी काली गराई दादा था। आज भी वही दादा है।

वोट म ये ही जीतेंगे। न जीतें तो भी काली बाबू ही यहाँ के दादा रहेंगे। वह जामू गाँव के सूरज है। उन्हे अनदेखा करना हमारे लिए मुमकिन नही है। सरकार बदली पार्टी बदल गई पर काली बाबू का दबदबा वही रहा।'

अधर बाबू गभीर हो गय। बोल वह भी आया हू। घूम फिर भी रहा हू खूब। काली स नही कहूगा मैं। कहन जाऊँ तो कहेगा— अरे आप खुद क्यो आये। किसी को भेजवा देते। केरोसिन आपके घर पहुच जायगा।

डरता है। सोचता है उन दिनो नक्सली आदोलन चला था मौजा काँप काँप उठता था। अभी भी कोई कोई गाँव गरम है। जगल म रहना है। पता नही फिर कुछ हो जाय? उस बार तो हवडा भाग गया था।'

भगीरथ अपने घर की ओर गया और अधर बाबू अपने मकान मे घुसे। मकान म सामन की तरफ स्कूल है। पीछे के एक कमरे मे वह और भगीरथ रहते हैं। पुश्तैनी जमीन उन्होंने मेहनदारो को बाँट दी थी। व ही उनके लिए खाने की व्यवस्था करते हैं। पुराने मेहनत्तार गोकुल की बहू ही खाना पका जाती है। स्कूल की मजूरी मिल गयी है। अब मास्टर की तनख्वाह भी सरकार देती है। स्कूल गराई बाबू क यहाँ रहता है और उनके बच्चों को पढाता है। अधर को गव है कि वह मास्टर भी एक दिन इसी स्कूल म पढ़ता था।

भगीरथ थोडी देर म लौट आया। दोनो ने भात और कच्चे केल की सब्जी खायी। कच्चा केला पपीता यह सब भगीरथ की कोशिश और मेहनत स घर म

ही पैदा होता है।

बीडी धरा कर अधर बाबू ने कहा, "भगीरथ, तुमने उस समय जो कहा था वह इस तरह है—उन दिनों आदोलन करते जाकर यह समझ मे आया कि—आदमी किस किस हक से महरूम हो रहा है यह उसे समझना होगा। कानून सब बँगला मे लिखे हुए—उन्हें पढने भर की शिक्षा होनी ही चाहिए। जिनकी लडाई है, उन्हे लडाई का कारण जानना ही चाहिए। तब वे खुद अपनी लडाई लड सकेंगे। खेत मजूर की ही बात लो—।"

"कानून पर विश्वास कर रहे हैं तो वोट को क्यो नही मान लेते ?"

"वोट से कुछ होगा, इस पर मैं विश्वास नही करता, भगीरथ। वोट से चाहे जो जीते, तुम लोग अपना हक तो समझ लोगे।"

"हाँ, समझ रहा हू।"

"कानून वगैरह के लिए पढना सीख लेने पर और बहुत-कुछ है पढने को।"

"जानता हूँ। लिखना-पढ़ना नही जानते हम, इसीलिए तो मालिक हमे मारता है, अदालत जाकर भी हम मरते हैं।"

"यही बात है।"

"मैं बापू की बात पूछ रहा था।"

"क्या ?"

"खेत-मजूर, वर्गादार को हक नही मिलता, फिर भी नाम से पहचाना जाता है कि वे कौन हैं ? कानून भी बन रहा है उनके लिए। मगर मास्टर जी, बधुआ भी तो है। बधुआ तो गुलाम बन जाता है। उसका दिन रात मालिक खरीद लेता है। बधुआ की बात सरकार क्यो नही सोचती ? उसके बारे मे कानून क्यो नही बनाती ? क्यो ?"

"क्या कहा भगीरथ ? एक बार फिर कहना।"

"कानून होने पर भी हक नही मिलता। खेत मजूर को उसका हक नही मिलता। हाँ, सच बात है, पर कानून तो बना है। बर्गादार को लेकर तो आसमान फटा दिया। क्या बधुआ आदमी नही है ?"

"ठीक कहा। ठीक कहा तुमने, भगीरथ।"

"बधुआ का नियम तो कलक है समाज का। उसको लेकर तो तुम नक्सली लोग भी कुछ नहीं कहते। बधुआ जो होता है वह कर्ज लेकर अपनी जमीन खोकर बधुआ बनता है, नही ? वह भी तो जमीन पर निभर होता है। जैसे खेत मजूर का जीवन जमीन पर निभर है उसी तरह। तो फिर बधुआ के मामले मे कोई आग क्या नही जलती ? आदमी को गुलाम बनाकर क्यो रखा जाता है।"

"रुको, भगीरथ, रुको।"

अधर बाबू उत्तेजना म चक्कर काटने लगे। हाँ, ठीक कह रहा है भगीरथ।

यह दास प्रथा ही है। आज भी चल रही है दास प्रथा। पश्चिम बगाल मे चल रही है। 'कानून का पता लगा कर आऊगा सदर से, भगीरथ। मुझे लग रहा है जेल म बठकर हमारी बात हुई थी निश्चय हुई थी कि कौन खेत मजूर है और कौन बधुआ।"

'और ऋण के बारे मे भी तो कानून है? ऋण लेकर क्या आदमी गुलाम बन जायगा ' बापू सात बरस का उमर म बधुआ है। अभी-अभी चालीस पार किया है उन्होने। आख जाना चाहती है माले खुद कही दिखायेंगे नही, मैं सदर अस्पताल ले जाना चाहता हूँ तो छुट्टी भी नही देंगे। और क्या हिसाब बनाया है कि अभी तक पम चुकता नही हुए। इस पिशाच काली को पार्टी के लोगो ने मदद दकर पचायत म बिठा दिया। सूदखोर महाजन के बिना क्या उनकी पचायत नही चल रही थी? जिसकी जमीन पर बर्गादार नही है उनको कोई भी परेशानी नही है इस सरकार म। य घर म गुलाम पालत हैं और बाहर फ्रट सजात हैं।"

देखूगा, मैं देखूगा।

आपकी बात कौन मानगा?"

देखूगा। शायद सदर जाना पडे।"

"हम भी ले चलिये।''

चलो। पवन को भी ले चलेंगे।"

कहाँ?"

अस्पताल।"

काली बाबू छुटटी नही दगा।

'छुट्टी देगा उसका बाप।'

भगीरथ अब निश्चित होकर सो गया। अधर बाबू पर उसको अपार विश्वास है। अधर बाबू की नीद भाग गयी थी। भगीरथ न उनकी आंखो मे उँगली डालकर सचाई का दशन करा दिया था। चाह जमीन खाकर या ऋण लेकर, पर मजबूरी मे ही आदमी बधुआ बनता है। देश म अगर दास-प्रथा चल रही हो तो सवहारा क लिए शपथ-बद्ध पार्टी यह बात नही जानेगी? उन्हें क्या यह बात नही जाननी चाहिए?

जानना क्यो नही चाहिए? व तो जान भी रहे थे। अब वे भारत की मिट्टी म जनम लेने की भयकरता महसूस कर रहे थ। वे क्रातिकारी हैं। अपनी जान देने को भी प्रस्तुत। किंतु उनक लिए भी बधुआ प्रथा एक स्वीकृत, प्रचलित प्रथा है और इसके पीछ जो बबरता है उसकी ओर उनकी निगाह भी नहीं गयी। बधुआ तो है और रहगे हैं। भगीरथ न दिखा दिया कि बधुआ है तो उनका हिसाब भी रखना होगा। खेत मजूरों का न्यूनतम मजूरी मिली या नहा सिफ इसी को लकर मगन मत रह जाओ। सरकार तो इस प्रथा क बारे म सोचेगी ही नही। सरकार

की निगाह मे य असगठित-मजूरो की श्रेणी म आते हैं। लाखो-लाख वर्गादार नही हैं कि 'आपरेशन' चलाकर शोर गुल मचाया जा सके, वोट खरीदा जा सके। खेत-मजूर भी नही हैं ये। सरकार बीच-बीच म उनके बारे म भी सोचती है। वे डरते हैं वर्ना, इस बार नेताओ की कोशिश से नही, बल्कि खुद अपनी गरज से वे नक्सली बन जा सकते है। नक्साल नाम आते ही सरकार एक ही अभिधान अनुसरण करके चलती है और वह है "यही भारत है, यही भारत माता है।'

बधुआ माने दास। ऋण की वजह स बधक पडा हुआ दास। यही तो कहा भगीरथ ने।

पवन को लाने मे अधर बाबू को कोई परेशानी नही हुई थी। काली बाबू ने कहा था, "उसे क्या हुआ है? क्या? आँख दिखाने शहर जायेगा? यहाँ हाट मे कितनी दवाइयाँ बिकती है। आँख मे लगाने स क्या आराम नही मिलेगा?"

अधर बाबू ने कहा था, 'खुद तो कुछ करोगे नही। और दूसरे को भी नही करने दोगे? तुम्हारे घर की ही हमेशा से गुलामी कर रहा है। उसकी आँखें चली जायेंगी तो क्या तुम दोगे उसे आँखें? गाय बैल को कुछ हो जाय तो डाक्टर-वैद्य बुलाने लगते हो। पर क्या वक्त रहते इसकी आँख दिखाने की एक बार भी जरूरत नही महसूस हुई तुम्हे?"

किसान-सभा के निरुप और सतोष किसी काम से आये थे कालीकृष्ण के घर। उन्होंने भी कहा-"जरूर जायेगा पवन। अधर दा ले जाना चाहते है। बस, बात खतम।"

"जाय न। मैं क्या मना कर रहा हूँ।" अत म मजबूर होकर कालीकृष्ण ने कहा था।

सदर जामू गाँव से करीब तीन घटे की दूरी पर है। इतनी दूर भी पवन कभी नही जा सका था। शहर देख कर वह इतना उत्तेजित हो उठा कि उसे आँख की तकलीफ भी भूल गयी।

भगीरथ को पवन की नादानी पर तरस भी आ रहा था और गुस्सा भी।

"वो देख भगीरथ, कितनी बडी हवेली। ओह! क्या दालान है? कितनी ऊँची?"

अधर बाबू ने मुस्करा कर कहा, "यह जेलखाना है। यही पर मैं कुछ दिन था।"

"आयें! जेलखाना! और यह दालान?"

"वह सिनेमा है।"

"ये देख भगीरथ, कितनी फलो की दुकानें हैं! अच्छा! वह क्या है लाल, लाल?"

"बाबू, वह सेब है।

"हाँ हाँ नाम ही भूल जाता हूँ। बाबू ले आते हैं। पूस महीने म बहुत फलता है। घर भर देता है। इतना!

भगीरथ के सीने म एक दर्द था। फल की दुकान देखकर बाप के चेहरे पर नाचती हुई खुशी जैसे तीर की तरह उसकी छाती मे धँसी जा रही थी। धूल से भर विवर्ण बासा फलों को देखकर भी पवन कितना खुश था। आँखें दोनों धुंधली पीली नजर आ रही हैं। उसे देखकर लगता था वह पता नहीं किस युग का मानव है, सहसा कहीं से शहर मे आ टपका है। जैसे सुदूर, धूमर अतीत मे से उठकर वर्तमान म आ पहुँचा है। बीसवीं सदी के धूल धूसरित और अवहेलित मामूली शहर को देखकर उसकी आँखें इतने विस्मय से भरी जा रही हैं।

कुछ ऐसा ही अधर बाबू भी सोच रहे थे और अत्यंत संकुचित हो रहे थे। बैवाई-फटे हाथ-पाँव गले मे गमछा, रूस बाल-पवन को देखकर लग रहा था वह किसी और युग का आदमी है। कहाँ से आ रहा है वह दास? बल्लाल सेन के बंगाल से? शशांक के बंगाल से? उस युग से जब दासों ने सभ्यता की सृष्टि की थी? आज के पश्चिम बंगाल म अतीत का कुछ भी टिका नहीं रह सका है। अकेला पवन कालजयी पवन अपनी जगह टिका हुआ है। जो निष्क कहलाता था वह रुपया कहलाने लगा भूमि-व्यवस्था की परिभाषा भी बदल गयी, रूपनारायण नदी की धारा बदल गयी ताम्रलिप्त तामलुक हो गया पर पवन पवन ही रह गया काली गराई काली गराई ही रहा इसे देखा आपने अधर बाबू? यह भी है और मैं भी हूँ। यह नहीं होता तो मैं कहाँ से आता? भात समझे अधर बाबू, इस भात ने हजारों-हजार सालों से बड़ा दु:ख दिया है। अपार दु:ख! अब आँखों में सिर्फ धुआँ दिखता है। जानता हू आग लगने से धुआँ निकलेगा ही। धुआँ धुआँ आसमान धुआँ धुआँ हवा धूमाकार धूप-जो देखता हूँ सब धुएँ से ढँका हुआ है, जिसमे आग की लपटें नाच रही होती हैं।

अधर बाबू का एक पुराना छात्र शहर म होमियोपैथी की दवा बेचता है। जीर्ण और गरीब दुकान। सभी उसके घर पर टिके। होटल म खाना खाया। अधर बाबू ने इंतजाम कर रखा था। आँख के डाक्टर के पास ले गये पवन को। डाक्टर से भी पवन ने वही सब कहा।

'बाबू आँखों से सब कुछ धुआँ धुआँ दिखता है। जैसे कहीं भयानक आग लगी हो। धुएँ के बीच म लपटें नाचती हैं। धान मचान, भगीरथ का मुँह सब पर धुआँ छाया रहता है पृथ्वी नाचती है, चमकती है फिर धुआँ धुआँ रह जाता है।"

'लगता है ग्लूकोमा है। टेस्ट करके देखना होगा।" डाक्टर ने अधर बाबू से कहा।

"[illegible]।"

"[illegible]। [illegible] यहीं बैठेंगे?"

"नहीं, मुझे कुछ काम है।"

[illegible] मनोरंजन निकल आये। मनोरंजन ने कहा "[illegible]"

"[illegible]।"

[illegible] हुआ था। [illegible] नहीं हुई होगी। [illegible] हुई होगी। बँधुआ [illegible] मालिक को [illegible] के लिए छुट्टी न दें [illegible] मालिक की है। [illegible]।

[illegible] को लेकर [illegible]। [illegible] है। [illegible] के आरम्भ में [illegible] लियों को [illegible] में [illegible]।

"यहाँ क्यों आये हैं।" मनोरंजन ने पूछा।

"कुछ जानकारी लेनी है।"

पनूस मुर्मू [illegible] युवक है। उसने कहा 'बँधुआ मज़दूर बेहनदार कहिए बात एक ही है। एक आदमी के साथ समय-समय मालिक शर्त के करार पर, मात्र भोजन और कपड़े पर एक कॉन्ट्रैक्ट हुआ। जब तक वह काम करेगा मालिक का बारहों घरों का नौकर रहेगा। कभी-कभी ऐसे मजदूरों को थोड़ी अपनी जमीन भी हो सकती है। आम तौर पर नहीं होती।"

"यहाँ ऋण का मामला भी है।"

"हाँ है। ऋण लिया एक आदमी ने। वह खुद को या अपने परिवार के किसी आदमी को ऋणदाता के घर काम पर लगा देता है। साल में इतने रुपये, पेट भर भात और जलपान।"

'मगर ऋण से तो मुक्ति होती नहीं?'

"होगी कैसे? ऋण लेने वाला तो निरक्षर और निर्धन है। उस [illegible] जीवित रहने के लिए वह अपना अँगूठा लगा देता है ऋणदाता के [illegible]। आप समझ रहे हैं या नहीं कि क्या होना चाहिए था?'

"बताइये।"

पनूस मुर्मू के मुँह पर एक कड़वी मुसकान है। [illegible] कहता है 'ऋण लेने वाले को जान लेना चाहिए कि [illegible] होगा? मान लीजिए पाँच साल का करार हुआ। [illegible] बरस तक वह क्या काम करेगा और उसकी [illegible]

दासप्रथा अनुपस्थित है। धार्मिक करार के अनुसार श्रमिक नियुक्ति के छदमवेश मे 'बाडड लबर' प्रथा यहा चल रही है।" नही क्या, अधर बाबू ? बाडेड लेबर ऐक्ट पढ़कर देखिए। जिन जिन कारणो से आदमी बाडेड लेबर होता है उन्ही-उन्ही कारणो स आदमी चाकर होता है।"

'कानून है बाबू, क्या चाकरो के लिए भी कानून है ?" भगीरथ ने पूछा।

'है भी और नही भी। पश्चिम बगाल म बाडेड लेबर है यह बात तो सरकार स्वीकार नही कर रही है। पर चाकर प्रथा ही बाडेड लेबर प्रथा है।"

'फिर ?" भगीरथ की उत्सुकता चरम पर पहुच रही थी।

'मैं नही जानता तुम उन्ही स समझ लो। चाकर और बाडेड लेबर एक चीज है इसे कौन प्रमाणित करगा ? प्रमाणित करके इस प्रथा को खतम कौन करगा ? बिहार म हमशा सुनायी पडता है कि अमुक बाडेड लेबर को अमुक मालिक के हाथ स छुडाया गया। अभाव, भूमिहीनता और सामाजिक जरूरत को पूरा करने क लिए किसी स एक आदमी न ऋण लिया और उसका बाडेड लेबर हो गया यह बात साबित कस होगी ? खुद चाकर मारने दौडेंगे, आपत्ति करेंगे।"

"बाडेड लेबर एक्ट मिलेगा कहा ?" भगीरथ न पूछा।

"आप तो एकदम सरकारी मार्का चीज हो गये ? आपकी तो सहायता भी करना मुश्किल हो गया।

"मान नही पा रहा हूँ आपकी बात।"

"सुनिए। अगर पूछा गया तो मैं अस्वीकार करूँगा कि दिया है। पर ऐक्ट की एक प्रति मैं ला कर दूगा आपका। पर लेकर करेंगे क्या ? घर म सजा कर रखेंगे ?"

"बताइए, आप बताइए। भगीरथ जानना चाहता है। बताइए इसे। उधर जिसको लेकर यह प्रश्न उठ रहा है, वह बेचारा अधा होने वाला है। भगीरथ, चलो, पहले अपने अधे बाप का देखो, फिर यह कहानी सुनना, चलो।"

पलूस मुमू इस बार खिलखिलाकर हँसा, उसकी हँसी म वही चमक थी, जसे तेज धूप म इस्पात की छुरी मे होती है। बोला, "अरे ! यह क्या ? आपकी जानकारी मे सिफ एक ही चाकर है क्या ? जिसे लेकर प्रश्न उठा रहे हैं ? अच्छा ! तो लीजिए, एक भूतपूव चाकर का पता देता हूँ। सलपाडा गाव चले जाइए। ज्यादा दूर नही है। वे भी अपनी आखें खो चुके हैं। मेरे चाचा लगते है। लीजिए चाय आ गई।"

अभिभूत होकर पलूस की तरफ देख रहा था भगीरथ।

"हाँ, चाकर चेचक से ग्लूकोमा से इस उस राग से अपनी आखे खो देते हैं। अधे हो जाने पर ही मेरे चाचा को भी निजात मिली थी।"

"युगल का बाप ?" अधर बाबू ने पूछा।

"हाँ, तो आप जानते हैं।"

चाय पीकर वे लोग उठ खड़े हुए। अधर बाबू के मन में प्रश्नों की भीड़ लगी थी।

'उसकी स्त्री ?"

'वहीं गाँव में ही हैं।"

"और युगल ?"

"मैं जानता हूँ,' भगीरथ बोल पड़ा "उसे तो जान से मार देने की कोशिश की गई थी ? नहीं ? मैंने सुना है।"

पलूस मुमू ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। अधर बाबू से बोला "वयस्कों को लिखना पढ़ना सिखा रहे हैं—किसी ने ये किताबें भेजी थी। लेते जाइए। आपके स्कूल में काम आयगी।"

अस्वीकार में सिर हिलाकर अधर बाबू बाहर आ गये। शाम हो रही थी। चारों ओर धुंधलका फैला हुआ था।

"अब तो ये खूब साफ साफ बोलते हैं।" भगीरथ ने टिप्पणी की।

'हाँ, अधर बाबू दुःखी भाव से हँसे "इनका पावर ज्यादा नहीं है।"

"फिर दफ्तर खोलने का फायदा क्या ?"

"फायदा है। सरकार अपनी ओर से इस जिले पर ध्यान दे रही है। पर इनके पावर कुछ भी नहीं है।'

'बाबू, आपने क्या समझा इनकी बातों से ?'

"बाद में भगीरथ, बाद में बातें करेंगे।"

डाक्टर ने कहा 'कल फिर लाइए। पवन, तुम बाहर बरामदे में जाकर बैठो। मैं जरा बात कर लूँ।"

पवन खुश था, बोला 'अधर बाबू, मुझे डाक्टर बाबू चश्मा देंगे। चश्मा लेकर सब पहले जैसा साफ-साफ दिखेगा। ओह! पानी पिलाकर कितने कितने तरह से आँख की जाँच करते हैं।'

भगीरथ बाप को लेकर बाहर आ गया। पवन ने पूछा, 'भगीरथ, हम वापिस कब जायेंगे ? रस्सी बनानी है। मचान को बाँधने के लिए कहा था।"

भगीरथ ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। एक स्टूल पर पवन को बिठा कर बोला, 'बीड़ी चाहिए ? दूँ ?'

पवन ने लजाते हुए कहा एक सिगरेट ला दे न सामने की दुकान से। पी कर देखूँ कैसा होता है। कभी जीवन में नहीं पिया।'

'ठीक है। दीवार से पीठ टिका लो। मैं आता हूँ। बिस्कुट खाओगे ?"

उधर डाक्टर ने अधर बाबू से कहना शुरू किया, 'देखिए सीधी बात यह है कि यह आदमी आपका क्या लगता है ? गाँव का आदमी है न ?'

"जी हाँ, आपको जो कहना हो कहिए।"

"ग्लूकोमा का आखिरी स्टेज है। प्राइमरी टाइप का ग्लूकोमा है। इसके कारण का पता नही चल रहा है। आँखों की स्नायु नष्ट सी हो गयी है। इसे क्या बहुमूत्र रोग है? एट्रोफी यानी स्नायुओं की क्षयिष्णुता का कारण है ग्लूकोमा का पुराना होना। यह रोज क्या खाता है (अधर बाबू को मालुम नही, अदाजा लगा सकते हैं) नान को आपरेटिव टाइप। चिकित्सा करना मुश्किल है।'

"ग्लूकोमा का आपरेशन तो होता है?"

'वह बात आपके सोचने की है?"

"क्या उसम खतरा है?"

"देखिए, पाँच वष पुराना रोग है। शुरू शुरू म आ जाते तो खैर, क्या करना चाहते हैं? कलकत्ता ले जाकर दिखा सकते हैं।"

'फायदा होगा?"

"मुझे तो नही लगता।"

"तो?"

"अभी तो चश्मा द देता हूँ।"

"इसकी आँख को और खराब होने से रोका नही जा सकता?"

"पाँच वष पहले आपरेशन हो सकता था।"

"आज रुकने को कह रह हैं।"

"हाँ' चश्मा आज नही बन पायेगा। कल सवेरे खाली-पेट लाइए। ब्लड-शुगर और पेशाब की जाँच करवाइए। बहुमूत्र हो तो उसका इलाज करवाइए। उससे कुछ दिनो के लिए आँख बची रहेगी।"

"आपकी फीस?"

डाक्टर ने अधर बाबू की ओर देखा। अधर मैत्री के कारण एक समय डॉक्टर अपनी दक्षिणा कम करने को बाध्य हुए थे। सुनी-सुनाई बात है। अब तो बेचारा टूट सा गया है। खाकी स्वेटर, गले पर फटा हुआ, अधमली धोती, मोटी चप्पल वैसे गाँव के लोगो को देखकर कहना मुश्किल होता है कि पसे उनके पास है या नही। फिर भी कहते हैं—यह गरीब है। गरीब हो तो डाक्टर के पास रोगी लाते ही क्या हो? सरकारी हस्पताल क्या नही जाते?

'तीस रुपये दे दीजिए।"

अधर बाबू ने रुपये दिए। तीन नोट निकालने मे जीण बैग की हालत खराब हो गयी।

"चश्मा बनवाई क्या होगी?'

'पचास रुपये।"

"अच्छा।'

अधर बाबू आश्वस्त हुए। रिस्टवाच बची है अभी। भगीरथ ने ही सभाल कर रखी थी। अधर बाबू के पिता की है। हामियोपथी वाला छात्र घडी लेकर पसो की व्यवस्था कर देगा।

छात्र न कहा, 'खून और पेशाब का टेस्ट हस्पताल म करा देता हू।"

'ठीक है।"

दो दिन और रुकना पडा। पवन को बहुसून नही था। चश्मे का आडर देकर वे बस से वापिस आ गय।

'एक बार फिर आना होगा कुछ दिन बाद।' अधर बाबू ने कहा।

'क्यू ?"

चश्मा पहन कर देखना होगा।"

चश्मे के लिए तो बहुत पसा लगेगा ?"

'वह हो जायेगा।"

"आपकी घडी, बाबू ?"

'तुम चिन्ता मत करो।"

'बाबू, इतना पैसा कौन चुकायेगा ? कितना खरच हुआ ?"

'मैं चुकाऊँगा।' भगीरथ न कहा, 'अब चुपचाप बठो।'

"अच्छा ! चुप हो जाता हूँ।"

'और तुम गराई बाबू के वहाँ अब नही जाओगे।"

"नही जाऊगा ?"

'नही।'

पवन ने क्या समझा, कौन जाने। भगीरथ के स्वर मे जो क्षोभ और क्रोध था उसमे पता नही कसा एक आदेश था। उसने एक बार भगीरथ की तरफ देखा, फिर एक बार अधर बाबू की तरफ और तब छाती फाड कर रुलाइ फूट पड़ी।

थाडी देर रोता रहा, फिर बोला तू यह बात क्या कह रहा है ?"

"तो क्या ?"

'क्या ?"

"गराई बाबू तुम्हे गर-कानूनी ढग स खटा रहा है। मजूरी भी ठीक हिसाब स नही टाटा है। उसका करजा तुम इस बार चुकता कर चुके हो। समझ ? इस बार।'

'बाबू अधर बाबू, यह भगीरथ क्या कह रहा है ?' विह्वल होकर पवन ने पूछा।'

'पवन, वह ठीक कह रहा है।'

तो मरा करजा चुकता हो गया ? हे भगवान !!'

सारी परिस्थिति की निममता स भगीरथ क्रुद्ध और कठोर हो रहा था।

तुम लोग जानते ही हो। तुम्हारे ही गाँव का आदमी है। कोई पराया नहीं।"

गाँव के लड़कों ने आपस में भी बातचीत की थी। उन्होंने अधर बाबू को कुछ पैसे भी लाकर दिये थे, कहा था, 'आप रखिए। गराई की गदन पकडकर हम य पस वसूल कर लेंगे।"

सब कुछ सुनकर भी चचल नही हुआ पवन। शहर स लौटकर जो कमरे में घुसा तो घुस। ही रहा। इतनी बातें हुईं, इतना कुछ घटित हुआ वह जरा भी विचलित नहीं हुआ सिफ इतना कहा, 'पैसे दे गये हैं। अच्छा।"

"लगता है तुम्हे होश चेत नही है। जो कहती हूँ बैठे बैठे सुनते रहत हो।"

'क्या करू ? नाचू ?"

'कुछ तो कहो।'

'सोचता हूँ, कितना खटा मैं। वपा म मेड टूटता तो मैं बनाता था, बाबू लोगो के सिर पर छाता लिए दौड़ता था। इट-पत्थर लगकर पावो में घाव हो गया था।"

'अच्छा लो, बैठे-बैठे यह रस्सी ही बुनो।'

"नहीं, मुझसे कुछ नही होगा, भगीरथ की माँ।'

"इतना क्या सोचते रहते हो ? एक बकरी पालूगी उसका दूध पोकर देखना ठीक हो जाओगे।"

'ठीक है पालो। मैंने एक बकरी भी मागी थी। मालिक ने मना कर दिया। वर्षा में सिर पर रखने को एक बोरा दिया था तो बोला—इसका दाम दो रुपया है। तुम्हारे हिसाब में लिखा जायगा। कभी कुछ नही दिया। सिफ खटा-खटा कर मरा शरीर माटी कर दिया और आँखें भी ।"

पवन की बहू न एक दिन बटे से कहा, 'इन्हें क्या हो गया रे भगीरथ ? मेरी तो कुछ समझ म नही आता। इतन कामकाजी थे पहले, अब बैठे-बठ चुपचाप जाने क्या सोचते रहते हैं ?'

भगीरथ न पवन से पूछा "बापू, क्या सोच रहे हो ?'

'हिसाब।'

"किस चीज का ?'

'मरा कज वसूल हुआ या कुछ मुझे मालिक स पाना है ? अरे भगीरथ, मनम बहुत सी बातें उठनी हैं। मालिक कहते थ पवन तरे बिना कोई काम सलटता ही नही। मैं भी जी जान स लगा रहता था। अब देख मेरे बिना सारा काम होगा। धान भी कटेगा। फिर मरी दानो आखें बेकार म ही गयी न ?

'ताड़ क पत्ता के पखे बनाना सीखोगे ? मैं भी पखे बनाता हू तुम भी बनाओ। गोकुल दलुई नगद पसे दे कर खरीदता है।'

'नही र। यह काम तो अंधे भी कर लते हैं। अभी तो आँखें हैं दुनिया को

कुछ दिन और निहार लूं ।"

"अधा-अधा क्यो करते रहते हो ? अधर बाबू तुम्हारे आंखो की दवा तो करा रहे हैं ।"

पवन न इनकार मे सिर हिलाया, कहा, "वहां से करेंगे ? नहीं भगीरथ, उन्होंने पहले ही बहुत किया है । और ज्यादा उनका ऋण लेना ठीक नहीं है । अब मेरी आंखें ठीक नहीं होंगी रे भगीरथ ।"

"चश्मा पहन कर देखना, कितना साफ दिखता है । मानो मेरी बात । तुम्हारी आंखें ठीक हो जायेंगी ।'

"न कभी तेरा ख्याल किया, न तेरी मां का । मुंह-अंधेरे उठकर मालिक के काम मे लग जाता था । एक बार जब तू बहुत छोटा था, मेला जाने के लिए बहुत रोया, पर मैं तुझे नहीं ले जा सका । अब अफसोस होता है ।"

"बापू, चटाई बुनो, पखे बनाओ । काम म मन लग जायेगा तो अच्छा लगेगा ।"

"पूरा अंधा हो जाऊंगा, तब करूंगा ।"

भगीरथ अधर बाबू क पास गया । सारी बातें सुन कर अधर बाबू न कहा, "उसे बहुत मानसिक आघात लगा है । आंखो की बात को स्वीकार नहीं कर पा रहा है । जाकर उसे चश्मा दिला लाता हूं ।"

चश्मा पहनकर पवन बड़ाम माता के थान पर मत्था टेकने गया । लौट कर अधर बाबू से बोला' ' भगीरथ ठीक ही कह रहा था, बाबू । माता के थान पर लाल चीटियों की बिल है । इसी से माता लाल लाल दिखती हैं । सभी कह रहे थे, माता की देह म से लाल चीटियां निकल रही हैं ।

"अब तो तुम्हें सब कुछ दिखा रहा है ।"

"उस बात का क्या हुआ, बाबू ?"

"किस बात का ? '

"वह जो मुझे गैर-कानूनी खटा रहा था ?"

"उसका उसे जवाब देना होगा ? मैं हिसाब कर लू पहले ।"

हिसाब करते करत काफी वक्त बीत गया । इतन सालो का हिसाब, इतना जल्दी कैसे होता ? इसी बीच पास के गांव म धान- कटाई की मजूरी को लेकर हगामा हुआ । मजूर सरकारी रेट मागत थे , मालिक दे नहीं रहे थे । कोई नई बात नहीं । मालिक बाहर से मजूर मगाना चाहता था । परिचित तरीका था । जो मजूरी मांग रहे थे उनम से कुछ नेता-टाइप मजूरो को क पकड ले गये । पुरानी पद्धति ।

अधर बाबू वहां गये । एक समय इसी गांव मे धान का नाम मजूरो ने अपने खून स लिखा था । बार बार लिखा था । अब चुनाव के पहले धान-कटाई को लेकर हगामा होगा, तो ग्राम जीवन म पुलिस का प्रवेश होगा । पचायत के काय-

मर्ता अधर बाबू के साथ थे।

पवन न भगीरथ से पूछा, "तू क्यो नही गया ? अधर बाबू अकेले गये हैं।"

भगीरथ भी गया।

और पवन गराई बाबू के वणशाली धान के खेत पर गया। वह रही उसके हाथ की बँधी मचान। उसी पर बठकर वह खेत का पहरा देता था। पतित, सागर और निवारन धान काट ढेर लगा रह थे। सभी खेत मजूर थे। आह! धान सागर की तरह लहरा रहा था। यही सब काम तो वह भी कभी करता था। अब चश्मा पहन कर पवन को सब कुछ साफ दिख रहा था।

"पवन तू यहाँ क्या कर रहा है ?"पीछे से काली गराई की आवाज आई। पवन न मालिक को आते नही देखा था।

'देख रहा हू, बाबू।" पवन डर गया। इतने दिनो की डरने की आदत क्या एक दो दिन मे जायगी ? पवन को डर लग रहा था।

'ओह! अधर मती न चश्मा पहना दिया तो साले धान देखने आये हो ? देख रहा है या चोरी करने का इरादा है ? मुझे उल्लू समझता है ? एँ ?"

"चोरी ? मैं चोरी करन आया हूँ ?"

'और नही तो क्या ? वह साला अधर मती तेरा रक्षक बना हुआ है न आज कल ? मुझे कानून सिखाता है। क्या कर लेगा वह ? धान सहेज लू, फिर तेरा नाम थाने मे लिखाता हूँ। मजा चखा दूगा समझा ?'

'क्या ?'

'चोरी का इलजाम लगाऊँगा। तू मेरी बेइज्जती करा रहा है। तुझे छोड़ूगा भला ?"

'क्या चोरी कर रहा हू, बाबू ?'

"थाने म बताना।'

मैं तुम्हारी बेइज्जती करा रहा हू ?'

'हाँ।"

"आज तीस बरस हो गया तुम्हारे लिए खटत, तुम्हारा वह आठ सौ रुपया अभी चुकता नही हुआ ? मरे करार का रुपया भी कभी नही दिया तुमन। जानते हो तुम्हें रुपये देन होंगे। समझे ?

"कौन साला बोलता है ? अधर मती ?'

'देना होगा। गैर कानूनी खटाया है मुझे तुमन। आँखें भी खराब हो गइ। तुमन एक पैसे की दवा तक नहीं दिलायी।'

'अभी तो आँखें फूटी नहीं हैं तेरी। जेल जायगा तब रो रो कर फूटेगा। दिमाग बहुत चढ़ गया है न ?

'चोर! बाबू, अगर चोरी कर पाता तो मालकिन का हार तूड़ कर बिमन

दिया था ? एक भी रुपया दिया था तब ? तुम्हारा मनीबैग नहीं लाया था उठाकर जब तुम उसे बाजार में खो आये थे ? अगर पवन चोर है तब उस पर घर-दुआर छोड़कर नक्साली आंदोलन में भागे क्यों थे ? चोर हूँ मैं ? चोर ?"

"हेइ पवन, क्या कर रहा है ?'

"चोर हूँ मैं ?"

"क्या मारेगा मुझे ?"

गराई मुड़ा और प्रायः दौड़ता हुआ चला गया। पवन गुस्से से काँपने लगा। धान के पंजे सूरज की रोशनी में चमक रहे थे।

धान की कटाई चल ही रही थी कि आसमान में बादल घिरने लगे। इस बार धान सभी के खेत में नहीं पैदा हुआ था। बारिश हुई ही न थी। जो धान हुआ था, वह भी वर्षा में भीग कर नष्ट हुआ चाहता था। कटाई चल रही थी। साथ-साथ धान उठाकर घर में रखा जा रहा था।

पवन आकाश की ओर देख रहा था। उसके हाथों से बनी टाल में गराई बाबू का धान सुरक्षित रहेगा। एक बूंद पानी का भी अंदर नहीं जायेगा यह बात पवन जानता था। वह यह भी जानता था कि यह धान ही गराई बाबू की जान है। अकाल पड़ने वाला है। यही धान देकर गराई बाबू कितने ही लोगों को गुलाम बनायगा। धान की ताकत ही उसकी ताकत है।

वह रात दुर्घटनाओं की रात थी।

आकाश में घन बादल, बिजली की चमक, घोर वृष्टि और तेज हवा। पवन अपनी गड़ासी लेकर निकल पड़ा। आँखें मूंद कर भी पवन एक चीज देख सकता था। सब कुछ उसका चिर-परिचित था। ऐसी रात में कोई बाहर नहीं आयेगा। गराई बाबू और उसके घर वाले गरम रजाई में घुस कर आराम की नींद सो रहे होंगे। गरम भात खाते ही आँखों पर नींद का पहरा हो जाता है।

पवन ने कोई बेवकूफी नहीं की। उसी के हाथों निपुणता और मजबूती से बंधे टाल के बंधनों को वह गड़ासी से काटने लगा। बेड़ा काटकर उसने जमीन पर बिछा दिया। दोनों ही टाल टूट बिखर गये। धान भीगने लगा। इतने पर भी किसी के कान में आवाज नहीं गयी। गराई बाबू का कमरा टिन से छाया हुआ था और वर्षा की बड़ी-बड़ी बूंदें उस पर गिर कर तेज आवाज कर रही थी। पर पवन जैसे पागल हो गया था। वह चीखने लगा।

"यह गया तुम्हारा धान।"

"अब क्या कर्ज देगा?"

"किस बंधन में बांधेगा गरीब को ?'

धान हरहराता हुआ वर्षा के पानी में गिर रहा था। पवन कर धान को फैला रहा था।

पवन के पास जाने की किसी की हिम्मत न थी। उसके हाथ मे गडासी थी। आँखें लाल हो रही थी। अपनी पूरी ताकत स दोनो टाला का बहुत सा धान कीचड मे मिलाकर जब पवन थककर चूर होकर गिर पडा, तभी वे उसे पकड पाये।

आश्चय ! पवन ने कोई चू चपड नहीं की। चुपचाप उनकी पकड मे आ गया। सब चुपचाप दख रहे थ और आश्चय कर रहे थे कि अकेले पवन ने कस इतना धान बर्बाद किया।

धान चारो ओर पसरा हुआ था। मिट्टी और पानी से सनकर गोबर हो गया था। गराई बाबू सिर पर हाथ रखकर रो रहे थे।

वणशाली धान को पैरो से कुचल कर जाते-जाते पवन ने भगीरथ को देखा। पवन की उन घुआ घुआ आँखो से भी इतना दिख रहा था कि पिता की विपन्न असहायता के कारण भगीरथ की आँखो मे दु ख न था। भगीरथ की आँख कुछ और कह रही थी। कोई और जरूरी खबर जता रही थी। भगीरथ ने हल्के से सिर हिलाकर 'हाँ जताया। पवन के आचरण से वह सहमत था।

पवन ने थोडी दर बाद कहा, "वह आदमी सारे गाँव को उसी धान से गुलास बना लेता।"

"हाँ बापू।"

"वह कज देकर कमाई करता है। उसकी कमर तोड दी है मैंने।"

जानता हूँ।"

' इन लोगो को समझा दे।"

इसके बाद पवन न एक बार भी फिर कर नही देखा और सिर ऊँचा किए जामू गाँव स चला गया।

पिता-पुत्र

चार नबर गेट पार करने पर दानो तरफ पानी के तलया के बीच जो मकान बने हैं उनमे बहुत-सी सुविधाएँ हैं। दोना तरफ पानी है। इसलिए टाडा साँपो को जो पानी मे रहते हैं, जब पानी बदलन की इच्छा होती है तो घरो के बीच से वे 'शाट-कट' मार देते हैं। इनम अच्छी बात यह है कि इन्हें पानी ही अच्छा लगता है। इसलिए ये सूखे घरा म ठहरते नही। पथगोखरू या करत 'शाट-कट' मारते समय कभी-कभी घरो मे ही बस जाते हैं।

एक और सुविधा भी है। बारिश होने पर दोना तरफ का पानी और सडक का पानी एक होकर घरो मे प्रवेश कर जाता है जिसमे खुले सडास का मल भी भी तैर कर घरा म आ जाता है।

ये सुविधाएँ देख कर ही रतन ने कमरा किराये पर लिया था। कच्चो बच्चो को लेकर रहने लायक कमरा ग्यारह रुपये मे और कहाँ मिलता ? रतन को शहर ले आने वाले महेश ने कहा, "पास मे रहेगा, तो देख-भाल करता रहूँगा। और तेरे ऑफिस के रास्ते मे ही बच्चो का इसकूल भी है।"

"अच्छा इसकूल है ना ? गाँव का मासटर कहता था अच्छे इसकूल मे पढ़ने पर देशो बहुत आगे जायेगा।"

"अच्छा नहीं तो और क्या है। हाही इसकूल है। लडको को ओजीफा मिलता है। इसम अपना आदमी है। फिर करा देगा।'

"देशो की माँ कह रही थी ।"

"वह भी हो जायेगा।"

इस तरह रतन की सारी व्यवस्था हो गयी। इस बार गाँव म रतन को बटाई की जमीन नही मिली थी। मालिको मे मुकदमा चल रहा था। गाँव के दशा को वजीफा मिलता था। इसीलिए रतना उसे आगे पढ़ाना चाहता था पेट का जोगाड हो तभी न। जिंदा रहेगा, तभी तो बेटे की पढाई ।

उसकी मुश्किल को आसान किया महेश ने। देर सवेर जाता है। पिछले कुछ वर्षों स वगन ब्रेकरो के गोदाम वाल घोतन सान्याल का सरक्षण पाने के फलस्वरूप महेश की क

टी० घटी आ गयी थी।

महेश ग्राम और तरुण प्रेमी युवक है। गाँव से कितने ही तरुणों को शहर ला कर वह तार काट कर चोरी करने राशन का माल चोरी से बेचने और वेंडरो को मार-पीट कर वसूल करने जैसे समाज कल्याण के कामों में लगा चुका है। 'समाज कल्याण' शब्द का प्रयोग सोच समझकर ही किया गया है यहाँ। ये तरुण इन सब कामों में पैसे पाते हैं और अपने परिवारों को पालते पोसते हैं जो अन्यथा, भूखो मरते और चूँ कि उनके परिवार भी समाज के ही अंग हैं। इसलिए इसमें समाज कल्याण तो होना ही है।

रतन की हालत देखकर उसके घर की हालत देखकर महेश को बड़ा अफसोस होता था। दोनों तब के दोस्त हैं जब उन्होंने कपड़ा पहनना नहीं सीखा था। महेश अपने दोस्त को तरह-तरह के लाभजनक कामों में लगाना चाहता था, पर रतन की हिम्मत न होती। हार कर महेश ने रतन के लिए ट्रेन में लजेंज बेचने का लाइसेंस निकलवा दिया और उसे कलकत्ता ले आया। किराये पर मकान दिला दिया और उसकी बहू को दो-तीन घरों में चौका-बासन का काम धरा दिया।

इस प्रकार रतन को शहर में 'फूटिंग' मिल गयी। दासू स्कूल जाने लगा और रतन उसके उज्वल भविष्य को मन की आँखों से देखते देखते लजेंज बेचने लगा। इस प्रकार उन्हें स्थिर करके और उनके हाथों में एक सुनहरा भविष्य थमा कर एक दिन सहसा महेश अंतर्ध्यान हो गया। उसके अंतर्ध्यान होने का कारण बड़ा ही ममविदारक और महेश के लिए बोधातीत था।

पहले की 'रिजीम' में जो पुलिस उसकी दोस्त थी और मौन सहमति दी थी कि वे 'उसे नहीं छुयेंगे' वही पुलिस इस 'रिजीम' में 'साला महेश कहाँ गया है' कहती उसे दिन रात ढूंढ रही थी। महेश ने सोचा इसमें ज्यादा सच्ची दोस्ती तो अमिताभ बच्चन और धर्मेन्द्र की थी, यह दोस्ती तो नकली निकली। इस मानसिक यंत्रणा से मुक्ति पाने के लिए महेश एक आटा चक्की का कैश लूट कर अंतर्ध्यान हो गया।

रतन अकेला पड़ गया फिर भी उसके दिन ठीक ही कट रहे थे। क्योंकि उसकी पत्नी ने सहसा एक क्रांतिकारी भूमिका ग्रहण की और खुद अपने निर्णय से पति की बगल में आ खड़ी हुई। उसने अपनी दोनों बेटियां गिरी और गौरी को दो जून भात और आठ रुपये महीने के मेहनताने पर भले घरों में काम पर लगा दिया। पाँच वर्ष की बेटी मनी के हाथ में दो वर्ष के गणेश को थमाकर पाँच और घरों में बासन मांजने का काम ले लिया। सभी घरों में ईमानदारी से काम करके वह रोज भात रोटी सब्जी कुछ न कुछ लाकर अपनी गृहस्थी की खाद्य समस्या का थोड़ा समाधान करती। अपने लिए होली-दीवाली पर मिलने वाले कपड़े के अलावा भी पूँ माँग-जाँच कर बच्चों के छोटे-बड़े कपड़े ले आती और अपने बच्चों को

मूखे इलाके में मकान लेने की उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई। चलती हुई ट्रेन मे वेंडरों के बीच झगडा होने से रतन पाकं सकस स्टेशन पर नीचे गिर पडा और बुरी तरह जख्मी हुआ। नेशनल मेडिकल कालेज के डाक्टरों ने उसका बाँया पाँव जाघ पर से काट दिया। रतन को वैसाखियो का सहारा लेना पडा।

इस अप्रत्याशित आघात से परिवार की गाडी पटरी से उतर गयी। रतन की पत्नी बाल झड सिर पर सिंदूर लगाये, पीले मुँह पर सफेदी पोते बैठी रहती। कई दिन मोहाविष्ट स्थिति में कट गये। रतन पगु हो गया इस आक्रोश में भगवान भाग्य, ट्रेन वेंडर मच्छर, मक्खी बाजार-भाव, सभी कुछ को कोसती रतन की बहू सोचती 'बहुत पढ लिया दामू अब काम में लग जाना चाहिए।"

इस बात पर रतन की विश्राति कट गयी और वह बैसाखी सँभालता बोला "अभी आता हूँ घूमकर।"

इसी तरह वह अपनी दान की बैसाखियाँ खटकाता रोज सवेरे निकल जाता। कहाँ जाता था कुछ बताता न था। कइ दिनों बाद पता चला लाइन उस पार एक भले आदमी के बरामदे में बैठकर वह आलू बेच रहा है। पाँच किलो आलू से शुरू करके अब दस किलो पर पहुँचने वाला था।

"इतनी दूर क्या?"

इस प्रश्न के उत्तर में रतन रूखे और कठोर गले से बोला, "मोहल्ले में बैठता तो दामू स्कूल से आते-जाते देखता। सभी उसे चिढाते।" सीधी बात है कि रतन के लिए ट्रेन में लजेंज बेचने की तुलना में फर्श पर बैठकर आलू बेचना गिरा हुआ काम था।

पत्नी कहना चाहती थी, 'बाप आलू बेचेगा तो लड़के के देख लेने में क्या दोष है?' पर कहा नहीं। रतन के चेहरे पर हताशा, वेदना, दृढ प्रतिज्ञा जैसी कितनी ही भावनाओं ने अपनी अपनी तस्वीरें खींच रखी थी, जैसे किसी पत्थर की चट्टान पर कोई ग्राफ बनाया गया हो। प्रत्यक्षत पत्नी चुप रहती है, पर काम पर जाते समय अपने घर के दोनो तरफ की तलैया को सबोधित करके कभी-कभी कहती है, 'काम करने की उमर हो गई छोकरे की फिर भी पढाए जा रहे हैं। बाप अपाहिज हो गया फिर भी बेटे को पढ़ना ही पडेगा। पढ़ के होगा क्या? नौकरी करेगा? पायगा कहाँ? उस पहली बार अब आभास हुआ कि दामू की पढाई के लिए उसकी दोनो बेटियाँ—गिरि और गौरी का दासी बनना पडा है। गेनी को पाँच वर्ष की उम्र में गणेश की माँ बनना पडा है। गणेश दो का पूरा होकर तीसरे साल में पहुँच रहा है पर दूध का स्वाद उसे नहीं मालूम।

दामू के स्कूल की फीस और किताब-कापियों के पैसे उन्हें नहीं देने पडते, यह सही है पर इस साल से सफेद शर्ट और नीली पैंट उसके स्कूल की वर्दी हो गयी है। सफेद शर्ट को सफेद रखना बहुत मुश्किल काम है। उसके स्कूल के साथी उसे

दस दिन खिलाते पिलाते हैं तो एक दिन दासू का भी फर्ज बनता है उन्हे खिलाना। फिर भी बाप उसे काम नही करने देगा।

काम तो करने नही ही दिया रतन ने, बल्कि दासू की शिक्षा को लेकर वह दिन प्रतिदिन पहले से ज्यादा आग्रही होता गया।

"देखो, तेरा कौन सा किलास है रे?"

"सेवेन मे जाऊँगा इस साल।"

"पढाई पूरी होने मे और कितने साल हैं?"

"बहुत हैं। अभी दसवा करूँगा तीन साल बाद, फिर उसके दो साल बाद इंटर।"

"बाप रे।"

"फिर कालेज की पढाई अभी बाकी है पर तुझे तो पढने देखता ही नही? सुनता हूँ शाम को पतग उडाता है?"

"नीपू साथ मे बुला ले जाता है, पतग की पकडाई देने को।"

"नहीं!" अचानक गज उठा रतन "शाम को भी पढेगा। नीपू का क्या? देखता है तू फस्ट होता है तो तुझे बाँस दे रहा है।"

दासू चुप रहा। अब रतन की निगाह उसकी पोशाक पर गयी।

"अरे! तू ये कपडे पहनकर खेलने क्यो जाता है?" फिर उसे याद आया लडके के पास और कपडे हैं ही नही तो बोला, "ठीक है, एक जोडा और तुझे आज ही ला दूँगा।"

"आज से मुँह-अँधेरे उठा दूगा। पढाई करना।"

दासू बाप से बहुत डरता है। फिर भी उसने हल्का सा प्रतिवाद किया, "बापू, अभी से क्या? अभी तो परीक्षा मे देरी है।"

"परीक्षा क्यो रे गूधौना? तुझे पढ़ाने की खातिर मैं एक पाँव से सारी दुनिया घाग रहा हू और तू परीक्षा आयेगा तब पढेगा। साला, रात दिन पढ़ेगा, समझा। और कुछ नही।"

धीरे धीरे दासू की पढाई ही रतन की एकमात्र चिंता रह गयी। आलू बेचते-बेचते वह बीच-बीच मे शाम को उठकर घर आ जाता और दासू को खेलता पाकर निर्ममता से उसकी ठोकाई करता। मारने के तुरन्त बाद चोट पर नूरानी तेल का मालिश करने बैठ जाता। पास की मिठाई की दुकान पर ले जाकर बासी जलेबियाँ दिलाकर उसे मनाता और फिर पढने को बिठाता। सुबह मुह-अँधेरे सोते से उठा कर उसे पढने बिठा देता। इसका नतीजा उल्टा ही हुआ। दासू के मन मे पढाई को लेकर आतक पैदा हो गया और उसका परीक्षाफल खराब से खराबतर होता गया। परिणामस्वरूप बाप के हाथो और मार खाता। बाप जैसे मारता था, वैसे कापी पर कापी, किताब पर किताब, नये-नये कपडे खरीद कर लाता और रास्ते

मे चलते चलते पता नही किससे सफाई देता, "बाद मे मुझे नही कह सकेगा कि बाप लगडा और गरीब था इसीलिए उसे कोई असुविधा हुई, माँगते ही उसे कोई कापी किताब नही मिली।"

दासू नहीं समझ पाता था कि उसके बाप का अपना जीवन शैशव से ही अपार परिश्रम का जीवन रहा है। उसे जो जो नही मिला था, वह सब उसने अपने बेटे को देना चाहा था। जितने दिन बाप के हाथ-पाँव चलते थे, उतने दिन उसने बेटे पर कोई भार नही पडने दिया। इससे उसे खुशी होती थी। मगर जबसे वह लगडा हुआ है लडके से उसे ईर्ष्या होने लगी थी। अपने दुःख और ग्लानि के भार के नीचे दबा हुआ वह बेटे को अपने और निकट पाना चाहता था, चाहता था वह भी उस मार को बाटे।

मगर दासू यह सब नही समझता। मार खा-खाकर पढाई और स्कूल से वह डरने लगा। छठी क्लास से सातवी मे वह ततीय श्रेणी मे पास हुआ है। यह जान कर वह स्कूल से ही भाग गया घर नहीं आया। रतन स्कूल से पता कर आया था कि दासू थर्ड हुआ है और गुस्से मे नाचता हुआ बार-बार कह रहा था, 'आने दो, आज उसे काट कर डाल दूगा।' दासू की माँ ने कहा, 'तुम्हें काटने की जरूरत नही पडेगी। दासू भाग गया है।'

'कहाँ? कहाँ भागा?'

"मुझे क्या पता?"

जो औरत आज तक सब देखती रही सहती रही, जान लडा कर खटती रही, वह आज दोनो हाथो को दरवाजे की चौखट पर रखकर अधेरे से कहने लगी, "जहाँ भी रहो मेरे लाल घर मत आना। चडाल तुम्हे काट डालेगा। मैं जानती थी यह पढाई हमारा सवनाश करेगी। कमर से जोर नही और चले हैं बाबू बनाने बेटे को। कुछ काम-काज करता होता तो अभी तक हमारा घर सुधर जाता। जोर जबदस्ती पढाया उसको। इतना अच्छा लडका, फिर भी ले मार, दे मार। वह खटके मर रहा है और तुम पढ रहे हो, यही जलन थी। मैं माँ होकर कह रही हूँ। अब घर मत आना तुम।'

इसके बाद वह हू हू करके रो पडी और फर्श पर गिर कर अपना सिर कूटने लगी। रतन खूब ध्यान से सुनता रहा उसकी बात। उसे पता नही था कि रतन बैसाखी के सहारे दरवाजे से बाहर दम साधे खडा है। धीरे धीरे अडोस-पडोस के लोग भी आने लगे। चेतन ग्वाला, रामलगन सत्तूवाला, सभी रतन की लानत मलामत करने लगे। "इतना बढिया, सुशील बच्चा है उसे मार मार कर हलाल करने का क्या माने होता है।" "उन बाबुओं के स्कूल मे पढाने की जरूरत भी क्या है? 'सफेद कमीज और नीला पैंट सब अच्छी चीजें हैं पर जिनके लिए हैं उनके लिए। रतन के बेटे के लिए तो अच्छा नही है। क्या रतन वह भार उठा

सकता है ?' "एक शट, एक पैंट और कुछ किताबा का भार जैसे पृथ्वी का भार हो गया था। वह भार रतन को नीचे खीच रहा था। सिर ऊपर नही उठा पा रहा था वह।"

इन सार मतव्यो की भार मे एक समय रतन हाऊँ हाऊँ करके रो पडा और सभी उसे सँभालने मे लग गये। आखीर मे चेतन ग्वाला के लवे बालो वाले और सिनमा टिकटा का ब्लैक करने वाले बेटे ने आकर कहा, "चाची, तुम चिंता मत करो। निश्चय ही मैं उसे कल ले आऊँगा। जायगा कहाँ ?"

सचमुच दासू कही गया न था। दूसरे दिन उसे कस्बे के नये ओवर ब्रिज के नीचे सोया पाया गया। और सुबह के सात बजते न बजते उसे घर पहुँचा दिया गया। रतन, रतन की पत्नी मनी, गणेश और दासू सभी चुप।

थोडी देर पर पत्नी ने कहा, "काटना है ! हसुआ लाऊँ या कटारी ?"

रतन थोडी देर सिर पर हाथ दिए बैठा रहा, फिर बोला, "अब भात चढाओ। उन्हे दो। मुझे भी भूख मालूम पड रही है। उसके बाद उसे लेकर आज ही जाना है।"

"कहाँ ?"

"लाइसेंस निकलवाना है।"

'किस चीज का ?'

"टरेन म लेमन चूस बेचने का, और किस चीज का। उससे भी छोटे बच्चे कर रह है। उससे नही होगा ?"

दासू ने सिर हिला कर जताया उससे होगा। रतन ने फिर कहा "उसका दाँव-पेंच मैं सिखा दूगा।"

दासू ने बाप की तरफ देखा। उस एक नजर मे ही पिता पुत्र की दूरी खत्म हो गई, वे एक सूत्र मे बँध गये।

("नहबत", 1980)

मे चलते चलते पता नहीं किससे सफाई देता, "बाद मे मुझे नही कह सकेगा कि बाप लगडा और गरीब था इसीलिए उसे कोई असुविधा हुई, मांगते ही उसे कोई कापी किताब नहीं मिली।'

दासू नही समझ पाता था कि उसके बाप का अपना जीवन शैशव से ही अपार परिश्रम का जीवन रहा है। उसे जो जो नही मिला था, वह सब उसने अपने बेटे को देना चाहा था। जितने दिन बाप के हाथ-पांव चलते थे, उतने दिन उसने बेटे पर कोई भार नही पडने दिया। इससे उसे खुशी होती थी। मगर जबसे वह लगडा हुआ है लडके से उसे ईर्ष्या होने लगी थी। अपने दुख और ग्लानि के भार से नीचे दबा हुआ वह बेटे को अपने और निकट पाना चाहता था, चाहता था वह भी उस भार को बाँटे।

मगर दासू यह सब नही समझता। मार खा-खाकर पढ़ाई और स्कूल से वह डरने लगा। छठी क्लास से सातवीं मे वह तृतीय श्रेणी मे पास हुआ है। यह जान कर वह स्कूल से ही भाग गया, घर नहीं आया। रतन स्कूल से पता कर आया था कि दासू फेल हुआ है और गुस्से से नाचता हुआ बार-बार कह रहा था, "आने दो, आज उसे काट कर डाल दूगा।" दासू की माँ ने कहा "तुम्हें काटने की जरूरत नही पडेगी। दासू भाग गया है।"

"कहाँ? कहाँ भागा?"

"मुझे क्या पता?"

जो औरत आज तक सब देखती रही, सहती रही, जान लडा कर खटती रही, वह आज दोनो हाथो को दरवाजे की चौखट पर रखकर अंधेरे से कहने लगी, "जहाँ भी रहो, मेरे लाल, घर मत आना। चंडाल तुझे काट डालेगा। मैं जानती थी यह पढाई हमारा सत्यानाश करेगी। कमर मे जोर नही और चले हैं बाबू बनाने बेटे को। कुछ काम-काज करता होता तो अभी तक हमारा घर सुधर जाता। जोर जबरदस्ती पढाया उसको। इतना अच्छा लडका, फिर भी ले मार, दे मार। वह खटके भर रहा है और तुम पड़ रहे हो, यही जलन थी। मैं माँ होकर कह रही हूँ। अब घर मत आना तुम।'

इसके बाद वह हू हू करके रो पडी और फर्श पर गिर कर अपना सिर कूटने लगी। रतन खूब ध्यान से सुनता रहा उसकी बात। उसे पता नही था कि रतन बैसाखी के सहारे दरवाजे के बाहर दम साधे खडा है। धीरे धीरे अडोस-पडोस के लोग भी आने लगे। चेतन ग्वाला, रामलगन सत्तूवाला सभी रतन को लानत मलामत करने लगे। 'इतना बढिया, सुशील बच्चा है उसे मार मार कर हलाल करने का कोई माने होता है।' "उसे बाबुओ के स्कूल मे पढाने की जरूरत भी क्या है?" "सफेद कमीज और नीला पैंट सब अच्छी चीजें हैं, पर जिनके लिए हैं उनके लिए। रतन के बेटे के लिए तो अच्छा नही है। क्या रतन वह भार उठा

सकता है ?' "एक शट, एक पैंट और कुछ किताबो का भार जैसे पृथ्वी का भार हो गया था। वह भार रतन को नीचे खींच रहा था। सिर ऊपर नही उठा पा रहा था वह।"

इन सारे मतव्यो की भार से एक समय रतन हाऊँ-हाऊँ करके रो पडा और सभी उसे सँभालने मे लग गये। आखीर मे चेतन ग्वाला के लबे बालो वाले और सिनमा टिकटो का ब्लैक करने वाले बटे ने आकर कहा, "चाची, तुम चिंता मत करो। निश्चय ही म उसे कल ले आऊँगा। जायेगा कहाँ ?"

सचमुच दासू कही गया न था। दूसरे दिन उसे कस्बे के नये ओवर ब्रिज के नीचे सोया पाया गया। और सुबह के सात बजते न बजते उसे घर पहुँचा दिया गया। रतन,रतन की पत्नी मेनी, गणेश और दासू सभी चुप।

थोडी देर पर पत्नी ने कहा, "काटना है ! हलुआ लाऊ या कटारी ?"

रतन थोडी देर सिर पर हाथ दिए बैठा रहा, फिर बोला, "अब भात चढाओ। उन्हे दो। मुझे भी भूख मालूम पड रही है। उसके बाद उसे लेकर आज ही जाना है।"

'कहा ?"

"लाइसेंस निकलवाना है।"

'किस चीज का ?"

"टरेन म लमन चूस बेचने का, और किस चीज का। उससे भी छोटे बच्चे कर रह हैं। उसस नहीं होगा ?"

दासू ने सिर हिला कर जताया उससे होगा। रतन ने फिर कहा, "उसका दाँव-पेंच मैं सिखा दूगा।"

दासू ने बाप की तरफ देखा। उस एक नजर मे ही पिता पुत्र की दूरी खत्म हो गई, व एक सूत्र मे बँध गये।

("नहबत', 1980)

एच० एफ० 37 । रिपोर्ताज

1 शुक्रवार 4 जून को पद्ममणि कलकत्ता पहुँच गयी थी । साथ मे थे उसके पति, देवर चार बेटे और तीन बेटिया । इतने लोगो को लेकर आजकल कोई बहिन के घर नही जाता जबकि बहिन बरतन मांज कर पेट पाल रही हो । मगर *पद्ममणि के पति को आबादी के उस पार उसकी बहिन की सपत्ति अचानक मिल* गयी । गाँव का मकान ज़मीन बेचकर वहाँ जाने के पहले पद्ममणि ने ज़िद की कि एक बार तारामणि स मिलने कलकत्ता ज़रूर जायेगी । कलकत्ता जाना कोई कम खर्चीला मामला नही है यह बात कहने पर उसके पति को जवाब मिला

"मैं अपनी बकरी के दूध के पसे से आऊँगी जाऊँगी ।"

इस पर उसके पति ने कुछ न कहा पर देवर मे आपत्ति की, "आज की हालत मे दस आदमी ले कर किसी के घर जाने का कोई मतलब होता है ? तुम्हारी दीदी इतने आदमियो को खिलायेंगी क्या, ज़रा बताना तो ।"

"उसका जोगाड भी हो जायेगा ।" पद्ममणि ने कहा था ।

पद्ममणि लोग बालीगज स्टेशन पर उतरे । वहा से लेक की रेलवे बस्ती तक पैदल ही चल कर गये । एक अविश्वसनीय किंतु सच बात यह है कि पद्ममणि ने अभी तक कलकत्ता नही देखा था । उसके पति और देवर कभी-कभार हो आते हैं । कलकत्ता देखकर तो वह चौंधिया रही थी । लग रहा था दीदी कितनी सुखी है, पर दीदी के घर की हालत देखकर उसे उसकी (तारामणि की) आर्थिक स्थिति का अदाज़ा लगाने मे कोइ कठिनाई नही हुई । उसी क्षण उसे यह भी ज्ञात हो गया था कि दीदी की अपेक्षा वह कही ज्यादा सुखी है ।

तभी पद्ममणि ने चावल की एक पोटली, पिछले साल के जौ से बना इस साल का सत्तू निकाल कर दीदी को दिया था । इसके अलावा, करले, एक बडा-सा कुम्हडा और खजूर का गुड भी दिया । पति को गजी म से निकालकर ग्यारह रुपये भी सामने रख दिए थे ।

"अरे पद्मा ! इतना सब क्या दे रही हो ।"

"मैं क्या दे रही हूँ । तुम्हारा ही तो है ।"

पद्ममणि और तारामणि हँसने लगी । तारामणि ने ही बहिन की शादी की

थी। घर बसाते समय निवारण की गृहस्थी देख कर तारामणि ने चमकती आँखो से कहा था, "पद्मा, तू राज करेगी। तब कहेगी कि दीदी के चलते कितना सुख करने को मिल रहा है।"

"कितने दिन रहेगी, पद्मा ?"

"सोमवार को चले जायेंगे।"

"सोमवार को मत जाना। जलूस निकलेगा। हगामा होने वाला है।"

"तो मगल को चली जाऊँगी।

2 शनिवार, 5 जून। तारामणि की पडोसन की भाषा मे "अत आ गया था। यमराज ने आ कर कहा उठ, मेरे साथ चल।"

ट्रेनें आ रही थी, जा रही थी। देखकर मन नही भर रहा था पद्मणि का। उस दिन ट्रेन और ट्रक मे भर कर लोग बाहर से आ रहे थे। पद्मणि देख कर अघा नही रही थी। रेल लाइन के दक्षिण ओर था तारामणि का घर। घर रेल लाइन के इतने पास था कि ट्रेनें आती तो घर के बतन भाडे थरथराने लगते थे। रेल लाइन की उत्तर की ओर लेक है। पद्मणि के बच्चे, पति और देवर सभी स्नान कर रहे थे लेक मे और पद्मणि अपने कपडे लेकर रेल लाइन पार करके लेक की ओर जा रही थी कि ट्रेन आ गई।

हरे और क्रीम रग की सुन्दर, उद्धत, वेगवान ट्रेन। ट्रेन देखकर पद्मणि खडी हो गई किन्तु पडोसन की भाषा में "चक्कर खाकर सिर के बल गिर पडी छोडी।" पडोसन उमर मे रावण की मा निकषा जैसी थी। फिर भी सात बच्चो की मा पद्मणि को कल से ही 'छोडी' कहकर बुला रही थी। पद्मणि लाइन के पास के एक खम्भे से टकराई और उसकी खोपडी पर भयकर आघात लगा।। उस आघात से यत्नपूर्वक खोपडी मे रखे मस्तिष्क के दमकल का घटा बजने लगा। महाशिरा व अन्य रक्तवाही शिराएँ फट गयी और मस्तिष्क का रक्त प्रवाह अस्त व्यस्त हो गया। खून उसकी नाक और कानो से धार की तरह फूट पडा। यह दुर्घटना सवेरे 9 बजे घटित हुई।

उसके बाद भय से कातर और विपन्न तारामणि तथा पद्मणि के दिशा हारा पति उसे लेकर पास के हस्पताल मे गये और "यहाँ य सब केस भर्ती नही होते" की प्रतारणा पाकर पहले तो "दया करो बाबू" जसे वाक्य उच्चारण करते हुए थोडी देर सिर पटकते रहे उसके बाद पद्मणि को लकर मिशन के हस्पताल अपराह्न मे 3 बजे पहुचे। रात 9 बजे पद्मणि, पद्मणि नही रह गयी। वह "एच० एफ० 37 आयु 37, हिन्दू फीमेल" होकर हस्पताल मे भर्ती हुई। प्रत्येक इजेक्शन और दवा के लिए पैसे मागे गये और बैड का पैसा कम कराने के लिए सवेरे आकर मालिको से मुलाकात करने की ताकीद मिली।

3 रविवार 6 जून। सवेरे एच० एफ० 37 की काटपीट खोजबीन शुरू हुई

और तारामणि जिन घरो मे बरतन माँजती थी उनके यहाँ घूम घूमकर दवा और इजेक्शन के लिए पैसे एकत्र करने लगी। पद्ममणि के पति की छाती और सिर पीटते देखकर मालिकों ने बेड का किराया कम कर दिया। तारामणि और पद्ममणि के पति से चोट लगने की कहानी सुनकर लिखा गया—"एडमिटेड एच एफ० 37, इमर्जेंसी केस, ट्रेन द्वारा आघात प्राप्त।" ट्रेन तो नहीं लगा बाबू। देखो न, कहीं जरा सा खरोंच भी नहीं है।" तारामणि का यह सब विलाप सुनकर भी भर्ती बाबू जरा भी विचलित नहीं हुआ। खीझियाकर बोला, 'ट्रेन नहीं आती तो क्या यह चक्कर खाकर गिरती?' पर उसके बाद जब तारामणि सुन होकर फुटपाथ पर बैठी थी उसका मिस्त्री बेटा बोला, "कर दिया न सत्यानाश। मौसी अगर मर जाय, तो कैसा तमाशा होगा इसका ख्याल है? भला कोई ऐसा लिखाता है? केले के छिलके पर पाँव पड़ने से फिसल गया था, पाँव रपट जाने से गिर पड़ी ऐसा कुछ कहना चाहिए था।'

यह बात सुनकर तारामणि रोती हुई कहती है 'तेरी बुद्धि की बलिहारी है बेटा। जिन्दा रहते ही तू उसको मरी हुई बता रहा है, क्यों?"

पद्ममणि का पति "यह क्या कहा तुमने भैया, ऐसी अशुभ बात बोले तुम!' और रोने लगा हाऊ-हाऊ करके। जैसे उसके भतीजे ने उसके मरने की बात कर दी, इसीलिए पद्ममणि मर जायेगी। हस्पताल के सामने दोनों सिर पीट-पीट कर रोते रहे। तारामणि का लड़का डाक्टर की पर्ची लेकर दवा खरीदने के लिए दौड़ भाग करता रहा, पर लाख कोशिश करके भी दवा का दाम यानी चवालीस रुपयों का जोगाड़ नहीं कर पाया। दवा खरीदे बिना उसे हस्पताल वापस जाना चाहिए या नहीं, यह भी उसकी समझ मे नहीं आ रहा था। उसकी उमर ही क्या थी, सिर्फ सत्रह साल। वह आखिरकार लौट कर डाक्टर के पास ही गया। किसी दूसरे डाक्टर ने एक दूसरी पर्ची लिखकर थमा दी। इस बार वह तेइस रुपये की दवा खरीद कर ले आया। तारामणि ने रोना बंद करके पद्मा के पति से कहा, "इतनी मँहगी दवा दे रहे हैं। वह जरूर अच्छी हो जायगी।' ये दोनों फुटपाथ के एक पेड़ की छाया मे जाकर लेट गये थे। तारामणि का मिस्त्री बेटा उनके पास बैठा जरूर था पर उनसे कोई बातचीत नहीं कर रहा था।

समय बीतता रहा। बीतता रहा। बीच बीच मे पद्मा का भतीजा अंदर जाकर पूछताछ कर आता। इसी तरह रात हो गयी। फिर रात बीतने लगी।

रात डेढ़ बजे पद्ममणि मर गयी। 'एच० एफ० एक्सपायड ऐट वन थर्टी ए० एम० आफ०००।' यह सर्टिफिकेट लिखकर दूसरे दिन सवेरे थाने भेजा गया।

4 रविवार 6 जून। उसी रात पद्ममणि के भतीजे से डाक्टर ने कहा, "कल लाश मिलेगी। पुलिस केस नहीं होगा।"

किन्तु सोमवार 7 जून को पता चला कि बिना पोस्टमार्टम के लाश नहीं

मिलेगी। सवेरे ही यह सचना आ गयी और 'थाने से जब तक खबर नही आती, तब तक कुछ भी करना सम्भव नही है' यह कहकर डाक्टर ने पद्मा के भतीजे का भगा दिया।

रात मे जो कह रहा था कि लाश मिल जायेगी वह भी डाक्टर है और अभी जो कह रहा ह लाश नही मिलेगी वह भी डाक्टर है। शाम को जिसने तैंतालीस रुपये की पर्ची लिखी वह भी डाक्टर है और रात म जिसने तइस रुपय की पर्ची लिखी वह भी डाक्टर है। पद्मा के भतीजे का दिमाग चकरा रहा था। हालाकि उसने भी जुलफी रखाई हुई थी, मैली चीकट बनियान पर नकली टरिकाट की कमीज़ डाट रखी थी, फिर भी बाबू लोगा स अदब खाना उसके रक्त मे था।

साथ ही थाना पुलिस से डरना भी उसकी आदत थी। उसे याद आ रहा था कि गोपाल आलू वाले न सुवासी क प्रेम म असफल होकर जब जहर खा लिया था, तो उसके घरवाला की भापा मे डोम को पैसे खिलाने पडे थे। पर पद्मा के भतीजे के पास पैसा की बडी कमी है। मा तारामणि की भी मालिका के यहा इतनी 'गुडविल' नही थी कि वहा से घूस क पैसे मिल जात। मौसा के पास जो तीस रुपये की जमा पूजी थी, उसे निकालकर भतीजे के हाथ पर रखकर उसने कहा, "बेटा, जो करना है करो। तुम शहरी लडके हो। मैं गँवार आदमी ठहरा। मगर साझ होने से पहले लाश का फूक ताप न करन से बडा पाप होगा।"

"सवनाश तो होगा ही।" तारामणि की पडोसन ने बडी तृप्ति से कहा। पद्मा की मौत की खबर पाकर वह सवेरे सवेरे पद्मा के लडको बच्चो, देवर सभी को लेकर हस्पताल पहुँच गयी थी। तारामणि के गाव गिराव की जो भी दाइया आस पास के घरो मे बतन माजती थी सभी आ गयी। पडोसन की दराज़ उम्र थी और जानकारी विशाल। इसके अलावा कालीघाट के एक धनी पुरोहित परिवार की बहुएँ, छाती की सुन्दरता नष्ट हो इसलिए बच्चो के मुह मे अपनी छाती नही देती थी। अतएव पडोसन का दूध पीकर पुरोहित के घर के लडके दादा, नेता गैरकानूनी शराब के ठेकेदार, मीसा म जेल खाने के निवासी बन गये थे। इस कारण मतक का अतिम सस्कार करने के बार म उसे सब कुछ मालूम था।

उसने कहा, "सवनाश! दाह नही होगा तो प्रेत तुम्हारे पीछे लग जायेगा। पता नही क्या करे?' सुनकर सभी रोने लगे। छाती पीटने लगे। पद्मा के भतीजे को कुछ करने के लिए सोचने लग। भतीजा थाना गया। मौसा और उसका छोटा भाई बाहर बैठे रह। भतीजा ही अन्दर गया।

5 सोमवार 9 जून। सवेरे सवेरे थानेदार के चेहरे पर प्रसन्नता और दया नाच रही थी क्योकि वह जान रहे थे कि उनकी डयूटी खतम होन वाली है और जो भी वायदा वह करेंगे उसको पूरा करन की उनकी कोई ज़िम्मेदारी नही होगी। आठ बजे उनकी डयूटी खत्म। उसके बाद मत्रीगण और दूसरे गण मान्य लोग

जुलूस निकालेंगे । सारे दिन कलकत्ता मे शातिपूण जुलूस चलता रहेगा । अतएव
सभी पुलिस वाले और लाश ढोने वाली अबुलेंसें, दमकल आज अजुन की भूमिका
मे रहेंगे और उनकी एकाग्र दष्टि और मन के सामने मछली की आँख होगा—
जुलूस ।

वह यह भी जानते हैं कि जुलूस खत्म होने पर लाश पहुचेगी तो डाक्टर पोस्ट
माटम नही करेगा । सरकारी नियम के अनुसार दोपहर दो बजे के बाद पोस्ट
माटम नही होता । शहर के कल्याण के लिए रोज कितनी ही लाशो की चीर फाड
करनी पडती है डाक्टर को । आखिर वह भी तो आदमी है । अतएव उन्हे पता है
कि एच० एफ० 37 का पोस्टमाटम आज नही होगा । लाश ठडे कमरे मे जमी
रहेगी । इसलिए स्नेह विगलित स्वर मे उन्होंने भतीजे को सात्वना दी । उन्होंने
पहले ही समझ लिया था कि इस आदमी से उनकी पावेटो का वजन बढना सभव
नही है । आजकल इन दरिद्र वेश धारियो पर विश्वास करना बडा घातक सिद्ध हो
सकता है । इसी तरह के लोग झट से एम० एल० ए० या किसी बडे दादा की
चिट्ठी पाकेट से निकाल लेते हैं ।

इसीलिए थानेदार साहेब कानून की आँख बचा कर भतीजे से बातें करने
लगे । अब वे बुरे दिन नही रहे कि टेबुल पर किसी अपरिचित लडके की परछाइ
पडते ही चौंककर जेब मे पडी पिस्तौल पर हाथ डालना होता था । उन दिनो
युवको से मीठी बात करने से कोई दोस्ती नही होती थी । आजकल उनकी बात
चीत बडी किताबी होती है फिर भी उसमे आतरिकता होती है । थानेदार आदमी
अच्छे ही थे । इसके अलावा आजकल थाने मे घुसते ही हवा मे घुली पसीने-खून-
मूत और सिगरेट की गन्ध के बावजूद परम शाति महसूस करते थे, क्योकि एक
नये ज्योतिपी से थाने की जन्मपत्री बनवा कर उन्हें पता चला था कि उस पर
बृहस्पति की कृपा है ।

मन के भीतर की वह परम शाति हृदय से बूद बूंद करके उमड रही थी ।
आखें घुमाते ही धूलभरी फाइलो के चारो ओर, कोने अतरे से उन्हे लक्ष्मी, गणेश
और काली के दशन होने लगते थे ।

उन्होन भतीजे से पूछा 'क्या चाहते हो, बोलो ।'

"मैं कह रहा था चीर फाड न करके अगर ।"

'ऐसा भी कही होना है । पोस्टमाटम तो करवाना ही पडेगा, नही तो हम
बडी मुश्किल मे पड जायेंगे ।"

'उसमे ता बडा टाइम लग जायेगा ।

''ओह होह ! हस्पताल से हमे खबर मिल गई है । टाइम ज्यादा कैसे लगेगा ।
और टाइम लग भी जाय ता क्या हुआ ? मरा हुआ आदमी लौट तो आयेगा नही ।
परेशान न हो । मगलवार को लाश पा जाओगे ।'

"मगर रविवार को मौसी मरी हैं, मगलवार को तीन दिन हो जायेगा।"

"वह तो है।"

"अपघात मे मरी हैं। मुर्दा पडा रहे तो बडा पाप होता है। श्राद्ध, शांति जल्दी खतम करना जरूरी है।"

"वह कोई ब्राह्मण का मुर्दा तो नही है ?"

"मेरे मौसा कठी लिए हुए हैं। सब काम बामनो की तरह करती हैं।"

थानेदार समझ गये लडका निहायत विभ्रांत हो उठा है। लगता है इसके पीछे कोई दल नही है। अकेला ही है। फिर उनके मन म दया उछलने लगी। ममता के साथ उन्होंने कहा, "देखो बेटा, पुलिस होने मे क्या मैं आदमी नही हूँ। इन सब मामला मे सभी दया माया करते हैं। पर झट् से पोस्टमाटम खत्म करना क्या मेरे हाथ मे है ? पहले रेल-पुलिस की अनुमति लेनी होगी।"

"रेल-पुलिस से क्यो अनुमति लेनी होगी ?"

"मुर्दा तो अभी रेल-पुलिस की प्रापर्टी है। ऐसा करो, तुम सियालदा चले जाओ। रेल-पुलिस स लिखा लाओ। इधर हम हस्पताल को बोल देंगे। रेल-पुलिस की चिटठी हाथ म होगी तो हम लाश आज ही काटापुकुर भिजवा देंगे।"

"आज यह सब हो जायेगा ?"

'जरूर। दोपहर बाद चीर फाड होकर लाश तुम्हें मिल जायेगी।"

भतीजा पिछले चौबीस घटो से सिर्फ चक्कर काट रहा है। अब उसकी देह मे सुस्ती उतर रही है। पेट के अन्दर अंतडियाँ सिकुड ऐंठ रही हैं। अब अगर उसे थोडा खाने को मिल जाता तो कितना अच्छा होता, मगर मौसा और उसके भाई का यह कहना कि तुम शहर के लडके हो। सब जानते हो।" जैसे उसके ऊपर एक बहुत बडे दायित्व का भार डाल गया था। एच० एफ०37 जैसे किसी नाटक कम्पनी का अधिकारी है, जिसने भतीजे को एक वयस्क, अभिज्ञ, चालू और क्षमतावान पुरुष की भूमिका मे उतार दिया है। अतएव बासन माँजनवाली एक गरीब औरत के अभागे अप्रेंटिस मिस्त्री लडके की भूमिका छोडकर वह इस अयथार्थ तथा आरोपित भूमिका में काम कर रहा है। उसने मौसा को घर भेज दिया, बोला मैं हूँ न। तुम निश्चिंत होकर जाओ। नहा धो कर जो कुछ मिले खा-पी कर आराम करो।"

खुद एक कप चाय और दो बिस्कुट खा कर वह सियालदा चला गया। पहले तो जगह ढूँढने में उसे देर हुई। फिर ट्रेनों से उतरते यात्रियो की भीड और जुलूस के तातो से पिंड छुडाकर जब वह किसी तरह रेल-पुलिस के दफ्तर पहुँचा तभी बिजली चली गयी।

रेल पुलिस के थानेदार पहले तो चौंके, फिर जैसे एक शब्द बोलने के परिश्रम से हुए पसीने म भीग कर, कैलेंडर मे स्नान करती, पार्वती की तस्वीर की तरफ

देखते हुए ऊँघने लगे। थोडी देर ऊँघने के बाद आँख खुली तो भतीजे को खडा देखकर बोले, "बिजली आने दो। बत्ती जले, पखा चले तो कुछ हो। मुझसे एसी गर्मी मे काम नही होता।"

भतीजे ने कहा, 'थाने से आपके पास भेजा है।'

"तो क्या? यह क्या उनका मुर्दा है? हमारा मुर्दा है। हम अपनी सुविधा से काम करेंगे। समझे?"

"मुर्दा खराब हो रहा है बाबू।'

"होने दो। चलो, बाहर निकलो।"

"बाबू, दो बजे के बाद काँटा पुकुर मे लाश नही लेंगे।"

"कौन कहता है? थाना बोलता है क्या? हमे काँटापुकुर का टाइम दिखा रहा है? एँ? मैं कितनी लाशें काँटापुकुर भेजता हूँ जानते हो? हुँह! चले हैं मुझे काँटापुकुर का टाइम दिखाने।"

एक बजे बिजली आई। डेढ बजे भतीजे के हाथ मे एक चिट आई, जिस पर लिखा था, 'पोस्टमाटम के बाद ही एच० एफ० 37 की लाश उसके परिवार के बैरागीचरन नाइया को दी जायेगी।'

अढाई बजे भतीजे ने वह चिट थाने मे दी। अब दूसरे थानेदार डयूटी पर थे। सभी थाने के लोग उस वक्त बहुत बेजार थे। शातिपूण जुलूस शुरू हो गया था। सभी उसी से चिपके हुए थे। थानेदार ने कहा, 'कागज रख दो। मगलवार को आना।'

भतीजे को लगा वह एच० एफ० 37 द्वारा दी गयी भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाया। असफल हो गया। एकाएक वह रो पडा। सत्रह साल के चौडे चेहरे वाला वह लडका रोते हुए बहुत बदसूरत लग रहा था।

थानेदार "अरे! अरे! यह क्या?" कहते हुए कुर्सी पर सीधा होकर बैठ गये। बोले, 'रोने से क्या होगा? हाँ, एक काम कर सकते हो।

"क्या?"

'तू अलीपुर पुलिस हस्पताल मे चला जा। वहाँ की इचार्ज महिला डाक्टर के पाँव पकड कर लेट जा। अगर वह राजी हो जायें तो कल सवेरे 9 बजे तक हम लाश काँटा पुकुर भिजवा सकते हैं।"

"जी आज नही हो सकता?'

नही, नही। हमारा आदमी जायेगा मौके पर तफसीस करेगा तब तो लाश भेजी जायगी।"

सवेरे जो थानेदार साहेब थे उन्होने कहा था ।'

"जाओ, जाओ। बेकार मे बहस मत करो। और देखो, डाक्टर से जो बात चीत हो यहाँ आकर हम बता देना। तुम्हारा क्या? सब फालतू ।"

भतीजे ने सोचा तीन बज रहा है। उसे अलीपुर पैदल ही जाना होगा। एक

तरफ से पैदल जाकर दूसरी तरफ से बस में आ सकता है। दोनों तरफ का बस भाड़ा जेब में न था। इसलिए वह भयंकर धूप में पिघलते हुए तारकोल वाली सड़क पर अपनी हवाई चप्पल फटफटाता हुआ चलने लगा। उसके शरीर में बिजली की सप्लाई कभी आती कभी बंद हो जाती। दिमाग में अचानक लोड शेडिंग हो जाती। कल से पेट में दाना नहीं गया था। दो बार चाय बिस्कुट लिया था उसने। मगर वह चक्रव्यूह में फँस गया था। किसी तरह निकल नहीं पा रहा था। उसे और भीतर घुसना होगा। और कोई उपाय नहीं है।

पुलिस हस्पताल में वह डाक्टर को ढूढ़ने लगा। मैले कुचैले, धूल से अँटे बरामदे में कुछ लोग ताश फेंट रहे थे। चारों ओर गंदगी फैली थी। केस आते ही चले जा रहे थे। किसी का सिर फटा हुआ था किसी का हाथ टूटा था तो किसी की पसली में घाव था। इतने घायल कहाँ से आ रहे हैं? यह पूछने पर उसे डाँट खानी पड़ी। वह एक खंभे से टिककर चारों ओर निगाह दौड़ा रहा था। गोपाल आलूवाला की मौत पर वह भी यहाँ आया था। इसीलिए डाक्टर को वह पह चानता था। डाक्टर को देखते ही वह उसके सामने जा खड़ा हुआ और अपनी कहानी सुना गया।

पोस्टमाटम के लिए आयी लाशों और उनके साथ आये लोगों की बातें सुनते सुनते डाक्टर को मनुष्य से मानवीय व्यवहार की आशा न रह गयी थी। भतीजे को उन्होंने रोते हुए अपनी बात कहने दिया। सब सुनकर बच्चे को बहलाने जसे स्वर में धीमे से बोले, "इस समय पोस्टमाटम कैसे होगा? मेहतरों की तो छुट्टी हो गयी। समझे कि नहीं? उन्हें बुलाना होगा, उनको शराब पीने का पचास का एक नोट देना होगा।"

'गोपाल के लिए तो हमने उन्हें सिर्फ पन्द्रह रुपये दिये थ।'

"वह कब की बात है?'

"यही, साल हुआ होगा।"

'आजकल उतने में वे मानेंगे? गरीब आदमी का पैसा बेकार में खर्च करवाने की मेरी आदत नहीं। अभी दाह और श्राद्ध भी तो करना ही है। देखो! थाने में जाकर कहो कि लाश पहुँच जाय। मंगलवार को अदालत से आते-आते मुझे दिन के एक बज जायेंगे। उस समय तुम यहाँ रहना। तब मैं घर जाऊँगा। दो बजे तक सबसे पहले तुम लोगों की लाश का पोस्टमाटम करूँगा। जिससे अँधेरा होने के पहले तुम्हारा सारा झमेला निबट जाय।'

"अपघात से मौत हुई है न? इसलिए ।"

"हाँ, पर इसके पहले नहीं होगा।"

"मेहतर अगर राजी हो जाय?'

"देखो अगर पैसों की व्यवस्था हो जाय तो काँटापुकुर आ कर मुझे बता

देना। मेहतरों को भी तो कहना होगा।"

भतीजा अब वापिस थाना आया। वहाँ पहुँचते पहुँचते पांच बज गये। उसकी बात सुनकर थानेदार ने कहा, "कल नौ बजे के पहले लाश पाने पर डाक्टर पोस्ट मार्टम कर देंगे? ठीक है! जितेन! ओ जितेन।"

"क्या कह रहे हैं?"

कल सुबह दो, नहीं तीन लाश लाना होगा।

"नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"डाक्टर पोस्टमार्टम नहीं करेगा।"

"करेंगे बाबू, उन्होंने करने को कहा है।"

"आज अभी तक लाश ढोनेवाली वन उधर ही अटकी हुई थी। हमारी कल ड्यूटी नहीं है।"

पता नहीं क्या बोल रहे थे थानेदार जितेन से। भतीजे की आच्छन्न चेतना और कान में 'रेल बस्ती का इलाका' "मित्तिर आज नहीं, जुलूस में व्यस्त है काम उस बार सितंबर में" इसी तरह के शब्द-खंड तैर रहे थे। अचानक जितेन ने कहा, "ठीक है, जाऊँगा। लाश कल काँटापुकुर पहुंच जायेगी। पर तीन लाशें कौन-कौन सी हैं?"

"इनका रेल-पुलिस का केस, एक डूब कर मरा आदमी और चुल्हाई की लाश तीन हुई न?"

जितेन ने कहा "लाश जायेगी। हस्पताल के ठंडे घर में रहेगी। अच्छा ही है। अगर कल पोस्टमार्टम न हो पाया तो काँटापुकुर में परों के तलवे और आँखें तो चूहे खा लेंगे, मालुम है?"

"नहीं बाबू। अगर ऐसी बात है तो।"

"लाश का बाद में जाना ही ठीक होगा, यही न। नहीं, जितेन दोलुई की जुबान एक है, लाश कल हो जायेगी। कह दिया तो कह दिया।"

भतीजा छह बज के बाद थाना से निकला। इस समय वह सन्न एवेन्यू की विलासपूर्ण सुखी और सुंदर जनता के लिए उत्तप्त किये गये हृदय के साथ साथ चल रहा था अर्थात पाक में से होकर जा रहा था। अब वह भाँटी खाना जाकर मोहल्ले के पालन-पोषण त्राण कर्ता के पास धरना देगा, जिससे एच० एफ० 37 को निःस्व भिखारी की तरह बिना किसी खर्च के जलाया जा सके। और इसी लिए वह उनसे एक सिफारिशी चिट्ठी लेगा।

घर लौटने तक वह धरना देकर बैठा रहा। वह एक चक्रव्यूह के भीतर फँस गया था और हस्पताल के ढेर सारे डाक्टर, थानावाले रेल-पुलिस, पोस्टमार्टम वाला डाक्टर, जितेन दोलुई—सभी जैसे कौरव सेना हैं।

घर लौटते-लौटते वह समझ गया था कि मौरवों की दलबद्धता एकदम पक्की है। क्योंकि घर आकर जब उसने कहा, "मगलवार से पहले नहीं होगा" तब लोग हाँऊ-हाँऊ कर उठे।

तारामणि की पड़ोसन ने कहा, "कहता था इतनी जान पहचान है ? मरी है रविवार को और दाह होगा मगलवार का ?"

माँ, मौसा, मौसा का भाई सभी ने भतीजे पर निष्ठुर, क्षमाहीन आक्रमण किया। लड़का इतना थक गया था कि उसके अदर प्रतिवाद करने की भी ताकत नहीं रह गयी थी कि कहता, "आज जलूस निकाला था इसलिए मुर्दागाड़ी रास्ते म अटक गयी थी। रल-पुलिस के पास भी देर हुई" वगैरह वगैरह। एच० एफ०-37 ने उस जिस भूमिका मे उतारा था उसको निभाने मे वह असफल रहा। वह भी एसा ही सोच रहा था। पर अब उन शोकाकुल, मूढ़, निर्बोध, प्रेतभीत लोगों को देखकर उस लगा, नहीं, उसन अपनी भूमिका का ठीक-ठीक निर्वाह किया था। उसन जो किया है, कोई कमवीर ही कर सकता है। वह जितना पैदल चला, जितने जरूरी काम किये, जितने दरवाजो पर घूमा,वह किसी साधारण आदमी के बस का न था। उसकी क्षुधात, आच्छन्न और अवसन्न चेतना को लगा एच० एफ०-37 सवशक्तिमान है, जिसने उससे इतने काम करवा लिये। उसे लगा उसकी माँ कम से कम हाथ-मुह धोकर कुछ खा लेने का आग्रह उससे करेगी। पर माँ ने कुछ भी तो नहीं कहा। उमे लगा, वह जो जो नहीं कर सका माँ ने उस काम के लिए अघे आक्रोश से उसे बीधा है। फिर भी वह उसे माँ कहता है, बहन को बहन कहता है, रुपया पसा लाकर उन्हें देता है। इस जन्म म उसकी यही एकतरफा भूमिका है। कुछ भी बिना बोले वह उठ खडा हुआ। "सी दैट एच० एफ० 37 हैज अ पीपरस फ्यूनरल" लिखा कागज उसे जुगाडना ही होगा। कल दाह करने के बाद ही वह सोयेगा।

"कहाँ जा रहा है ? पसे दिय जा।"

तारामणि न चीख कर कहा। अचानक उमे याद आया, इतना पैदल चला मौसा के दिय तीन रुपये उसकी जेब के पॉलिथिन के थल मे मुडे हुए और सेफ्टीपिन से अटकाये पड़े ही रह गये, याद ही नहीं थे ?

"रहने दो मगलवार को खटिया खरीदनी है", उसने कहा।

"नहीं, दिये जा।"

उसने चुपचाप रुपये निकालकर माँ को दे दिय और एक गिलास पानी गटा-गट पी कर बाहर निकल गया। पीछे स बहन ने चीखकर जताया, 'भैया, मिस्त्री ने आदमी भेजा था। पूछ रहा था, तुम गय क्यो नहीं ?"

भतीजा कोई उत्तर नहीं देता।

6 सोमवार 7 जून। आज तारामणि और पद्ममणि की जात बिरादरी के

और कुछ लोग आ पहुंचे। तमाम लोगों की बातचीत, आलोचना प्रत्यालोचना, वाद विवाद में क्रमशः भतीजे के प्रति अविश्वास की रचना हुई। सौमा के भाई ने कहा, "सब कुछ अकेले कर रहा है। हमसे कुछ बताता ही नहीं।'

तारामणि ने कहा, 'वह हमेशा से ऐसा ही है।"

सौमा ने पूछा, 'डाक्टर ने एक बजे जाने को कहा था, उसका क्या हुआ? एक बजे जायेगा? उस वक्त जान पर इतनी लाशों की चीर फाड़ कैसे करेगा?'

तारामणि की पड़ोसन ने कहा, "ऐसा कहीं होता है? लाशघर का नियम है कि दिन डूबने के बाद लाश नहीं काटते। सूरज की रोशनी रहते रहते सब काट पीट खतम हो जाना चाहिए। अब एक बजे कहा है या आठ बजे कौन बता सकता है, मैं कहती हूँ तुम लोग अब कल आना।'

भतीजा सोमवार सात जून को और बहुत दूर तक पैदल चलकर बिना खर्चा दाह कराने की चिट्ठी लेने गया और चिट्ठी लेकर ही आया।

7 मंगलवार 8 जून। भोर होने के पहले ही पद्ममणि का पति उसका देवर, उसके दोनों लड़के तारामणि और उसकी पड़ोसन जात बिरादरी के लोग सभी काटापुकुर जा बैठे। भतीजा उन्हें किसी तरह रोक नहीं पाया तो बेहद नाराज होकर घर से निकलकर लेक के किनारे एक पेड़ के नीचे जा सोया। उसके ऊपर बकुल के फूल बरसते रहे और आकाश में विचरण करती हुई चील उसे निहारती रही और जलगंधी हवा उसका माथा छू छू कर जाती रही।

बारह बजे जागकर लेक के पानी से हाथ मुंह धोकर, पेट के ऊपर गमछा लपेटकर वह हस्पताल गया। डाक्टर एक के बदले साढ़े तीन बजे आये। फिर काटापुकुर गये। एच० एफ० 37 की लाश ही सबसे पहले निकली। डाक्टर ने बिना किसी की ओर मुखातिब हुए घोषणा की "अब सूर्यास्त हो गया' और अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। दरवाजे की फांक में अन्दर देखने के बजाय भतीजे को विफल योद्धा कर्ण की तरह अस्तमान सूर्य की ओर देखना चाहिए था, फिर भी वह दरवाजे की फांक से अन्दर झांकता रहा। एच० एफ० 37 की लाश का चेहरा उसे बहुत सुन्दर लगा। सुन्दर लगा लाश का चेहरा, पर उसके पाँव के तलवों में जैसे चूने की लकीरें खिंची हुई थीं।

लाश मिली तो देखा गया आंखों को कोई क्षति नहीं हुई है। चींटियों ने अभी उन्हें नहीं खाया था। पर अपने अधिकार क्षेत्र पर लाशघर के चूहों ने पांवों के तलवों का मांस खाकर खतम कर दिया था और हड्डियों को नंगा कर दिया था। लाश को खटिया पर उठाया गया।

एच० एफ० 37 आखिरकार बिना खरच के बिजली के चूल्हे में चली गयी। भतीजा अब उत्तर की दिशा में चला जा रहा था। कार्तिक घाट का कोई पंडा दाह होते ही अपघात मृत्यु का प्रायश्चित्त श्राद्ध करा देगा। सिर्फ माल भाव

करना था।

सब कुछ निबटा कर लौटते लौटते दस बज गय।

8 बुद्धवार 9 जून। स्वर्णिम प्रत्यूष मे पद्ममणि का पति, देवर बच्चे सभी ट्रेन पर सवार होकर गाव की तरफ चल पड़े। थोड़ी देर बाद भतीजा काम पर गया तो उसे पता चला बिना किसी सूचना के अनुपस्थित होने के कारण उसे नौकरी से हटा दिया गया था।

("समतट' 1977)

समाजवाद बबुआ

अभी जाडा नही आया है। बरसात कैलेंडर के हिसाब से बीत चुकी है। ऐसे मे आधी-पानी के साथ ओले पडने लगें तो किसान माथा पीट लेता है और ठड में कापता निरुपाय बैठा रहता है।

ऐसे ही दुर्दिन मे वह आदमी रात के ग्यारह बजे हाइवे पर अपने इक्के मे बैठा ठड से काप रहा था। उसके गले से एक अद्भुत आवाज़ लगातार निकल रही थी। अपने हिसाब से वह गा रहा था। वास्तव मे मूल गाने के शब्द और लय कुछ और थे, जिन्हे उसने अपने ढग से बदल लिया था।

वह गा रहा था

समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई।
जाडा से आई,
पानी से आई
किसान के सताई, झमेला मचाई,
समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई।

ये शब्द न तो सारे भोजपुरी के थे न खडी बोली के। उस आदमी की तरह ये भी खिचडी थे। सुर भी सथालों के 'करम' गीत की तरह का था। आवाज़ गले मे से ही निकल रही थी पर लग रहा था कि वह दातों के बीच मे निकलती हुई सी सी आवाज़ कर रहा है।

इस अजीब गान को सुनकर जैसे टट्टू को झपकी आ रही था। तभी हाईवे पर एक ट्रक रुकी जिसमे से तीन पुलिस के सिपाही उतरे। ड्यूटी पर बालीबाडी गए थे ये लोग। अब थाने लौट रहे थे। बालीबाडी मे कुछ भी नही है। जो साले तार काटते हैं वे क्या पकडे जाने के लिए वहा बैठे रहेंगे। बडा नाशुकरा काम है साला। नायब दारोगा काम दिखाकर बडे दारोगा बनेंगे। बदमाश तार काट रहे हैं, कि पुलिस पहुँच गयी। कही बैठकर गोस्त रोटी कटी। पाकेट मे नोट। वह भी सुख नही है। साला एकदम नाशुकरा काम है। किस्मत अच्छी थी कि खुद बडा मदन वहां नही था। गुरू होता तो एक-दो पुलिसो को मारकर वही गिरा देता। इसी तरह की बातें करते हुए वे इक्के के पास आ पहुचे।

"कौन है ? जगली ?"

"हाँ, बाबू ।"

"तेरा मीठा गला सुनकर ही समझ म आ गया था ।"

"बहुत जाडा लग रहा है, बाबू ।"

"इतनी रात को यहाँ क्या कर रहा है ?"

"साइट से पठाया है । बाबू आयेगा ।"

"बाबू ?"

"साहू, सामत ने कहा कि दफादार आयेगा । हो सकता है पास मे पैसे हो। तू चला जा ।"

"अच्छी बात है । तो तू गधे, दफादार को लेकर साइट पर जायेगा ? काली बाडी म आग लगी है, कुली कामारी भाग गय हैं । आज रात भला कोई वहाँ जायेगा ? काली बाडी मे बडा मदन नाच दिखा रहा है और काली बाडी मे साहू और सामत का खेल हो रहा है।"

"मुझे जाने को कहा, सो चला आया ।"

'पैसे दिये हैं ?"

"जी, पाँच का एक नोट ।"

"पाच रुपय के लिए ऐसे बुरे वक्त मे तीन मील जायगा ? जा भाई, तेरा नाम ही जगली नही है, बुद्धि भी जगली है ।"

'हाँ, बाबू ।"

"दफादार को दो लाठी मार कर कोई पैसे छीन ले तो ? तेरा चेहरा तो सभी पहचानते हैं । तुझे हथकडी लग जायेगी, तब ?"

जगली हो हो करके हँस पडता है और सिर हिलाता है । फिर बोलता है, 'बहुत पहले माथे पर चोट का एक दाग था । उसे देखकर लोग मुझे पहचान जाते थे । कहते थे जगली बेसरा है । आसनसोल म तुम लोगो ने पीटा तो तीन दाग हुए माथे पर कटने का दाग, पाव की उँगलियाँ टूटी और पीठ पर सिलाई का दाग। उसके बाद धनबाद म बाबू लोगो ने पीटा । अब तो इतने दाग बन गये हैं कि मैं भी नही जानता । कभी तो ऐसे हो गये हैं कि कभी कभी शीशे मे देख कर लगता है मै नहीं, कोई गिद्ध बैठा है। हाँ बाबू, जगली तो सबसे पहल धरायगा ।"

'वाह बेटा ! तीन साल से तू पथीराज का इक्का चला रहा है कालीबाडी से कालीबाडी तक । मगर जगह तो अच्छी नही है ।"

"बाबू आयेगा तो थाने ले जाऊँगा ।"

"जाय तो ले जाना ।"

"बस आयेगी ?"

"सुना है आँधी में पड वगैरह सडक पर गिरे हैं । देख । पर तुझे पैसा

जोरा न जाता, अल्ला मियाँ से नाता।"

'हाँ बाबू अपना घर तो यह ढ्वका ही है।"

अब एक झोपडी डाल ले तू भी। शादी-ब्याह कर डाल। चल, अर जरा गाना सुना दे तो। वही गाना ।'

"अच्छा बाबू।"

कुछ देर बाद सिपाही चले जाते हैं। एक बजे से अभी तक चलने वाला अभियान विफल ही कहा जायेगा। बडा मदन हाथ आ जाता तो दोनो इलाको का कटक साफ। इसीलिए उसे सावधान कर दिया गया। "आज बडे मदन को लेकर लौटूगा' की गर्वोक्ति के साथ अभियान शुरु किया गया था। यह सब पहले भी हो चुका है। आगे भी होगा। पर अभियान की विफलता का दाप जाता है सिपाहियो के सिर। अपराधी को पकडने म जान से हाथ धोकर मरणोपरात मेडल ले कर चाटेगा सिपाही। इससे तो अच्छा है दस आना छ आना ले कर जिंदा रहना। गोद मे आईना रख कर आदमी अपनी दाढी खुद बना सकता है। इस थकान भरे दिन के बाद आधी रात को मुलाकात होती है—जगली बेसरा से। साला, तू जिस दिन आया यहा उसी दिन तेरा नाम-पता थाने मे दर्ज हुआ। विद्युतीकरण योजना का साइट तो कहने भर को है। पूरा साइट बिजली म नहाता रहता है। साथ ही गुडे, ठेकेदार, दलाल उचक्के कितनी तरह के कीडे फतिंगे इस आग म कूदने आ पहुचे हैं। पर तू तो किसी शैतानी म है नही। देह म शिनाख्त के इतने दाग है कि तेरी देह किसी हस्पताल की चादर जैसी लगती है जिस पर धोबियो ने तरह तरह के मार्क लगा रखे हो। अब ब्याह कर घर बसा, तेरे ऊपर थाने का कोई खार नही है। समझा ?'

'क्यो रे जगली ? तेरा समाजवाद वाला गाना अभी चलता है ?

जगली बेसरा चुपचाप बैठा रहता है। मन उसका जैसे झपकियाँ ले रहा है। यह गाना उसके खून मे घुस गया है जा कर बैठ गया है। भुलाना चाहता है फिर भी भूल नही पाता। जगली के गाँव का सुरेंद्र सिंह एक बार डेवरा जा कर जगली को 'मारूँगा-काटूगा" कह कर धमका गया था। वही से सुरेन्द्र जेल गया था।

सुरेन्द्र ने यह गाना जेल जीवन मे नही सीखा था। जेल से बाहर आ कर बिलासपुर मे सीखा था। वहाँ भी उसने ठेकेदार के मुशी को पीट दिया था। गाव लौटते हुए पकड लिया गया। सुरेन्द्र की देह पर भी शिनाख्त करने लायक बहुत से चिह्न थ। सुरेन्द्र सिंह ने अपने शरीर पर लगे सारे जतर बडाम माँ का जतर, बाघू ठाकुर का प्रसाद उतार फेंके। पर बचपन मे कडाही उलट जाने से पेट पर गरम तेल पड जाने से जली हुई चमडी कहा उतार फेंकता।

पकडे जाने के बाद एक जेल से दूसरे जेल मे घूमता रहा वह। राँची जेल से इस गाने की दो लाइनें याद करके लौटा सुरेन्द्र सिंह। ओह ! गाना देश-देशातर

म कितनी तेजी से फैल जाता है जसे हवा म बीज छिटकता है दूर-दूर। उस गाने की एक भी लाइन जगली ने नही सीखी। किंतु सुरेन्द्र सिंह भूमिज को जगली देश-विदेश घूमा एक ज्ञानी-गुनी व्यक्ति मानता था। जगली ने सुरेन्द्र से जा कर पूछा, "दादा, गाँव घर मे तो कुछ बन नही रहा है। एक दफादार था, उसे कभी देखा नही। छातनापाडा का पटवारी तो है। प्रहराज महातो। आसनसोल म कोयला निकालने का काम होता है। मैं चला जाऊँ?"

सुरेन्द्र सिंह का पत्नी के साथ झगडा हुआ था, फिर मेल हो गया था। रोहिणी के हाट से मछली आई थी। चूल्हे पर मछली की बटलोई चढ़ी हुई थी।

"जगली, मछली खा कर जाना।"

"नही दादा। दोपहर मे एक टेमना साप मारा था। पका कर रख आया हूँ।"

"ठीक है। वही खाना।"

"तो क्या कहते हो जाऊँ?"

"जरूर जा। यही गाना गाता चला जा। कोई चिंता नही। मैं कहता हूँ कोई चिंता नही।"

"सुना है आसनसोल बहुत दूर है।"

"दूर है तो क्या? रेलिया ना बैरी जहजिया ना बैरी। उहे पइसवा बैरी ना। देशवा देशवा भरमावे, उहे पइसवा बैरी हो। रेल पर सवार हो कर चला जा। गाँव मे तेरा है ही क्या? मकान भी तेरे काका का है। अपना कहलाने वाला कोई है नही। और ब्याह भी तेरा होते-होते रह गया। लडकी ही कही भाग गई। देश मे गोबर पाथते-पाथते भूखा मर जायेगा। मैं भी चित्तरजन जाने वाला हूँ।"

वही जो घर छोडकर निकला जगली तो फिर लौटना नही हुआ। प्रहराज पटवारी था और मुकुटलाल चड्ढा दफादार, ठेकेदार दिखाई नही पडता। वह जैसे भगवान है, पुतली की नाच का बाजीगर। पीछे से डोर खीचता ह। जैस नचाता है वसे नाचता हूँ।

ठेकेदार दफादार का नाम लेता है। दफादार पटवारी को खोजता है। परि-चित आदमी न हो तो लेबर इकट्ठा करके कौन लायेगा? प्रहराज बाबू टेरिलीन का कुर्ता और अद्धी की धोती पहन कर जूता मचमचाता हुआ माझीपाडा, डोम-पाडा में टहलता रहता है। खाना मिलेगा पसे मिलेंगे, रेल पर सवार हो कर कोयला खान के देश म जायगा। जगली, तू ही उन सबो को समझा "समझाऊँगा, समझाऊँगा बाबू।' जिस छोकरी के साथ ब्याह रचाने वाला था वह तो मेघराइ हेमब्रम के साथ केऊँझोर चली गई। सभी उसे आँखों मे करुणा भर कर देखते हैं।" तू है तो बहुत जगली। पर कोसोमबाला को खाने पहनने को खूब देता था?' "अब हमारा मन ऊब गया है। चलो बाबू, मैं उन्हे समझाऊँगा। गाना गाते-गाते

जाऊँगा।"

रेल गाड़ी चल रही है।" छ छ पत, पत कलकत्ता।" समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई। मेघराई से आई। कोगोम से आई। कोयला-खान की खबर न आई। समाजवाद ।"

"ओय छोकरे ! दोनों के बीच से सिसकारी मार रहा है क्या ?"

"नहीं बाबू। गाना गा रहा हूँ। कोयला खान अब न कोग है ?

कोयला खान का हाजिरी बाबू सिर्फ चावल देता है। राम जाने खाते में क्या क्या लिखना है। "इस बार तो हमारा चौधरा परब है बाबू। पैसे चाहिए। शराब पीनूंगा। गोश्त खाऊँगा। बल बने बस बने कर के गाना गाऊँगा।' 'अभी पैसा कहाँ है ? छ महीने काम कर। दफादार नहीं देता, तो मैं कहाँ से दूंगा ?' 'ऐ दफादार। मुकुटलाल बाबू। पैसा क्या नहीं दिया हुजूर ?' 'मैंने तो हाजिरी बाबू को सब कुछ दे रखा है।' 'बाबू पैसे नहीं दोगे तो काम नहीं करेगा कोई।' "काम नहीं करेगा तो जूते मार कर भगा दूंगा। दूसरा लेबर ले आऊँगा। समझ क्या रखा है ? इतनी हिम्मत ? बाँध दो सालों को जानवरों की तरह।"

खूब मारपीट हुई खूब झमेला हुआ। 'असली बदमाश है जंगली। साले को पकड़ो। बेटा रात दिन समाजवाद बबुआ' गाता है। बेग, गान चल हैं।'

उस समय अपने गाँव के लेबर को साथ ले कर जंगली गाँव पहुँच गया था। 'यही तो है जंगली। सिर पर घाव का दाग है। पकड़ो साले को। चल थाने। तो बेटा तुम्हीं हो लेबर भगाने वाले ? कूट साले को अच्छी तरह। सुअर की तरह पीट। नहीं, बाबू मुकुट लाल, आप दूसरे लेबर से काम कराइए। कितने दिनों से लेबर का काम शुरू किया है ? अरे ! इस बार भी आपकी बीवी को लड़की हुई ? ए हे हे हे हे ! दो दो शादियाँ कीं, दोनों को बेटियाँ हो रही हैं। आपको और हाजिरी बाबू को मारा पीटा था न ? जाइए, देख आइए। क्या हाल बनाया है साले का। पहचान भी नहीं पायेंगे।"

पता नहीं कितने दिन अस्पताल में रहना पड़ा। फिर जेल हुई। नाम जंगली बेसरा संथाल आदिवासी, हिंदू वल्द स्व० नंद बेसरा साकिन हाथीबाँधा थामर काशी, थाना साकराइल। शिनाख्त का चिह्न माथे पर एक इंच लंबा घाव, बाएँ पाँव की उँगली टूटी हुई। पीठ पर घाव सिलाई का इल्लू के आकार का दाग।

जेल से छूट कर हो हो करके हँसा था जंगली। अब कहाँ जायगा ? पाँव की उँगलियाँ टूटी हुई। चलने का ढंग बदल गया। पूरी शक्ल जैसे कुछ और ही हो गई। कुछ दिन चाय की दूकान पर काम किया। फिर शिव बाबू के लिए गेनुआ की हाट से सब्जी खरीदकर शहर लाता रहा। समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई। लाठी से आई भाला से आई। जेल जेल में चक्की पिसाई। समाजवाद । शिव बाबू खाना देता है दुकान में रहने देता है। बाबू का साला आया था, बोला

"दीदी। यह साला तो भात का पहाड निगल रहा है। "अरे समाजवाद ! काम करेगा, काम ?

"माटी काटने का काम है। ढेर सा पसा मिलता है।" "दीदी, मैं तो हाजिरी बाबू बन कर बडा चादी काट रहा हूँ। कपनी मिट्टी कटाई फुट के हिसाब से देती है। मैं लेबर लाता हूँ भात पर। मिट्टी मे सोना बरस रहा है। क्या रे जगली, चलेगा।' वहाँ लोग गाव से आयेंगे ?" "हाँ बेटा, सभी तो सथाल परगना के हैं।'

"सथाल परगना।"

मन के भीतर बहुत गहरे कुछ नाम हिलने डुलने लगते हैं। गोड्डा, हाँसडीहा, तिलाभीटा, बारहारोआ वगरह नाम नये पानी की मछलिया की तरह तैर कर उपराते है फिर डुबकी लगा जाते ह। "सुरेन दादा भगनाडीही गये थे। उनमे स कोई भी सथाल परगना नही गया था।" उनका इलाका साकराइल, नारायनगढ और थाडग्राम थानो तक सीमित है। पर वे भी तो सथाल है। अपनी भाषा म बात करेंगे।

"कहा जाना होगा, बाबू ?"

"धनबाद से बहुत दूर।"

इस समय जगली बेसरा के लिए बाबू का साला और धनबाद समाजवाद होकर आये हैं।

"काम कर सकेगा ?'

"जरूर कर सकूगा, बाबू। माटी मे पाँव धँसाकर कुदाल चलाऊँगा। पैसा मिलेगा न ? पैसा पाता तो अपने गाव चला जाता।"

धनबाद से बहुत बहुत दूर। वाह रे। कितनी लबी चौडी जमीन पर काम हो रहा था। काम की मूल ठेकेदारी है किसी अँगरेजी नाम वाली कम्पनी के नाम। बडे अफसर सामने नही आते। आँखो से दिखाई नही पडते। दफादार और हाजिरी बाबू, चाँदी काट रहे हैं। वधमान, बाकुडा मेदिनीपुर सथाल परगना, भागलपुर, धनबाद, आदि जिला से आये लेबरो का मेला सा लगा रहता।

जगली बेसरा के गैंग मे उसकी जाति का कोई न था। और गैंगों म थ, पर उनका आपस म मिलना जुलना मना था। बाँस के टट्टर की टाट स छा दिया गया था। उसी मे उनका आवास था। पाँच सौ किलोमीटर लबी नहर खोदी जा रही थी। काट कर निकाली गई मिट्टी के पहाड खडे हो रह थ, जिनसे बाद म दूर दराज के गड्ढे पाटने का काम करेंगी लारियाँ। लेबर एक-दूसर से बातें नही करेंगे। हर दफादार गुडो के एक बडे दल को साथ लेकर बीच-बीच म बने तबुओ मे रहता है। गुडे ठेकेदार के हैं।

ठेकेदार का क्या है ? बोलो ठेकेदार का क्या है ? कपनी फुट के हिसाब से पैसे देती है। इतनी क्यूबिक फिट काटने पर इतना पैसा। कपनी के हिसाब से

तुम्हें रोज बीस-बाइस रुपये मिलने चाहिए। पर ठेकेदार, दफादार, हाजिरी बाबू गुंडे सभी का उसमे हिस्सा है।

तो तुम भर पट भात खाकर खटो। खटते रहो। तुम्हारे लिए तीन या हद से हद चार रुपये रोज। बाकी शायद जमा हो रहा है। हजार आदमी काम कर रहे हैं। कपनी रोज बाइस हजार रुपये देती है। चार पाँच हजार खच होता है। और बाकी ? समझो क्या होता है ?

कुछ ही दिनो म जगली के मन ने कहा—समाजबाद बबुआ माटी से आई। जितना ही सूखा पडेगा, जितना ही पट जलेगा, उतनी ही मिट्टी फटेगी, उतना ही होगा समाजवाद।

शाम को जगली झोपडी के चारो ओर घूमता और गाता। एक दिन यही गाना सुनकर मुकुटलाल चड्ढा घूम कर खडा हो गया।

तू जगली बेसरा है न ?

"हाँ बाबू।'

"यहा भी आया है ?"

क्या करूँ बाबू ?'

"देखना कोई बदमाशी मत करना। यह आसनसोल नही है। खोद कर गाड देंगे ये लोग।"

जगली ने शराब की डकार लेकर कहा था, 'क्यो ? ये तो उधार मे शराब देते हैं। खोराकी देते हैं। बाह्य परब मनान देंगे। तब सुअर देंगे, शराब देंगे। इहू तू बुरा क्या कह रहा है ?'

"मर साले मेरे गैंग के आस पास आया तो मार कर फेंक दूगा। याद रखना।'

"हाँ, हा। याद है ? तेरा मन इतना तीता है, इसी से तो बेटा नही हो रहा है।"

मुकुटलाल उस समय गुस्से से लाल होकर चला आया। पर उसका मन बडा पेंचवाला है। उसने चारो ओर बाल फला दी। गुंडे उसे जब-तब धमकाते रहते। हाजिरी बाबू कहता लेबर रे, लेबर को भडकाना नहीं। जगली सोचता और किसी गैंग म तो जाता नही मैं। वहाँ अपने लोग गाते हैं मादल बजाते हैं। मन कितना अकुलाता है उनके पास जाने को। अपने गग मे भी कोई बात नहीं करता। एक दिन बधमान के भरत ने कहा था' क्या कहूँ बोल ? तेरे सग मिलने जुलने से भगा देंगे य लोग।"

अब उस गान के अलावा जगली के पास क्या रह गया था। अकेला आदमी। भीमकाय शरीर। मन चाहता है किसी से दो बातें करे, हँसे गाये। यहाँ तो बेडा बध गया। वह सुरेन दादा का सिखाया गाना। हे समाजवाद ! तुम कितनी चीजो से कितनी धीमे धीमे आ रहे हो ? बेडा से आई, शासन स आई। गुडन की लाठी

और लाल लाल आँखिन से आई। समाजवाद है। "धुत् साला ! यह भी कोई गाना हुआ। मैं क्या गाना वाना जानता हूँ ? दुखी मन को भुलाने के लिए गाता हूँ, भुलाने के लिए गाता हूँ और शराब पीता हूँ। ओ साले जगली। इतनी शराब पियेगा तो घर जाने को पैसा भी नही बचेगा। जाओ भागो, भरत ! मेरे साथ बात करने से तुम्हारी नौकरी चली जाएगी। मैं बुरा हूँ। मैं लेबर भगाता हूँ।"

पर उसी जगली को मैदान मे उतरना पड़ा था। "अधिकारी है ! तुम सूता टानो।" और जगली बेसरा के शरीर का नक्शा बदल गया। शिनाख्त के कुछ और दाग बढ गये उसके शरीर मे। ठेकेदार ! कपनी अधिकारी हो। तुम्हारी शिनाख्त नही कर सकता कोई। तुम सिर्फ नाम हो। तुम्हारा शरीर भी नही है, उस पर कोई दाग भी नही है। समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई। ठेकेदार स आई। कपनी की गाडी पर बैठ के आई।

गैट, मैट, फैट। हाथ मे चुरुट, मुह मे अगरेजी। दफादार दौड रहे हैं। धूप मे खडे होकर मीटिंग कर रहे हैं। दपादप काम खत्म करो। दपादप माटी काटो, लेबर से जल्दी काम कराओ। टाइम से काम पूरा न हुआ तो सब गुड गोबर हो जायेगा। पैसा और मिट्टी। मिट्टी और पसा। मिट्टी का पहाड और ऊँचा करो। गैट, मैट, फैट। फिर गाडी पर बैठकर कपनी पो-पो करती चली गयी। बाप रे। लाल मुँह, जैसे लोधापाडा से बापूत देवता आ गये हो।

हेइ ! माटी काटो। दपादप माटी कटो। झनाझन रुपिया लो। काम खतम करके अपने घर जाओ हँसी खुशी के साथ।

मुकुटलाल ने मिट्टी के पहाड पर एक बाँस गाडा था। उसके ऊपरी सिरे पर रूमाल से बधा एक सौ का नोट झूल रहा था। वहाँ तक मिट्टी के पहाड की चोटी पहुँच जाय तो गग के तीसो जनों को एक एक सौ रुपये दिये जायेंगे। पैसे के लिए ही तो खटने आये हो ?

सथाल परगना के आदमियो का उत्साह अछोर। सारोआ, जार मुडी और बाबू हाइत के निवासी सथाल दपादप कुदाल भाँज रहे है। किनारे पर पहाड खडा कर रहे हैं। "मिट्टी दूर फेंक। मिट्टी धसकी तो अठारह फिट मिट्टी के नीचे कबर बन जायेगी।"

—"बाबू पसा दोगे न ?" "अरे भाई। जान बचेगी तभी तो पैसा पाओगे ?" दफादार कहाँ हैं ? और कोई तो पैसे नही दिखाता ? यह क्या पैसा दिया रहा है ? दफादार तबू मे ताश खेल रहे थे।

जगली ने दूर से बाँस की चोटी पर रूमाल देखा था। देख रहा था समाजवाद आ रहा था उस नोट को छू लेने की दुर्निवार, अबाध जिद स। देखत देखते बाँस लुढक पडा। देखते-देखत धसकती हुई मिट्टी का हाथ पकडकर, भयकर आतनाद और चीत्कार थम जाने पर, समाजवाद आया।

जगली दौडा हुआ गया था। लालटेन, टार्च, दौड भाग। सभी काम छोडकर आ गये। गुडो ने रस्सी से उस जगह के चारो ओर एक घेरा बना दिया। 'कुदाल मत चलाना, सावधानी से मिट्टी हटाओ। पुलिस को खबर दो, पुलिस को। कपनी को बुलाओ।'

बाघ की तरह जगली दौडकर गया था और मुकुटलाल को पीटने लगा था। गुडों ने उसे घेर लिया। सन सन कुल्हाल भाँजने लगा जगली। 'हटो, मेरे सामने से। दफादार को माटी के नीचे कबर देना है मुझे। छोड दो मुझे, बेहोश मुकुटलाल जमीन पर पडा हुआ था।

उन्होने रस्सियाँ काटकर जगली के सिर पर तवा गिरा दिया था। फिर बहुत से लोगों ने मिलकर उसे पकड लिया था। फिर शुरू हुई उसकी धुनाई। खट् खट्' उसके कधे की पीठ की हड्डियाँ टूट रही थी। पुलिस आ पहुँची थी।

फिर थाना, फिर हस्पताल। अट्ठारह मजदूर मारे गये थे। मुकुटलाल की दफादारी भी छूट गयी। हस्पताल से छूटने पर किसी ने उसे नहीं देखा। मिट्टी के पहाड से गड्ढे पट गये। सूखी नहर वैसे ही पडी रही। बाँध नही बना तो पानी कहा से आता? बाध तो नदी पर बँधना था। अभी उसमे देर थी।

इस बार जगली पर कोई केस नहीं है। हाजिरी बाबू का कालर पकड कर उसने तीन सौ रुपये धरा लिये थे। जगली बेसरा, सथाल आदिवासी हिंदू तो है, पर उसके शरीर मे माथे के घाव मे समाजवाद आया है, पाँव की टूटी उँगलियो और पीठ के घाव मे कधा के अस्वाभाविक झुकाव मे नाक की टूटी हड्डी में समाजवाद आया है। घुघराले बाल हल्का हल्का पक रहे हैं, शरीर थोडा झुक आया है। हाजिरी बाबू ने एक दिन कहा, 'चार-पाँच महीने ही काम करके इतना पैसा खींच लिया। दफादार को तो खतम ही कर दिया। उसका पेट-पीठ एक हो गया है। कमर झुक गयी है।"

अनमने भाव से जगली ने कहा, "हाँ बाबू।"

फिर घूमते फिरते यहाँ आ गया। यह घोडा और इक्का खरीदा उधार मे। तीन वर्ष मे थोडा पैसा चुका दिया है। भवानी बाबू आदमी बुरा नही है। बूढा घोडा और टूटहा इक्का जगली को दे दिया उधार। जगली का गुजर-बसर भी हो रहा है। काली बाडी के विद्युतीकरण योजना के तहत मिट्टी काटी जा रही थी। खातादार साहू और सामत जगली का इक्का किराये पर लेते हैं।

काली बाडी से बालो बाडी तक योजना का विस्तार है। मैदान में झोपडियाँ ही झोपडियाँ हैं। तमलुक का साहू और काँथी का सामत उन्ही के साथ झोपडियो मे रहते हैं। उन्ही के साथ उनका भी खाना पकता है। साइकिल पर बैठ कर अपने लिए मछली वगैरह खरीद लाता है। दफादार के पास से लाया पैसा खतम हो जाने पर दो दिन से चूल्हा ठडा है। साहू और सामत पैसे उधार लेकर भूजा भर्री

ले आये, पर लेबर फूट गये। उन्हे सूखे मुह जगली ने जाते देखा।

अब जगली चाहे तो घर लौट सकता है, पर जाता नही। यहाँ के गाँव दूर-दूर हैं। जगली के इक्के मे औरतें भी बैठती हैं। बूढे लाग बस से उतर कर उसका इक्का पकडते हैं। इसी गाडी मे वह एक पतीली और लोटा रखता है, एक लालटेन भी। दिन मे जहाँ भी जाय, रात मे थाने के सामने आ जाता है। बरगद के नीचे पतीली मे भात पकाता है। उसी मे से निकाल कर खा लेता है। घोडे को खोलकर इक्के मे ही सो जाता है। दुनिया मे न किसी से उसकी दोस्ती है न किसी से दुश्मनी। थाने के रेडियो मे गाने बजते हैं। जगली अपना गाना गाते गाते सा जाता है। इक्के का जुआ बरगद के नीचे की बेदी पर गल दा पलग हो गया। ऊपर बरगद की डाल पात की छत है जा शीत की राक्ती है। पैसे जगली रखता है भवानी बाबू के पास। "जगली घर बसा ले।" 'नही बाबू। कितना कितना भटका सारा जीवन। कुछ चाहते ही शरीर पर दाग बढ जाते हैं। लगता है जगली के लिए कुछ भी नही लिख रखा है भगवान ने। वर्ना कोसोम बाला

अब तो लगता है यह कही बहुत पहले किसी और के जीवन मे घटा था।

आधी पानी म अटकी हुई 'केओझोर टु हबडा' बस अब आयी। थोडी देर मे एक यात्री बस स उतर कर डगर पर चल पडा। सिर से पैर तक चादर म लिपटा यात्री निजन पथ पर अकेले चला जा रहा था।

'बाबू ?"

कौन ? कौन ?"

"साहू बाबू और सामत बाबू ने मुझे भेजा है। साइट पर चलेंगे न ?"

यात्री का गला घरघराता हुआ है जैसे गले मे कफ जमा हो।

"कितनी दूर है ? जाया जा सकता है ?"

"तीन मील।"

"ती न माइल ?'

"तो थाने चलिए।"

'क्यो ? क्यो ?"

"बहुत रात हुई।"

"थाना कितनी दूर है ?"

'दुइ मील।'

"नही, साइट पर ही चलो। रास्ता कितना उजाड है। किसी चीज का डर भय तो नही है।"

"भय डर तो बहुत है, पर आगे पुलिस चौकी है। वहाँ पुलिस रहती है।"

यात्री शरीर का सामने झुकाये इक्के पर बैठ गया। मुह और सिर अच्छी तरह ढँका हुआ था। सिर पर काली टोपी। घरघराती आवाज मे बोला,"साहू

पर ही चलो। कल वापिस कलकत्ता जाना है। रात मे थाने म रहूँ फिर सवेरे साइट पर जाऊँ तो काम नही चलेगा।"

"तो फिर चलिए। अभी पहुँचाये देता हूँ।"

"तुम इस रास्ते से रात मे जाते हो ?"

"हाँ, कभी-कभी जाना पडता है। चल बेटा पखीराज जरा कदम बढा के।'

"है तो पखीराज ही तुम्हारा घोडा।'

उसके जवाब मे शहरी लोगो की तरह जगली व्यग्य नहीं करता कि यात्री मोटरकार मे क्यो नही जाता, वरन् सरल भाव से कहता है, "बाबू, अभी रिक्शा नही चलता यहाँ। साइट का काम पूरा होने पर रिक्शावाले आ जायेंगे।

"हूँ।"

' यहाँ तो फिर भी रास्ता ठीक है। आगे चल कर तो ।"

"सुनो भाई, मैं बहुत थक गया हूँ। थोडी देर झपकी ले लूँ। साइट आ जाय तो जगा लेना। अच्छा ?"

"हाँ बाबू, सो जाइये।"

इक्का अब कीचड पानी वाले रास्ते पर आगे बढ रहा था। कच्चा रास्ता लारियों के आवागमन से थोडा चौडा पर और खराब हो गया था। भादो की रात के आखिरी पहर मे ठण्डी चाँदनी मे सोये हुए गाँवों के बीच से बूढा घोडा चला जा रहा था। हवा मे बर्फ की चुभन थी। बादल पता नही कहाँ चले गए, चाँदनी हँस रही है, शिशिर की रात म अभी-अभी होकर चुकी वर्षा के कारण कँपकपी के बीच जगली को लगता है यात्री सो गया है।

इक्का चलता जा रहा है। धीरे धीरे गाँव पीछे छूटते जा रहे हैं। मदान चौडा होते होते समुद्र जसा विस्तारित हो जाता है। सामने साइट है। चाँदनी की अस्पष्ट रोशनी मे झोपडियाँ साफ नही दिख रही हैं। बाबू को पहले ही बोल देना चाहिए था कि लेबर भाग गये हैं। रात थाने मे काट कर ही आना चाहिए था। मगर जगली करता भी क्या ? यह बाबू तो बात ही नही करना चाहता था।

वह गाना शुरू करता है—समाजवाद बबुआ समाजवाद कितनी चीजो से आ रहा है तो बस आ रहा है। जैसे वह साइट पर जाता है जाता रहता है। इस बूढे घोडे और खटारा इक्के को लेकर अगर वह देश के सभी साइटो पर पहुँचना चाहे तो अनन्त समय लगेगा। अगर जगली के पास अनन्त समय हो तो क्या कभी सचमुच समाजवाद जगली के पास आ पहुँचेगा ? ओह ! कितना धीरे आ रहा है समाजवाद ? माटी से आई, लेबर से आई। समाजवाद बबुआ धीर धीरे आई। और जगली का इक्का समाजवाद की तरह ही धीरे धीरे चला जा रहा था।

'ना ना ।

चाँदनी, मदान, शीत और नीरवता को यात्री के विकट विकृत चीत्कार ने

सहसा चीर दिया। इक्का बुरी तरह हिल उठा। पक्षिराज भी झकोरा खाकर हिनहिना उठा। यात्री इक्के पर से कूद कर नीचे आ गया।

"क्या हुआ, बाबू ?"

"ना, मैं नही जाऊँगा। तुम वही जगली हो न ?"

मुकुटलाल चादर फक कर भाग खडा हुआ। जगली की चेतना पर सडाक् स बिजली का हन्टर पडा। तो यह वही मुकुटलाल है और वही जगली। जगली का चेहरा भी बहुत बदला है और मुकुटलाल का भी। मगर यह कैसा अद्भुत काण्ड है ? आज की रात, बूढा घोडा और खटारा गाडी, गाडी मे पतीली और झूलता हुआ लालटन। इतनी सा ही है जगली की दुनिया। जगली के शात विचार बुद्धिहीन मन म यह कैसा अधा आवेग उमड रहा है। मुकुटलाल ने पहले भी दो बार जगली के जीवन को जड मूल से उखाडा था। आज फिर वह उस उखाड फेंकने आ पहुँचा है। साले, मैं तुझे ढो रहा था, अगर जरा भी पता चल गया होता।

'अरे मुकुटलाल ! ओ बाबू ऊ" जगली भी दौडने लगा।

धीरे धीरे आयी।"

धीरे ही तो आ रहा था, तो फिर दौडने क्यो लगा ?

जगली दौड रहा था। भयकर जिद म दौड रहा था। पहचान नही पाया, सो बात अलग थी। पर पहचान जाने के बाद जगली कैसे उसे छोड दे ?

चारो ओर विस्तारित मैदान। चाँदनी म सचराचर पृथिवी धोई हुई है। दो आदमी दौड रहे हैं लगातार, तीव्र से तीव्रतर।

दोनो के बीच की दूरी लगातार कम होती जा रही है।

(प्रभा, 1982)

चडक

एक मास तक चडक की धूमधाम रहती है। रकेश्वरी नदी की शुष्कप्राय धारा के तट पर कोई गाँव होगा यह बात आसानी से कोई स्वीकार नहीं कर पाता। रकेश्वरी के दोनो तटो पर इकतीस गाव बसे हुए हे। झकपुर स्टेशन पर उतरो, फिर पश्चिम दिशा मे चार मील पैदल चलो धान के खेतो के मेडो पर। फिर रकेश्वरी की धार दिखेगी। रकेश्वरी के जल मे स्नान करके गगा स्नान का पुण्य मिलता है यह तो सभी जानते हैं। पर स्नान करने लायक पानी रकेश्वरी नही देती असाढ़ सावन मे भी उसमे डूबने लायक पानी नही होता। अब रकेश्वरी के किनारे किनारे उत्तर की तरफ चलो। देखोगे, क्रमश नदी का पट बालू ठेल कर ऊँचा होता जा रहा है। दोनो किनारो पर सूखी काश की झाडियाँ, दूर दूर फली बस्तियो वाला सूखा प्रातर मिलेगा। बीच बीच मे छोटे छोटे गाँव। प्राय बीस मील लम्बा यह अचल श्मशान जैसा फैला है। इसके दक्षिण और पूर्व मे सिचाई वाली भूमि है जहाँ सब कुछ हरा है।

रकेश्वरी के किनारे किनारे तीन मील के करीब चलने पर शाकाटी गाँव पहुँचोगे। शाकाटी गाँव मे सबसे पहले तुम्हारी निगाह पडेगी श्मशान दह पर। बीच से कटे घोडे के खुर जसा यह जलाशय आखो को खूब आकर्षित करता है। इतना दाल! इतनी रुक्षता के बीचो बीच ऐसा जल क्या कभी किसी ने देखा है? जलाशय के किनारे पर चढने से तुम्हे एक और आश्चयजनक दृश्य दिखायी देगा। चारो ओर मिट्टी की खूब ऊँची चारदीवारी क बीचोबीच एक अत्यन्त ठिगना मन्दिर। मन्दिर से थोडी दूर पर एक बरगद का पेड जिसकी शाख और जटायें दूर दूर तक फैल कर छाया किये हुए हैं?

इसी मन्दिर के कारण यहाँ सक्रान्ति का मेला जमता है। एक महीने तक मेला चलता है। फिर चत्र की सक्रान्ति के दिन लोग यथास्थान चले जाते हैं। दूर दूर से लोग आते हैं। किसी साल ज्यादा तो किसी साल कम।

नाच न हो तो आदमी जाय ही क्यो, बोलो?

क्या नाच होती है! आदमी के हाथ, पैर और कटा सिर लेकर नाच। नही, नही, जिन्दा आदमी को मार कर उसके हाथ-पैर या सिर लेकर नही होती है

नाच। इन दिनो देवता के लाशघर के डोम को खूब पैसे मिलते हैं। भाई, यहाँ तो लाशें पडी ही रहती हैं, सडती रहती है। उन्हे काटना पीटना भी कोई मुश्किल नही। सब तुम्हारे हाथो मे है। यह एक धम का काम है—शाकाटा का गाजन नृत्य।

"हाँ, हा, पुन के काम मे पाप नही होता। हमारे लिए शराब के पैसे दे जाना।"

इस तरह के पुण्य काय मे लाशधर का डोम उसकी हिफाजत मे रखी गयी लाशो को—चाहे ताजा हो या सडी हुई—बडी खुशी से देता है। न देने की मजाल नही है उमकी। अगर इस काम म सहयोग न करे तो उसका समाज उसे धिक्कारेगा, उसका हुक्का पानी बन्द कर देगा। बूढे सिर हिलाकर कहेंगे, "एक समय था जब हम बडे शूर वीर थे। युद्ध के समय सेना के आगे, पीछे और दोनो पासो मे डोम चलते थे। कितने ही बाजे बजाते थे। अब हम सिफ बाजे बजाते हैं। युद्ध नही करते। और डोम राजा के साथ युद्ध करके मुगल सेनापति शाकाटी ने रकेश्वरी परगना ले लिया था। पहले युद्ध मे हमारी जीत हुयी। उस दिन सक्रान्ति थी। युद्ध जीतकर हमने दुश्मनो के हाथ पाव और सिर लेकर नाच किया था। उस समय हमारे डोम राजा रावणेश्वर का घोडा भी नाचा था। उसी घोडे का खुर जमीन मे धँसा तो यह दह बन गया। इसके बाद हम युद्ध मे हार गये। मुगल सेनापति ने हमारे राजा को मार कर यही पर उसका दाह सस्कार किया। इसीलिए इसका नाम पडा श्मशान दह। पर उन दिनो का कुछ भी तो रहा नही इस नाच के अलावा, जो तुम लोगो को दिखाऊँ। अब लाश देने मे आनाकानी किस बात की। जिसकी लाश है उसकी भी सदगति हो जायेगी। शिव के भक्त ताडव नाचते हैं तो शिव प्रकट हो कर उसे देखते हैं।"

हर साल ठीक समय पर लाश नही मिलती तो खर पतवार का सिर और कबन्ध लेकर नाच होती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि साँप के काटे किसी आदमी की लाश जलाई नही जाती और रकेश्वरी मे प्रवाहित कर दी जाती हैं तो लोग उसे उठा ले आते हैं। रकेश्वरी अभिशप्त नदी है, जलहीन मरुभूमि सी। उसी की बहन बकेश्वरी है जिसम चैत्र तक थोडा-बहुत पानी रहता है।

यह नाच इस अचल के डोमो का बहुत निजी नाच है। बीस मील लम्बे श्मशान पारा का पूरा रूखा, जला हुआ अचल डोमो का अधिवास है। किसी के पास थोडी जमीन है अधिकाश के पास वह भी नही। जलाभाव मे पूरा मैदान सूखे टीलो से भरा है। इनकी जीविका है बाँस खरीद कर टोकरियाँ बुन कर बेचना। सुखी सन्तुष्ट जोवन के दिन स्वप्न की तरह आकर चल जाते हैं। पचायत काम देती है तो करते हैं। पुराने गजेटियरो मे इन्हे अपराध प्रवण जाति कहा जाता था, अब नही कहा जाता। देशी शराब अब यहाँ का स्वीकृत कुटीर-उद्योग है।

व्यवसायी यह शराब इनसे खरीदते हैं। स्वाधीनता के फलस्वरूप जिन्होंने उन्नति की है, उन्हें ये गरीब पिछड़े हुए, अभागे लोग बहुत सन्देह की नजर से देखते हैं। चड़क का यह ताडव नृत्य गाँव के अन्य सभी लोगों के लिए एक भयावह चीज है। वे इसे देखने नहीं आते। उस दिन चड़क पूजा का स्थल इन्हीं के कब्जे में होता है। नाच के प्रति उनके आकर्षण का यह भी एक कारण है।

कई सालों से हरिपद डोम (वह अब नाम के साथ दास लिखता है) इस उत्सव को खत्म करने की कोशिश कर रहा है। शाकाटी और दूसरे इस गाँवों का सबसे सम्पन्न आदमी है हरिपद। उसके सत हर भरे हैं, क्योंकि उसके पास दो दो कुएं हैं। इस अंचल से ताड और खजूर का गुड़ बाहर भेजना जब से उसने शुरू किया है, तभी से उसकी सम्पन्नता भी शुरू हुई है।

कहा जाता है जल में जल बढ़ता है और पैसे में पैसा। हरिपद ने गुड़ के व्यापार के बाद उसी के पैसे से मिट्टी के तेल का डिपो खोला। मिट्टी के तेल के पैसों से गाँवों में हैंडपम्प लगाने का ठेका लिया। हैंडपम्प का व्यापार शाकाटी के जाग्रत शिव का आशीर्वाद था। सूखी जमीन में हैंडपम्प लगाओ, पानी नहीं निकला इस बहाने दूसरी जगह लगाओ, टूट जाने के बहाने मरम्मत करो या नया लगाओ। हर बार नया बिल पास कराओ। बाबू भी खुश क्योंकि हरिपद बिल पास कराने जब भी आता कुछ-न-कुछ उन्हें दे जाता। इसके अलावा हरिपद अभी भी परिगणित जाति का सदस्य है, इसलिए भी उसकी मदद करना सरकारी नौकरों का कर्त्तव्य है, हालांकि कचहरी में घूस देकर उसने अपनी उपाधि 'डोम' से 'दास' करवा ली है।

हैंडपम्प में से पानी निकलता ही न था। पानी के लिए कुएं चाहिए। इसके लिए पाँच आदमियों के साथ बुधिराम ने दरखास्त लिखी। वह दरखास्त उन्होंने दौरे पर आये महकमा हाकिम को दिया। हरिपद को इसका पता न था। उसे यह भी पता न था कि महकमा हाकिम के दिमाग में कीड़े हैं। उन्होंने हरिपद के धनी होने का रास्ता बन्द कर दिया और इलाके में दस कुएँ खुदवाये। कुआ की ठेकेदारी भी हरिपद को नहीं मिली। कुआ में खूब पानी निकला। गरीब आदमी की प्यास मिटी।

हरिपद ने इस पर ग्राम समाज में कहा, 'हमारी डोम जाति में एकता नहीं है। कोई किसी की भलाई नहीं देखता। हमारी अपनी जाति का होकर भी बुधिराम ने मेरे पाँव पर कुल्हाड़ी चलाई।"

बुधिराम और उसके साथी इस बात पर नाराज हो उठे। उन्होंने कहा, "कैसी अपनी जाति? उसने तो डोम जाति का नाम ही धो पोछ डाला है। टेरिकाट का कुर्ता, हाथघड़ी, साइकिल और दोतल्ला मकान है उसके पास। दो-दो तालाब हैं जिसमें मछली पालता और बेचता है। वह अपने तालाब में अपनी बिरा-

दरी वालो को पाँव भी धोने नही देता। गन्दा जानवर कहता है हम। कहता है पानी गन्दा कर देंगे हम। शहर मे जाकर नेता बन गया है। गाँव मे इसकूल नही है। उसके लिए कभी कोशिश नही की। अपने बच्चो को शहर में रखकर पढा रहा है। यहाँ न रास्ते हैं न पीने का पानी। उसको तो कोई तकलीफ नही है। गाव मे कौन मर रहा है, कौन जी रहा है—कभी देखता है। वह तो बाबू समाज का है। डोम समाज का थोडा ही है।"

हरिपद यही बात शहर के बाबुओ से कहता रहा है। कहता है, "बाबू, शाकाटी का डोम मानकर मत देखो मुझे। मुझे उससे लाज आती है। मैं तो तुम्हारा आदमी हूँ।"

उसने सोचा था अपनी बिरादरी को छोड देने का वह अधिकारी है। पर वे भी उसे त्याग देंगे यह बात उसके दिमाग मे नही आई थी। इससे उसे धक्का लगा था।

"मैं क्या तुम लोगो का कोई नही हूँ?"

"नही, कोई नही हो तुम। तुम्हारे घर से हमे शीतला पूजा, काली पूजा का चन्दा नही मिलता। डाइनामो लगाकर बिजली मे तुम अपनी पूजा अलग से करते हो। उसमे हमे नही बुलाते, हाकिम हुक्काम को बुलाते हो।"

बुधिराम ने एक और बात भी कही थी, "मेरे बाप ने तुम्हे गोद मे खेलाया है। बापू तुम्हे कन्धे पर चढाकर इसकूल पहुँचाने जाता था। बापू और मैं अब तुम्हारे खेत मे खटते हैं। तुम हमारे ऊपर सूद चढाते हो।"

केदार ने भी चुटकी काटी थी, "वह बिरादरी के हिसाब से तुम्हारा ताऊ लगता है। खर, वह सब बात छोडो। तुम पर भरोसा करके हमे पीने को पानी तक नहीं मिला। अब मिला, जब तुम्हारा भरोसा छोड दिया। आदमी कीडो-फतिगो के पीने का पानी तक नही छूता। तुमने उससे भी पसा कमाया। हमे तो फिर भी श्मशानदह का पानी मिल जाता था, पर वडा शुजापुर, काकरा, बानीचक के लोग कसे जिन्दा रहेंगे हरिपद बाबू?"

'बाबू' शब्द के व्यग्य से हरिपद की देह मे आग लग गयी थी। हालांकि एक बार उसी ने कहा था "बाजार हाट मे भेंट होने पर 'बाबू' नही कह सकते तुम लाग?'

'हरिपद समझ गया था कि वह अपने समाज से बहिष्कृत हो चुका है। एक शानदार दोतल्ला हवेली का मालिक होने हुए भी उसके मन मे डर समा गया। लगा था वह अकेला पड गया है। मगर फिर एक अधा क्रोध उमडा था उसके भीतर। "बुधिराम और उसके बदरो को देख लूगा।"

इसके बाद हरिपद सबसे ज्यादा लाभ कमाने वाले व्यवसाय मे लग गया। उसने सूद पर उधार देना शुरू किया। रोज सवेरे अपने कधे पर बहँगी रख कर

वह तारकेश्वर जाकर जल चढाता और लौट कर सूद का धधा चलाता। उन्नीस सौ सत्तर और इकहत्तर मे वह गाव मे नही रहा। शहर मे रहता था। उन्नीस सौ बहत्तर म वह फिर गाव मे मुश्तकिल होकर रहने लगा। इन्ही दिनो उसने बकेश्वर के मोड पर स्थित बहुत दिनो से उगी मजबूत बासा वाली बसवाडी का इजारा लिया। बहुत दिनो से बास का यह जगल इस इलाके के डोमो का अन्नदाता था। बास के जगल की नीलामी होती थी। काकरा का पतित डोम पहले यह जगल खरीदता था। जितने दिन उसन खरीदा डोमा को कोई परेशानी नही हुई। हरिपद क हाथ मे जाते ही बासो की कीमत बढ गयी क्योकि हरिपद शहर की सभा-समितियो और विवाह श्राद्ध आदि मे पडाल बनान वाले डेकोरेटरो को बाँस बेचने लगा।

बुधिराम और उसके साथिया ने इस मामले को लेकर हरिपद से काफी वातचीत की। पर हरिपद का एक जवाब, "मैं तुम लोगो की सारी परेशानी समझता हूँ, पर वे मुझे फी बास चार रुपये देते हैं, तुम दोगे ? बोलो ?"

'हम दे सकते तो बात ही क्या थी ?"

'मैं कुछ नही जानता। सभी जातियो के लोग उन्नति कर रहे हैं, पर तुम लोगा की भिखमगई नही जा रही है।"

बुधिराम के बाप ने कातर स्वर मे गुहार लगाई, "हरिपद, मेरे बाप बास जगल जनम से मरन तक का हमारा साथी है। उसी से डोलची, खाचो बनाकर हम जीते हैं। वह हमारे हाथ से चला गया तो हम जिंदा कसे रहेगे ?"

"तो फिर तुम लोग अपनी अपनी जमीन म बास लगाओ जाकर।'

बुधिराम ने कहा 'हमारे पास जमीन होती तो तुम्हारी सलाह माँगने नही आते हम। शाँकाटी म किसके पास जमीन है ? सब जानते-बूझते भी तुम ऐसी बात कह कैसे गये ? हम जो दाम पहल से देते आये हैं वही देंगे। हमने भादर म घर घर से अगाहीर (एडवास) लिया है माल ता देना ही पडेगा ?"

"वह मैं जानता हूँ। मैंने क्या बास का काम नही किया कभी ?'

'तुमने तो नहीं, तुम्हारे माँ-बाप जरूर करते थे। वह बात ध्यान म रख कर विचार करो।'

"तेरी यह हिम्मत ? तू मेरे बाप तक चढ गया ?

इसे बाप तक चढना कहते हैं ?'

इसके बाद काफी झमेला हुआ और अत म हरिपद ने चेतावनी दी, "दाम तो बढाना ही होगा वर्ना वहाँ तुम लोग ढुकने भी नही पाओगे। मैंने एक मुट्ठी रुपये भर कर उस खरीदा है।"

बुधिराम ने घर लौटकर अपनी पत्नी विलासिनी से कहा, वह अभी भी हैंडपप वाले गुस्से को भूल नही पाया है।'

बुधिराम की उमर सत्ताइस-अटठाइस की है, शरीर रस्सी की तरह बटा हुआ है और आँखें कटावदार हैं। तीखी निगाह से देख ले तो बडा हिंस्र लगता है। विलासिनी को सभी विलोसिनी कहते हैं। उसकी देह अनावश्यक रूप से दूधिया है। जब वह हाट जाती है तो टोकरियाँ और डालें ज्यादा दाम पर बेचती है। सब माल महाजन को दे दे तो काम नही चलता।

विलासिनी ने पति की बात सुनकर मुह,बिचकाया।

"मुह क्यो विचका रही है?"

विलासिनी एकाएक आँखें नचाकर बोली, 'बाबू को बोलो अपनी बहू को यहाँ ले आवे। बहू को शहर मे रखकर मुआ यहाँ झुरा रहा है। आज दोपहर को मुझे भूजा चूडा देने को बुला रहा था। मैंने जसे सुनी अनसुनी कर दी।"

बुधिराम को बहुत गुस्सा आया। वह इस कमरे से उस कमरे म घूमता हुआ सोचता रहा फिर आप से आप बोला "कुछ तो करना ही होगा नही तो खायेंगे क्या?"

"क्या करोगे?" विलासिनी ने पूछा।

"हम शूर वीर जात हैं। राजा के सग हमारे पुरखे कधे से कधा भिडाकर लड थे। दुसमन का सिर हाथ मे लेकर नाच किया था। अब तो जीने मरने की लडाई करनी है। बास नही तो डोम नही। क्या तमाम इलाके के डोम यो ही मर जायेंगे। पानी नही, जमीन नही, काम देने वाले भी कुल तीन चार लोग। इसलिए बाँस तो हम काटेंगे और अपने पुराने रेट से दाम देंगे। कह आयेंगे कि अगर हो सका तो चवन्नी और दे जायेंगे।"

केदार ने हताश भाव से कहा था "तुम लोग जवान हो कर सकते हो, पर हमारे जैसे बूढे क्या करें? बक्रेश्वरी के पार के डोमो का बीडी बाबू (बी० डी० ओ) भला मानस है। उसन कोपरेटी (को आपरेटिव) कर दिया। जगल महाजन के हाथ नही गया। हमारे हाथ पाँव महाजन क और सिर हरिपद के हाथो मे है। बुधिराम, तू ही बोल तुझे अपने ऊपर भरोसा है?'

"मरो जाकर।"

पहले पहल सारे जवान भी बुधिराम के साथ नही गये। पहले पाँच आदमी गये और बास काट लाये, तब जाकर दूसरो की भी हिम्मत हुई।

हरिपद को उन्होंने पुराने रेट पर ही दाम दिया। हरिपद गुस्से से पागल हो गया पर चुप रहा। दूसरे दिन झबपुर थाने मे उसने बुधिराम के नाम रपट दज करायी।

इसके बाद जो हुआ वह काकतालीय न्याय से ही समझा जा सकता है। एक दिन हरिपद कोमरडीह की चाय की दुकान से अपनी साइकिल उठाकर जब गाँव लौट रहा था तब पता नही किन लोगो ने एक निजन स्थान पर उसको मार-पीट

कर उसकी साइकिल और हाथघडी छीन ली। हाट से लौटते वक्त बुधिराम और रामेद्र ने उसे नदी के स्रोत से थोडी ही दूर पर पडा देखा। वे उसे उठाकर कोमार डीह, फिर झकपुर ले गये। उसे हस्पताल मे भर्ती कराके वे उसकी पत्नी को खबर देने गये।

हरिपद के साले ने "चाय पिओ, आराम करो जल्दी क्या है थोडा और ठहरो" आदि के बहाने उन्हे अटकाये रखा और थाने मे खबर कर दी। उधर हस्पताल म होश आते ही हरिपद ने "बुधिराम ने मारा है।' कह कर पुलिस को बुधिराम को गिरफ्तार करने का अच्छा मौका दे दिया।

थाने मे पिटाई, फिर धमकी फिर पिटाई, फिर धमकी का दौर चला, फलस्वरूप बुधिराम भी उसी हस्पताल मे भर्ती हुआ, जिसम हरिपद को उसने भर्ती कराया था। हरिपद कुछ दिनो मे चगा होकर घर लौट गया। बुधिराम चगा होकर घर नही लौटा। दफा 393,387 आदि के सभावित अपराधी के रूप मे वह जेल मे ही प्रतीक्षा करता रह गया। मगर इसी सभावित स्थिति मे उसने एक दूसरे कैदी का गला काटने का प्रयास किया। स्वभावत ही हाथ मे उसके कोई हथियार न था। आक्रात व्यक्ति का चीत्कार सुनकर एकत्र लोगो से बुधिराम ने कहा, "वे हमे सिर काटने नही देगे तो मैं क्या लेकर नाचूगा? यहाँ लाशधर किधर है?"

इन बातो का कोई अथ किसी की समझ मे नही आया। बुधिराम के हाथ पाँव बाँध देने का भी कोई फायदा नही हुआ। वह आखें तरेरता और दाँत पीसता रहा और बार-बार एक नर मुड की माग करता रहा। वह पागल हो गया।

वह पागल है और खतरनाक पागल है—इस बारे मे जेल के अधिकारियो को सदेह न रहा। उसे तुरन्त पागलखाने भेज दिया गया।

शाकाटी मे बैठे बुधिराम के बाप और बीवी को यही तक मालुम हुआ। उसके बाद उन्हें बुधिराम के बारे मे कोई सूचना नही मिली। एक दिन बुधिराम का बाप मर गया। कुछ दिन विलासिनी हिम्मत बाँध कर अकेली घर मे रही। फिर एक दिन हाट गयी तो नहीं लौटी। पता चला हाट मे उसके एक रिश्तेदार युवक के साथ उसकी प्राय भेंट मुलाकात होती थी। वही युवक, जो शहर मे रिक्शा चलाता था और अपनी दूर की बहिन, विलासिनी की खोज-खबर लेने इतनी दूर देहात मे आता था, वही विलासिनी को शहर ले गया था। यहाँ पडी पडी क्यो सूखेगी विलासिनी? शहर मे नौकरानी का काम करके भी आराम से गुजर-बसर हो जायगा।

रामेद्र वगैरह को बुलाकर केदार ने कहा, "वह लडका बिना दोष जेल गया अन्याय के कारण पागल हुआ। उसकी बहू भी भाग गई इसम हमसे भी थोडी गलती हुई।'

उन लोगो ने कहा, "हमने तो उससे कहा था कि तुम यहाँ रहो। तुम्हे कोई डर नहीं। हम जैसे खायेंगे वैसे ही तुम भी खाओगी। मेरी मा उसके साथ सोती भी थी। कैसा भाई, कौन भाई इसका तो हमें पता भी न था। वह कभी गाँव नही आता था।"

केदार और रामेद्र भी क्रमश बुधिराम की बात भूल गये। उसके बारे मे उनका उत्साह उनकी उत्कठा धीरे धीरे मर गयी। एकाध बार शहर जाकर उन्होने बुधिराम से मुलाकात भी की। बुधिराम अब एकदम शात हो गया था, बेहद शात। इतना शात और स्थिर वह पहले कभी नही रहा। वह चुपचाप ताकता रहा। एक शब्द भी नही बोला। रामेद्र को लगा बुधिराम उसे पहचान भी नही पा रहा है। जो आदमी पहचान भी नहीं पा रहा उसकी खोज खबर न ली जाय तो भी आत्मा को कष्ट नही होता। वैसे भी उनके लिए बार-बार उससे मिलने जाना इतना आसान न था। एक बार मे सोलह रुपये खर्च हो जाते थे। कोई आसान बात न थी।

धीरे धीरे बुधिराम का मकान गिर गया। पहली वर्षा के पानी से घास उगी। घर की दीवार पर चढ कर बकरियाँ घास चरने लगी। चिडियो ने जो निमकौडियाँ खा कर उनके बीज वहाँ गिरा दिये थे उनसे नीम के पेड भी वहाँ उग गये। कई बरसो के बाद नीम और साँईनावला के पेड वहाँ उगे पाये गये। धान उबालने का मिट्टी का कूडा गल गया। कँटीली चौलाई और भकडेर का जगल उग आया।

अचल मे जैसे-जसे अभाव बढ रहा था वैसे वसे ही चोरी डकैती और रहजनी भी बढ रही थी। उन दिनो चोर या डकैत का सदेह होने पर जनता किसी भी आदमी को पीट-पीट कर खतम कर देती थी। पहले भी गाँवो मे इस तरह की वार दात पर काइ कानूनी कारवाई नही होती थी। अब और कुछ नही होता था। पास मे पुलिस चौकी खुलवाने के लिए हरिपद ने खूब भाग दौड की। तरुण एम० एल० ए० ने बहुत गौर से हरिपद की बात सुनी और दूसरे गावो को छोडकर कोमारडीह मे एक और पुलिस चौकी खुलवा दी। देशी शराब का अवैध व्यापार कचौडी पान की बेल की तरह चारो ओर फैल गया था। कोमारडीह से धान-खेतो के बीच होकर एक सडक बनी। शाकाटी नजदीक हो गया। हरिपद ने एम० एल० ए० से प्रार्थना की, "अब रकशवरी के किनारे किनारे भी एक रास्ता बनवा दीजिए, हुजूर। हम तो पहले से जो निर्वासन भोग रहे थे उसी हालत में रह गये।"

एम० एल० ए० साहेब ने सहमति जताते हुए सुझाव दिया कि पचायत की तरफ से भी इस तरह का प्रस्ताव आना चाहिए।

इसके बाद इस अचल के उन्नयन के लिए स्वीकृत राशि की धारा को इधर-उधर प्रवाहित होने से रोक कर उन्होंने उसे बढसुआपुर के दो नबर पचायत की

ओर मोड़ दिया। बहुत जल्दी ही उनके ससुर के गाँव म युवको के लिए एक पक्का क्लब घर और कोमारडीह म बस-यात्रियों के लिए एक पक्का प्रतीक्षागृह बन गये और चौरस्ते पर नेताजी की मूर्ति स्थापित हो गयी। एम० एल० ए० साहेब ने एक तूफानी कार्यक्रम के तहत तीनो विकास कार्यों का उद्घाटन एक ही दिन मे कर डाला और शहर चले गये।

चकपुर मे एक को-आपरेटिव बैंक खुला। हरिपद को कोई बड़ा ठेका नहीं मिला यह सच है पर जैसे तैसे करके उसने दो मिनी बसो का परमिट हथिया लिया। पत्नी से बोला, और कुछ नही होने का। इन लोगो के मन म शड्यूल कास्ट के लिए कोई दया माया नहीं है, समझी? सडक के लिए मेरा टेंडर ही नहीं लिया।"

पत्नी ने कहा सडक नही बनेगी तो मैं तो गाँव जाने से रही। शहर म रह लेने के बाद भला कोई गाँव म रह सकता है? ऐसा करो, सब बेंच-बूच कर यहीं आ जाओ।"

"खरीदेगा कौन? और फिर शांकाटी का शहर कहा से टपकता है जानती हो?"

"तुम्हारे सूद के कारोबार म से।"

चैत के आखिरी सप्ताह म चारो ओर चड़क की धूमधाम थी। और शांकाटी के लोग सूखे चेहरे और पीठ स सटे पेट लिए हुए भी त्योहार की खुशी मे पागल हो रहे थे।

इसी बीच कच्ची शराब के व्यापारी न एक दिन एक शगूफा छोड़ा।

"तुम लोगो के लिए एक खास खबर है।"

"कैसी खबर?

"बुधिराम जेल से छूटने वाला है। आज कल मे ही छूट जायेगा। जिन लोगो को बिना मुकदमा चलाये जेलो मे रखा गया था, उन्हें छोड़ा जा रहा है।"

"क्या कह रहे हो? सुना है वह पागल हो गया है?"

"उसका पागलपन कबका अच्छा हो गया। कोई जेल खाना जाकर खोज खबर नही लेता शायद। इस बार पता नही क्या जेल हाजत सब खाली किये जा रहे हैं।"

'बुधिराम जेल से छूट कर आ रहा है। जानते हो?"

"हाँ, हाँ जेल का डाक्टर बता रहा था।

बहुत दिनो बाद एक बार फिर शांकाटी गाँव मे बुधिराम को लेकर हलचल शुरू हो गयी। बुधिराम के हम उमर और युवको म मे बहुतो को उन दिनो देसी शराब के धंधे मे अच्छा पैसा मिल रहा था। चड़क के समय वे होश म रहते हैं। सक्रांति की रात के पहले नशा नही करते। ऐसी ही इस अंचल मे प्रथा है। साफ

दिमाग मे विचार साफ उभरते हैं।

"चलो, हम लोग उसे ले आये। ला कर हम अपने घर रखेंगे। उसका मन हो तो फिर ब्याह करे। उसका मकान फिर से मदद करके खडा करवा देंगे। जब तक यहाँ रहा, वह पाँच पचो की भलाई ही सोचता था। और जेल भी निर्दोष ही खटा।"

रामेद्र को याद आयी तो उसने कहा, "बेचारा अपनी औरत विलासिनी को बहुत चाहता था। खुद आधा पेट खा कर उसे भर पेट खिलाता था।"

"अरे छोडो भी। ऐसी कितनी विलासिनियाँ जुट जायेगी। उसकी उमर ही क्या है अभी?"

'हाँ औरत तो उसे फिर मिल जायगी, पर विलासिनी जैसी तो नही मिलेगी। कौन कह सकता था कि वह किसी डोम की लडकी है। लगती थी औरत नही दूध भरी पीतल की कलसी है।'

रामेद्र और उसके साथी शहर गये बुधिराम को लेने, पर उसे देखकर उन्हे धक्का लगा। उसके सिर के बाल सफेद हो गये थे, दुबले क्षीण शरीर मे चमकती हुई आँखो के अलावा पुराने बुधिराम की और कोई पहचान नही बची थी। कितना शात कितना स्थिर। उसे देखकर रामेद्र का कलेजा कॉपने लगा। बुधिराम ने कहा था, "मैने सोचा था हरिपद चाहे जैसा आदमी हो, है तो अपने गाँव का आदमी। उसे घायल पडा छोडकर चले जाने की इच्छा नही हुई। जिसकी भलाई करने चला था, उसी ने मेरी जिंदगी मिट्टी मे मिला दी।"

जेल से निकल कर बुधिराम और उसे लेने आये साथी पहले एक चाय की दुकान मे गये। वहाँ उन्होने बुधिराम को चाय बिस्कुट का नाश्ता कराया। फिर रामेद्र ने कहा, "बुधिराम, अब गाँव चलो।"

"बापू कब मरे?" बुधिराम ने इस बात का कोई जवाब न देकर पूछा।

"तुमने कैसे जाना?'

"डाक्टर साहेब ने बताया। उनसे कहा था ।

"समझ गया। मणि साहा ने कहा होगा।"

"विलोसिनी भी नही है?

"चली गयी कही। बुधिराम, तुम मेरे घर रहना। हम फिर तुम्हारा घर बना देंगे और बसा भी देंगे।"

"चलो, चल?"

रास्ते भर बुधिराम ने कोई बात नही की। बीच बीच मे किसी सवाल के जवाब मे मुसकरा भर देता था। फिर भी उसने चडक के बारे मे पूछा। "इस बार कैसा उछाह है? अच्छा केदार काका बीमार है? तो फिर ढोल कौन बजायेगा? काँटा-झाँप और अग्निझाप (दो प्रकार के नृत्य) होंगे न? इस बार किस गाँव की"

पारी थी। किस गाँव ने गाजनतला की सफाई की ? नाच होगी न ? नाच ?"

"नाच तो होगी पर छुर पतवार या मुंड लेकर। आजकल लाशघर से लाश नहीं मिलती। आजकल सब खून कतल और हमला वाली लाशें वहाँ आती हैं।"

'अच्छा ?"

बुधिराम ने बस इतना ही कहा। गाँव पहुँच कर वह रामद्र के घर ठहरा। रामद्र की बहू विलासिनी की सखी थी। बुधिराम को देखकर उसे बहुत दुःख हुआ। पानी का लोटा और गमछा थमाती हुई बुधिराम से बोली, देवर, तुम उसकी बात मत सोचो। तुम्हारे लिए अच्छी से अच्छी लड़की मिल जायगी।'

"जी, भाभी जी।" बुधिराम ने बहुत आश्रित से कहा।

दूसरे दिन सवेरे बुधिराम ने कहा "एक बार जरा घर देख आता हूं।"

गिरा हुआ झाड़ पथार से घिरा बुधिराम का मकान मुतहा लग रहा था। एक तरुण नीम के पेड़ के सहारे टिका बुधिराम पत्थर की तरह खड़ा रह गया। उसका शरीर इतना निस्पंद हो गया था कि एक गिलहरी उसके ऊपर से निकल गयी। घर की छिछाने की कपरी गल कर घर की कड़ी धूप में सूखकर पत्थर हो रही थी। छत ढह गयी थी। भटकट्या, धतूरा और कँटीली चौलाई की झाड़ फल रहे थे। एक जगह झाड़ में धाप की पगड़ी पड़ी था। क्या विलोसिनी यहाँ कुछ भी नहीं छोड़ गयी ? वापस आकर बुधिराम ने रामद्र से कहा, 'अपनी कुदाल और हँसिया दे। घर का जंजाल साफ किए देता हूँ।'

"चलो, मैं भी चलता हूँ।"

"एक गड़ासी भी लेते आना। सारे पेड़ पौधे काटने होंगे। बड़ा झपाड़ हो गया है।

"चलो।'

"ऐसा कर, तू अभी रहने दे। मुझे तो और कोई काम नहीं है। मैं कर लूंगा"

बुधिराम चैत के एक उदास दिन भर अपनी मकान जमीन साफ करता रहा, नीम के पेड़ों को छोड़कर बाकी सारे पेड़ पौधे काटकर उसने ढेर लगा दिया। एक डरकर भागते साप को लाठी से पीटकर उसने मार दिया। लटा पक्षी झाड़ों में से निकल निकल कर भागने लगे। वे झाड़ों में ही अपने घोसले बनाते हैं।

तभी बुधिराम को एक आले पर एक बहुमूल्य वस्तु दीख पड़ी। वह विलासिनी की कंघी थी। इसके अलावा भी लोहे की कड़ाही, खंती, सड़ा हुआ चावल और पीटने के लिए जमीन पर रखे धान के पौधों के बीच खोसा हुआ हँसुआ वगैरह मिले। सभी चीजों में जंग लग गयी थी। बुधिराम ने साफ किए हुए आँगन में एक के साथ दूसरी सारी चीजें लगा दी। सब कुछ या ही पड़ा है। किसी ने कुछ छुआ नहीं है। ये सारी चीजें इस बात की गवाही दे रही थीं कि गाँव के लोग बुधिराम को कितना चाहते हैं। एक दिन में नहीं होगा। कल फिर आऊगा।'

बुधिराम ने सोचा। सुना था बापू का काम-किरिया दीनानाथ ने किया था। "बापू मैं तुम्हारे लिए कुछ भी न कर सका। मगर इसमे मेरी कोई गलती न थी। मुझ निरदोश को उसने झूठमूठ फँसा दिया था।"

कई दिनो मे बुधिराम का मकान साफ हुआ। सभी ने स्वीकार किया कि बुधिराम पागल नही है। अपना मकान फिर उठा लेगा। चडक बीतने दो। पाँच पच मिलकर उसका घर उठा देंगे। बाँस, खर, रस्सी सब हम लोग चदा करके ला देंगे। बुधिराम ये बातें चुपचाप सुनता रहता और हलके हलके मुस्कराता। केदार काका ने अफसोस से कहा "नही रे बुधिराम अब पहले जैसा नही रहा।"

हरिपद उन दिनो गाँव म ही था। उसे पता था कि बुधिराम जेल से छूट कर आ गया है। उसके घर की तरफ वह नही जाता था। पर उसने अपने कारिंदे के माफत प्रस्ताव भेजा कि जो हो गया उसे बुधिराम भल जाय। पीछे देखने का फायदा क्या? वह दो सौ रुपये देने को राजी है। बुधिराम नये सिरे से जिंदगी शुरू करे। बुधिराम ने मुस्कराकर कहा "ठीक है। सब हो जायेगा। चडक तो बीते। यहाँ का झाड झखाड तब तक सूख जायेगा। उसे जला दू। फिर नया घर बनाऊँ। आठ बरस कहाँ चले गये इसकी खोज खबर लू। सब होगा। होगा क्यो नही? दादा बुधिराम अब वही बुधिराम नही है पहले वाला। वह बुधिराम जरा से मे झगड पडता था। यह बुधिराम अब दूसरा आदमी है। जाओ, बाबू से सब बातें, जैसे कहा है बता दो।'

चडक का दिन भी आ गया। बडमुजापुर, बानीचक, काकरा और मौला गाँवो के भक्त इकट्ठा होने लगे। उनके हाथो मे खर के नरमुड और कबध होते। पता नही कितने सालो पहले यहाँ डोम राजा और मुगल सेनापति के बीच युद्ध हुआ था। उन दिनो रकेश्वरी मे साल के दस महीने पानी बहता था। आगे डोम, और पीछे डोम सनिको के साथ सेना सजी थी। राजा पहाड जैसे काले घोडे पर सवार हुआ था। उस घोडे के पीठ पर बैठकर समर मे उनकी तलवार बिजली-सी चमक रही थी। रण के बाजे बज रहे थे। डोम सेना के हाथो म थे तीर धनुष, बल्लम फरसे और टाँगियाँ। शूरवीर जाति है डोमो की। भीषण युद्ध हुआ था और पहल दिन मुगल सेना पराजित होकर पीछे हट गयी थी। जयोन्मत्त डोमो ने सक्राति के दिन पराजित और निहत मुगल सैनिको के कटे हाथ पाँव और मुड हाथो म लेकर भयकर नृत्य किया था। राजा का घोडा भी अदभुत नृत्य कर रहा था। उसके खुरो की चोट से श्मशानदह बन गया था।

अब डोमो के वे दिन नही रहे पर आज के दिन वे अपनी विगत विजय-गाथा का स्मरण करते हैं। ताडव नत्य करते हैं वे। लाश नही मिलती तो खर के पुतले लेकर नाचते हैं। रात होने पर मशालें जल उठती हैं। श्मशान में रहने वाले सयासी भी आ जुटते है। वे भी नाचते हैं। जितना ही नाचते हैं उतना ही उन्मत्त

होते जाते हैं सभी। उन्हें याद भी नही रहता है कि वे कगाल हैं, उन्हें भर-पेट खाना भी नही मिलता। नाचते-नाचते वे अपने पितरो के निकट पहुच जाते हैं।

रात के आठ बजते न बजते बुधिराम भीड में से चुपचाप निकल गया था। जब सभी डोम श्मशानदह में नहायेंगे, तब हरिपद भी उनके साथ नहायगा। रक्त में है यह विश्वास। उसके बाद सभी डोम एकत्र होकर नाचेंगे। मगर हरिपद नही नाच सकेगा। बुधिराम छाया की तरह हरिपद के पीछे लगा हुआ था। हरिपद की उमर हो गयी है। धीरे धीरे चलता है। बुधिराम एक सुनसान सी जगह पर मौका मिलते ही उस पर झपटता है। पीछे से एक हाथ उसके मुँह पर कसके दबा रखता है और उसे पीछे खीचता जाता है। बुधिराम हरिपद को घसीटते हुए अपने ध्वस्त मकान की तरफ ले जाता है। हमलावर बुधिराम है यह बात हरिपद जान गया है और डर से बेहोश हो जाता है।

"आठ बरस हरिपद बाबू आठ बरस। मेरा बाप, मरी घरवाली और मैं। अब बुधिराम वह पुराना बुधिराम नही रहा। उसने अपने को छिपाना सीख लिया है।"

हरिपद का कारिंदा उसके कपडे लेकर पीछे पीछे आ रहा था। उसने देखा होगा? उँह! देखने दो। बुधिराम तो अभी सब कुछ दिखा देगा।

चडक स्थल पर नाच की गति भयकर तीव्र हो गयी थी। नशे से सभी की आँखो में लाल डोरियाँ खिची हुई थी। वे सभी उस समय डोम राजा के सेनानी थे। शत्रु को मार कर उसके हाथ पाँव, मुड और कबध लेकर नाच रहे थे। घर के हाथ, पाव, मुड और कबध थे सभी के हाथो में। उनके बीच एक असली नर मुड लेकर बुधिराम नाच रहा था। उन्मत्त होकर नाच रहा था वह।

'अरे साला। खर पतवार का मुड लेकर नाच रहा है तू सब? बुधिराम खर का मुड नही लेगा। ले देख मेरे हाथ में दुशमन का मुड है, दुशमन का।"

नृत्यरत लोग चीत्कार कर उठे। बुधिराम को बीच में लेकर पागल से नाचने लगे। कही कोई बाँध जैसे टूट गिरा था। जिनके हाथो में कुछ भी नही था, वे भी नाच में आ शामिल हुए। बुधिराम के होंठो पर एक अलौकिक मुस्कान थी और उसकी आखें अधमुदी हो रही थीं। वह किसी और नृत्य का मत्र सुन रहा था। सुन रहा था पहाड जैसे घोडे के खुरो की आवाज, नाचते हुए घोडे की रणसज्जा की झनकार। नाचते-नाचते वे अपने पितरो के नज़दीक पहुच रहे हैं।

सवेरा होते-होते पुलिस आयी। बुधिराम तब भी नाच रहा था।

"बद करो नाच बद करो।' पुलिस का दारोगा चीख रहा था। कोई उसकी आवाज नहीं सुन रहा था।

"सभी को अन्दर कर दूगा।' दारोगा फिर चीखा।

यह आवाज भी नाचने वालों के सिर पर से गुजर गयी।

पुलिस के कहने पर भी कोई आदमी बुधिराम को पकडने आगे नही बढा। जो अपने मन पितरो के साथ एकाकार हो गया हो, उसे पकडना बडा कठिन है।

(शिलादित्य, पूजा अक 1982)

भीषण युद्ध के बाद

दसक साल की उमर होगी लडके की, सिर पर रूखे-सूखे ललछहूँ बाल। कमर म हाफ-पैंट लटकाये सिर झांट झांट कर चलता है चारो ओर ताकता हुआ। सूखी लकडी देखत ही फट से उठाकर अपने थैले मे रख लेता है। बहुत दिनो तक आरजू मिन्नत करने के बाद रोहिनी बाजार के दुकानदारो से एक नमक का खाली बोरा मिला है उसे।

इस बोरे को वह दिन रात कधे पर लटकाये घूमता है। और जो भी मिलता है सब उसम डालता जाता है। वह बाबू लोगो की गाय चराता है। रास्ता मैदान मे उसकी गायें घास ढूढती है और वह खोजता है लू से झुलसकर पेड से गिरे चुचके आम, पालक या कलमी साग के पौधे, सतालू के पौधे। सब बोरे म भरता जाता है। बाज की तरह है उसकी निगाहे।

बाबू लोगो के मवेशी लेकर वह डुल नदी की छुद्र धारा को पार करता है और घास के मैदान म पहुँचता है। चरागाह मे मवेशियो को छोडकर वह दौडता है और सुवणरेखा के जगल मे घुस जाता है। यहाँ पर डुल नदी की एक और सुवणरेखा की दो धाराएँ हैं। इन तीन स्रोतो के बीच दो चरागाह है। थोडा और आगे जाकर सुवणरेखा और डुल नदियाँ एक दूसरे की बाँहे थामे नाचती हुई आगे बढती हैं।

लडका सुवणरेखा के पानी म घोचना लगा देता है। घोचना बाँस का बुना एक खाचा जाल होता है। घोचना मे मछलियाँ फस जाती हैं। लडका अगर मछली पा जाय चाहे वह मगुरी हो या झीगा—तो वह परम निश्चित हो जाता है। तब वह सिर झांट झांट कर उँगली पर गिनता है। "साग मिला है। साग खाऊँगा। मगुरी माछ का खट्टा-कडवा रसा खाऊँगा। आलू दुकानदार को देकर नून-तेल लूगा। बस। क्या मजा।'

इसके बाद वह तीन स्रोतो दो चरागाहो, मवेशियो और घास फूस को सिर नचा-नचाकर कहानी सुनायेगा "उसके बाद ना, लडाई हुई। क्या लडाई थी, सन-सन तीर चल रहे थे। धाय ! धाय ! गोले चल रहे थे घोडे भाग रहे थ खटाक खटाक। ओह क्या लडाई थी।"

लडाई ही लडाई। कैसी लडाई, किनके बीच हुई, क्यो हुई कुछ भी नहीं जानता वह। सिर्फ इतना जानता है कि बडी भारी लडाई हुई थी।

वह लडका क्यो पृथ्वी आकाश, नदी, स्रोत गोरु-बछरु और हरी काली पट्टियो वाले टिड्डो से लडाई की ही बातें करता है, यह किसी को नही मालूम। क्योकि उस गोरु चराने वाले छोटे से बच्चे के बारे मे सिर खपाने का किसी के पास समय नही है।

लडका लडाई की बातें क्यो करता है, इसे जानने के लिए भोर मे नीद से जागने के बाद के कुछ घटा के उसके रुटीन का ज्ञान जरूरी है। खूब भोर मे जब कौये बोलते हैं उसी समय वह जाग जाता है और अपने असभव रूप से नीचे कमरे मे से प्राय घुटनो के बल चलता हुआ बाहर आता है। बाहर आकर वह पूर्व दिशा म बडी व्याकुलता से देखता है जैसे कहना चाहता हो, "उठो दोस्त, तुम्हारी और मेरी तो कभी छुट्टी नही होती। देर क्यो कर रहे हो?"

इसके बाद वह डुल नदी की ओर भागता है। जानते हो क्यो? क्योकि दुनिया मे उसके जैसे और करोडो लोगो की तरह डुल नदी उसका बाथरूम है। नदी का किनारा और नदी का पानी असख्य मनुष्यो के बाथरूम हैं।

वहाँ से निबट कर वह एक साँस म भाग कर घर आता है और कमरे में कैद अपनी दोनो बकरियों को बाहर लाकर आँगन मे उस कटहल के पेड से बाँध देता है। कटहल के ढेर सारे पत्ते और पानी उनके सामने रखता है। सूरज उगने पर उसका दोस्त अपनी बकरिया के साथ इ हें भी चराने ले जायेगा।

इसके बाद वह अपने विशाल कमरे मे फिर घुसता है। बहुत बडा है उसका कमरा। क्योकि दो तरफ स दीवारें ढह गयी हैं और उनम से आकाश और दूर तक फैले मदान दीख पडते हैं। इसीलिए उसका छोटा-सा ठिगना घर इतना विशाल हो उठा है। दिन म सूरज और रात म चाँद उसके कमरे मे बँधे रहते हैं, क्योकि कमरे की छत एक जगह टूटी हुई है और उसम से आकाश का एक बडा सा टुकडा दिखाई पडता है। उसी दरार से धूप और चाँदनी वहाँ आती हैं और अपनी ड्यूटी बजा जाती हैं इसी कमरे म उसका राज पथक है एक बाँस की मचान। उस पथक पर एक चटाई बिछी है जिस पर बकरियो का डनलपपिलो है। मचान के नीचे झुक कर वह एक कटोरे म रखा नून भात निकालता है। सडाप सडाप खा कर काम पर निकलता है।

बहुत व्यस्त है वह। कितना कितना काम है उसके सिर पर। बाबू लोगा का मकान कितना बडा है बाबू लोगो के पुरखों न बनवाया था यह मकान। पता नही कहाँ स बडे-बडे चौकोर पत्थर पता नहीं कौन लोग लाये थे। उन्ही से उनका विराट आँगन बना हुआ है। बाबू लोगों के हाथी क लिए पत्थर के खभो पर टिका एक बहुत ऊँचा हथसाल बनाया गया था। आखिर वर्षा और जाडे म वहाँ

रहता बेचारा हाथी ?

उसी हथसाल के चारो ओर दीवार उठवा कर बाबू लोग अपना अनाज रखते हैं। पुरखो के द्वारा पत्थर के चौकोर टुकडो से बनाये बने उस एकतल्ला मकान के हर कमरे म धान, चावल, दाल भरे हुए हैं। रहने के लिए बाबू लोगो ने नया मकान बनवा लिया है।

इस घर के लबे चौडे आँगन को लडका बुहारता है दौड-दौड कर। फिर ड्योढ़ी बुहारता है। ट्यूबवेल स पानी लाकर आँगन और ड्योढ़ी मे छिडकाव करता है। बागीचे में पानी देता है।

यह सब काम करने के बाद वह गाय-बल लेकर चराने जाता है। मवेशी को लेकर चरागाह जाते वक्त रास्ते मे गाँव का बेसिक प्राइमरी स्कूल पडता है। स्कूल का नया मास्टर रोज पहले बच्चो को कहानी सुनाता है, फिर पढाता है।

कहानी महाभारत की है लडका यह नही जानता। वह सिफ थोडी देर युद्ध की कथा सुनता है। सुनता है तब भीषण युद्ध हुआ था। खूब तीर चले थे, खूब युद्ध हुआ था।

एक दिन सिपाही युद्ध(1857) की कहानी बता रहा था मास्टर। लडका यह नही जाना पाया कि मास्टर ने पहले क्या बताया। जिस समय वह स्कूल के पास से गुजर रहा था उसने सुना-तब भीषण युद्ध हुआ था। खूब तोपें दागी गयी थी।

मास्टर से ज्योही उसकी जिज्ञासाभरी, चमकती आँखें मिली वह हडबडा गया और सिर झटिता हुआ, बोरा कन्धे पर रखे आगे बढ़ गया।

कन्धे पर बोरा रखे वह रोज भीषण युद्ध करता है। रोज साग भाजी मछली, सूखी लकडियाँ, सतालू—जाने क्या क्या चुन कर वह बोरे मे भरता है और गोरु की पीठ पर लाद कर घर लाता है।

वह अपने बोरे का कितना खयाल रखता है अगर देखते तो जानते। वह रोज बोरे को टुल के पानी मे धोकर पेड की डाल पर बिछा कर सुखाता है। बरसात के दिनो म यही बोरा बरसाती बन जाता है उसके लिए और जाडो मे रजाई का काम देता है।

शाम होने पर वह बाबू के घर दो मुट्ठी भूजा पाता है खाने को। फिर मवेशियो को चारा-दाना देकर, गोशाला की साँकल लगाने के बाद उसकी छुट्टी होती है।

पर छुट्टी कहाँ हुई। बोरा सिर पर रखकर वह अपने घर की ओर भागता है। बाप रे बाप। असली काम तो अभी रही गया है। घर मे उसका दादा उसके इतजार मे बठा होगा।

ओह! मैं भी बडा भुलक्कड हूँ। न तो तुम्हें उस लडके का नाम बताया, न उसके दादा का।

उसके दादा का नाम है मतिराम और उस लडक का पतित (शायद पतित

पावन) है। जाति के मुण्डा हैं य। मुण्डा मा'े आदिवासी। मगर पतित अपनी भाषा—मुण्डारी भाषा—नहीं जानता।

मतिराम बैठने वाला आदमी नहीं है। आदिवासी चाहे जितना बूढ़ा हो जाय बैठा नही रहता। पतित जब ज़रा-सा था तभी उसके माँ-बाप हैज़े स मरे थ। वह भी एक अद्भुत कहानी है।

पतित के माँ-बाप सहित छत्तीस आदमियो को पुलिस पकड़ ले गयी थी। सालो से वे लोग जिस ज़मीन पर बटाई खेती करते आय थ उसी मे धान रोप रहे थे। बाबू ने उन्हें कुछ बताया नही और शहर म बठ-बठे वह ज़मीन किसी और बाबू को बिक्री कर दी। मगर यह बात ये लोग नही जानत थ।

नये मालिक ने कहा "अर ! ये कौन लोग मेर खेत म धान रोप रहे हैं। मैं तो इन्हें जानता ही नही।

यह आठ-नौ साल पहले की बात है। नये मालिक की शिकायत पर पुलिस छत्तीस लोगो को पकड ल गयी। वापसी म किसी मेल म सड़ा खाना खाकर हैज़े से पतित के माँ बाप दोनो मर गय।

मतिराम ने सोचा 'जो हो गया सो हो गया। मैं अपने पोते को पाल-पोस कर बडा करूँगा।

मतिराम यहाँ आ गया और उसा बाबुओ के घर चरवाही का काम पकड लिया। बाबू ने कई बार कहा, 'मतिराम, अपन पोत को भी काम पर लगा दे। बगीचे का काम करेगा।"

"नही बाबू यह नही होगा।"

'क्यो रे?"

'मरा जनम तो चरवाही करत और मजूरी करत बीत गया। बेटे को लिखना पढ़ना सिखाने का बडा मन था। पर उसकी माँ मर गयी। बाबू तो मुझ अकेले को खाना देता था। भात घर ले जाने नही देता था। अब लड़का क्या खाता? वह भी मवेशी चरान लगा। इसी से वह पढ लिख नही सका।"

"यह तो अच्छा ही किया था तुमने।'

"क्या अच्छा किया था, बाबू?'

"यही, जो लडके को मवेशी चराने के काम मे लगा दिया।'

'क्यो? खाने को नही था, जभी तो जाकर चरवाह बना? है कि नहीं?'

चलो पेट तो भरा उसका।

'क्या पेट भरता था? भूजा, बासी भात ।'

अच्छा! अपने पोते को मुझे दे।'

नही बाबू। पोते को लिखना पढना सिखाऊगा। मैं अनपढ था, इसी कारण ज़मीन चली गयी। सारा जीवन कितना कष्ट उठाया।"

"लिखना-पढना सिखायगा ? तुम लोगो के लडके लिखना पढना सीखने लगेंगे तो हम लोगो के काम कौन करेगा ?"

"नही बाबू इसके लिए माफी दीजिए।"

मतिराम की जिद थी कि वह, बेटे को न पढा सका तो, पोते को जरूर पढ़ायेगा। पर एक बार वह बहुत बीमार पड गया तो मजबूर होकर पतित को चरवाही का काम पकडना पडा।

हस्पताल से लौटकर इसके लिए मतिराम ने उसे बहुत पीटा। कहा, "तेरा बाप जब तेरे इतना था तो गाँव मे इसकूल बहुत कम थे। अब गाँव गाँव म इसकूल खुल गया तो तू क्यों नही पढेगा ? बोल ?"

इस पर एक बूढे बुजुर्ग मुण्डा सुवलसिह ने मतिराम को खूब फटकारा था। कहा था, "मतिराम उस समय तू बीमार होकर अस्पताल मे पडा था। अभी भी तू कमजोर है। मेहनत का कोई काम कर नही सकता। लडका पढे तो बहुत अच्छा है, पर तुम दोनो खाओगे क्या ?'

उन बातो का मतिराम के पास भला क्या जवाब था ? मतिराम चुप रह गया। गुस्से से वह पागल जैसा हो गया। उसने कहा, "ठीक है। बाबू ने जो कहा था वही हुआ। हमारे लडके लिखना पढना सीखेंगे तो बाबू लोगो के काम कौन करेगा ? वही हुआ।'

जाने कैसा हो गया मतिराम। अब वक्त पाता है तो खजूर के पत्तों की चटाई बुन कर हाट मे बेंच आता है। चावल खरीदता है। पतित नमक-तेल ले आता है।

आज पतित के घर लौटने पर मतिराम न कहा, "इसकूल का मास्टर आया था तुझे इसकूल भेजने को कहने।"

"तुमने क्या कहा ?"

'मैंने कहा पतित इसकूल जायेगा तो खायगा क्या ?"

"तब उसने क्या कहा ?"

"कहता क्या ?"

'मगर मैं तो पढना चाहता हूँ।" पतित ने निर्णय सुनाया।

इसके बाद उनके बीच कोई बात नहीं हुई। पतित के काम तो खत्म होने को नही आते। अब ट्यूबवेल स पानी लाकर उसे खाना बनाना था। खाना सिर्फ एक बेला रात को पकता है। सुबह बासी भात और नमक खाओ और सारा दिन मुह बाँधे बैठे रहो।

रात म सोते समय पतित न सपना देखा कि एक भीषण युद्ध हो रहा है और वह भी उसम लड रहा है।

दूसरे दिन मास्टर ने उस पकड लिया।

"ए, सुनो, सुनो।"

"क्या बाबू ?"

"तुम स्कूल क्यों नहीं आते ?"

"कैसे आऊँ ?"

"तुम भी नहीं आते और तुम्हारे जैसे और भी कई लड़के नहीं आते।"

'हम तो चरवाहा हैं।"

"पढ़ोगे तो पैसा मिलेगा नौकरी मिलेगी तनख्वाह मिलेगी ढेर-सी।'

इसके उत्तर म थोड़ी देर पतित पांव के अँगूठे से मिट्टी खोदता रहा, फिर बोला, "तुम हमेशा लड़ाई की कहानी कहते हो। कहाँ हो रही है लड़ाई, या खतम हो गयी ?"

मास्टर पतित की चमकती आँखों को देखता रह गया। आँखें हैं या हीरे की कनी।"

"लड़ाइयाँ तो बहुत-सी हुई हैं।"

'अब नहीं होती क्या ?"

"होंं तो क्या करेगा ?'

पतित हँसा, कुछ बोला नहीं। फिर चलते चलते पूछा, सतालू खाओगे ? खाने मे मजा देता है।'

"तुम स्कूल म पढ़ने आओगे तब लूँगा। छात्र से ले सकता हूं। नहीं तो क्यों लूगा ?"

पतित की आँखों पर से जैसे बादल का एक टुकड़ा तरता चला गया। उसने प्राय फुसफुसाते हुए कहा, "दादा तो पढ़ने को कहते थ।"

'फिर क्या हुआ ?'

"मैं जाकर चरवाहा बन गया।'

"क्यो ?'

"दादा बहुत बीमार थे। अस्पताल मे भरती थे।'

अब उसके पास कहने को शायद कुछ नहीं था। इसलिए सिर झोंटता हुआ वह चला गया। उसकी तरफ देखते हुए युवा मास्टर ने सोचा—पतित भी एक भीषण युद्ध कर रहा है। सिर्फ इस बात से वह अनभिज्ञ है।

मुंडोपाड़ा की प्रौढ़ा आलोमणि सारा दिन दूसरो के खेतों म खटती है। शाम को वह मास्टर के लिए खाना पकाती है। पानी भर के लाती है। स्कूल के प्रागण मे ही मास्टर का एक छोटा सा कमरा है। मास्टर आलोमणि को मौसी कहकर बुलाता है। आलोमणि बहुत मज़बूत काठी की औरत है।

' मौसी पतित पढ़ता क्यों नहीं ?"

' पढ़ेगा तो उसे खिलायेगा कौन ?'

"तुम लागो के बच्चे अगर नही पढेंगे तो सरकार का सारा किया कराया बेकार जायगा।"

'तुम नहीं समझोगे, बाबू, हमारा दुख।"

"पढन स बाद मे बहुत से फायदे होते है।"

'वह तो मैं भी जानती हूँ। हमार बच्चे ता आज चरवाहा, कल खेत मजूर बनेंगे, बस। ऐसे ही जनम बीतेगा। पढना ता अच्छा है। पर खाना कौन देगा? चरवाही करके दो मुट्ठी भूजा भात तो मिलता है। महीन बाद पाच रुपये मिलते हैं। हम इसी तरह अपना घर चलाते हैं। आख रहते अपने बच्चो को अधा करन की साध है क्या हम?"

दूसरे दिन फिर मास्टर न पतित को बुला कर कहा, "देख पतित, तुझे युद्ध की बातें अच्छी लगती हैं न? यह दख।"

"किसकी तसवीर है?"

"विरसा भगवान की। नाम सुना है?"

"नही तो।"

"तेरी जात का आदमी था। मुडा। लडाई करना खूब जानता था। लडते-लडते मरा था। पढने आता तो तुझे सब मालुम हो जाता। तू खुद इसकी कहानी पढ लेना।"

उस दिन पतित नदी तट के चरागाह पर जाकर यही बात रटने लगा। दोना हाथ ऊपर उठाए चरागाह क आर पार दौड लगाई उसन। मिनमिनाती आवाज मे आकाश नदी-काश-वन घास से कहता जा रहा था, 'हमारी जात का आदमी था विरसा भगवान। खूब लडाई की थी उसने, बहुत तेज लडाई।"

पतित की प्रसन्नता का रहस्य सुवणरेखा स कहने के लिए नदी के उस पार क रामेश्वर मन्दिर अपना चमचमाता कलशो वाला सिर झुका कर कान लगाय पतित की बातें सुनने लगा। जेब्रा जसी काली सफेद धारियो वाला टिड्डा उड चला अपने साथियो को यह कथा सुनाने।

शाम को पतित ने मतिराम से पूछा, "दादा, तुम विरसा भगवान को जानते हो?"

"मुडा जात के सभी लोग जानते हैं।"

"क्या किया था उसने?"

"यह तो नही जानता, बेटा। सिरफ नाम जानता हूँ।"

कटोरे मे भात लेकर खान बैठा था पतित, पर खा नही रहा था। थोडी देर भात को उँगलियो से छेडने क बाद बोला, "मैं पढने जाऊँगा।"

"क्या?"

"अब तुम बीमार नही हो। इसकूल से पढकर आने के बाद अपने आँगन मे

मिच बोऊँगा। रोहिनी का हाट है ही कितनी दूर। वहाँ ले जाकर बेंच आऊँगा।"

मतिराम उसकी तरफ थोड़ी देर देखता रहा, फिर सूखे गले से बोला "अच्छा! देखूगा।'

"बोलो न दादा पढ़ने भेजोगे?"

"पतित! तू नही जानता। कभी देखा नही तूने। हमारी सभा होती है। वहाँ *यह बात उठाऊगा। देखू पाँच पच क्या कहते हैं।'*

"सभा होगी? मैं भी देखने चलूंगा।'

'ठीक है। ले चलूगा तुझे भी।"

पतित अपने समाज की सभा मे जाएगा और उस दिन चरवाही का नागा *करेगा, यह बात सुनकर उसका बाबू बहुत नाराज़ हुआ, पर नाराजी का मन म ही* दबा कर बोला, यह क्या बात हुई। मुझे तो हसी आ रही है। तू सब जगली भूत है। तेरी कैसी सभा। कैसा समाज। आयँ?

पतित बाबू का जवाब नही दे सकता। कभी नही दिया। इसलिए मह नही *खोल पाया। मगर घर लौटकर गुमसुम होकर बैठ रहा। सोचने लगा वह* तो हमेशा बड़े लोगो की तरह काम करता है, फिर अचानक छोटा बच्चा कैसे हो जाता है?

दादा आया तो उसने पूछा, "हम क्या जगली भूत हैं?"

"किसने कहा?"

"बाबू ने।'

"नही पतित। हम क्यो जगली भूत होने लगे?

"हम पढ़ते लिखते नही, टूटे घर मे रहते हैं, इसीलिए कहा? हमारा रग काला है, इसीलिए कहा न?'

"भूत तो भूत सही, पर हम भूतो के बगैर तो उनके गोरू चरने नही जायेंगे, उनके खेत म धान नही उगेगा, एक भी काम नही होगा उनका।"

"मैं बाबू के घर नही जाऊँगा।'

'ठीक है। चल सोडा-साबुन लाते हैं। कपड तो काछने होंगे। समाज म जाना है।'

सभी मुडा समाज म भाग लेने चल पड़े। जिसे जो खाना था, भूजा भात-सत्तू बाँध के साथ ले गया। गरीबो की समाज-सभा है। सब अपना-अपना खाना खायेंगे। आलोमणि वगरह भी आ गयी थी।

कितनी बडी सभा! कितने लोग! पतित अवाक होकर देखता रह गया। उसका दादा गरीब है। इस कारण कोई उसकी उपेक्षा नही कर रहा था। कितने ही लोग उससे बातें कर रहे हैं उसका स्वागत कर रहे हैं। पोता है शायद?'

किसी ने पूछा। "मुँह देखकर ही लग रहा है किसका बेटा है। एकदम मानिकचन्द की तरह शकल है।" किसी और न कहा।

इसके बाद पतित की अवाक आखो क सामन एक बहुत बडी तस्वीर टाग दी गयी। बास की चटाई पर कागज चिपकाकर माटी कूची स बनाई गयी थी। वाह ! क्या सुंदर चेहरा है ! सिर पर कितनी सुदर पगडी बँधी हुई है ! आखें जैसे सितारो की तरह चमक रही हैं।

"बिरसा भगवान ! बिरसा भगवान ! बहुत लडाई की थी।" चीख उठा पतित पावन।

उसके साथ कई हजार कठो का गजन सुन पडा, "जयार (जै) बिरसा भगवान !"

पतित की छाती आवग से भर-भर आ रही थी। जगली भूत ! जगली। क्या जगली भूतो के भी ऐस बिरसा भगवान होत हैं? दादा की उगली पकडे बस यह सब देखता रहा और उसका सिर ऊँचा होता गया। वे कभी भी जगली भूत नही है और चरवाही ही उनका काम नही है। वे क्यो टूटे घरो मे रहते हैं, दादू की धोनी इतनी चिथडा क्या हो रही है? यह सब बात वह एक दिन जान लेगा। सब कुछ।

उसकी छाती मे कोई चीज जसे उथल पुथल कर रही थी। जैसे सुवणरेखा और डुल नदियाँ एक दूसरे के सीने म उमड रही हैं। गरए पानी मे जैसे ज्वार उठ रहा था।

जिस दिन से पतित समाज सभा मे गया, उसी दिन से उसन बाबू के घर जाना छोड दिया। बाबू न बहुत उछल-कूद की और बाले, "बेटा, नागा कर रह हो, करो ! मजा चखाऊँगा।"

किसे मजा चखायेगा और कौन मजा चखायेगा? गडग्राम, गडग्राम। खडग-पुर स गुप्तमणि चला बस मे। फिर दूसरी बस पकडकर पहुँचो गुमडा-तला। फिर धान खेत की मेडो पर चलो चार मील। फिर पहुँचोगे पतित के गाव।

छ घर बाबू लाग है। बाकी तो वे ही हैं। मुडा लोग। हर घर से चरवाहे गायब। पतित का बाबू हारकर मतिराम के घर गया।

"क्या मामला है, मतिराम?"

"कैसा मामला, बाबू?"

"पतित आ नही रहा क्यो?"

"अब पतित नही जायेगा। इसकूल गया है। इसकूल जायगा तो पैस पायगा खान को पायगा। किताब-कापी पायेगा। वह अब पढेगा।"

"अच्छा, तो यह बात है। स्कूल जायगा तो क्या राजा हो जायेगा?" बाबू ने ताव खाकर कहा।

"नही, राजा नही, आदमी तो होगा।"

अब बाबू का गुस्सा काबू से बाहर हो गया।

"यह तुम लोगो की बदमाशी है। ठीक है अब तुम्हे खेतो मे मजूरी भी नही मिलेगी, यह समझ लेना।"

मतिराम हसने लगा।

"बाहर से आदमी लाओगे, बाबू ? सब हमारे समाज के लोग हैं। कोई नही आयेगा काम करने। हमे ही काम देना होगा। हम जगली भूत हैं न ? हमारे अदर एका बहुत है, बाबू।'

बाबू का मुह चूना हो गया।

आज पतित का लाया हुआ सतालू मास्टर ने खुश होकर ले लिया। लेता नही कैसे ? अब तो पतित उसका छात्र हो गया था। छात्र कोई चीज दे तो मास्टर क्यो नही लेगा ?

स्कूल की छुट्टी होने पर पतित अकेला दौडता हुआ नदी के किनारे पहुँचा। मटमैले पानी मे चित्त लेट कर बहता हुआ चीखकर बोला, "उसके बाद न ? बहुत लडाई हुई। बहुत, बहुत।"

डुल नदी का पानी उस पर झुके काश वन सभी लडाई की कहानी सुनते सुनते धूप मे नहाये, हसते रहे। कितना बुद्धू है पतित ? एकदम बुद्धू है। एक भीषण युद्ध वह जीत गया है, यह बात खुद नहीं जानता।

(किशोर भारती, पूजा सख्या 1982)

जातुधान

जातुधान का मतलब राक्षस होता है यह बात सजुआ कभी नही जान पाता अगर वह रामसिग की मा के श्राद्ध मे शामिल न होता। यह उपाधि उसे उसी समय मिली थी। भागीरथी के तट पर बसे बेले नामक आधे शहर आधे गाँव के तिउर पाडा का परम सौभाग्य था कि राम जननी अगहन की फसल को गोले मे रखवा कर, नवान्न का उत्सव मनाकर सुरधाम सिधारी थी। श्राद्ध के समय घर मे अनाज का सागर लहरा रहा था। रामसिग एक जमाने मे जमीदार थे और तिउर लोग उनकी प्रजा थे। अब वे रामसिग की जमीन पर बटाईदारी करते हैं। यह जमीन कछार म थी। भागीरथी की जब कृपा होती है तो उसे छोड देती है, जब नही होती तो डुबा देती हैं। रामसिग ने मा के श्राद्ध मे सभी को न्यौता दिया था। बडे-बडे हडा में भात पकाया गया और साहेब के बाथरूम के बडे बाथ टब म दाल बनी थी। तिउर लोग लकडी लाये, केले के पत्ते लाये, आँगन को झाडू-बुहारी करके साफ किया और छुआछूत की परपरा का श्रद्धापूवक पालन करते हुए ठिठुरते जाडे मे बाहर बैठकर भोजन किया।

सजुआ के सामने बैठकर रामसिग ने हँसते हुए कहा, "इसी के बारे मे कह रहा था। माँ इसे पहले भी खिलाती थी। पक्का दो किलो चावल का भात नाश्त मे और अढाई किलो चावल का भात दोपहर को खाने मे।"

सजुआ ने कुछ नही कहा। वह दाल भात के सहार म प्राणपण से जुटा था। उसके सामने दाल, भात, कुम्हडे की सब्जी और मछली की चटनी का षटरस व्यजन परोसा हुआ था। उसकी राक्षसी भूख के बार म दखन पर ही लोगो को विश्वास हुआ। थोडा हँसी दिल्लगी भी हुई, पर सजुआ जरा भी विचलित नही हुआ।

पुरोहित जी दरवाजे पर बैठे हुए थ, बोले, 'मिठाई मिल जाय तो यह और तगडा हाथ मारेगा।"

सजुआ ने मुह से कुछ नही कहा, सिर्फ सिर हिलान लगा। रामसिग ने ही कहा, "नही पडिज्जी! भात का ता पहाड निगल लेगा। पर इसको वश म करना हो तो मिठाई परोस दीजिए। आठ दस मिठाई के बाद इसका मुह बद।'

परोसने वालो ने भात का पहाड परोस कर उस पर दाल की नदी बहा दी और पूछा, "मछली नहीं लेगा ?"

"लूगा।"

"तू तो दाल से ही इतनी बडी ढेर सरका ले गया।"

"अरे भाई, तुम अपना काम करो, मैं अपना कर रहा हूं। जो देना है देते जाओ।"

"क्या ढो कर ले जायगा ?"

"अरे बाबू। जितना अभी तक खाया है, उतना ही और खाऊँगा। ढोकर कल ले जाऊगा। बासी लेने आऊँगा तब। आज तो बस इसे भरूँगा ठूस-ठूस कर।" उसने पेट की ओर उँगली से इशारा किया।

"अरे सजुआ ! मरना है क्या ?" कोई कहता।

"देखो बाबू। मा जननी रोज रोज तो नही मरेंगी। मरूँगा मैं भी एक बार ही।

उसे खाते हुए देखकर पुरोहित जी ने कहा, "यह बेटा तो जातुधान है। माने राक्षस।"

खाकर सजुआ तृप्त हुआ तो उसने आकर पुरोहित के पाँव छुए, बोला, "पडि ज्जी ! क्या कह रहे थे तुम ? कोई नयी बात नही है। मेरे खाने को लेकर सभी ऐसा कहते हैं। मेरा परिवार भी मुझे राच्छस कहता है। नाम मे क्या है ? नाम कुछ भी हो पेट भरे तो सब अच्छा लगता है।'

सजुआ की पत्नी छोटे कद की गोल गोल सुदर औरत है। वह फिक से हँस पडी।

पुरोहित ने फिर कहा "नही बाबू ! तुम राक्षस नही हो। तुम्हे तो जातुधान कहना ही ठीक रहेगा।"

"हा ! जातुधान सुनने मे अच्छा लगता है। राच्छस तो मामूली बात है। उसमे शान नही है। जातुधान बढिया नाम है।" सजुआ ने हँस कर पेट पर हाथ फेरते हुए कहा।

"मगर बेटा, इतना बडा पेट तो भरना मुश्किल है।"

'हाँ, है तो। भरता कहाँ है पेट ? जब जुरता है पेट भर खाता हूँ। नही जुरता तो मुह पर त्वा बाँध लेता हूँ।'

उसी दिन से सजुआ जातुधान कहलाने लगा। और सभी को तो सिर्फ भर-पेट भोजन मिला, पर सजुआ को ऊपर से यह उपाधि भी प्राप्त हुई। जातुधात नाम उसे पसद था। राच्छस बोलने मे जीभ को तकलीफ होती जातुधान कहने मे वह भी नही होती।

जब खेती-बाडी का काम रहता है तब भी सजुआ का पेट भरना मुश्किल होता

है। पर जिस साल भागीरथी खेतों को डुबा कर छुट्टी कर देती है उस साल सजुआ घर छोड़ कर निकल पड़ता है। जब तक रामसिंग देता है जिंदगी उधार पर चलती है। उसके बाद वह पत्नी से अपने कपड़े लुंगी, बनियान और गमछा काछने को कहता है और पोटली लटकाये निकल पड़ता है।

"कहीं नहीं जाना है।" पत्नी मना करती है।

सजुआ आमतौर पर अपनी पत्नी की बात नहीं टालता, पर इस मामले में गहरी सांस भर कर कहता है, "मेरा भी जाने का मन नहीं करता, पर जो दस-पाँच किलो चावल हैं घर में उससे तुम्हारा और मां का काम काफी दिनों तक चलेगा। मैं रहूँगा तो थोड़े ही दिन में सब हजम कर जाऊंगा।

"पेट बाँध कर अपने घर में रहो।"

"नहीं, वह नहीं होता है। घर में चावल हैं और भात न खाऊँ तो मेरे सिर की नसें साँप की तरह फुफकारने लगती हैं। मेरे रहने से तुम लोगों का कल्यान नहीं है। मेरे जाने पर तू भी कुछ मर मजूरी कर पायेगी?'

"कहां जाओगे?"

"मातंग जहाँ ले जाय।"

मातंग उनका नेता है। हर साल वह उन्हें ले जाकर कोई-न कोई काम दिलाता है। सजुआ पर उसकी विशेष कृपा रहती है। जैसा खाता है वैसा ही खटता है। जाड़ा पड़ते पड़ते नाव पर मजूरी में मिला धान लाद कर सजुआ घर आता है।

अपना बोरा पीठ पर लाद लेता है। मातंग का उन पर और उनका मातंग पर बड़ा विश्वास है। अत्यंत कम मजूरी पर सड़क मरम्मत, मिट्टी कटाई, खेतों का काम करवा कर मातंग ने कंट्रैक्टरों के बीच बड़ी 'गुडविल' अर्जित की है। किसी-न किसी तरह वह अपने लोगों को बिना खाये मरने से बचा ही लेता है।

मातंग ने सजुआ से कहा, "राच्छस कहता था तुझे। अब तू जातुधान बन गया। चलो, अच्छा है। मगर मैं क' दिन बचूंगा। यह बूढ़ा मर गया तो तुम लोगों का क्या होगा? तेरी तो कोई सिपारस भी नहीं करेगा। जो खवाई खाता है तू, कौन रखेगा तुझे?'

"उस बार कटोआ में जो हुआ था याद है?"

मातंग हो हो करके हँस पड़ा और बोला "सजुआ की मां जानती हो क्या हुआ कटोआ में? वहां से बोआई करके हम लौटने वाले थे। कुडू बाबू के घर सतनरायन की कथा थी। उसका काका पहले से बीमार चल रहा था। उसी दिन मर गया। अशुच लग गया। इतना खाना बना था, सब फेंकने की नौबत आ गयी। यह अभागा वहाँ पहुँच गया। बोला फेंकते क्यों हो? लाओ खा डालते हैं।"

सजुआ मगन होकर हँसा।

"क्या खवाई की पट्ठे ने ! खाया तो हमने भी जितना बन पड़ा। इसने उस दिन खाया। दूसरे दिन भी खाया। तीसरे दिन भी खाया। जाड़े का दिन था। खाना खराब नहीं हुआ। दस आदमी का खाना एक बार खाया इसने। भात का एक दाना भी फेंका नहीं गया।'

सजुआ की माँ ने तेजी स बाँस की खपच्चियाँ चीरते हुए कहा, ' जिन दिनों यह पट मे था उन दिनों हम कनी मे थे तभी पचास का अकाल पड़ा था। अकाल के आदमियों की भूख इसके अन्दर समा गयी।

"बस भात खाता है। जहाँ धान की पूजा हो रही हो तो पूजा के फल, मिठाई बताशा कुछ भी इसे नहीं रुचता।'

भात स ज्यादा मीठी कौन सी चीज है बताना तो जरा।' सजुआ ने कहा, "वह सब बताशा खाना खा कर तो मुँह का स्वाद जाने कैसा हो जाता है। थूह !

ऐसा है हमारा सजुआ मानुखान। काली विशाल देह सिर पर घुघराले बाल कठोर परिश्रमी, जो खाता सब खून बन कर उसकी शिराओं म दौड़ने लगता।

सजुआ की पत्नी ने हँस कर मातंग से कहा, "एक दिन घर म चावल नहीं था। मैं लाने गयी थी। आँधी चल रही थी। माँ ने इन स दाना बकरियों को घर म लाने को कहा। पर टस से मस नहीं हुए। बोले मैं नहीं हिलूँगा। बकरियाँ चाहे उड कर फरक्का चली जायें। हिलने डुलने स भूख भी हिलने डुलने लगती है। तेरी बहू आ जाय, देखूँ कितना चावल लाता है। तब भी अगर आँधी चल रही हो तो तुम्हारी क्या सारे गाँव की बकरियाँ खदेड कर घर म बंद कर दूँगा।'

' इस बार बधमान ले चलूँगा तुम लोगों को।' मातंग ने कहा।

"बधमान म कितना धान होता है। बाप रे ! शहर एसे भागती है जसे नाराज औरत। धान ऐसा होता है जसे मिट्टी की देह पर मार की साँट पड़ी हो। खूब खाऊँगा। भात और बैगन का भुरता तेज नमक और मिरच के साथ।"

बात तय हो गयी। सजुआ माँ और पत्नी की खातिर घर छोडता है। वह रहेगा तो सारा चावल खा डालेगा। नहीं रहेगा तो कुछ दिनों तक उनका पेट भरेगा। बेटे जगन्नाथ के लिए सजुआ का मन कलपता है। वह सोचता है फरक्का मे सब पैसे का खेल है। चारों ओर कितने रास्ते हैं, कितनी धन दौलत। उसे क्या इस तरह पेट के लिए घर छोडकर जाना पड रहा है ?

' बेटा पिलास्टिक का तार ले आना। ' माँ कहती है।

"लाइलोन का लाल, नीला सूता ले आना।" पत्नी कहती है।

"लाऊँगा। सब लाऊँगा" सजुआ कहता है।

बेंत को प्लास्टिक के तार और नाइलोन के धागे से बाधकर वे कई तरह की डोलचियाँ झाकियाँ और फूलदान बनाती हैं। व्यापारी खरीद ले जाता है।

इसी तरह कट रहे थे दिन जब बाढ़ आई।

आकाश मे बादल आ रहे थे जा रहे थे। मामूली बूदाबादी थी। जमकर वर्षा नही हो रही थी। जसे शरद की वर्षा।

"जितना पानी है सब शहर मे बरस रहा है। देहात मे कुछ भी नही।" सजुआ की माँ ने कहा।

"बरस, चाहे न बरस। इस बार धान खूब होगा। समझी माँ।"

सजुआ जगन्नाथ को गोद म लेकर झुला रहा था। थोडी देर बाद पत्नी से बोला, "जगन्नाथ की माँ, चल। तुझे खेत दिखा लाता हूँ।"

"तुम्ही जाओ।"

"अरे! चल ना।"

"महाजन का काम खतम करना है।"

धान की कटाई तक व्यापारी के पैसो से इनका काम चलता है। व्यापारी एडवास दे जाते हैं। माल बनाकर उन्हे देना होता है।

"रुक, मैं चीर देता हूँ।"

"नही बाबा, चिराई करते ही खाना मॉगोगे।"

"हू! हू! हू! बोलने नही दूगा। धान चावल घर मे लाता हू।'

रामसिंग के नारियल पेडा के पत्ते चीर कर तीलिया तैयार करने का काम सजुआ ने खुद अपने ऊपर लिया है। वह तुरन्त उठ कर मालिक के घर गया। मालकिन ने कहा, "बाहर जा कर बात सुन ले।"

"क्या है मालकिन?'

"जा न, वही कहेंगे।'

"एक काम करना है। नारियल क बाग मे कुछ झोपडिया डालनी है।" रामसिग न कहा।

"क्या?"

"अरे बेटा जातुधान। बस भात खाना जानता है। दिमाग तेरा एक दम भोथरा है। गाय भैस रखना है और क्यो?"

रामसिंह की गायो और भैसो की गिनती नही। दूध का पैसा मालकिन को मिलता है। करीब तीस साल पहले नि सतान पत्नी की आज्ञा लेकर रामसिंह न माली स ब्याह किया था। आना देकर भी जब मालकिन रोन बैठी तो उसे मनाने के लिए रामसिंह ने अजुरी भर रुपये पत्नी को देकर कहा था, "भैंस खरीद ला इन पैसा से। विलायती भैंस। और दूध का व्योपार करो।"

रामसिंह की दूसरी पत्नी का पुत्र धन साल-दर साल बढ रहा था और पहली पत्नी का दुग्ध धन भी उसी अनुपात म बढता गया था। दुधारु गाय भस लेकर तीन चार नौकर भागीरथी क किनारे मडया डाल कर रहत हैं।

सजुआ न रामसिंह से यह नही पूछा कि झोपडिया क्या डालनी है। उसका इस

बात की तरफ ध्यान ही न गया। बोला, "तुम्हारे तो बहुत सी गाय भस हैं। तो फिर लबी सी झोपडी डाल देंगे हम। मातग से बात करता हूँ। उनको जो लेना है, लेंगे। मुझे सिफ अपनी खोराकी और बीडी का पैसा चाहिए।"

"खोराकी ?"

"हाँ, दो बखत की।"

"एँ ?"

"हाँ बाबू।"

रामसिंग को बात पसद नही आयी पर मालकिन ने भीतर से कहला भेजा, दो बखत क्यो, चार बखत खाय सजुआ। हमारी गाय भैंस ही हमारे बाल-बच्चे हैं। उनको आराम मिलना चाहिए।'

भर-पेट भात मिलने की खुशी म सजुआ सब कुछ भूल गया। । मातग को बुलाने गया।

"गाय भैंस के लिए झोपडी कौन डलवाना चाहता है रे ?" मातग ने पूछा।

"यह तो नही पूछा।"

' बेटा जातुधान, बाढ आने वाली है।'

"यह तो नदी को देखकर ही समझा जा सकता है।"

'अरे ! तू तो कुछ नही समझता। बस तुझे तो पेट की पडी रहती है। साले, आजकल नदी देखकर बाढ नही पहचानी जाती। फरक्का का पानी छोडेगा।"

' आँ ? पानी छोडकर सब डुबा देगा ?"

"मैं जानता हूँ।"

दोनो रामसिंग के पास आये। रामसिंग बात को टाल गया। बोला, "तुम लोगो का घर तो ऊँचे पर है डर तो उन्हे है जिनके घर नीचे मे हैं। मेरी गोशाला नीचे मे है इसीलिए यहाँ झोपडी डलवा रहा हू।"

"बाढ आ गयी तो खायेंगे क्या ?'

"बाढ आये तो सालो तुम लोग मेरी गदन पर सवार हो जाना। मरे चावल का सत्यानाश करना।"

' तुम्हे सरकार देती है नही तो तुम कहाँ खिलाने वाले थे ?'

"ऐसे ही दुनिया चलती है बेटा। तुझे आम खाने से मतलब या पेड गिनने से ? तुम्हें खाना मिल जाता है। मुझ सरकार देती है या कोई और, इससे तुम्हें क्या ? अच्छा अब चलो लग जाओ काम स।

नारियल के बाग मे नया मवशी घर बनाने मे दो दिन लग गये। मालकिन ने सौत के साथ मिलकर भात, दाल चटनी, पकाया ढेर सारा। खूब खाया सजुआ न और दूसरे मजूरा ने। मगर सजुआ और मातग को चन नही था।

काम खतम होने पर मातग ने कहा बस पकड कर बहरमपुर जाता हूँ।

सारी खबर मिल जायगी।"

"खबर कौन देगा ?"

"नदी का आफिस नही है वहाँ ?"

"जाओ।"

"पहले माँ भागीरथी बहती थी तो कभी कभी बाढ आती थी। फरक्का बन जाने से हमेशा पानी डबाडब भरा रहता है। जरा-सा इधर-उधर हुआ नही कि बाढ आयी।"

"घर तो ऊँचे पर है।"

"साले तू एकदम घोंचू है। घर तो है ऊंचे पर। खेत भी ऊंचे पर है क्या ?"

"माँ भागीरथी चाहे डुबायें चाहे छोडें। जब डुबाती हैं तब डुबाती है। पर जब छोडती हैं तब नही डुबाती। इस बार खुद ही छोडा है उन्होने। डुबायेंगी नही।"

"पता नही ?"

"रामसिंग को असल बात का पता है।"

"चल, खेतो पर चलते हैं।"

"दो चार दिन देख लो न।"

मगर भागीरथी ने दो चार दिन की भी मोहलत नही दी। न वर्षा, न बादल, शुक्ल पक्ष का निर्मल आकाश और अचानक किनारे तोडकर नदी दबे पाव डोमपाडा में घुस पडी।

पहले सजुआ और उसके घरवालों ने सोचा डोमो के सुअर भाग गये हैं। कभी-कभी जब उनके सुअर भाग जाते हैं तो डोमपाडा मे ऐसा ही गुल गपाडा मचता है। मगर शोरगुल ज्यादा हुआ तो वे समझ गये मामला कुछ और ही है। लालटेन और लाठी लेकर वे बाहर आये। चार कदम चल कर ही वे स्तंभित हो कर रुक गये। पानी। चारो ओर पानी ही पानी। एक कुत्ता भागा जा रहा था।

"पतित हो ओ। हे मदन ! तुम लोग ऊपर आ जाओ।" मातंग ने चीख कर कहा।

"अरे ! दिया दिखाना।"

"यह लो। देखो। इधर। इधर।"

सजुआ ने कहा, "अभी भी पानी घुटनो तक ही है। नीचे जा कर उन्हे ले आता हूँ। बाप रे ! क्या पानी है।"

डोमो के उनके घरो से ऊंचाई पर लाने मे सवेरा हो गया। आकाश एकदम स्वच्छ था। सूर्य निर्दयतापूर्वक चमक रहा था। भागीरथी फूल फका कर दोना किनारों के ऊपर बह रही थी।

वे रामसिंग के बाग में आ गये। राम का लडका बहरमपुर मे बाढ निमंत्रण

कक्ष से खबर लाया था। फरक्का से पानी छोड़ा गया है। पानी नही छोडा जाता तो फरक्का बांध टूट जाता। पद्मा नहर मे पानी निकलने वाला न था। इसलिए भागीरथी मे पानी छोडना पडा।

राम का लडका खुश हो रहा था, बोला, "मलट्री आ गई है। हाइवे पर नावें चल रही हैं। नावो पर लाद कर लोगो को ला रहे हैं मलट्री वाले। अब बाढ-पीडित कैंप लगेंगे। आटा, चावल, कपडा, दवा दारू—अच्छी व्यवस्था की गयी है।"

"यहाँ के लिए क्या व्यवस्था है?'

"यहाँ की व्यवस्था हमे ही करनी है।'

"तो फिर जा। गेहूँ ले आ। कूट पीस कर खायेंगे लोग। इतने लोगो को भला चावल दिया जा सकता है?"

मालकिन ने रामसिंग को भीतर बुलाया। बाल-बच्चे हुए नही थे। होने भी नही थे। पचास की उमर की सख्त शरीर वाली महिला थी।

मालकिन ने कहा, "ठीक है। चावल ही दो। लिख रखो। इनके हिसाब मे काट लूंगी बाद मे।"

शाम होते होते डोमपाडा गायब हो गया। चारो ओर पानी की चादर तन गयी। सिर्फ बाबला के पेड की चोटी दिखाई दे रही थी।

रामसिंग ने सजुआ और उसके साथियो से कहा, "इस बार साला की नींद टूटेगी। अगर पानी बेलाटी के ताल मे घुस गया तो आबादी डूबेगी। साले हर साल पर साल एक ही बात रटते रहते हैं 'होगा। होगा।' साजखाली का बाँध हटा लेते तो पानी यहाँ नही ढुकता। एक काम करो तुम लोग ऊपर की तरफ मडैया डालना शुरू करो।"

'नही बाबू हम लोग खेतो पर जा रहे हैं। दूसरे लोगो से करवाओ।"

"क्यो जा रहे हो?'

' हमारी जान तो वहीं अटकी है।"

खेत क्या अभी बचे हैं?"

' क्यो नही बचे रहेगे? खतो के डूबने पर साजाखाली भी डूबता है। साजाखाली मे पुलिस चौकी है। डूबी होती तो तुम्हे पता चला ही होता। है कि नहीं?"

रामसिंग भी बहुत चिंतित था। बोला, ' ओह! कितना धान हुआ है। डूब गया तो हम भी डूबेंगे। तुम लोग जाने को कह रहे हो। नाव तो नही डूबेगी?"

"बाबू तुमने अपनी गोशाला हटायी बाढ़ की खबर पाने के बाद। अगर जरा सा इशारा कर देते तो डोमपाडा डूबने पाता क्या?

मैं तो समझ ही नही पाया इतना पानी होगा।'

"नाव नहीं डूबेगी बाबू। पानी में हिलोर नहीं है न लहरें हैं। एकदम स्थिर है पानी। कौन इसे ठेल कर नीचे से ऊपर कर रहा है ? बाबू किस देश को बचाने के लिए हमें डुबाया जाता है ?"

बलाटी का मातंग वह प्रश्न करता है जिसके साथ बहुत से व्यक्तियों दफ्तरों, राज्यों और राष्ट्रों के स्वार्थ जुड़े हुए हैं। रामसिंग यह सब नहीं जानता। वह सोच में पड़ जाता है। बहुत सी बातें उसे याद आ रही हैं। सदर से खबर मिल गयी थी उसे कि पानी छोड़ा जायगा। उसने अपने जानवरों की झोपड़ियां हटायी थी। सरकार खबर दे कर आदमी को खाल से डाड (ऊँची जगह) पर जाने को कह सकती थी। पर नहीं। सरकार के लिए "बाढ ग्रस्त" होने के पहले बेलाटी गाँव का अस्तित्व ही नहीं है। पर रामसिंग अपने सामने बैठे दुगत डाम और दूसरे लोगों से यह बात नहीं कह सकता। सरकार अगर बाढ सहायता कार्य से कुछ न दे तो वह मारा जायेगा। अगर इनकी मदद न करे तो भी मुश्किल। यह साला जातुधान, जिसके पेट में अन्न न हो तो इसका दिमाग ही काम नहीं करता। औरों को साथ ले कर आयगा और कहेगा, "बाबू गोले की चाबी दीजिए।" इस तरह के कटु अनुभव उसे पहले भी दो बार हो चुके हैं।

अगर कोई बहुत परिचित आदमी आपसे आ कर कहे कि गोले की चाबी दो तो निश्चय ही उसके साथ आपके संबधों में दरार पड़ेगी। मगर उसके दूसरे ही दिन सजुआ ने एकदम नामल व्यवहार किया था। तरह-तरह की बात रामसिंग के मन में उठ रही थी और खेतों में खड़े सुपुष्ट तथा तेजस्वी धान के पौधों के लिए वह सचमुच बहुत चिंतित था।

एक पल बाद उसने कहा, "नाव में जाओ तुम लोग। भूजा गुड ले कर जाना। पानी की गति को कुछ कहा नहीं जा सकता। अगर किसी कारण आज न लौट पाओ तो साथ में कुछ खाने को रहना चाहिए।

भागीरथी लगातार ऊँची होती जा रही थी। पानी की सतह पर उखड़े हुए पेड़ पौधे, छप्पर और मरे हुए जानवर उतराते बहे जा रहे थे। अचानक सजुआ ने कहा, "लगता है किसी की नई नई झोपड़ी पानी में पड़ गयी है। छप्पर का फूस एकदम नया है, बांस भी अभी हरे हैं। पता नहीं किसने कितने साध से बनाया होगा।"

मातंग ने पानी को गौर से देख कर कहा 'यह तो नयी बाढ है। पानी छोड कर देश दुनिया को डुबा देते हैं।'

"इधर पद्मा है उधर भागीरथी, बीच में जरा-सा फरक्का है। अगर फरक्का डूब जाय तो क्या होगा ?" सजुआ ने कहा।

"होगा क्या रे साला। तू भी अपने बाप-दादा के पास पहुँच जायेगा। फरक्का डूब जाय और पद्मा भागीरथी एक हो जाय तो पूरा जिला रसातल को

पहुच जायेगा। साला, बेकूफ। सिफ खाना जानता है और कुभाखा बोलता है।" मातग ने डाट पिलायी।

सजुआ चुप लगा गया। गेरुए रग की जलराशि पर काली नाव जा रही थी। भागीरथी को देख कर सजुआ, मातग, गगन या ईश्वर कोई उसे "माँ" नही कह पा रहा था। वह कोई और नही थी।

वह भागीरथी का पुराना, परिचित रूप नही था। नदी के पुराने रूप मे गर मियो म फाँकें पड जाती थी। नदी का पानी तीन चार धाराओ म बट जाता था। इनमे तैरने लायक पानी होता था, हालाकि डुबाह वहाँ भी नही होता था। वर्षा मे टापू पानी में डूब जाते थ। तब बडी बडी नावें और कलकत्ता के स्टीमर उसमें चलने लगते थे।

यहाँ भागीरथी नहर जसी है। दोना किनारो को छूता हुआ साफ-सुथरा पानी। पानी बहुत मीठा है। पर स्वभाव नही है नदी जैसा। आकाश से एक बूँद भी न टपके, फिर भी नदी मे बाढ, कभी किसी ने सुना है।

दूर से ही खेत दीख रहे हैं। गेरुए रग के पानी की अछोर चादर पर जैसे किसी ने पन्ने का बडा टुकडा रख दिया हो।

"जय माँ भागीरथी। गगा पूजा पर डाली चढाऊँगा।" सजुआ ने कहा।

खेतो को सुरक्षित देख कर सजुआ और मातग की आँखो से आँसू झरने लगे, खुशी के आँसू। मातग ने अजुरी भर पानी ले कर अपने और दूसरे साथियो के सिर पर छिडक दिया। बोला, "माँ भागीरथी! छिमा करना। पता नही क्या क्या कह गया तुम्हें। पूजा पर डाली देंगे हम सभी।"

क्रमश खेत पास आ गये। रात को वहाँ रह कर रखवाली करने के लिए कुछ मचान बनाये गये थे। एक मचान के पास पहुँच कर मातग ने डडे से मचान को पीटा। मातग ने कहा, "साँप सब पानी मे बह कर चले गये हैं।'

वे सब मचान पर बैठ गये। गुड और चूडा खाया। सजुआ उठ कर चारो ओर नजर दौडाने लगा।

"क्या देख रहा है?" मातग ने पूछा।

"पानी।"

"कितनी दूर दिखाई पड रहा है?"

'साजाखाली तक।"

"तब डर नही है।'

खेत मे उतर कर थोडी देर वे घास, पात उखाडते रहे। फिर सजुआ ने कहा, 'ऐसा करो। तुम लोग जा कर सभी को यहाँ ले आओ। खेत की निराई न होगी तो धान नही होगा।

"औरतों-बच्चों को लाने की जरूरत नहीं है।"

उनके जाते ही सजुआ लेट गया। एकदम निश्चिंत था वह। आने दो बाढ़, डूबने दो गाँव। धान तो बचा हुआ है। और वह सो गया।

शाम हो गयी, फिर भी नाव किसी को लेकर वापिस नहीं आयी। सजुआ को फिर भी कोई चिंता न थी। खाना तो था ही पास में। चलो, आज नहीं आये तो कल आ जायेंगे। धान तो उनका भी है। अभी अगर घास और खर नहीं निकाले गये तो उनका भी नुकसान होगा। सजुआ कल्पनाप्रवण आदमी नहीं है। लंबे चौड़े दूर तक फैले, चारों ओर पानी से घिरे खेतों के बीच कोई अनुभूति नहीं हो रही थी। वह आदिम और अमानवीय परिदृश्य उसे जरा भी प्रभावित नहीं कर पा रहा था। बीड़ी पी कर उसने फिर नींद की शरण ली।

शुक्ल पक्ष का चंद्रमा आसमान में तैर रहा था। छितरे छितरे बादल उसके चारों ओर ठहरे थे। चाँदनी रात में भागीरथी जैसे सीधे चंद्रमा को स्पर्श करने के लिए आसमान में चढ़ने लगी।

नींद में सजुआ को धक्का-सा लगा। पहले हल्का सा, फिर तेज। नहीं, धक्का नहीं लगा था, मचान हिल रहा था। वे लोग आ गये क्या? वह उठ कर बैठ गया। आँखें मिचमिचा कर उसने देखा भागीरथी चारों ओर से घेर कर उसका मचान हिला रही थी। न कहीं धान था, न कहीं खेत, सिर्फ पानी और पानी उसके मचान में धक्के मारता हुआ। आतंक से काँप कर सजुआ आँखें फाड़े देखता रहा। क्या करे? मचान की छान पर चढ़ जाये? मगर वह उसका बोझ भला सँभाल पायेगी? निरुपाय हो कर सजुआ मचान के बाँसों के बने टट्टर को पकड़े बैठा रहा। डर से उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

बहू नहीं, माँ नहीं, बच्चा नहीं, अकेला वह मरने जा रहा था। उसे अपने ऊपर बहुत अफसोस हो रहा था। कुछ भी तो नहीं मिला उसे जीवन में। कितनी साधें अपने सीने में दबाये वह दुनिया छोड़कर जा रहा है।

पानी में गिरकर सजुआ ने जाना कि भागीरथी की छाती में भयानक उथल पुथल हो रही है। अतल में से गूँ गूँ आवाज आ रही है। ऊपर निरासक्त, निर्लिप्त चंद्रमा स्थिर खड़ा है। मचान का टट्टर प्राणपण से जकड़े सजुआ फटी फटी आँखों चारों ओर देख रहा था। अगर कोई पेड़ बहता हुआ उधर आ जाता। या कोई मजबूत छप्पर ही पानी पर तैरती उसके पास आ जाती।

तभी उसकी आतंक विस्फारित आँखों के सामने पानी की एक ऊँची दीवार हहराती हुई उसकी तरफ दौड़कर आती दिखाई दी। सजुआ को लगा जैसे नमकीन पानी की वह दैत्याकार लहर दाँत फाड़कर हहराकर हँसी।

खेतों के डूबने की बात और लोगों को बाद में मालूम हुई, जब सांझ खाली में रक्षा-नौकाएँ पहुँचने लगीं। पुलिस-चौकी में पानी घुस जाने के कारण बेलेटी

अब बाढ़ राहत केन्द्र बन गया था।

रामसिंग की छाती पर मूंग दल करके सरकार ने राहत केन्द्र की स्थापना खुद की। पुलिस के जवान राहत काय कर रहे थ। रामसिंग की छाती में पहली चोट तब लगी जब खेत डूबे और दूसरी चोट तब लगी जब सरकार द्वारा भेजी गयी राहत सामग्री या कि गेहूँ, चूड़ा, गुड, कपडे आदि की हिफाजत का काम उसे नही मिला। उस पर बी डी ओ ने कहा, "अपने जानवर आपने ऊँचे पर पहुँचा दिये और दूसरो को कुछ नही बताया, यह क्या बात है? यह खबर भी क्या सरकार देने आती? सब हमारी जिम्मेवारी है? मुझे मालुम हुआ होता तो मैं सबको बता देता। इतनी बडी बात जानकर भी आप चुप लगा गये?

रामसिंग का चेहरा डर से पीला पड गया। कातर होकर बोला, "वह गलती तो हो ही गयी सर! मेहरबानी करके धीरे बोलिए। और हमारे यहाँ का सजुआ खेत देखने गया था पानी मे वह गया। लोगो ने कान खडे कर लिये है।"

"जमीन तो आपकी ही है।

'जी हाँ।" रामसिंग ने और भी दीन भाव से कहा "सर मोटर बोट लेकर जरा उधर दिखवा लीजिये। कही मिल जाय।"

क्या बात करते है। किसी की उससे दुश्मनी है जो उसे छोडकर चला आयेगा। पता नही बहकर कहा पहुँच गया होगा।'

मोटर बोट पानी मे चक्कर लगा रही है। एक के बाद दूसरे गाव डूब रहे हैं। अब वेलेटी ब्लाक बाढ ग्रस्त घोषित हो चुका है। जिन्हे बचाकर लाया गया है उनम घूम घूमकर मातग सजुआ की माँ और बहू सजुआ को खोज रही हैं। एक समय पता चलता है कि करीब तीन मील आगे नदी स एक सडी-गली लाश निकाली गयी है जिसके सिर पर घने और घुघराले बाल है और फले हुए दाहिने हाथ मे लोहे का कडा।

इसके बाद कोई सदेह नही रह गया। सजुआ की बहू की आखा म भागीरथी की बाढ का पानी उतर आया था और वह रह रहकर बेहोश हो जाती थी।

मातग ने आह भर कर कहा, "अब वह नही रहा तो उसका किरिया-करम तो कर देना होगा। सजुआ की माँ! मातग के रहते तुम लोगो को कोई तकलीफ न होगी। उठो चलो।'

"क्या करूगी उठकर, देवर? बस कहूगी बहू से कि उसके सोआमी को फूकना होगा? आहा! हम उसे राच्छस कहते थे। बाभन ने जातुधान नाम रखा। आह! ऐसा था बाछा मेरा, रिस तो जानता ही न था। अब मेरे मरने की बारी थी कि उसके? देवर! क्या उसे छोडकर आय। तुम तो जानते थे वह गँवार बुद्धू लडका है। उसकी बात क्यो मानी?"

हाँ सजुआ की माँ। इसी दुख स मेरी छाती फट रही है। पर कौन जानता

था कि ऐसा होगा ? उठो माँ, उठो । दाह करना है, सराध करना है, जात भोज करना है । नही तो उसके बच्चे का अमगल होगा । अब पोते का मुह देखना है ।"

"कहा से करूँगी यह सब ?"

भीषण क्रोध मे मातग की आँखें जल उठी, "रामसिंग बाबू देगा । जानता था रेला आयेगा, पर किसी से कहा नही । गाय भैंसो की चिंता हुई उसको, आदमी की नही ।"

चारो ओर बाढ पीडित लोग । खर का पुतला जलाया गया ।

मातग और उसकी बिरादरी के लोग रामसिंग के घर गये । मातग बोला, "बाबू, बाढ से तुम्हारा तो कोई लोकसान हुआ नही । सरकार सब कुछ दे रही है । सजुआ के किरिया करम के लिए तुम्हे देना होगा । नही तो बहुत खराबी होगी ।"

रामसिंग ने उनके गुस्से को देखकर दात निपोरते हुए कहा, "दूगा क्या नही । उधर सरकार पीछे पडी है । इधर तुम लोग । बाढ को तो जैसे मैने ही बुलाया है । ले, क्या चाहिए । पर तुम्हारे हिसाब मे जायेगा ।"

"नही । यह नही होगा । यह तुम किसी के हिसाब मे नही लिखोगे ।" मालकिन ने कहा ।"

"आजकल का जमाना ही उल्टा है । भलाई करो तो भी कोई देखने वाला नही । हमारे बाप ने अकाल मे अपना गोला खोल दिया था तो राय साहब की खिताब मिली थी ।"

"पर सजुआ के सराध का चावल देकर तुम्हे कोई राय साहब का खिताब नही देगा, समझे ।"

"अरे ! सब समझता हू । पर थोडा तीखा न बोलने से ये साले सिर चढ जायेंगे । सोचगे यह तो इनके बाप की जागीर है ।" रामसिंग ने पत्नी को समझाया, 'हुँह । दुनिया डूब रही है पानी मे और इन सालो का श्राद्ध हो रहा है ।'

चावल की बोरी लाकर उन्होंने सजुआ की मा के हवाले किया ।

चावल की बोरी पर हाथ रखकर सास बहू सो गयी जैसे सदा का खब्बू, पेटू सजुआ ही लौट आया हो । दुख मे भी नीद आती है । भूख लगती है ।

सवेरे उठकर सास ने कहा, मातग देवर न होते तो वह हरामी कुछ न देता ।"

"सराध होने के बाद हम धामनाई चले जायेंगे । मैं वहा खेत मे काम करूँगी । तुम घर देखना । वहाँ औरतें भी खेत मे काम करती हैं ।"

"ठीक है । अब अकाल पडेगा । इतने-इतने आदमी हैं । कौन खिलायगा ? मैंने कभी इतना आदमी नही देखा ।'

' खेतो की लडाई म तुम राड हुई खेत डूबने पर मैं राँड हुई । अब नही

यहाँ।"

अगली रात को फिर सास-बहू सो रही थीं कि बाहर से साँकल बज उठी। दरवाजे के उस पार से जैसे सजुआ की आवाज आयी, "दरवाजा खोलो।"

माँ हड़बड़ा कर उठ बैठी। क्या सजुआ प्रेत बनकर आया है?

"कौन?" साहस करके उसने पूछा।

"मैं हूँ मातं, दरवाजा खोलो।"

माँ ने बहू को जगाया, फिर दरवाजा खोला।

बहू ने ढिबरी जलाई।

मातंग भीतर आया। पीछे से सजुआ।

"देवर! यह क्या?"

"मैं हूँ, माँ।"

"तू???"

"हाँ, मैं हूँ, माँ।'

"तो तू मरा नहीं था।"

बहू की देह थरथरा उठी। सिसककर रो पड़ी बहू।

"रोना—गाना बाद म।"मातंग ने डाँटा, "पहले उसे एक मुट्ठी चावल दो। चबा कर पानी पीये।"

"ओह! मेरा बेटा जिंदा है जिंदा है।" माँ हँसती रोती सजुआ की देह पर लोट-सी गयी।"

सजुआ ने चावल चबाकर पानी पीया, फिर बोला, "पानी मे बहते-बहते मेरे हाथो मे पेड़ की एक डाल आ गयी। मैं पेड पर चढ गया। इतने साँप थे पेड़ पर कि क्या कहूँ। बहते-बहते जियागंज तक गया। वहाँ मुर्दा की तरह किनारे पड़ा था। पुलुस ले गयी। दे सूई, दे दवाई, दो दिन मे ठीक हो गया। फिर चलते चलते अभी यहाँ पहुँचा। मात काका के घर गया तो बूढा मुझे देखकर भूत समझ गया। हा हा हा हा' सजुआ हँसने लगा।

"बहुत कुछ हो गया यहाँ तेरे मरने की खबर के बाद।" मातंग ने गला साफ करके कहा।

"घर मे इतना चावल कहाँ से आया?

मातंग ने डरते डरते सब बता दिया। माँ और बहू भी अपराधी की तरह बैठी रहीं। सजुआ अगर गुस्सा होकर उन्हें पीटने लगे?

सारी कहानी सुनकर सजुआ ने कहा, "रुको, पहले सब बात समझने दो। हाँ, तो तुम लोगो ने घर का पुतला बनाकर मुझे जलाया। अच्छा। फिर तुम लोग हमारे सराध के लिए चावल लाय। ठीक।"

'कल ही चावल लौटा दूगा, नही तो रामसिंग समझेगा हमने नाटक फैलाकर

उससे चावल लिया है।"

"ना।" सजुआ ने कहा।

"क्यो ?"

"चावल वापस नही दूगा।"

"फिर क्या करेगा ?"

सजुआ हँसने लगा। तीनो मुह फाड़े उसे देखते रहे।

"वाह ! तो तुम लोग मुझे फूक आये। फिर मेरे सराध के लिये चावल ले आये। क्यो ? हा हा हा हा।"

"देवर ने कहा था उनके रहते हम कोई तकलीफ न होगी।"

"मैं जानता हूँ अपने बूढे को।" सजुआ ने मातग के पाँव की धूल सिर पर रखी।

"फिर ?' मातग ने पूछा।

'देखो, सभी कहते है मैं जातुधान हूँ। मेरे पास बुद्धि नही है। पर अब मुझे बुद्धि आ गयी है। तुम तीनो को छोडकर कोई और तो मेरे यहाँ आने के बारे मे जानता नही ?"

"उससे क्या ?"

"नही समझे बूढे ?" सजुआ फिर हँसने लगा। फिर बोला, "चावल की बोरी माँ और बहू को लेकर मैं धामनाई जा रहा हू। तुम कहना, तुम्हे ठीक से तो मालुम नही, पर शायद दोनो औरतें धामनाई गयी है। वही पर सराध करेंगे।"

"रामसिंग से क्या कहूँगा ?" मातग ने पूछा।

"कुछ मत कहना। बाढ़ खतम होने पर मैं आ जाऊँगा। कहूँगा जातुधान हू इसीलिए तो माँ भागीरथी ने मुझे वापस कर दिया। बोली, जा अभी धरती पर तेरा दाना नही खतम हुआ है।"

"और यह चावल ?" मातग ने फिर पूछा।

"मैं तो राच्छस हूँ, जातुधान हूँ, मैं अपनी सराध का चावल खुद खाऊँगा। ऐसी सराध होती कहाँ है कि जिसकी सराध हो वही आकर भात खाये।"

"ठीक है। जो मरजी सो कर। मैं किसी से कुछ नही कहूगा। पर दाह हुआ, सराध न हुआ तो देवी देवता नाराज नही होंगे ?" मातग ने पूछा।

"होते हैं तो हो नाराज देवी देवता। अरे बूढे, पेट म भात हो तो सभी देवी देवताओ का कोप बेकार हो जाता है। चल माँ, उठ। अरे बहू, उठा बच्चे को। अँधेरे म ही निकल जाना होगा।

अपनी श्राद्ध के चावलो की बोरी सिर पर रखे जातुधान भागा जा रहा था। धामनाई काफ़ी दूर है। भागते हुए उसे लग रहा था वह भागीरथी से भी ज्यादा ताकतवर है।

उसने बाढ से भी फायदा उठा लिया।

(1978)

गिरिबाला

गिरिबाला का घर कांदी तहसील के तालसना गांव में है। गिरिबाला की अपनी भी कोई कामना वासना है यह किसी की समझ में नहीं आया। गिरि हमारी न सुंदरी थी न ही बदरी वही ठीक-ठाक जिसे कहते हैं। पर उसकी दोना आँखें बड़ी सजीव थी। इसी कारण आदमी की नजर उस पर ठहर जाती है।

उनकी जाति मे आजकल भी लडका लडकी को पन' देता है तब शादी होती है। आउलचांद न चार बीसी रुपये और एक बछड़ा देकर गिरिबाला से ब्याह किया था। झूठ नही बोलूंगा गिरि के बाप न भी अपनी लडकी को चार तोला सोना, बतन भांडा, चटाई और एक गाडी बांस दिया था। देता क्या नही? उसके पास बांसो की कई खूटियां है।

आउलचांद ने ससुर से कहा था, "मेरा घर जल गया है। इसीलिए तुम्हारी बेटी को साथ नही ले जा रहा हूँ। बांस ले जाकर पहले घर बनाऊंगा, तब तुम्हारी छोकडी को ले जाऊंगा।"

मगर एक गाडी भर बास लेकर जो आउलचांद गया तो फिरा ही नही। कई दिन बाद डाकिया वशी धामाली गिरिबाला के घर आया। वशी निशिदा सब पोस्ट आफिस मे डाकिया का काम करता है और 145 रु० महीनावारी पाता है। इतने कम पसो म घर का खच चलता नही इसलिए शाम को निशिदा के डाक्टर के साथ कपाउडरी करता है। डाक्टर हस्पताल मे काम करता है। इसीलिए वहां के रोगियो को अपनी प्राइवेट प्रक्टिस के लिए ले आता है। फलस्वरूप आस-पास के पांच सात गावो म वशी का भी अच्छा असर है। सभी जानते हैं कि डाक्टर से काम कराना हो तो वशी की ही पूछ पकडनी होगी।

डाक्टर के साथ रहते रहते वशी भी डाक्टरी लहजे म बोलने लगा है। इस कारण उसकी इज्जत और बढ गई है।

गिरि के बाप को वह मामा कहता है। क्या कहता है इसका भेद किसी को नही मालूम। वशी ने सूचना दी, "बयुआ डहरी गया था। वहां क्या सुना जानते हो, मामा? तुमने गिरि की शादी आउलचांद से कर दी।"

हां, किया तो है।

"उसने कितने रुपये दिये थे ?"

"चार बीसी एक।"

"यह बेल मडे चढ़ने वाली नहीं है।"

"क्या मतलब।"

"अब तुमसे क्या कहूँ ? मैं एक सरकारी नौकर हूँ, उस पर डाक्टर साहब का दाहिना हाथ, मुझसे एक बार पूछ तो लेते यह काम करने के पहले ? आउलचाद आदमी खराब नहीं है। उसके साथ मैंने कितनी ही बार गाजे का दम लिया है यह बात स्वीकार करता हूँ। मगर यह रुपया कहाँ से आया, यह जानते हो ? य रुपय चन्नन के हैं। चन्नन का ब्याह कलहाट मे तय हुआ है। आउलचाद चन्नन का चाचा लगता है और वह लडकी वाला को 'पन' देने निकला था।"

"यह कैसी बात ?"

"चन्नन की माँ रो-पीट रही थी। फिर इधर उधर स कर्ज लेकर लड़के का ब्याह किया। कैसा आदमी है आउलचाद, देखा ? अपनी कोई जमीन जायदाद नहीं। चन्नन के घर पडा रहता है।"

"जमीन भी नहीं है ?"

"अरे नहीं।"

"घर बनाने को एक गाडी बाँस जो ले गया ?"

"वह भी बताता हूँ। बास उसने चन्नन की बुआ को सौ रुपये मे बेच दिया और बानपुर के मेले चला गया।"

गिरिबाला का बाप ये बातें सुनकर सिर पीटकर रह गया। वशी धामाली ने आउलचाँद के बार म और भी बातें बतायी। अन्त मे कहा, "लडका इतना बुरा नहीं है। पर जमीन जायदाद कुछ भी नहीं है। एक मेले से दूसरे मेले मे गाना गाता फिरता है।"

"मोहन ने तो कुछ नहीं बताया था। वही ले आया था इस ब्याह का प्रस्ताव।"

'ऐसी बातें कोई बताता है ? मोहन उसका जिगरी दोस्त है।"

"लडकी का दूसरा ब्याह रचाऊँगी मैं। उस ठग, बदमाश के घर मेरी लडकी नहीं जाएगी।"

मगर आउलचाद एक बरस बाद आया तो उसने ना' कहन का कोई रास्ता नहीं छोडा था। वह सभी के लिए उपहार ले आया था। बहू के लिए नए कपडे सास के लिए कटहल की लकडी की मचिया, ससुर के लिए चार नए बार और खाने-पीने की ढेर सारी चीजें। गिरि की माँ ने वशी की कही सारी बातें उसे शिकायत के बतौर सुनायी। आउलचाँद ने उदारतापूर्वक हँसते हुए कहा, "अरे माँ, वशीदादा की बात पर चलने से जिंदगी नहीं चलती है। अब आपकी बेटी मेरे

साथ पक्के मकान मे रहने जा रही ह यह तो झूठ नही है।"

गिरि की मा ने जाने के पहले बड जतन स बेटी की चोटी गूथी और रोती हुई बोली, बेटी यह आदमी तो वेश्या का पड है। जितना भी उखाडो, फिर स उग आता है। जो भी बात बोलेगा सब झूठी, पर क्या शान स बोलता है। कितनी मिसरी घुलती है इसके मुह मे?'

गिरि चुपचाप सुनती रही। वर पिता को पन' देकर पुत्री को ब्याह ले जाता है। मगर लडकी की जात तो गाय की जात है। चाहे वह दामाद को दे या यम को वह कुछ बोल नही सकती। गिरि एक ही बात समझ रही थी और वह यह कि अब उसके दु ख के दिन शुरू हो रहे हैं। वह चुप आँसू बहाती रही। फिर नाक साफ करके, आखें पाछ कर बोली, "पूजा पर मुझे बुला लना मां। बुलाओगी न? लोहिया गाय को ठीक से दाना-पानी दना। जवा कुसुम के पौधे को पानी देती रहना।'

इस प्रकार चौदह साल की गिरिबाला पति का घर बसाने गई। आउलचाद ने चलत समय गिरि की मा से कहा, 'मा, थोडा चावल दाल भी द देना। मैं बाबू के घर काम कर रहा हूँ आजकल। जाते ही डिउटी पर लगना है। चावल दाल खरीदने का वक्त नही मिलेगा।

गिरि ने दूसरे सामान के साथ चावल दाल और नमक की पोटलिया भी रख ली। फिर पति के पीछे पीछे अपन पिता का घर छोड कर चल पडी। आउलचाद बहुत तेज चलता था। थोडी दर बाद वह बहू का पिछुआती देखकर बोला, 'थोडा पाव बढाकर चल न।'

तालसना गाँव मे आउलचाद ने सचमुच पत्नी को पक्के मकान मे रखा। बाब लोगो के बाग म आम, जामुन पपीता कई तरह के पेड थे। बाग के एक कोने मे बाग के रखवाले के लिए एक पुराना जजर कमरा था। दरवाजा नही था उसमे। आउलचाद ने पत्नी को सतोष दिया, 'दरवाजा भी लगा दूगा। देखा, क्या शानदार कमरा है? वो देख पास ही पोखरी भी है। अब जरा जल्दी से लकडी ले आ और भात चढा दे।"

'अधेरा हो रहा है। ढिबरी कहाँ है?

ढिबरी? वह तो नही है।"

तभी बाबुओ की नौकरानी न आकर गिरि को मुसीबत से छुटकारा दिलाया। उसने आउलचाद को बुरा भला कहा और एक ढिबरी ले आई कही से। गिरि को पोखरी पर ले गयी। बोली, 'तुम्हारे माँ बाप कसे कसाई हैं। ऐसी न हीं-सी छोकरी को इस नशेडी गजेडी के पल्ले बाध दिया। यह तुम्ह खिलायेगा क्या? बाबू लोगो के गाय बल चराता है। पेट पालता है। तुम अपन ये गहना गुरिया ले जाकर बाप के पास कल ही रख आओ।"

पर गिरि दूसरे दिन बाप के घर गहने रखने नहीं गयी। देखा गया कि वह बाग के एक कोने मे बने उस जर्जर कमरे के अस्थिपंजर पर मिट्टी पोत रही थी बडी ही सावधानी से। आउलचाँद ने बाबू लोगो से एक टिन माँग कर लकडी की कब्जी के सहारे उस कमरे का खुला मुह बद कर दिया था। गिरि भी बाबू लोगो के घर भात के बदले काम करने लगी। कई महीने बाद एक दिन आउलचाद ने सहसा कहा, 'तुमने मुझे गिरस्थ बना दिया। एकदम पक्का गिरस्थ। मा-बाप थे नहीं। इधर-उधर भटकता फिरता था।

"बाबू लोगो से थोडी-सी जमीन लेकर अपना घर बना लो।" गिरि ने कहा।

"जमीन देंगे?"

"देंगे क्यो नहीं, तुम मागो तो। घर मे नया परानी आ रहा है। उसे पराये घर म लाओग क्या?"

"तुम ठीक कहती हो। भिखारियो का भी अपना घर होता है। अपना घर बनाने के लिए मरा भी बहुत मन करता है। पहले कभी अपना घर बनाने की बात मन मे उठती न थी।"

अपने घर के लिए पति-पत्नी दोनो की बडी लालसा थी, पर उनकी प्रथम सन्तान बेलारानी ने दूसरे के घर मे ही पदार्पण किया। एक महीना भी न बीता कि गिरि लोगों क कपड़े लेकर पोखरी म धाने गयी। बबुआइन ने कहा, 'लडकी बडी मेहनती है। काम भी खूब साफ-सुथरा करती है।"

मेहरबानी करके अपने बड़प्पन के उपयुक्त ही बबुआइन न अपने बच्चे के उतार कपड़े गिरि की बेटी के लिए दिये। बेलारानी के बाद एक डेढ बरस के फ्क से परीबाला राजीव और मरली भी पधारे। मरली के वक्त गिरि ने आपरेशन करवा कर बाकी आगन्तुको के लिए रास्ता बन्द करवा दिया।

इस बीच आउलचाँद ने बाबू लोगों की सेवा करके और हाथ पाव जोड के दो कट्ठा जमीन हथिया ली थी और जैसे तसे एक झोपडा भी खडा कर लिया था। आपरेशन की बात से गिरि से बहुत नाराज हुआ। बार बार मारने के लिए हाथ उठाकर कहता, "तूने क्यो कराया आपरेशन? अधरम काज क्यो किया? बोल?"

गिरि ने मुह नही खोला। गुस्से म आउलचाँद न उसका झोटा पकड़कर दो चार घूसे लगा दिये। वह भी गिरिबाला चुप रहकर सह गयी।

"जा न बाप से माँग कर कुछ बाँस ले आ, एक दिन आउलचाँद ने उससे कहा।

"क्या होगा?"

"यह भी कोई घर है। बाँस मिल जाय तो घर जैसा एक घर तो बने अपने लोगों का।'

"नही। हम दोनो अपनी मेहनत से घर बनायेंगे।"

'कसे?"

"काम करेंगे। पैसे बचायेंगे।"

"बचा चुकी पैसे। यह नही होता कि अपने चाँदी के गहने बेचकर या गिरवी रख कर ।"

गिरिबाला की अपलक दृष्टि से आउलचाँद का वाक्य अधूरा रह गया। उन आँखो की निर्निमेष दृष्टि को आउलचाँद सह नही पाता। उनके सामने सिर झुका लेता है। गिरि ने अपने चाँदी के गहने बबुआइन के पास रख दिए हैं हिफाजत के लिए। अभी भी वह उनके काम कर देती है। हालांकि अब उसकी बडी बेटी दस वर्षीया वेलारानी उस घर मे दो मुट्ठी भात के बदले खट रही है। पर वह दो मुट्ठी भात उसकी देह मे ऐसा लग रहा है कि वह बरसात की लहर की तरह फनफना कर ऊपर भाग रही है। लडकी के ब्याह मे चाँदी की जरूरत तो पड़ेगी ही। इसके अलावा खून पसीना एक करके बाइस ठो रुपये भी गिरि ने जोड रखे हैं।

'गहने बेचकर मैं घर नही उठाऊँगी। बापू ने अपने भरसक तुम्हें सब दिया था, घर बनाने के लिए गाडी बाँस भी दिया था। आजकल उसका दाम एक हजार है। एक सौ बासठ बाँस थे।"

"वही एक बात रटती रहती है।'

"वेटी का ब्याह नही करना?"

"लडकी तो दूसरे के घर की दासी होती है। मोहन ने मेरा हाथ देखकर बताया था कि पाँचवे बच्चे के बाद से सिफ झारझार लडके होगे। तू आपरेशन करवा आयी कि मजा मारती रहे।"

गिरि की आँखों मे हँसिया की धार दिखाई दी थी। उसने हसिया उठा लिया था और बोली थी, फिर ऐसी बात बोले तो अपना और बच्चो का गला काट कर मर जाऊँगी।"

"नही नहीं माफ कर अब ऐसी बात नहीं बोलूगा।"

कई दिनो तक डरा डरा रहा आउलचाँद। मगर फिर उसके दिमाग मे एक और कीडा रेंगने लगा। यह कीडा भी उसके दिमाग मे मोहन का ही डाला हुआ था।

मोहन अचानक एक दिन जाने कहाँ से प्रकट हुआ। उन दिनो गाँव गाव मे काम चल रहा था। कृष्णचक से निशिंदा तक का बस रोड पक्का हो रहा था। गिरि और आउलचाँद दोनो सडक म काम कर रहे थे। मोहन भी काम करने लगा। मजदूरी मे गेहूँ मिलता था। मोहन ने गेहूँ बेचकर चावल, कुम्हडा और मछली खरीदी। गिरि के दरवाजे पर ही पडा रहता था। गाँव शहर घूम घूम कर

वह पक्का बोहेमियन हो गया था।

एक दिन आउलचांद को देखकर मुँह में च च शब्द करके उसने कहा, "मीता, तुम तो एकदम मिट्टी कर रहे हो अपने को। वह जीवन एकदम से भुला ही दिया।"

"वह सब बेकार की बात यहाँ मत करो।"

"आह। मीता का गला क्या था?"

"गला तो था। पैसे भी अच्छे मिलते थे, पर हराम का पैसा हराम में निकल जाता था। घर नहीं आता था। बच्चों के मुँह में उस कमाई से भात नहीं जुटता।"

उसी मोहन ने एक दिन बताया, "बिहार में औरतें बहुत कम होती हैं। 'पन' भी लंबा चौड़ा देना पड़ता है। अब वहाँ के लोग आ कर हमारे यहाँ ब्याह करने लगे हैं। जानते हो कितने पैसे दे रहे हैं? सहदेव बाउरी ने अपनी लड़की बिहारियों को देकर पाँच सौ रुपये पाये हैं।"

"वह कौन देश है?"

"बताने से भी तुम कैसे बूझोगे। यहाँ से बहुत दूर है। वे लोग बंगला नहीं बोलते।

"पाँच सौ रुपये 'पन' देते हैं?"

"जरूर!"

बात यहीं तक रह गयी, क्योंकि तभी पंचायत के सदस्य काली बाबू के गौशाले में आग लग गयी। चारों ओर दौड़ भाग, शोर गुल मच गयी। सभी लोग उधर ही भागे।

गिरि यह बात भूल गयी, पर आउलचांद नहीं भूला। गिरि को पता नहीं क्या हुआ था कि वह पति की उखड़ी-उखड़ी बातों में भी कोई अर्थ नहीं निकाल पाती थी। आउलचांद ने एक दिन कहा, "तेरे गहने चाहिए किसे? बेला का ब्याह मैं करूँगा। घर भी पक्का कराऊँगा। बाबू के घर का अनाज खा कर देखा है मेरी बेला कितनी सुन्दर लगती है।"

अभी भी गिरि को कोई सन्देह नहीं हुआ। उसने पूछा, "लड़का देखा है कहीं?"

'अरे तुम देखना लड़की का ब्याह अपने-आप हो जायेगा।'

'हाँ, वर तो जैसे डाल पर झूल रहे हैं। थोड़ी भाग-दौड़ करनी होगी। यों ही नहीं मिलेगा वर।"

यही बात मन में रखकर गिरि दो दिन के लिए बाप के घर गयी थी। मधुनी को गोद में लिए राजीव और परी का हाथ थामे वह मायके गयी। बेला भी जाने के लिए बहुत रोयी। गिरि ने लड़की के हाथ पर एक अठन्नी रख कर उसे प्यार से

समझाते हुए कहा था "तो ले, मिठाई खा लेना। मामा के घर तुझे भेज दूंगी। पर अभी नहीं। अभी मन लगाकर बाबू का काम कर। मुझे चार दिन से ज्यादा नहीं लगेगा।"

इस समय क्या गिरि को पता था कि वापिस आकर वह बेला को नहीं देख पायेगी? जानती तो लडकी को भी साथ ही ले जाती। लडकी को सात बरस की उमर से बाबू के घर काम पर क्या यो ही लगा दिया था? खाना नही दे पा रही थी, कपडे नही दे पा रही थी। बेला का माथा चूम कर गिरि बाप के घर चली गयी।

बाँस बेंच-बेंचकर उसके बाप ने तीन बीघे जमीन खरीदी थी। दो बीघे बटाई पर मिले थे।

'आई है तो कुछ दिन रह।" बाप ने कहा।

"क्या खायेगी। भूजा भूजकर लाती हूँ। चटनी पीसती हूँ। क्या ब्याह हुआ तेरा भी। कैसा रग था फूल मा। काली होकर आ रही है। कसे घने बाल थे तेरे, सब झड गए। गले की हड्डी दिख रही है। कुछ दिन यहाँ रहकर खा पीकर थोडा ठीक हो ले तो जाना।" माँ ने कहा।

"दीदी तू चाहे छ महीने भी रहे तो हमे कोई फक नही पडने वाला।" भाई ने कहा।

खब खाना, खूब प्यार मिला उसे।

"बाँस चाहिए तो ले जा "बाप ने कहा, 'घर अच्छा न हो तो लोग सम्बन्ध जोडने म हिचकते हैं। घर देखकर ही तो भरोसा होता है कि सम्बन्ध अच्छे घर मे हो रहा है।"

रो गाकर गिरि बाप से बहुत कुछ पा सकती थी। माँ ने सुझाया, 'एक बोरी चावल ही माँग ले। तू माँगेगी तो मना नही करेंगे।" पर गिरि ने कुछ भी नही माँगा। क्यो माँगेगी? जिसे देना होगा खुद देगा।"

गिरि जवा कुसुम के पेड के नीचे जाकर खडी हो गई। कितने फूल खिले हैं। उसी ने लगाया था इसे। कितना चिकना आँगन है। घर के ऊपर नया छप्पर पड गया है। माँ राजी होगी तो राजीव को यहाँ पढने के लिए छोड जायेगी। छोटा भाई स्कूल जा रहा है। उसी के साथ जाया करेगा राजीव भी।

गिरि एक साबुन खरीद लाई थी और पोखरी के किनारे जाकर साबुन घिस घिस कर खूब नहाया था। बच्चो को भी नहलाया था। फिर मोहल्ले म घूमने निकली थी। इतने म ही उसे जसे स्वग सुख मिल रहा था। मा ने भाई को भेजा था ताल मे मछली मारने को। एक ताल ने इलाके का रूप बदल दिया था। साल मे दो फसलें काटो और मछली पकडो। गिरि के मन मे सुख की सुग ध उड रही थी। दु ख की कोई आशका न थी।

वशी धामाली भी आया था, बोला, "आहा रे गिरि ! आउलचाँद के हाथ तेरी क्या दुदशा हुई, बेटी ? डाक्टर साहेब ने बहरमपुर म मकान बनवाया है। तेरी चाची वही रहती है। लडके भी मेरे वही रहकर पढ-लिख रहे हैं। आउलचाँद आदमी होता तो बच्चो की ठीक स देख भाल करता। तू भी गोद के बच्चे को लेकर वहा नौकरी करती। बाबू लोगो के बतन माँज कर भी अच्छी कमाई कर लेती। बच्चे भी सब कही-न-कही लग जाते। शहर, शहर ही है, गाँव गाँव है।'

गिरि ने हस कर कहा था, "वह सब छोडिए। यह बताओ, सभी को जमीन मिल रही है तो क्या तुम्हारे राजीव के बाप को नही मिलेगी ?"

'उसने कभी कोशिश करी ? कभी मरे पास आया ? कभी कुछ कहा ? सरकार का काम करता हू, डाक्टर साहेब का दाहिना हाथ हू मैं, जरूर कुछ न कुछ करता।"

'मैं यहाँ से जाकर उन्हे भेजूगी आपके पास।"

गिरि को सबकुछ जसे सपना सा लग रहा था, अवास्तविक-सा। घर बन जायेगा। जमीन भी मिल सकती है। पति बौडम है यह बात वह जानती है। फिर उस पर उसे अपार स्नेह उमड रहा था। पर नही, जमीन नही, ऐसा आदमी भला कसे कुछ बनेगा ? पठाऊँगी उन्हे।"

"अपने बाप को नही देखती ? पचायत मे ढुक गया तो इससे क्या ? मामा से भी कहा था कि ऐसा कुछ करो कि आउलचाँद को भी थोडी सी जमीन मिल जाय। मैंने कहा था, मगर भरे बाजार मे मेरा अपमान कर दिया उसने, बोला, "जमीन लेना है तो वह खुद कोशिश करे।"

गिरि यह सब नही जानती थी। उसने वशी से विनय की, "काका, तुम्हारे हाथ जोडती हू। बताओ क्या करना होगा ? वह तो वैसे ही हैं। एक कमरा उठाया है। पर दिन मे सूरज और रात मे चन्दरमा उसमे झाँकते रहते हैं। छप्पर एकदम खराब हो गया है। बेला का ब्याह करूँगी तो नाते रिश्तेदारो को कहाँ बैठाऊँगी ? बेला के लिए कोई लडका बताओ न।'

"लडका है। मेरा फुफेरा भाई है। मोदी की दुकान पर बैठता है। दुकान उसने खुद लगायी है।"

गिरि ने निश्चितता की साँस भरी थी यह सुनकर। राजीव पास ही खडा था। उसने कहा, मैं जीजा की दुकान से रोज नून तल उधार ले आऊगा।"

गिरि ने बच्चे को हलकी चपत लगाते हुए कहा था 'बाप की तरह तू भी दूसरो के बल पर मौज करने वाला निकलगा क्या ?"

गिरि को मायके म चार के बदले छह दिन लग गये थे। बाप के घर स वह लौटने को हुई तो उसकी देह पर नयी साडी थी बच्चा की देह पर बाग्लादेश स

चोरी करके लाया गया नीलामी का पैंट शर्ट था और गिरि के सिर पर चावल की एक भारी पोटली थी कि ऐसे मे आँधी की तरह वशी आया और छूटते ही बोला "हो गया न सर्वनाश ! बडी बुरी खबर है, मामा। आउल चाँद बेटी को मामा के घर ले चलने का बहाना बनाकर ले गया और काँदी जाकर उसे विदेशी के साथ ब्याह आया। वे बिहार के लोग थे। ऐसी-तैसी पाँच ठौं बेलारानियो के साथ ब्याह रचाकर वे ले गये हैं। मगर ब्याह का तो स्वाँग था। वे असल म लडकियो का व्योपार करते हैं। जो पता ठिकाना दे गये हैं सब जाली है। यह सब कारोबार आजकल खूब चल रहा है। आउलचाँद को चार सौ के कडकडे नोट मिले हैं। अब वह मोहन के साथ बैठकर शराब पी रहा है और "बेला-बेला" कर के रो-पीट रहा है। पचायत म काली बाबू आउलचाँद को गाली-गलौच कर रहे हैं।"

यह सुनकर तो गिरि के सिर पर जसे आसमान फट पडा। हाहाकार करके रोने लगी गिरि। बाप ने कहा, "चल, मैं भी चलता हूँ। लडकी को खोजकर लाऊँगा और उस हरामी आउलचाँद के हाथ पाँव तोडकर बैठा दूँगा। साथ ही उस साले मोहन को भी जिंदा नहीं छोडूगा।"

मोहन का कही पता न था। गिरि अपने गहने बाबू लोगो के पाँवो पर रख कर रो रही थी, "बाबू पुलिस को बोलो मेरी लडकी की खोज करे। रेडियो पर बोली करा दो। हमारी बेला ने तालसना छोडकर आज तक एक कदम भी बाहर नहीं रखा। तुम भी तो जानते थे उसका बाप राच्छस है। क्यो लडकी को उसके साथ जाने दिया ?"

बाबू ने गिरि के बाप को समझाया, "थाना-पुलिस करने से कोई फायदा नही। बेकार में हगामा होगा और खरच भी बहुत हो जायेगा। लडकी मिले, न मिले। यह एक नया व्यवसाय चल पडा है। ब्याह का स्वाँग रचाकर लडकियो को ले जाकर दूर किसी जगह बेच आते हैं। मुर्शिदाबाद मे सभी जगह यह कारोबार चल रहा है। बेला का भाग फूटा था।'

बाप, पडोसी और बबुआइन सभी ने बेला को यही समझाया।

"किस्मत सबसे ऊपर है। क्या करेगी ? लडकी की किस्मत अच्छी होती तो क्या ऐसा होता ?'

गिरि के बाप ने भी साँस भर कर कहा, "तेरी बेटी अपना जीवन नष्ट करके बाप को घर उठाने का रुपया दे गयी।"

दुख से पागल सी होकर गिरि ने कहा "बापू तुम बाँस मत भेजना। यह राच्छस जसे होगा अपना करेगा।"

"थाना पुलिस करने से कोई फँदा नही है, बेटी।"

गिरि आँखें मूदे दीवार से टिकी बैठी थी। इस यातना के बीच उसे सचाई

की झलक मिल रही थी। लडकी थी न। लडकी को लेकर किसी की चिंता नही है। उसे भी नही सोचना चाहिए। वह भी तो लडकी ही है। उसके बाप ने भी तो बिना खोज खबर लिए इस पिशाच के हाथ मे उसे दे दिया था। लडकी के जीवन का कोई दाम नही।

आउलचांद ने देखा आबोहवा नरम हो रही है तो बोल पडा, "आपकी लडकी की भी कम गलती नही है। अब लडकी की खोज करने के लिए कैसे निकाल दिया गहना। पहले मुझे देती तो घर भी बन जाता और लडकी को भी बेचना न पडता। और सबसे शरम की बात तो यह है कि गयी आपरेशन कराके बाँझ बन गयी। बोली, रोटी तो दे नही पाते, बच्चे पैदा करके क्या होगा ? क्या होगा यह तो दिखा दिया मैंने। लडकी होती तो भी फायदा ही था। कितने पैसे मिलते।"

इसके जवाब मे गिरि मारे दुख और रोष के लगी दीवार पर अपना सिर पटकने। किसी तरह रोका लोगो ने।

धीरे-धीरे हलचल थम गयी। बाबू की बुआ ज्ञानी महिला हैं। गिरि से बोली, "उमर होने पर लडकी बाप की सपत्ति होती है। ब्याह के बाद पति की। तू इसमे क्या कर सकती है ?"

गिरि अब नही रोती। कठोर चेहरे से परी को बाबू के घर रख कर उससे बोली, "बाप लेने आये तो जाना मत ? गयी तो काट कर फेंक दूगी।"

और आउलचांद की किसी बात का जवाब नही देती गिरि, सिफ अपलक उसकी ओर चमकदार आँखें गडाये देखती रहती है। आउलचांद डरता है उस दृष्टि से। बडबडाता है, "सब घर बनाने के लिए हुआ। घर न बनाना होता तो ।"

"मोहन से पूछ किस देश मे लोग आदमी का मॉस खाते है। ले जा कर वही बेच आ अपने सभी बच्चे। पक्का घर बनवा ले।' गिरि ने कहा।

"तेरी तरह की कठोर औरत नही देखी मैंने। बच्चो को बेचने को बोलती है ? लगता है इसीलिए बाँझ बन कर आयी है। और बाप बाँस दे रहा था तो क्यो नही लिया ?"

गिरि कमरे मे से निकल कर बाहर जा कर सो रही। आउलचांद भी थोडी देर भुन भुन करने के बाद सो गया।

मगर समय बडा बलवान है। धीरे धीरे गिरि ने उस स्थिति को भी स्वीकार कर लिया। आउलचांद ने बाँस की टट्टरो का घर बनाया। ताड के पत्तो का छप्पर बनाया। राजीव बाबू के गाय-बैल चराने लगा। मरुनी घर के आँगन की धूल म खेल कर बडी होती रही। परी की तरफ देखते ही गिरि के कलेजे म आग लग जाती थी। बेला की तरह ही हँसती थी, गर्दन टेढी करके कनखी से देखती थी। बबुआइन तारीफ करती। बहुत अच्छी लडकी है परी। इतना काम करती है।"

परी का काम करने में खूब मन लगता है, इसीलिए वह बाबू लोगों के बड़े बड़े कमरे, लंबी चौड़ी दालान दस दस बार धो पोछ डालती थी, मदान जैसे विस्तृत आंगन को गोबर से लीपती।

परी को दो मुट्ठी भुने चने देकर या सत्तू खिला कर गिरि बाबुओं के बाग में घूम घूम कर सूखी डाल पत्तियाँ इकट्ठा करती है। दोपहर में उसके चारों ओर पत्ते सरसराते गिलहरियाँ दौड़तीं और झुर झुर हवा बहती। गिरि के हमेशा बेश हवा में उड़ते रहते। उसे बेला की कातर विनती याद पड़ती 'माँ, आज तो तुम भूजा भूज रही हो। बाबू लोगों के घर से कोई बुलाने आये तो कह देना बेला आज घर पर रहेगी। कल जायगी काम पर।"

इतनी बड़ी हो गयी थी फिर माँ की छाती से सीने में सिर धँसाकर सोना उसे अच्छा लगता था। माँ की तबीयत खराब देखती तो बाबुओं के काम से वक्त निकालकर घर आती और खाना पकाकर रख जाती।

वह भी गयी। कहाँ गयी होगी? कितनी दूर? कौन से देश? सोचते सोचते हार कर मन ही मन गिरि बेटी को आशीर्वाद देती "जहाँ रहो बेटी सुखी रहो। अगर जान पाती कि तुम कहाँ हो तो बाज पच्छी की तरह उड़कर पहुँच जाती। बाबू से चिट्ठी भी लिखवायी थी पर चिट्ठी लौट आयी। ठिकाना गलत दिया था।

घर लौट कर गिरि भात पकाती और महनी को लेकर खाती। आउलचाँद का भात हाँडी में पड़ा रहता। जिस दिन कहीं जाना नहीं होता उस दिन अपने दरवाजे पड़ी रहती। जिस दिन काम होता सवेरे ही उठकर निकल जाती। उनके द्वारा बनाये गये रोड पर अब कृष्णचक से निशिंदा तक बसें चलने लगी थीं। बस में बैठकर डेढ़ घंटे में काँदी पहुँचा जा सकता था। आजकल ताल में से सिंचाई के लिए नहर निकाली जा रही थी। मिट्टी काटने का काम चल रहा था। गिरि के बाबू का लड़का आजकल इस काम का कर्ता धर्ता है? ठेकेदारी करते-करते उसने बस का परमिट भी निकलवा लिया है।

यहीं पर गिरि की मुलाकात एक दिन वंशी धामाली से हुई। वंशी ने आंतरिक दुख से कहा, अरे गिरि? तुझे तो पहचानना मुश्किल है। कैसी काली हो रही है? ओह। बेटी के दुख में परान त्याग देगी क्या? किया भी क्या जा सकता है। बोल?'

'नहीं काका वह बात नहीं है। इधर परी भी दस साल की हो गयी।"

'अरे हाँ, जिस साल डाक्टर साहेब ने तुझे काम दिलवाया था और निशिंदा में बिजली आयी थी। उसी साल तो हुई थी परी।

'हाँ तुम्हारा कहना मान कर अगर शहर चली गयी होती तो कितना अच्छा होता। लड़का भी चरवाही कर रहा है। शहर में होती तो शायद पढ़ लिख

जाता।"

"खैर ! वह सब तो मैं नहीं कह सकता कि क्या होता, क्या नहीं होता, पर हां लडके बच्चे काम से लग जाते। उनकी दुदशा न होती।

गिरि समझ गयी कि वशी को इस बात का बुरा लगा है कि वह अपने बच्चों की पढाई की सभावना की बात कर रही थी।

"पर छोटो। उन्हें तो खट के खाना है। दो अच्छर पढ भी लेत तो क्या होने वाला था। जरा पगी के लिए कोई लडका देखो न।"

"ठीक है। आउलचाँद से बात करूँगा।"

"नहीं, मुझसे बताना।'

"यह तो तुम्हारी बात ठीक नहीं है, बच्चा। बेचारे से एक गलती हो गयी तो सारा जीवन उसकी माफी नहीं मिलेगी? ब्याह शादी की बात भला कहीं औरतो के बीच होती है? लोग सोचेंगे जरूर कोई गडबड है नहीं तो बाप क्यो नहीं आता बात करने। लडके का ब्याह करना हो तो लोग तुम्हारी बात सुन लेंगे, पर लडकी के ब्याह म कौन सुनेगा?"

"ठीक है, पर मुझे पहले ही बता देना।"

'देखूगा। कृष्णचक मे एक लडका है। रिक्शा चलाता है। उमर थोडी ज्यादा होगी। यही पचीस साल।"

"होने दो उमर।"

'लडकी कृष्णचक म ही रहेगी। जमीन नहीं है, पर रिक्शा अपना है। चार पाँच रुपये रिक्शे से कमा लेता है। शाम को बीडी बाँधता है। घर तो उसे बसाना ही पडेगा, जब घर बसाना चाहता है। घर म कोई खाना देने वाला नहीं है। इसीलिए ब्याह करना चाहता है।"

"बात करो। पट जायेगा तो इसी माघ मे ब्याह कर देंगे।"

बेला के चले जाने के बाद स जो मन मुर्झाया हुआ था उसमे आशा की किरन झिलमिल कर उठी। गिरि ने कहा, "जो रखा है सब द दूगी। मरुनी रह जायगी। वह जब ब्याहने लायक होगी तब देखेंगे। मेरी बेटी है, कहना न चाहिए, पर दस साल मे ही रूप ऐसा निखर आया है कि कोई नहीं मानेगा कि उसकी उमर सिर्फ दस साल है। आओ, चाय पी लो।"

चाय की चुस्की लेते लेते वशी ने ही कहा, "मामा को और दो बीघा जमीन मिली है। दो और अनाज के गोले भी बनवाये हैं। सच, मामा ने खूब तरक्की की है। देख कर आँखें जुडा जाती है। व तुम्हारे यहाँ तो शायद कभी आते नहीं, न खोज-खबर लेते हैं?"

गिरि ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"कहने म अच्छा नहीं लग रहा है और तुम्हे बुरा भी लग सकता है, पर वे

लोग तो अपने होकर भी पराये हो रहे हैं। मामा आजकल अपनी तरह के लोगो के घर जाते हैं। तुम्हारी जैसी हालत वालो के घर नही जाते।"

गिरि ने आँचल के कोने मे बँधे पैसे दिये और बोली, "काका, परी की बात याद रखना।"

"याद रखूगा।"

आउलचाँद के साथ वशी की मुलाकात हुई। रिक्शेवाले वर की बात भी हुई। आउलचाँद खुश हो उठा। बोला, 'काका, मैंने भी रिक्शेवाला लडका ही ढूढ रखा है। वह बहरमपुर मे रिक्शा चलाता है। ये बडे-बडे केश हैं, दाढ़ी मूछें हैं। साहेब लोगो का कोट-पैंट पहनता है और क्या बोली है बाघ की तरह। तुमको इस बारे मे परेशान होने की जरूरत नही है।"

इसके बाद वशी की मुलाकात गिरि से हुई तो उसने आउलचाँद की बात उसे बता दी।

इसके बाद आउलचाँद निकला मोहन की तलाश मे। इन सब मामलो मे वही उसका पथ प्रदशक है। लालबाग, धूलियान जगीपुर, जियागज, फरक्का कहाँ नहीं गया वह मोहन की तालाश मे? दिल्ली, मेरठ, धनबाद और टाटा मे वेश्यालयो का कारोबार खूब चमक गया है। पश्चिम बगाल की कच्ची उम्र की लडकियों की बडी माँग है। बड लाग और व्यापारी खरीदार कच्ची उम्र की लडकियाँ चाहते हैं। खिला पिला कर दो-तीन साल के अदर मे ही खूब दाम उठता है।

ब्याह का स्वाँग रचाना जरूरी है। सीधे पैसा देकर खरीदने की बात सुनकर वहाँ की जनता पचलत्ती लगाती है। कहना पडता है बिहार में लडकियो का बडा अकाल है।

ब्याह तो पुरोहित ही कराता है। उसके बाद कहना पडता है—"बाकी रस्म घर जाकर लेंगे। उसके बाद ही पति-पत्नी का सपर्क हागा। बहू को ले जाने की इजाजत दीजिए।"

बिहार स बहू लेने आये हैं—वाली बात कुछ दिन चल गयी। बाद मे इसका भडाफोड हो गया। अब दूसरी चाल चलनी पडती है। लडकी की खबर स्थानीय एजेंट देना है। उसे भी सब बात नहीं बतायी जाती। वह इतना तो समझ ही जाता है कि इस दल मे कही न कही, कुछ न कुछ काला है। पर उससे क्या मतलब ब्याह योग्य लडकियो की खोज करने को कहा गया है उससे। उस अपना काम करके पैसे खडे करन हैं। उसे बाकी बाता से मतलब ही क्या है?

लडकी वालो को कुछ पता नही हाता। वे सोचते हैं "पन" लेकर ये लडकी का ब्याह कर रहे हैं। विदेशी के साथ ब्याह हो रहा है, इसीलिए सब कुछ गुप्त रखना है? आजकल के आदमी का काई भरोसा नही। अगर किसी को पता चल जाय कि इतने पसे 'पन' मे लेकर ब्याह हो रहा है तो तुरत भाजी मार देगा।

हमारे विदेशी वर ही अच्छे हैं। बगाली वर 'पन' तो देता है, कुछ जातियो मे नियम है इसलिए, पर बाद मे कहता है घडी चाहिए, साइकिल चाहिए, रेडियो लेना है—एकदम पाँच सात हजार के धक्के मे डाल देता है।

आउलचाँद मोहन की खोज मे निकला। बेलारानी काड के बाद कालीबाबू ने आउलचाँद से कहा था, "तुम्हे अब पचायत मे कोई काम नही मिलेगा। खुदरा काम भी बन्द।"

मोहन उन दिनो निशिदा ब्लाक-आफिस के बाहर ठगी और दलाली कर रहा था। किसानो की पैदावार बिकवाना, उन्हे ऋण दिलाना और अपना कमीशन बनाना उसका धधा था। वह बहुत व्यस्त था।

आउलचाँद की बात सुनकर उसने तेजी से मुडी हिलाते हुए कहा—"ना भैया, *मोहन मडल अब तुम्हारे झमेले मे नही पडेगा। बहुत परोपकार कर लिया,* भर पाया। लडकी का ब्याह कराया, चलो वह तो पुन्न का काम था। तुम्हे पैसे मिले, मुझे क्या मिला? उन्होने तो भी चालीस रुपये टिकाये थे। तुमने? पैसे पाकर मुझे भूल ही गये। मुझे तुम्हारी बहू से भी बडा डर लगता है।"

"अरे भाई, उसी ने तो मुझ भेजा है।"

"अच्छा!"

"तुम सुनते ही नही कोई बात। ब्याह करना है तो केष्टोचक का रिक्शावाला क्यो? बहरमपुर का क्यो नही? तुम जरा बात करो। क्या शहर मे रिक्शावाले नही होते? बहुत दिनो की इच्छा है शहर मे रिश्तेदारी करने की। इससे गाँव-गिराम का भी मान बढता है। हमारा भी शहर मे एक ठीहा हो जायेगा।"

'शहर का रिक्शावाला चाहते हो।"

"हाँ! हाँ! बहरमपुर का रिक्शावाला चाहिए। बिहार का आदमी नही चाहिए। शहर का रिक्शावाला दामाद होगा तो लडकी शहर मे रहेगी और आते जाते हम भी इसी बहाने शहर का मुँह देख लेंगे। बेला की माँ अभी भी मेरे ऊपर गुस्सायी रहती है। उसका मन भी फिरेगा।"

"मिताइन के साथ फिर दोस्ती चाहते हो?"

"हो जाये तो अच्छा ही है। वह तो मुझे आदमी ही मानने को तैयार नही है। उसे मैं दिखा देना चाहता कि मैं भी बेटी के लिए हूँ अच्छा सा दामाद खोज ला सकता हूँ। तुम मदद नही करोगे तो काम नही बनेगा।"

मोहन हँसा, फिर बोला, "ठीक है। मगर मैं बीच मे नही पड़ूगा। सिर्फ लडके को तुमसे मिलवा दूगा। शहर का दामाद चाहते हो। अगर उसकी कुछ माँग हो, तब?"

'कोई बात नही, कर्ज वर्ज लेकर पूरी करूँगा।"

"समझ गया। जाओ, निश्चित रहो।"

मोहन समझ गया इस बार उसे फूंक फूंक कर कदम रखना होगा। बिहार वाली पार्टी पृष्ठभूमि में रहेगी। सामने रहेगा रिक्शावाला शिखंडी। ब्याह उसी के साथ होगा। रिक्शावाला? रिक्शावाला? किसे पकडूं? एक बार शहर जाना पड़ेगा।

परी के ब्याह के मामले में गिरि और आउलचांद थोड़ा निकट आ गये थे। आखिरकार मोहन ने एक दिन आउलचांद को बताया कि उसने एक रिक्शावाला वर ढूंढ लिया है।

"है कैसा?"

"उसके हाथ में घड़ी है। रेडियो है। रिक्शा चलाता है, साइकिल भी उसे नहीं चाहिए। वर वधू के कपड़े, छाता, जूता, बर्तन भाड़े देने से काम चलेगा।"

"पन देगा।"

"हां, सौ रुपये।"

"घर वर है?"

"किराये के मकान में रहता है। रिक्शा उसका निजी है।"

आउलचांद और गिरि बहुत खुश हुए। लड़का जब लड़की देखने आया तो गिरि ने आड़ में देखा। लड़के का नाम था मनोहर धामाली। खूब हट्टा कट्टा, दाढ़ी मूंछ सम्पन्न। मनोहर धामाली नाम का एक रिक्शावाला है तो सही बहरमपुर में पर यह लड़का कोई और था। उसका नाम था पानू। डकैती के केस में प्रमाण के अभाव में जेल से कुछ ही दिन पहले छूटा था। जेल से बाहर आकर पानू अपने "बिहार से बहू ब्याहने आये" मालिकों के लिए दो परी बालाओं से—एक फरक्का में दूसरा जलंगी में—ब्याह करके दो सौ रुपये लेकर उन्हें मालिकों के हाथ सौंप चुका था। पांच ब्याहों के लिए उसे पांच सौ रुपये मिलने थे। यही सही। इसके बाद उसे सिलीगुड़ा प्रस्थान कर जाना था।

पिछली बार बेला के ब्याह के समय नाते रिश्तेदारों को नहीं बुलाया गया था। इस बार गिरि के मां बाप भी आये थे। शंख बजे, उलू* की रस्म भी की गयी। गिरि ने पसीने में नहा कर भात मांस पकाया। बाबू के घर से अपने चांदी के गहने लाकर परी को पहना दिये थे। उसकी मां ने परी को नये कपड़े दिये थे। बाबू के घर से पचास रुपये मिले थे। गिरि का बाप एक बोरी चावल लाया था। लड़का पांच बरातों लेकर बस से आया था। परी हल्दी, आलता लगाकर एकदम बेला जैसी लग रही थी।

दूसरे दिन दुल्हन को लेकर वे बस पर बैठकर चले गये।

---

* बंगाल में शुभ कार्यों विशेषकर ब्याह में औरतें समवेत स्वर में मुंह से उलू लू लू की आवाज निकालती हैं।—अनुवादक

उस दिन के बाद परी का मुँह किसी ने नही देखा। तीसरे दिन आउलचाँद बेटे राजीव और गिरि के भाई को लेकर लडकी को देखने बरहमपुर गया। गये तो वही रह गये। शाम हुई रात हुई पर उनका कोई पता नही। बहुत रात गये गिरि के दरवाजे पर जूतो की आवाज हुई। गिरि का दिल किसी अशुभ की आशका से काठ हो गया। दरवाजा खोला तो देखा वशी धामाली था। वशी राजीव को सम्भाले हुए था। गिरि बिना बताये समझ गयी कि इस बार भी उसका सवनाश हुआ है। वह एकटक उन्हे ताकती रह गयी।

गिरि का भाई पीछे था। उसने कहा "दीदी मैं कह रहा था ।

कहने को ज्यादा कुछ नही था। शहर मे मनोहर धामाली नामक एक अधेड रिक्शेवाला था तो सही पर उसे इस मामले की कोई जानकारी न थी। लोगो ने कहा पता लगाओ। पुलिस म जाओ। 'पता क्या लगाना है। जैसा बता रहे हैं उससे तो लगता है पानू है।" एक तीसरे ने कहा, हाँ हाँ, आजकल वही शादियाँ करता फिर रहा है, लगता है छोकरिया बेचने के कारोबार मे लगा हुआ है। आदमी भी अच्छा नहीं है।"

गिरि ने पूछा "मोहन का हाथ इसमे नही है क्या ?"

'वही तो सूत्रधार है।'

"राजीव का बाप ?"

राजीव का बाप मोहन की खोज मे निकल गया था। सभी कह रहे थे परी के ब्याह मे मोहन को पाच कि सात सौ रुपये मिले है। लडकी भी चाहिए पसे भी चाहिए। वह भी अच्छा पागलपन कर रहा है।

गिरि के आँगन मे आस पास के लोग उपट पडे ?" मोहन को पकड कर पीटो।" 'चलो थाना चलते हैं।" यह क्या कोई रडिया का मुहल्ला है कि जब जो चाहे लडकी उठा ले जाये।' जितने मुह उतनी बातें।

आउलचाद रात के तीसरे पहर लौट आया। घटना की भयकरता स अभिभूत होकर वह नशा करके आया था। पाया कहा उसे ? पसे दिये ?' हा हाँ, मेरा नाम आउलचाद सरदार है। मोहन जाता कहा ? उसकी गदन मरोड कर पैसे निकलवाये हैं मैंने। क्यो नही लेता ? बोलो क्यो नही लेता ? लडकी मरी है या नही। वह साला मूरख बनाकर बेचने वाला कौन है ? परी की माँ कहाँ है ? ओह! रानी तू क्या आपरेशन करा आयी। जितनी लडकिया होती उतना ही पैसा होता। तेरे लिए अगर काठी न उठा दता तो कहती। हाय। मरी परी ।' कह कर आउलचाँद रोने लगा और दो मिनट बाद ही उसकी नाक बजने लगी। गिरि न सूने गले से कहा "आप लोग अपन-अपन घर जाइये।

सभी धीरे धीरे चले गये या दूर हट गये। सभी सोच रहे थ अब पता नही गिरि क्या करे ? मरनी की भी यही दशा होगी।

"गिरि, जाकर बाबू के हाथ पैर जोड कर पुलिस म रपट लिखवा।" किसी ने उसे सलाह दी।

गिरि आँखें फाडे सामने के आदमी को देखती और सिर हिलाकर सिर्फ 'ना' करती।

वशी धामाली ने कहा "ईश्वर की भी क्या माया है! एक बेटी से दीवार उठी। दूसरी से छप्पर उठेगी।"

गिरि उसकी तरफ चुपचाप बडी बडी आँखो से देखती रही।

रोते रोते आउलचाँद ने छप्पर बाँधना शुरू किया। पर गिरि की आँखो म एक भी आँसू न था।

बाबू की बुआ ने कहा "सतान की माँ है न बेचारी। तेरी किस्मत मे यही लिखा था। जानती हूँ तेरी आँखो म एक भी बूद आँसू क्यो नही है? अल्प शोक मे आदमी कातर होता है, बडे शोक मे पाथर। काम म लग जा। सब सहन कर लेता है आदमी। पापी पेट नही मानता।"

गिरि उनकी ओर भी बहुत देर तक ताकती रही। फिर बोली, "मालकिन से कहकर मेरे रुपये दिलवा दीजिए।"

रुपये लेकर उसने आँचल मे बाँध लिए और आकर घर के आँगन म खडी हो गयी। घर अच्छा लग रहा था उसको। मिट्टी से लिपी दिवारें और नया छप्पर। ऐसा एक घर पाने की ही तो उसकी चाह थी। मगर वह चाह शायद उसकी औकात के बाहर थी। इसीलिए बेला और परी को वेश्या के दलालो को सौपना पडा। हाँ, वेश्या ही तो बनाने के लिए ले गये सब उन्हें। लडकी खरीद कर भला कोई गृहस्थी बसाता है? कभी नही।

आउलचाँद छप्पर बाँध रहा था। उसने कनखियो से पत्नी की तरफ देखा। वह अपलक उसको ही देख रही थी। देखती ही रही। आउलचाँद समझ गया कि गिरि चाहे जितनी दुखी हो, उसे घर पसन्द आया है।

दूसरे दिन सवेरे जो समाचार सुनने को मिला उसने सभी को अवाक् कर दिया। मुह अँधेरे ही गिरि मरुनी को गोद म उठाये और राजीव का हाथ पकडे घर से निकली—रोड पर बस पकड कर शहर चली गयी। बाद म खबर आयी कि निश्चिदा से उतर कर वह वशी धामाली से कह गयी थी, "तुम जाकर राजीव के बाप से कह देना कि वह अपने घर म जनम जनम तक वास करे।" गिरि शहर म मेहनत मजदूरी करके बच्चो को पालेगी। अगर वह उसे खोजने गया या बच्चो से मिला तो गिरि बच्चो सहित रेल लाइन पर सो जायेगी।

अजीब बात है, लोगो ने चकित होकर सोचा, 'बेला और परी के साथ जो हुआ है, वह तो अब घर घर मे हो रहा है। क्या इसीलिए औरत अपने मरद को छोडकर चली जायेगी? कमाल की औरत है गिरि भी।"

सभी की धारणा बनी कि असल मे आउलचाद बुरा नही था, बुरी वह औरत गिरि ही थी । इस निणय पर पहुच कर सभी ने छुटकारे की सांस ली ।

उधर मरुनी को सीने से चिपकाये चलते चलते गिरि सोच रही थी 'अगर पहले ही इतनी हिम्मत जुटा कर कलेजा पक्का कर लेती तो बहुत दिन पहले ही निकल पडी होती । तब शायद बेला और परी बच जाती । उनका सत्यानाश नही होता ।

सोचते सोचते उसकी दोनो आँखें आसुओ से भर गयी । फिर आसू उसके गालो पर चू कर और रास्ते की धूल मिट्टी म गिरने लगे, मगर वह उनको पोछने का नही रुकी, चलती रही ।

(प्रसाद 1982)

उन्हें नहीं करना पड़ेगा ? पता नहीं।

डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। तभी तो आज यह यज्ञ होम चल रहा है। छोटी बहू के पिता एक तांत्रिक को ले आये हैं। आधा मन के करीब बेल, बरगद, पीपल और इमली के पेड़ों की छाल लायी गयी है। उन्हें एक माप का करना होगा काट कर। नौकर भजन वाली बिल्ली का रोयां लाने गया है। श्मशान का बालू, वेश्या के घर की आरसी ऐसी ही कितनी अजीबो-गरीब फरमाइशें की हैं तांत्रिक ने।

इस आदमी को लकड़ी काटने के लिए लाया गया है। शायद यह आदमी कई दिनों का भूखा है। उस वासिनी कहाँ से पकड़ लायी है। कछार में रह कर भी चावल के लिए इतनी कंजूसी ? क्या चावल की कोई कमी है ? एक तल्ला के कमरे में जा कर देखो। कितने तरह के चावल अलग-अलग छलियों में सजा कर रखे हुए हैं।

नम आ कर रोगी के पास बैठ गयी। बड़ी बहू नीचे उतर गयीं। आज खाना जल्दी निबटाना होगा। तांत्रिक होम करने बैठें उसके पहले। होम करने के बाद तांत्रिक ससुर के प्राणों को वेश्या की आरसी में बांध रखेंगे। तांत्रिक महाशय नीचे के बड़े कमरे में बैठे हैं।

बड़ी बुआ ने कहा बेटी तू आ गयी नीचे ? अच्छा चावल तो निकाल दे।"

"जी अच्छा।"

झिंडेसाल चावल का भात निरामिष तरकारी के साथ। रामशाल चावल का भात मछली के साथ। बड़े बाबू कनकशाली चावल छोड़कर और कोई चावल मुंह में भी नहीं डालते। मझले और छोटे बाबुओं के लिए बारहोमास पद्मजाली चावल पकता है। ब्राह्मण-नौकर-नौकरानी के लिए मोटा चावल पकता है।

वह आदमी लकड़ी काटते-काटते आँखें ऊपर उठाता है। उसकी आँखें बाहर निकल आयी।

'अरे वासिनी, इतने तरह के चावल ?"

'बाबू लोग खाते हैं।'

"पाँच तरह का भात पकता है ?'

'पकेगा नहीं ? कछार में इनकी इतनी जमीन है। चावल के पहाड़ खड़े हो जाते हैं। बड़ी बुआ बेचती भी हैं। मैं भी बेचती हूँ।"

'वासिनी जरा एक मुट्ठी चावल ही दे देख। खा कर पानी पी लू। कई दिनों से पेट में भात का एक दाना भी नहीं गया है। दे वासिनी, तेरे हाथ जोड़ता हूँ, एक मुट्ठी चावल दे।"

"अरे ! अरे ! उच्छव दादा क्या करते हो। बुआजी देख लेंगी तो गजब हो जायेगा। मैं मौका देखकर कुछ दे जाऊँगी। तुम अपना काम करो। बलिहारी है

इनका भी। एक आदमी यहाँ कई दिनो का भूखा मर रहा है और इनको चाय की पडी है।"

वासिनी चावल ले कर चली गयी तो यह आदमी सिर हिलाते हिलाते आ कर लकडी काटने लगा। उसका नाम उत्सव है। पर हमेशा से वह उच्छव नाइया नाम से जाना जाता है। सचमुच पिछले कई दिनो से उसने कुछ भी नही खाया है। बडा अभागा है वह। जितने दिन खिचडी बट रही थी, वह लेने नही जा पाया। गया तो खिचडी बँटना खत्म हो चुका था। वह चन्नूनी और उस की मा को इधर उधर ढूढता रह गया। चन्नूनी उसकी बेटी है।

वस्तुत जब वह अपने बाल बच्चो को ढूढ रहा था, उसकी बुद्धि काम नही दे रही थी। एक तरफ उसकी पत्नी भयकर आधी-तूफान मे बेटा-बेटी को देह से चिपकाये ठड और भय से काँप रही थी, दूसरी ओर उच्छव अपनी झोपडी का खबा दोनो हाथो से मिट्टी मे दबाये खडा था। खबा ऐसे हिल रहा था जैसे उसे दो बोतल का नशा हो गया हो। कभी-कभी वह धनुषटकार के रोगी की तरह काँप-काँप उठता था। उच्छव भगमान! भगमान! कर रहा था। मगर लगता है ऐसे बुरे समय मे भगवान भी सिर पर चादर तान कर कही सो जाता है। उच्छव भगमान! भगमान! करता जा रहा था और खबे को जमीन मे धँसाने की कोशिश कर रहा था। इसी बुरे वक्त मे मातला का पानी हवा के चाबुक खा कर छटपटा कर दौड पडा था। पानी उठा और गिरा, पर उच्छव की दुनिया को मिट्टी मे मिला गया।

सवेरे ही सर्वनाश का चेहरा दिखाई पड गया था। उच्छव कई दिनो तक इसी आशा मे रहा कि उसके छप्पर के नीचे से कोई तो आहट मिलेगी उसके बाल-बच्चो की। साधन दास ने उससे कहा भी, "अरे उच्छव! पागल हो गये हो क्या? वहाँ अब क्या रखा है? तुझे भी तो पानी खीच ले गया था, तू पेड पर चढ गया सो बच गया" पर उसने इन बातो पर कान ही नही दिया। पर उच्छव अभी भी अपनी पत्नी को पुकारे जा रहा था और घर के पास से हटना ही नही चाहता था। बाल-बच्चो के अलावा एक और कीमती वस्तु उसकी घर मे रह गयी थी। उसके घर एक ढक्कनदार टिन का कटोरा था, जिसमे भूमिहीन खेत मजूर उच्छव की उस दर्खास्त की नकल रखी हुई थी जिसमे उसने अपने लिए पचायत से जमीन देने की अपील की थी। उच्छव नाइया वल्द हरिचरन नाइया का वह टिन का कटोरा कहाँ था?

जो कही नही है, जो आँधी-पानी और मातला के गर्भ मे विलीन हो गया है, उसे खोजते खोजते उच्छव पागल हो रहा था, इसीलिए पकी-पकाई खिचडी वह न खा सका। और अब उसे होश आया तो खिचडी खत्म। कुछ चावल मिले थे। उन्ही को मुट्ठी मुट्ठी भर चबा कर पानी पीते हुए कई दिन गुजरे। तब एक दिन गाँव

के लोग कहने लगे कि मरने वालो का सराध भी तो करना ही होगा। इस काम को अजाम देने के लिए उन्होने महानाम शतपथि को स्मरण किया। मगर महानाम भी महाव्यस्त। दो गाँव की मत आत्माओ को शाति लाभ कराने के बाद ही वह यहाँ आ सकेगा। गाँव के लोग मछली, केकडा, घोघा जो भी उपलब्ध था पेट के लिए जुटाने लगे। साधन ने एक दिन उच्छव से कहा, "तुम अकेले कलकत्ता जाने के लिए क्यो परेशान हो? सुना है सरकार मकान बनाने के लिए मदद देगी।'

उच्छव अचानक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति की भूमिका मे उतर कर बोला, "यह बात तो है।"

आँधी पानी मे किसका क्या हुआ, माँ-बाप, भाई बहन जिदा हैं या खत्म हो गये देखने वासिनी गाँव नही जा पायी। उसके बहन और भावज कलकत्ता जा रहे थे। वे कुछ दिन मजूरी करेंगी, बतन माजेंगी वहाँ। उच्छव पहले भी एक बार कलकत्ता जा चुका है। वासिनी जिस घर मे काम करती है, उसे बाहर से देख आया है। बाहर की दालान मे देवता का स्थल है। मदिर के माथे पर पीतल का त्रिशूल नही देखा? वासिनी के मालिक के वहाँ भात के बडे-बडे ढेले पडे रहते हैं। खाने वालो का खाते खाते नाक मे दम है। यह कहानी वासिनी से सभी ग्राम वासियो ने सुनी है। अचानक उच्छव के मन म आया कि कलकत्ता जा कर कुछ दिन खा पी कर आये। कई दिनो से उपवास करके और बेटा बेटी-पत्नी को खो कर वह जाने कसा तो हो गया है। सिर के अन्दर झिम झिम होता रहता है। कोई बात ठीक से याद नही आती। कुछ ठीक से सोच नही पाता वह।

वह सोचने की कोशिश करता है। जी-जान लगा कर सोचना चाहता है पर सोचते ही जो पहली चीज उसकी आँखो के सामने उभरती है वह है धान-खेत। इस बार धान म बालियाँ आने के पहले ही पौधे पीले पडने लगे थ। उनका हरापन गायब होता गया था। कार्तिक के महीने म ही धान के पौधे खर हो गये। देखकर उच्छव ने सिर पीट लिया था। सतीश मिस्तरी के हरकूल, पाटनाइ और मोटा तीनो धानो म कीड लग गय थे। उच्छव सतीश बाबू के खेतो मे काम करके कई महीन अपना और परिवार का किसी तरह पेट पालता था।

'अरे उच्छव मालिक का धान जा रहा है तो तू क्यो रोता है?

रोऊँगा नही साधन बाबू! लक्ष्मी घर मे न आकर सीधे नदी मे मसान (विसजन) हो रही है तो किसे रोना नही आयेगा? हम खायेंगे क्या?'

बहुत दिमाग लगाकर पहले जो बात याद आती है वह है धान खत्म होन की बात। फिर याद आता है आँधी-पानी का परलय। रात हो रही थी। उस शाम पेट भर खाना मिला था। नमक मिच के साथ भात और मछली। गाव के सभी उच्छवो का उस दिन पेट भरा था। खान खाते चन्ननी की मा न कहा था, "लगता

है देवगति अच्छी नही है । कुत्ते रो रहे हैं।"

उसके बाद याद आता है कि वह झोपडी का खबा फ़मीन मे धँसाय रहने की पूरी ताकत से कोशिश कर रहा है । मा बसुमती, वह खबा अपनी छाती पर जैसे सह नही पा रही थी और बार बार उखाड फक रही थी। 'भगमान ! भगमान ! भगमान !' रट रहा था उच्छव । तभी बिजली चमकी थी और उसने दखा था मातला का फेनिल जल सिर उठाय दौडा आ रहा है। बस । इसके बाद कुछ ठीक याद नही आता । क्या हुआ ? सब कहाँ गये ? तुम कहाँ, मै कहाँ । कुछ भी याद नही आता । उच्छव नाइया वल्द हरिचरन नाइया वाला जमीन की दरखास्त का कागज पेट मे लिए ढक्कनदार कटोरा कहा गया, कुछ पता नही । बडा सुदर कटोरा था । अगर भगवान चन्नुनी और उसकी माँ को जिंदा रखते तो उच्छव को सौ हाथी का बल रहता आज । कटोरा लेकर सभी भीख माँगने निकल पडते । सतीश बाबू का नाती इस कटोरे मे भात खाता था । उच्छव वह कटोरा सतीश बाबू से मागकर लाया था । ऐसा कटोरा पास मे हो तो जब जरूरत हो भात पका कर खाया जा सकता है । अद्भुत कटोरा था ।

"क्या हुआ ? अरे जल्दी हाथ चलाओ, बेटा । उधर मालिक बिना खाये सूख रहे हैं । होम होना बाकी है और तुम खड खडे लकडियो को ताक रहे हो हाथ पर हाथ धरे ।"

बडी बुआ चनचना उठी ।

"माँ जी, बडी भूख लगी है।" उच्छव ने कातर होकर कहा ।

"इसकी बातें सुनो । भात पक गया है, पर अभी पूजा बाकी ही है । तान्त्रिक महाराज का हुक्म है, पहले विधान पूरा हो, फिर खाना दाना होगा । होम के पहले खाना नही हो सकता । तुम हाथ चलाओ बस तेजी से ।

उच्छव लकडी काटने लगा । प्रत्यक लकडी डेढ हाथ की करनी है । तेज धार वाली गँडासी उठाता है गिराता है उच्छव । उबलते हुए भात की महक उसे बहुत परेशान कर रही है । इधर उधर देखकर वासिनी एक बतन म साग भरे उस धोने बाहर आयी । झट से एक छोटा सा लिफाफा उसके हाथ मे थमा कर बोली, "जाकर बाहर खा लो । सत्तू है । सडक पर जो नल है उससे पानी पी लना । जरा भी देर मत करना । मैया, यह पिशाचो का घर है । तुम नही जानते । गरीब की जिन्दगी इनके लिए बहुत सस्ती है ।"

'कौन मर रहा है वासिनी ? लिफाफा थामकर उच्छव पूछता है ।

'यही बूढा । मालिक इस घर का । मरगा नही ? शराब हो, औरत हो, कुछ भी बाकी नही रखना । यह जो मोटकी औरत भाग दौड कर रही ह उसकी खास नौकरानी है । मालिक को मरने दो, उसकी पीठ पर सात लात न लगाय तो मेरा नाम वासिनी नही । जो बूढा मर रहा है उसी क लिय होम हो रहा है ।"

सतू का लिफाफा लेकर उच्छव सड़क पर आ जाता है। बाप रे ! इतनी सब्जी, इतना चावल और मछली। यह है जिसे जग (यज्ञ) कहते हैं। यह कौन कछार है जहाँ इतना इतना धान पैदा होता है। उच्छव के कछार मे तो बस बथुआ, पालक, लौकी और सेम होता है। उच्छव सतू खाता है और मिठाई की दुकान से मिट्टी का भाड लेकर पानी पीता है। सुना है सत्तू पेट म जाकर फूलता है। ठीक है। पेट का गड्ढा भरे तो सही ! पर उच्छव को लगा, आग मे घी पड़ा है। वह फिर लौट आया लकड़ी काटने।

"कहाँ गया था ?'

"थोडा बाहर गया था, माँ।"

लकडी कटेगी तो होम होगा, होम होगा तो भात मिलेगा। उच्छव जल्दी जल्दी हाथ चलाने लगा।

मँझली बहू ने चीख कर कहा, "वासिनी, रसोई घर म पोछा लगा दिया ?"

' पोछ दिया है।" वासिनी ने कहा।

यह सब सुनकर उच्छव को भरोसा होता है। अब भात मिलने म ज्यादा देर नही है। उसकी जीभ पर भात का स्वाद उतरने लगा। गाँव से आते समय गाँव के लोगो ने कहा था ' कलकत्ता जा रहे हो, तो काली घाट म सराध भी करते आना। बेचारे अपघात मे मरे हैं तुम्हारे बाल-बच्चे।"

उच्छव सोचता है वह भी करना है। महानाम सतपथि तो आया नहीं। आता तो नदी किनारे सावजनिक श्राद्ध हो जाता। उच्छव कालीघाट मे सराध करेगा। सतीश बाबू ने कहा था परिवार डूबकर मर गया। यह आदमी पागल हो गया है। देखा, हमेशा भात भात करता रहता है।

तुम क्या समझोगे सतीश बाबू ! नदी के किनारे नही रहते मिट्टी के घर म भी नहीं रहते। पक्का मकान तो आँधी-पानी म गिरता नहीं। तुम्हारा धान-चावल भी पक्के कमर म रखा जाता है। उसे भी चोर डाकू नहीं ले जा सकते। सारी दुनिया म जब लोग पानी पीकर सो जाते हैं तब भी तुम्हारे घर खाना पकता है। तुमने उच्छव को भात नही खिलाया। यह तो भगवान की मार है। कोई क्या कर सकता है। जब से धान मे कीडे लगे तभी से देश-दुनिया भात से महरूम हो गयी। तभी से उच्छव का पेट घटने लगा। पेट मे भात न हो तो आदमी प्रेत बन जाता है। भात पट म पडेगा तो वह फिर आदमी हो जायेगा। तब उसे अपनी पत्नी और बच्चो की याद आयेगी। उनके लिए रोयेगा। दुख अभी उसे नही हुआ। सिफ पागल की तरह पत्नी बच्चो को खोजता फिरा कई दिन। तभी उच्छव प्रेत हो गया था। आदमी रहता तो समझ जाता कि पानी मे आदमी बह जाता है। कितन गाय बल भस बह गये। चन्नी और उसकी माँ की क्या बिसात। उच्छव का लकडी काटने का काम खत्म हो गया था। अढाई मन लकडी वह भात के

हुलास मे काट गया, वर्ना देह मे उसके ताकत नही थी।

लकडी के टुकडे वह दालान मे रख आया। आगन मे पडे छोटे टुकडे, चूरे एक खांचिया मे उठाकर उसने झाड़ू लगा दी। फिर बडी बुआ को सामने पाकर बोला "मा, मैं बाहर जाकर बैठू।'

बडी बुआ ने उसके सवाल पर ध्यान ही नही दिया, क्योकि तभी तांत्रिक ने ऊँची आवाज मे बोलना शुरु कर दिया—"ॐ ह्रीं ह ह भा भो राग शृणु शृणु" और राग का खडा करके काली बिल्ली के रोयें से उसे बांध दिया और होम शुरु किया। साथ-साथ ऊपर से उतर कर नस ने कहा, "डाक्टर को बुलाइये। मरीज की हालत खराब हो रही है।" बडे, मझले और छोटे बाबू नीद भरी आँखो और फीके चेहरे लिए अपने बडे-रूमो से बाहर निकल आये। वासिनी न उच्छव से कहा, "भैया, तुम बाहर बैठो। अच्छा मतर पढ़ा पण्डित ने। इधर यह हुआया, उधर बडे बाबू के परान निकले। परान के साथ रोग भी बाहर चला गया। नहाना हो तो नहा लो।"

'अभी नही नहाऊगा। सिर पर पानी पडत ही पट एकदम नही मानता।"

बाहर आकर उच्छव शिव मन्दिर के बरामदे पर बठ गया। कितना बडा मन्दिर है और बरामदा? क्या यह सब कछार की जमीन की पैदावार से बना है? कहाँ पर है इन लोगो का कछार? भात खाकर देह मे थोडी ताकत आय तो वह इनकी जमीन देखने जायेगा जहाँ इतनी दौलत पदा होती है। गाँव के लोगो को जाकर बतायगा इस अद्भुत कछार की जमीन के बार म।

मन्दिर के बरामद मे तीन छोकरे बैठे तास पीट रहे थे। उनमे से एक बोला, "बूढे का बचाने के लिए होम हो रहा है।"

"फालतू।'

"क्या फालतू?'

'बच भी गया तो कितन दिन और जियेगा? अभी क्या कम है उसकी उमर?"

उच्छव ने आँखें मूद ली। शायद उसकी आँखें अपन आप मूद गयी थी। ऐसे यज्ञ के बाद भी बूढा ज्यादा दिन जिंदा नही रहेगा? कितनी खराब बात है? इतना खच बेकार जायेगा। उस दिन मातला अगर पागल होकर उसक गाँव में न घुस आती तो उच्छव की पत्नी, चन्नी और छाटा बटा बहुत दिन जिंदा रहते। उच्छव की आँखो की कोर नम हो गयी। आज भात मिलगा इसी आशा मे उच्छव प्रेत से आदमी हो गया था शायद। पत्नी-बच्चो की याद म अचानक आँखों मे पानी आया? भात ही सब कुछ। बडी माँ कहती थी—अन्न लक्ष्मी, अन्न ही लक्ष्मी है।

'कौन हो भाई? रा क्यो रहे हा?"

"मुझसे पूछते हैं बाबू ?"

"हाँ।"

"गाँव से आया हूँ बाबू। आँधी-पानी, बाढ मे सब खतम हो गया। घर के लोग भी ।'

"ओह !"

ताश पीटने वाले लड़के परेशान से दीखे फिर उनमे से जिसकी उमर सबसे ज्यादा थी वह धीरे से बोला, "अच्छा भाई, सो जाओ।'

सचमुच उच्छव सो गया। बहुत देर तक सोता रहा। पता नही कितनी देर बाद किसी के पाँव की ठोकर खाकर जाग उठा।

"अरे, शाम हो गयी। पर यह आदमी उसे ठेल क्यो रहा है?" उच्छव ने सोचा।"

"उठो, उठो। कौन हो तुम।"

'बाबू मैं ।"

"अरे चोरी करने का इरादा है क्या ?'

"नही बाबू, इसी घर मे काम करता हूँ।"

उठो ! उठो।'

उच्छव उठ बठा। एकदम घबडा गया था। सडक पर ढेर सी गाडियाँ खडी थी। आदमियो के छोटे-बडे हुजूम।

"क्या हुआ बाबू ?'

किसी ने उसके प्रश्न का उत्तर नही दिया। उच्छव घर के अदर गया। घुसते ही उसे बडी बुआ का विलाप सुनाई पडा अरे भया हो ! अब क्या होगा ? यज्ञ होते ही क्यो चले गय मेरे भैया ? बयासी बरस मे ही चले गये ? तुम्हे तो जनम पत्री के हिसाब से निचानवे बरस जीना था हो भया।'

वासिनी कही नही दिखी, पर चारो तरफ बडी अफरा-तफरी दिखी। पता नही किसने कहा ' कीतन जब तक न आ जाय लाश बाहर नही जायेगी''

कीतन नही पहले बहनो भाइयो और रिश्तेदारो को आन दो।' बडी बुआ ने अपना विलाप रोककर कहा।

' खाट का पसा किसके पास है ?'

' बाग बाजार फोन किया किसी ने ?"

"फद का कपडा इधर देना। और फूल खोई, चन्दन कहाँ है ?

उच्छव एक खबे के सहारे खडा हो गया। कितना समय बीता कितना कुछ होता रहा। एक विशाल खाट आयी। रात रात म ही सारा काम पूरा करना है। सवेरा हो गया तो दोष लगेगा।

बहुत जाड-तोड हुआ। बहुत सी औरतें आयी और विलाप करती रही। शाम

यज्ञ करके भी बूढा चला गया इस बात को लेकर तान्त्रिक महाशय को जरा भी कुठित नही रखा गया। उ हान अपना रास्ता निकाल लिया था। बडी बुआ चीख रही थी, 'यज्ञ भग हो गया। तीना लडके यज्ञ छोड कर चले गय तो क्या होगा।'

इन सब कामो मे विघ्न पडने स फल बडा खराब होता है। इस बात को लेकर पूरे घर मे गहमा गहमी मची रही। शाक का कोई चिह्न नही दिख रहा था। घर मे चूल्हा नही जलेगा। सडक का दुकान से चाय आ रही थी। आखिरकार एक बजे रात को बड मालिक बबई की खाट पर लेट कर श्मशान भूमि की आर सिधारे। पेशेवर और दक्ष शव ढोन वाले दुलकी चाल स दौड रह थ। फलस्वरूप कीतन दल को भी भागना पड रहा था।

बडी बुआ ने कहा, 'वासिनी, सारा खाना कूडे पर डाल आ। बहू लोग। जाओ सब। यहाँ खडी क्यो हो ?'

उच्छव के दिमाग का कुहासा एक मिनट म छट गया। वह समझ गया कि ये लोग सारा भात, दाल, तरकारी, मछली सडक पर फेंकने जा रहे है।

"भैया, जरा पकडना तो।"

"ला, इधर द।

उच्छव की बुद्धि स्थिर थी। उस पता था क्या करना है।

"यह भारी वाला बतन मुझे दे।'

माटे चावल का भारी देग उठाकर वह बाला, "दूर पर फेंक आता हू।"

"हाँ हा, दूर फेंक आ, नही तो कुत्ते सारे दरवाजे पर छीटेंगे।"

बाहर आकर उच्छव तेजी से चलन लगा। थाडी देर बाद दौडने लगा वह। इस समय उसके हाथ मे कछार के बढ़िया चावल का भात है। सडक पर फेंक देंगे? कुत्ते बिल्ली खायेंगे ?

पीछे से वासिनी दौडी आयी ' भैया, सियापा वाल घर का खाना नही खात।

" खाते नही ? तुम यहाँ आकर बाभन हो गयी ?

"भया। मैं तुम्हार हाथ जोडती हूँ।'

उच्छव ने घूमकर पीछे देखा। उसकी आँखो म उस समय कछार क भडिय जसी चमक और हिंसता थी। वैस ही उसक दात बाहर निकले थ। वासिनी डर कर थम गयी।

उच्छव एक साँस मे स्टेशन पहुच गया। एक किनारे बठकर वह दोनो हाथो से भात मुँह मे ठूसन लगा। भात के स्पश स उसे कितना सुख मिल रहा था। चन्नी की माँ उसे कभी एसा सुख नही द पाया। कछार का भात खा कर वह अद्भुत रस का पता लगा लेगा एक दिन। उसका पता उस लगाना ही है। और था लू थाडा। पहल पानी पी लेत हैं। फिर खायेंग।

अर चन्नी, ल खा भात, चन्नी की माँ तू भी खा ल और छोटू तू भी खा

ले। मेरे अन्दर बैठकर तू सब भी नाज भर पेट खा ले। सवेरे की गाडी से वह कोंनि चला जायेगा। वहो से अपने गाँव का रास्ता है।

उच्छव भात का देग सीने से सटाये कब सो गया। उसे पता ही न चला।

पीतल की देग चोरी करने के अपराध मे वहो से पुलिस ने उसे सुबह गिरफ्तार किया। पेट भर भात खा कर उच्छव सोया था। उसकी नीद काफी दिन निकल आने तक नही टूटी थी।

पुलिस उच्छव को पीटते हुए थाने ले गयी। इस नय कछार की खोज नहीं कर सका उच्छव। वह कछार बडी कोठी म ही अचल हो कर पडा रहा।

सन्यासिनी

फागुन बीतने मे अभी भी दो-तीन दिन की देर थी। नये सन्यासियो ने अभी भी गाजन का पेड पोखरे से नही उठाया था। गापाली के नाती जटा ने उससे आ कर कहा 'दादी घर चलो? तुम्हे मौसी बुला रही है।"

गोपाली उस समय कीचड म से गुगली* ढूढ़ रही थी। कई दिनो से उसकी आँखो म धुँआ धुआ सा दीख रहा है। लगता है रबी काटकर किसी ने पूरे खेत मे चूल्हा जलाकर भात चढा दिया है। गोपाली की आख म सिफ भात की भाप और चूल्हे का धुँआ भरा रहता है। 'जटा, मुझे सब धुए से घिरा घिरा लगता है,' बहुत कातर होकर गोपाली ने कहा था। अगर आँखो का यह हाल हो तो कोई कसे शहर के रास्ते पर पाँव रखे? आँखो म धुआ भरते गोपाली की घिग्घी बैठ जाती है मारे डर के। कसे गोपाली शहर के रास्ते पर चलते हुए चीखेगी,' बाबा तारकनाथ के चरनो मे सेवा लगे, बम महा दे व।"

जटा ने उत्तर दिया था, 'दखेगी नही आँख से धुँआ? रात दिन रोती ही रोती रहती है। हस्पताल ले जाने का मेरे पास बखत है नही। चावल ढोने जाऊँ या तुझे हस्पताल ले जाऊँ? क्या करूँ?'

"रोने से आँखों से धुआ दिखता है क्या?"

गोपाली को बहुत ताज्जुब हुआ था यह बात सुनकर। वह तो जाने कब से रो रही है। रावण की माँ निकषा की तरह जब स एक के बाद एक उसके लडके, नाती-पोते बहुए, बेटियाँ, दामाद खतम होने लगे थे, तभी से उसका रोना बद नहीं हुआ [illegible] भगवान ने रोने के लिए ही शायद आँखें दी थी। अब उन्ही आँखो स सब [illegible] धुआ दीख रहा है।

हारा की माँ ने कहा था,' अब हमारा क्या आँख, क्या [illegible]। गुगली लाओ ढूँढकर और पका कर खाओ। चुपचाप सतोष करो।

तभी से गोपाली दोपहर भर गुगली ढूँढती है। [illegible] क्या उससे सिलाई होती? उसने दो मगोले गिन्न। [illegible]

* एक प्रकार की कद।

से बोली, "तू तिरशूल पकड़।"

"कितनी दूर जायेगी दादी? सारा शहर देख कर फिरेगी?"

"नही बेटा, शहर तू देख। मैं न जा सकूगी।"

जटा इसके बाद ही वहाँ से खिसक गया था। जरा सी बात का सूत्र हाथ मे आते ही उसकी दादी दुनिया जहान की पुरानी बातें ले उडती थी। पता नही कब अकाल पडा था। जटा के दादा जमीन जायदाद छोडकर शहर भागे थे और एक दिन मुह के बल गिर कर मर गये थे। तब जटा का बाप इतना सा था। दादी का दूध पीता था। उस अकाल के बाद भी शायद राजपुर मे उनकी खेती बाडी थी और दोनो बेला गरम भात खाया जाता था उनके घर।

जटा जानता है यह सब झूठ है। जब से उसने होश सँभाला हमेशा दादी को पोखरी से कलमी साग खोटते देखा है और वह खुद महाजन के बोरे ढोता रहा है। इसीलिए वह दादी की बातो पर एकदम ध्यान नही देता। मगर गेरू मे रंगे झगोले देख कर वह खुश हो गया। हर साल हारा के घरवाले चडक पूजा के सन्यासी बनते हैं और शहर मे जाकर भीख माँगते हैं। दिन भर जो चावल पाते हैं उसे पका कर शाम को खाते हैं।

दादी कभी नहीं गई थी। तब वह कहती "उनको जाने दो। हम लोग यह सब नहीं कर सकते। जानता है चाहे कोल बाजार हो या खोटी बाजार, हर जगह हमारी बिरादरी के लोगो की दुकानें हैं?"

"वे सब तुम्हे चीन्हते हैं?"

"भले न चीन्हें। कहीं चीन्ह लें तब? नही बाबू अपनी बिरादरी के सामने अपना मुह काला नहीं कर सकती मैं। उन्हें जाने दो। हमारा खानदान बहुत पुराना और ऊँचा है। अभी भी हमारे पुश्तैनी गाँव मे हमारे कुल के लोग मरते हैं तो उन्हें दफनाते नही, जलाते हैं।

'उससे मुझे क्या फायदा? एक बेला गरम भात खाने की साध तो हमारी मिटती नही। सन्यासी बनने मे नुक्सान ही क्या है? हमेशा माड पीकर कोई कैसे रह सकता है। राच्छसी कही की।"

राक्षसी कहने से दादी रोती है, तब भी रोई थी, पर चडक पूजा का सन्यासी बनने को किसी तरह भी राजी नहीं हुई थी। पर उस बार हालत बदल गई थी। तीन चार दिनो से उसके घर चूल्हा नही जला था। इसके अलावा जब जटा बीमार हुआ तो हारा की माँ जटा को हस्पताल ले गई थी। लौटकर कहा था, 'सुना मौसी? डाक्टर भी क्या ताज्जब की बात बोला। दोनो बेला न सही एक बेला गरम भात, पतीता न देने से यह भी नही बचेगा।"

सुनकर दादी का सिर घूम गया था। उसी दिन दादी ने हारा के द्वारा फकीर के थान पर पाँच आना की सिन्नी चढ़ाने की मनौती कराई थी। कहा था, 'हारा

जैसे मैं रो रही हूँ उसी तरह रोकर तू फकीर बाबा से कहना कि हमारी कुल की इस निशानी को न छीने।"

हारा ट्रेन से चावल ले जाकर बेचती है। उसकी जानकारी, बात चीत सभी मे एक विशिष्टता का भाव होता है। वह बोली, "अभी तक भूख भूख क्यो करती रही हो ? सुना नही उस दिन लाला ने कहा था—यही भूख भूख चिल्लाकर तुमने अपना पूरा खानदान खा डाला अब जटा को भी खा लोगी। मरने को आयी, अभी तुम्हारी भूख नही मिटी ?"

गोपाली न उस समय तो कुछ नही कहा था, पर दोपहर भर कलमीसाग खोटते खोटते उसने सोचा था शायद वे लोग जो कहते हैं, वही सच है। नही तो पाँच बीघा जमीन हमारी बिरादरी वाल क्या छीन लेते, क्या उसके चार जवान बेटे, तीन बहुएँ, पांच नाती एक एक कर खतम हो जाते ? क्यो इस पापी पेट मे सब कुछ समा जाने के बाद भी रात दिन वही पुरानी बातें याद आती रहती हैं ? जब वह भात पकाती थी, उन्ह परास कर अपने लिए भी परास लेती थी। जब भी उसके बाल देखता बडा बेटा कैलाश तेल ला देता। उसकी साडी जरा भी फटी होती तो मझली बहू सुई लेकर तुरत उसे सिल देती।

उस रात पश्चाताप म जलते हुए, आखा स आँसू बहाती दादी ने जटा से कहा "जटा तू तो मेरी गोद म रह। तेरा बाप पता नही कहाँ वह बिला गया, न कोई खोज, न खबर। तू थोडे दिन और धीरज कर ले। इस चडक पूजा में हम लोग भी सन्यासी बनकर निकलेंगे।"

'सच दादी माँ ?'

"हाँ रे। तिरवचा देती हूँ। सन्यासी होकर निकलेंगे। शाम को गरम भात पकायेंगे। शहर मे तुरत चावल, तुरत पसे मिलते हैं।"

तभी से जटा सिर्फ फागुन के दिन गिन रहा है। गोपाली से उसने एक दिन कहा था, "अँधेरा रहते ही मैं जाकर सिवान पर से जवाकुसुम ले आऊँगा। त्रिशूल म माला लगाने से देखने मे अच्छा लगता है। हारा लोगो के साथ नही जायेंगे, समझी ? वे तो लम्बे-लम्बे डग भरके निकल जायेंगे, तू पीछे रह जायेगी। मौसा के पास ढोल है। वह ढोल बजायेंगे और मैं थाली बजाऊँगा।"

इसी खुशी मे कई दिनो से गोपाली सो नहीं पा रही थी। जटा का बाप लखिन्द, उसका सबसे छोटा बेटा, जबसे मझे मे पीछे घर छोड कर चला गया, तब से वह जटा ही उसका सहारा है। अब वह गोबर-गोइठा का काम नहीं कर पाती। कमर मे बहुत दद हो जाता है। अब वह जगल स पत्ते, साग वगैरह इकट्ठा कर के लाती है। हारा की माँ वह सब बाजार म बेच आती है। जटा भी चावल ढोकर कभी बारह आना, कभी आठ आना कमा ही लेता है। मगर इससे चल नही रहा है। इसीलिए चडक पूजा म सन्यासी बनने की इच्छा हुई। उसे लगा ईश्वर

ने सन्यासी होने की सुबुद्धि दी है। गोपाली इस बार शुद्ध हो जायेगी। पता नहीं क्यों लग रहा है, उसके जीवन मे कुछ अच्छा घटित होने वाला है।

पता नहीं कब की सुनी एक कहावत उसे याद आई थी।

किसके सिर पर तेल, पेट मे भात ?
जो शुद्ध आचार से रहे, देव द्विज माने।
किसके सिर पर जटा, शरीर पर मिट्टी, पेट खाली ?
वही जिसके मुह से हमेशा 'नहीं' शब्द ही निकलता है।

पहला आदमी भाग्यवान है। दूसरा अभागा, मौत भी जिसे न पूछे। गोपाली वही अभागिन होकर इतने दिनो से जी रही है। इस बार वह शुद्ध हो जाएगी।

मगर जटा ने जिस तरह आकर कहा, 'घर चलो दादी, तुम्हें मौसी बुला रही है' उससे गोपाली के कलेजे मे धक् से कुछ हुआ।

"मौसी बुला रही है ?"

'हाँ, कह रही है मेरा बापू आया है।"

'तेरा बाप ? लखिन्द ?"

"घर चलो, चलकर देखो न।'

गोपाली के वे दिन अब नही रहे। पहले घडा पानी मे से सटाक् से वह बाहर खीच लाती थी। दिन मे ऐसे दस घडे पानी वह खीचती थी। अब कलेजा कांप उठा। पेट के भीतर क्या जसे निचुड उठा। सिर से पर तक एक दद सिहरा गया। आज दो दिनो से भात जटा को खिलाकर, माँड मे पानी मिलाकर वह पी रही है। क्या इसीलिए ऐसी खबर पाकर उत्तेजना के मारे उसका शरीर काप रहा है ?

'मेरा हाथ पकड ले जटा, मैं उठ नही पा रही हूँ।"

जटा का हाथ पकडे-पकडे गोपाली घर आयी।

लखिन्द ही था। पेट फूला हुआ, हाथ पाँव सीक से पतले और चेहरा राख के रग का। वह कहीं बीमार होकर पडा था। किसी ने पता पूछ कर टिकट खरीद कर बस मे बिठा दिया। बस वाला न सडक पर उतार दिया। यह वही लेटा था। हारा का बाप पहचान कर रिक्शे से यहाँ लाया। 'क्या हुआ, बेटा ?" कहकर गोपाली रोने बैठी थी कि हारा के बाप ने कहा, "मौसी, उसे हस्पताल ले जाना होगा। वह बहुत बीमार है।"

"क्या रोग है बाबू। मुझे बताओ न। तुम्हारे हाथ जोडती हूँ।"

"मैं क्या जानू ?"

"हस्पताल कैसे ले जाओगे बेटा, महेश ?'

'रिक्शाभाडा का जोगाड कर दो तो कल ले जाऊँगा।"

"रिक्शा भाड़ा ?"

"नही तो क्या पैदल जायेगा ?"

गोपाली का सिर तेजी से हिलने लगा। आजकल पता नही क्यो उसकी गर्दन वश मे नही रहती। सिर हिलता रहता है। रिक्शाभाड़ा ? कुप्पी मे एक बूंद मिट्टी का तेल तो जुड़ता नही। गोपाली सड़क की बत्ती मे बैठकर खाना खाती है। रिक्शा भाड़ा वह कहाँ से जुटायेगी ?

गोपाली मल्लिक बाबू के घर भागी। मल्लिक बाबू उसके पुराने मालिक हैं। गोपाली कभी उनके घर काम करती थी। रोकर बोली "वहू ! दो रुपये दे दो। मेरा लड़का बहुत बीमार है।"

दूसरे दिन हारा का बाप लखिन्द को हस्पताल ले गया रिक्शे पर बिठा कर और वापस भी ले आया। हस्पताल म लखिन्द की भर्ती नही हुई। वहा जगह न थी। इसके अलावा उस हस्पताल मे भर्ती करके भी कुछ होना जाना न था।

"क्यो बेटा महेश ?"

"मौसी, उसे एक रोग तो है नही। मुझसे तो कुछ बताया नही, पर डाक्टर बोलता था इसके पेशाब के रस्ते खून गिरता है।"

गोपाली अपना सिर पीटने लगी। यह कैसा रोग रे लखिन्द ? कितनी अभी उमर ही है तेरी ? बहू के मरते ही कहाँ जाकर अपनी दुगत करवा आया बेटा ? हे राम !

"महेश बेटा, अब क्या करूँ ?"

"देवता के थान से चरनामिरत लाकर पिला मौसी, और क्या करेगी ?"

गोपाली ने रोते हुए जटा से कहा, "बेटा, जा चरनामिरत ले आ। देख शायद तेरे बाप की जान बच जाय।"

हारा के बाप ने कहा, "मौसी, बचाओ बोलने से थोड़ा ही कोई बच जायेगा। वखत रहते इसे कुछ कहा नही। मजदूरी करके इसे खिलाती थी। नशा के पैसे भी तुमसे लेता था। कैनिं जाकर खाल पार की रंडिया के घर रहता था। गाँजा भाँग खाता-पीता था। नही तो यह हालत भला होती ?"

गोपाली ने सफ़ाई दी, "बेटा, सब तो मर-खप गये थे, यही बचा था।"

आँचल से लखिन्द का मुह पोछकर गोपाली ने पूछा, "बेटा, बहुत तकलीफ हो रही है।"

लखिन्द ने सिर हिलाकर 'हाँ' कहा। मुँह से आवाज नहीं निकली। आँखो से आँसू झरने लगे।

गोपाली का हाहाकार देखकर हारा के बाप ने मुहल्ले के होमियोपैथ को बुला लिया। वह भी दो पुड़िया देकर गदन हिलाकर चले गये। बोले, "अब क्या दू ? पता नहीं यह दवा भी कठ से नीचे उतरेगी या नहीं ?"

हारा की माँ ने कहा "मौसी जनम दुखी है। कभी जीवन भर इस लडके को एक कडी जुबान नही बोली। यह अभागा पता नही कहाँ से अपनी जान खतम करके अन्त समय मा को जलाने आ गया।"

जटा से माँगकर हारा के बाप ने डॉक्टर को साठ पैसे दिये। गल की घटी खुजलाते हुए अपना फटा छाता सिर पर तानकर होमियोपैथ डाक्टर ने कहा, "वह क्या या ही आया है। माँ की ममता उसे खीच लाई है। लिवर खतम है, छाती मे टी० बी० है एनीमिया ऊपर से। यही सब खीचकर उसे माँ की गोद की शरण मे लाये हैं।'

आज गोपाली ने अपनी कुप्पी जलायी। काठगोला की घरवाली ने दो बूद मिट्टी का तेल उधार दिया था। कुप्पी की रोशनी म गोपाली थोडा चरणामत लखिद के मुह म डालती रही। लखिद स सम्बन्धित हजारो हजार स्मतियाँ उसे आकर परेशान करती रही। उन्ही घटनाओं को वह दोहराने लगी। जो भी याद आ रहा था उसे, वह सब सच न था। पर कुछ बातें इतन दिना स उसके मन मे बैठी रही हैं कि वे झूठ होते हुए भी सच प्रतीत होती है।

"ओ मेरे बाप तुमने कभी मुझे कुछ न कहा। सबको खो कर भी तुम्हारे कारण मेरी गोद जुडाई रहती थी। तुम्हारी बहू क्यो मरी ? जिन्दा रहती तो अभी तक घर गिरस्थी कैसी चम चम करती ? तुम्हारे जटा को कसे पाल रही हूँ, मैं ही जानती हू। क्या एक बार आके देखना नही चाहिए था तुम्हे ? यह क्या रोग लेकर आय तुम मेरे लाल ? सोना सा चमकता रूप तुम्हारा कहा खो गया ?"

जटा देख रहा था कुप्पी की धीमी रोशनी मे मच्छर उड रहे है, दादी माँ का सिर हिल रहा है और वह पता नही क्या बडबडा रही है। उसे लगा पता नही कब से दादी इसी तरह उसके बाप के सिरहाने बठी बडबडा रही है। पता नही क्यो उसे डर लगने लगा। डर कर वह सो गया।

सवेरा होने पर जटा ने हारा की माँ स कहा, "मौसी हो, बापू न तो हिल रहा है न कुछ कह रहा है। ऐसे क्यो कर रहा है ?"

दरवाजे से झाँककर ही हारा की माँ समझ गई। बोली, "मौसी हो, किसे चरनामिरित दिए जा रही हो ? लखिन्द क्या अब है ? लगता है रात म ही चला गया। तुम तो गिआनी हो समझ नहीं पायी ?'

गोपाली ने धुधली, पागलो जैसी नजर उठाकर कहा, 'दूर हो।"

हारा की माँ चौंक पडी। उसने कभी न तो उसके मुह से ऐसी भाषा सुनी थी, न उसकी आँखो मे ऐसा वहशीपन देखा था।

'दूर हो। आज से चइत मास शुरू है। मैं सन्यासी बनूगी। मेरा लडका मर गया।"

"अशुच होने पर भला सन्यासी बनते हैं, मौसी ?

"नहीं बनते ?"

एकाएक हाहाकार करके गोपाली रा पडी। जिस बेटे को कभी उसने एक शब्द नही कहा उसे ही मरने के बाद वह बुरी से बुरी गाली देने लगी। कान के पर्दे फट जायें ऐसी गालियाँ ऐसी बातें जो असभ्यों के बीच भी शायद ही कभी कही-सुनी जाती हो। गोपाली के हाहाकार ने सारे वातावरण को अपवित्र कर दिया, जैसे विधवा की सफेद साडी पर बलि के रक्त के छीट पड गये हो।

दूर पास हर कही भिक्षारभ का बाजा बज रहा था। गोपाली का हाहाकार चल रहा था। इसी चडक पूजा पर उसे भी भिक्षापात्र हाथ मे लेकर निकलना था। शहर के रास्तो पर, घर घर मे जाकर आज उसे भी भिक्षा मागनी थी।

'दुशमन ! दुशमन ! तू मेरा दुशमन था।"

गोपाली ने राक्षसी की तरह उगलिया फोडकर मृत पुत्र को अभिशाप दिया। ढोल पीटने की आवाज के बीच उसका हाहाकार केवल छाती फाडने वाले आर्तनाद की तरह सुनाई दे रहा था। कुछ स्पष्ट नही हो रहा था। इसीलिए हारा के बाप ने ढोल पीटते पीटते कहा, 'बुढिया रो रही है। पुत्र का शोक बडा कठिन होता है।"

बडाम माता के थान पर

मोहन चाँदवाड़ी गाव तुम में से कोई शायद ही कभी जाय। जाते तो मुझे खुशी ही होती। छुट्टियों में तुम में से काफी लोग कहाँ-कहाँ घूमने जाते हो। कश्मीर से ऊटी तक, बंबई से अंडमान तक, हिमालय पर बसे शहरों तक। पर मेरी बहुत इच्छा करती है कि तुम लोग गाँव भी जाओ। गाँव बिना देखे देश को देखना पूरा नहीं होता। गाव में आराम कम है, सुविधाएँ कम हैं, सबकुछ कम-कम है, पर आदमी तो हैं।

पर तुम मोहन चाँदबाड़ी क्या देखने जाओगे? एक मन्दिर है सिर्फ वहाँ। वह भी दर्शनीय नहीं है। बड़े रोड छोड़कर दक्षिण की तरफ घूमने पर एक जंगली इलाका पड़ता है, उसी के पार है मोहन चाँदबाड़ी गाँव। कई एक घर मयाल, भूमिज और महालों के हैं। वे गरीब हैं, भयंकर गरीब। हाँ, देखने लायक एक मकान है—स्वर्गगत महापात्र बाबू का। उन्हीं के मकान पर मोहन चाँद जी का मन्दिर है।

मोहन चाँद जी भी बड़े शौकीन देवता हैं। पीतल का चमकता शरीर, हाथ में चाँदी की बाँसुरी, पाँव में चाँदी का ही नूपुर, हाथ में सोने का कंगन और गले में सोने की माला। माथे पर चाँदी की जाली के बने मुकुट में मयूर पुच्छ का गुच्छा।

सूखा पड़ा हुआ था, गरीब के पेट में भात नहीं, फिर मोहन चाँद जी दूध व घार का मोहनभोग खाकर दिन शुरू करते हैं, दोपहर में महीन चावल का भात, पाँच व्यंजन और खीर, तीसरे पहर फल-फूल लेते हैं। रात को पक्का भोजन और मिष्टान्न चाहिए उन्हें।

संथाल लड़का रतन हेमब्रम बड़ा पाजी है। वह पुरोहित से पूछता है, 'पुरुतजी, अगर यह सब ठाकुर जी खाते हैं तो उन्हें भी मोटा होना चाहिए। वे तो जैसे के तैसे हैं और दिनों-दिन तुम्हारी तोंद लटकती आ रही है, इसका कारण क्या है?'

पुरोहित जी गोल-मटोल हैं, पर आदमी अच्छे हैं। रतन के प्रश्न का उत्तर देते हैं, "अरे रतन! तू जो मुझे मोटा होता देख रहा है न? यह भी उसी ठाकुर

जी की दया है।"

पुरोहित जी रतन को पसन्द करते हैं। इसका एक बड़ा कारण है पुरोहित का भतीजा सनातन, जिसने अपनी छब्बीस साल की उमर मे ही चोरी, छिनताई, लूट पाट सब कर लिया है। एक दिन मन्दिर के बतन-भाँडे और देवता के गहने चुरा कर उडीसा भाग गया था। सभी ने, सोचा, पुरोहित जी ने भी कि चलो आख फूटी पीर गयी।

पर करीब एक साल पहले सनातन लौट आया और सडक के किनारे उसने चाय की दुकान खोल ली थी। उसकी दुकान मे आस-पास के चोर-उचक्के जुटने लगे थे। सनातन कहता है, "मैं चाचा-ताऊ कुछ नही मानता। एक दिन जाकर चाचा के सिर पर एक लाठी मारूँगा और मन्दिर का सारा माल उठा लाऊगा।"

पुरोहित के कान मे बात पडी तो वह थर थर काँपने लगे।

पर इस बीच एक घटना घट गयी। सनातन के दल ने उस दिन रतन का चित-कबरा खसी पकड लिया। इरादा था काट कर माँस पकायेंगे उसका। रतन को खबर लग गयी। वह अपने साथियो को लेकर गया और सनातन की, साथियो सहित, अच्छी खासी धुनाई करके अपना खसी ले आया।

अपने से बहुत कम उमर के लडको के हाथ मार खाकर सनातन की ऐंठ थोडी कम हो गयी है। इसी बात से पुरोहित जी रतन से खुश हैं।

रतन और उसके साथी—हारा, मनाई, राजा, गोपाल और दूसरे डेढ दो दजन लडके क्या करते है, यह बताना भी जरूरी है। उनके पिता जगल से लकडी काटने का परमिट लेते हैं। अकसर सूखे पेड-और कभी मौका देख कर हरे पेड भी काटकर व बाजार मे बेंच आते हैं।

इसके अलावा जगल से पत्ते लाते हैं जमीन खोद कर तरह-तरह के कदमूल लाते हैं। हरनाथ बाबू की खेती का काम करते हैं। पर इस साल एक बूद भी बारिश नही हुई। खेती-बाडी का काम ठप्प पडा है। रतन के दादू भैरव ने कहा —"बडाम माता को पूजा दो। पानी होगा।'

हाँ, बडाम माता बहुत दिनो से सथाला, भूमिजा और महातो से पूजा पा रही हैं। आजकल के लडके इस बात से विश्वास नही करते कि बडाम माता की पूजा देने से कुछ होगा।

पर भैरव का विश्वास अटल है।

वह कहता है "उस बार जब आँधी आयी थी, माता ने लडकर आँधी को दूसरे रास्ते जाने पर मजबूर कर दिया था, यह जानते हो? सवेरे जाकर क्या देखता हूँ माता के सन के बाल बिखरे हुए हैं, साडी और चादर उडकर छितरा गयी है? क्या भयानक रूप था माता का एकदम जिंदा।"

रतन ने कहा, 'हाँ, खूब जाग्रत हैं माता। तभी तो माता के पुजारी हम

लोगों के पेट खाली रहते हैं और जो माता को नहीं मानते वह हरकात बाबू रोज भरपेट खाते हैं।"

"रतन !" उसकी माँ डाँटती है, "किससे बात कर रहा है, याद है ?'

भैरव ने पतोहू को ही दोष दिया, "सब तेरी ही गलती है। तूने ही बार देकर इसकूल भेजा था छोकरे को। दो साल इसकूल क्या गया इसकी मत ही भरस्ट हो गयी।"

रतन आगे कुछ नहीं कहता। पर माँ-बाप और खुद वह तीन जब जब बड़ी कड़ी मेहनत से जुटाय मोट चावल का भात और जगली आलू की तरकारी खाने बैठते हैं तो रतन सोचता है पीतल का ठाकुर इतना इतना खायेगा और हाड़ माँस का बना आदमी आधा-पेट, वह भी रूखा सूखा खाकर रहेगा इसका न्याय क्या कभी मोहन चाँद जी या बड़ाम माता ने किया ?

'मोहन चाँद जी कितने जाग्रत हैं ?' वह पूछता।

"बहुत जाग्रत हैं।" पुरोहित कहता।

"जब सनातन उनके बतन और गहने चुरा रहा था, तब क्यों उन्होंने मना नहीं किया ?"

"उनकी लीला, वही जाने।"

"इसमें लीला क्या है ?"

' वह क्यों रोकते ? शायद वह नये बतन और नये गहने चाहते थे।"

"सब बेकार की बातें हैं। हमारा खसी पकड़ा था सनातन ने। कहा था, पाँच रुपये देंगे। हम मार पीट कर अपनी खसी ले आये तभी तो हमारी चीज हमे वापिस मिली ?"

' तुम वह सब नहीं समझोगे।'

ऐसे ही चल रहा था कि एक दिन सवेरे गाँव मे उथल-पुथल मच गयी। मन्दिर हरकात के मकान के सहन मे था। सहन के चारों ओर पत्थर की चार दीवारी थी और उसमें एक बड़ा मज़बूत सा फाटक लगा था, जिसमें बड़ा सा ताला लगता था। दालान में दरवान सोता था। इतनी पहरेदारी के बावजूद मदिर के दवता मोहनचाँद जी की मूर्ति ही चोरी हो गयी थी। हरकात बाबू की बूढ़ी माँ खटवास पटवास लेकर पड़ गयी थी कि मूर्ति नहीं मिली तो वे बिना खाये पीये जान दे देंगी।

पुरोहित ने मदिर बद करके चाबी बाबू हरकात के हाथ मे दी थी। बाद मे देखा गया ड्योढ़ी का ताला भी खुला है और मंदिर का भी। जाहिर है जिसने भी यह काम किया था उसने चाबियों से ही ताला खोला था।

ऐसी घटना घटने पर आम तौर पर जो होता है वही हुआ। पुलिस गाँव पर उतर आयी। कोई कहीं नहीं जायेगा, गाँव छोड़कर एक डग भी बाहर की ओर

नहीं रखेगा। जब तक चोर पकड़ा नहीं जाता, पुलिस किसी को हिलने भी न देगी।

भैरव ने कहा, "यह कैसी बात है ? हम बाबू के घर मे कभी नही घुसे, मदिर के सामने भी नही गये। हमे क्यो अटका रखा गया है ?"

"चुप कर बूढ़े।" दारोगा ने डांटा।

"हमे इस तरह अटका रखा गया तो हम जगल कैसे जायेंगे ?" रतन ने पूछा।

"आज मत जाओ।"

"तो आज खायेंगे क्या ?"

"मैं क्या जानू।'

"हमारा नाम लिखकर हम जाने दो न, बाबू।"

"कौन है रे तू ? बड़ा साला जिरह कर रहा है ?"

"रतन हेमब्रम।"

"ओह। तो तू ही है वह रतन ? सनातन बाबू के साथ तूने ही मार-पीट की थी न ?"

' उसने हमारा खसी क्यो लिया था ? '

"जगली और किस कहते हैं ? वह ब्राह्मण आदमी तेरा खसी काट कर खा ले तो तुझे अपना भाग्य सराहना चाहिए।'

"अरे वाह।" रतन ने प्रतिवाद किया।

दारोगा नया नया आया था। उसने आव देखा न ताव रतन के गाल पर एक थप्पड मार दिया। रतन गुस्से से तिलमिला कर परे हट गया। काले काले आदमियो के चेहरा पर पत्थर जैसे दिखे।

भैरव ने कहा "हम जा रहे हैं, बाबू। रतन चल। चोरी की भी नही, न हम चोरी करना जानते है। हम अटके नही रहेगे। हमे जगल जाना ही है।" फिर उसने हरकात बाबू से कहा, "तुम्हारे मकान के इस आँगन मे हम लोगो ने कभी कदम भी नही रखा। यह बात इस बाबू को तुम बता नही पाये ?'

भैरव के पीछे पीछे सभी निकल गय। हरलाल बाबू ने दारोगा से कहा, यह क्या किया आपने दारोगा बाबू ? वे सीधे सादे, भल लोग हैं पर अगर उन्हे गुस्सा आ जाय तो सभालना मुश्किल हो जाता है। हमारे पिता जी के जमाने मे धान काटने के झगडे म इन्होने हमारा घर घेर लिया था तीर-धनुष लेकर।

और लोगो ने भी इसे बुरा माना। दारागा खिसिया सा गया।

रतन बहुत गुस्सा हो उठा था। वह दौड़ता हुआ एक तरफ भाग निकला। दादू की पुकार नही सुनी, दोस्तो की बात नही सुनी। उसका अकारण अपमान हुआ था। रतन हेमब्रम था, जो अपने समवयस्क युवको का सरदार है। उस बिना

किसी गलती से दारोगा थप्पड़ क्यों मारेगा ?

जंगल पार करके, बड़ाम माता का छोटा मंदिर पार करके, एक झापस बरगद के पेड़ पर रतन चढ़ गया। फिर जो डालों के संधिस्थल पर एक सुरक्षित जगह वह एक डाल से पीठ टिका कर बैठ गया। रतन को यह जगह बड़ी प्रिय है। यहाँ बैठकर वह सभी को देख सकता, जबकि उसे कोई नहीं देख सकता। बैठे बैठे उसे पता नहीं कब नींद आ गयी।

नींद टूटने पर उसने देखा शाम हो रही है। सूर्य डूबने वाला है। इसी समय जनार्दन बाबू की "जै जनार्दन" बस जाती है। उसका हार्न भी सुन पड़ रहा है। अब यह जगह छोड़नी पड़ेगी। भूख भी लग रही थी। अगर वह पक्षी होता तो कीड़े मकोड़े या बरगद के गोदे खाकर भी पेट भर सकता था। पर ये कौन लोग पेड़ के नीचे बात कर रहे हैं ?

अरे ! यह तो सनातन और पुरोहित जी हैं।

दोनों फुसफुसा कर कुछ कह रहे हैं एक दूसरे से। पर इन दोनों में तो साँप और नेवले का वैर था ?

"अरे तुझे आते किसी ने देखा तो नहीं ?"

'नहीं चाचा जी, डरने की कोई बात नहीं है।"

' देखना बेटा, कहीं भड़ाफोड़ न हो जाय। लोग तो यही जानते हैं कि मेरे-तेरे बीच जबर दुश्मनी है। यह बात बनी रहे।"

"बनी रहेगी। पहली बार भी क्या कोई भाँप सका था ?"

"ओह ! मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।'

"कहाँ रखा है सब माल ?'

'वह सब जमीन की मिट्टी खोदकर गाड़ दिया है। सब मिट्टी में गाड़कर वहाँ पर चावल की टोकरियाँ रख दी हैं।"

माल कब ठिकाने लगाना है ?"

'पहले मामला शांत हो। फिर अपनी चाची को पहुँचाने मयूर गंज जाना।"

"वहाँ कोई अपना आदमी है ?"

' हाँ ! हाँ ! अब जा। सावधानी से रहना और लोगों के सामने मुझे खूब गाली देना।'

"इस बार मैं मोपेड खरीदूंगा, हाँ।"

अच्छा ! अच्छा, खरीदना।"

वे दोनों दो दिशाओं में रवाना हो गये। रतन ने मन ही मन कहा, ' ठहरो ! तुम्हें मोपेड मैं खरिदवाऊँगा। वह भी तुरन्त।"

दस मिनट बाद रतन भी नीचे आया ? अब वह बड़ाम माता के थान पर

जायेगा, पर इसके पहले वह मनाई हारा या किसी और अपने दल के लडके को यह सब बता देना चाहता था। मनाई ठीक रहगा। उसका घर भी पास है। इस समय वह बैलो को पानी पिला रहा होगा।

रात के आठ बजते-बजते गाव के सभी लोग बडाम माता के थान पर पहुँचे। अद्‌भुत काड हुआ था। रतन हेमब्रम सवेरे दस बज से गायब था। अब दिखाई पडा तो लगता है यह कोई और आदमी है। आदमी भी नही है इस समय। दानो हाथ जमीन पर टिकाये वह सिर झटक पटक कर झूम रहा है और चीख रहा है "मैं बडाम ठकुराइन हूँ रे। पूजा चाहिए। मुझे पूजा दे। नही देगा पूजा ता—।"

परेश महान बाबू के यहा से माँग कर अगरु लोहबान ले आया है। किसी को पास जाने नही दे रहा है वह। बाप रे! कौन कहता है मा जाग्रत नही हैं? गाव के भक्तों का आज ही पुलिस न परेशान किया। इसीलिए माता खुद प्रकट हुई हैं। पूजा दो। घटा बजाओ।

बडाम माता का पुजारी था मधु शबर। दौडता हुआ आया, बोला, 'तुम लोग पीछे हटो। मैं पूजा देता हूँ माता को। चलो, दूर हटो।"

रतन अपने माँ, बाप, दादा, दोस्त मित्र किसी को नही पहचान रहा था। बस एक स्वर म कह जा रहा था पूजा दे, पूजा दे पूजा दे।

मनाई, हारा और रतन के दूसरे दोस्त इकट्‌ठा हो गये थे। बडी धूमधाम से पूजा हो रही थी। मधुशबर ने अपने घर से मुरगा मँगाया, अरवा चावल मँगाया और धूप मँगायी। राजा साइकिल पर सवार होकर पास के बाजार म बताशा लेने गया।

राजा की दादी ने अचानक जमीन पर पछाड खाकर गिरते हुए आतनाद किया "माँ भगवती? मरा दामाद कब घर आयगा?"

"आयेगा। आयेगा। तेरे आँगन मे जिस दिन ढेकी नाच हागी, उसी दिन आयेगा।"

"माता ने वचन दिया। अब राजा का फूफा निश्चय हा सर्दिया म आ जायेगा।" किसी ने कहा।

पुरोहित जी मजा लेने आ गय थ। रतन झूठ-मूठ तमाशा कर रहा है या क्या बात है यह जानना जरूरी था। पुरोहित का निश्चय था कि उसका भेद बडाम माता का भी नही मालुम।

उसने साष्टांग प्रणाम करते हुए कहा, 'माता! मैंने बडा पाप किया है। मरी पुरोहिती मे देवता की मूर्ति चोरी हो गयी। मैं क्या प्रायश्चित करूँ माँ, इतना बता दो।'

"बलि दे! बलि दे। बालक मूर्ति बिना खाय पिय रोता फिर रहा है। आहा! उसका रोना मै सुन रही हूँ। रोज इतना खाता-पीता था और आज आहा र!

उपवास करके अपनी बलि दे पुरोहित ! यही तेरा प्रायश्चित्त है ।'

"उपवास करके मैं अपनी बलि दू ? यह क्या कह रही हो माँ ?"

"वह तो तुझे छोडकर किसी को जानता नही रे !'

इस बात पर पुरोहित एकदम से चौका और बोला, "जो आज्ञा माता ।" और उठकर वहाँ से भाग खडा हुआ ।

सवेरे तक ऐसे ही चलता रहा । सवेरे और ज्यादा भीड इकट्ठी हुई । मधु शबर ने रतन को स्नान कराया । लालपाड की कोरी साडी पहनने को दी ।

थोडा दिन और चढा तो मोहन चाँदबाडी से आकर एक पालकी वहाँ रुकी। पालकी के साथ साथ हरकात बाबू दारोगा जी और इलाके के दूसरे गणमान्य लोग थे । हरकात बाबू की माँ थीं पालकी मे । उन्होंने बेटे से कहा, ' देवी रतन के सिर आयी हैं तो चलकर पूछती हूँ मेरे ठाकुर जी कहाँ हैं ?'

दारोगा ने इस पर शका प्रकट की तो हरकात बाबू ने कहा था, "आप तो पता नही कब चोर को पकडेंगे । इधर मेरी मा उपवास करके मर रही है ।"

दारोगा ने हँस कर कहा था, "चलिए फिर । यह तमाशा भी देखता हू । कल तो मेरे ऊपर बहुत नाराज हुये थे । लगता था मेरा थप्पड खा के ही छोकरे पर माता की सवारी हुई है ।"

'अरे धुत ! मैं हगामा पसद नही करता । एक तो यो ही आजकल आदमी का दिमाग गरम हो रहा है और फिर इन्हें नाराज करके यहाँ रहना बहुत कठिन है ।'

' खैर ! चलिए ।

गाँव के कर्ता धर्ता हरकात महापात्र की माँ ने जब साष्टाँग प्रणाम किया तो वहाँ एकत्र श्रद्धालु जनता की आखें फटी की फटी रह गयी । इस बुढ़िया को कभी किसी ने अपन घर के बाहर निकलते नही देखा था ।

हरकात की माँ ने हाथ जोडकर रोते हुए पूछा, 'मा, ओ मा, मेरे ठाकुर जी कहाँ हैं, इतना बता दो ।"

' क्यो ? अब मेरे पास क्यो आयी है ? तुम लोग तो मुझे मानते नही ।"

"मानती हू माँ । देखो न तुम्हारी शरण म दौडी आयी हू ।"

'हाँ, तेरा ठाकुर चोरी गया । तभी तो आयी है ।"

"बोलो माँ, क्या करना होगा ?

मैं जो टूटे मदिर म रहती हूँ । मरे भक्त आते हैं तो वर्षा म भीगते हैं धूप मे तपते हैं ।"

'माँ छिमा करो । तुम्हारा मदिर पक्का करवा दूगी । सामन एक चौपाल भी बनवा दूगी ।

पूजा मे तू भी पूजा देगी । '

"दूगी माता, जरूर दूगी।"

"तिरबचा दे।"

"दूगी! दूगी। दूगी।"

'ठाकुर थान पर संतुष्ट होकर पूजा देगी? पाँच सौ एक रुपये की पूजा लूगी।"

"दूगी मा।"

हरकात बाबू की हालत खराब। पक्का मंदिर, पक्का चौपाल, पाच सौ एक रुपये की पूजा। यह तो बहुत बडा नुकसान हुआ। "ओह! कहा फस गया मैं। पर माँ ने स्वीकार किया है तो देना ही होगा। यह सपत्ति तो मा की ही है। नानी ने मा को दहेज म दिया था।

"ठाकुर को वापिस चाहती है?"

"हाँ, माँ।'

हाथ मे एक तीर लेकर रतन चलने लगा। भूख, प्यास और श्रम से उसका बुरा हाल था। अब तो वह झोंक म चल रहा था।

पीछे पीछे समग्र जन समुदाय। उस समय सभी अत्यत उत्तेजित थे। अविश्वासी दारोगा और हरकात बाबू भी। मधु गबर इनके आगे-आगे चल रहा था नाचता हुआ। वह 'जैमाँ ! ज माँ!' बोलता जा रहा था और उसकी आँखो से लगातार आँसू बह रहे थे। आहा! रतन कितना भाग्यवान लडका है। बड़ाम माता का पक्का मंदिर, पक्की चौपाल होगा, दालान होगी, छावनी होगी। सब माता की असीम, अपार कृपा है।

रतन चलते चलते पुरोहित के घर के सामने आ खडा हुआ। सभी एक दूसरे का मुह देखने लगे। पुरोहित जाल मे पडे जानवर की तरह छटपटाने लगा। मगर भीड का दबाव ऐसा था कि उसका हिलना भी मुश्किल था।

रतन अब तीर की नोक से पुरोहित की ओर इशारा करके बोला, "यही है वह पापी। यह और इसका भतीजा। मोहन चाद को मिट्टी म दबा कर उनके ऊपर चावल की टोकरियाँ रख दी है। आहा! बालक देवता बेचारा! उसने रो-रोकर सब मुझे बताया है। बोलो, दीदी! इसका भतीजा मुझे मयूरगज ले जाकर बेचनेवाला है।'

"नही मैंने नही।'

सनातन न भागने की कोशिश की तो दारोगा न लपककर उसका हाथ पकड लिया' आहो! भाग क्यो रहे हैं?

तभी पुरोहित धप स फर्श पर बैठ गया और उसकी आँखें उलट गयी। वह बेहोश हो गया था।

लोग-बाग उस समय बहुत उत्तेजित हो गय थ। उन्होंने चावल की टोकरियाँ

उठाकर नीचे की जमीन पलक भांजते खोद डाली।

हरकात बाबू और दारोगा की आँखें कौड़ियों की तरह बाहर निकल आयी। सब कुछ मिल गया—मोहनचाँद जी, पूजा के बतन, थाला, सब था।

हरकात की माँ ने कहा, "हरकात, माँ की पूजा के पसे अभी दे।"

'अभी लाता हूँ।"

रतन अब जमीन पर लबा लेट गया और आँखें बद कर ली। भैरव हेमब्रम ने एक बार हरकात बाबू और एक बार दारोगा की तरफ देखा।

इसके बाद क्या हुआ यह तो तुम लोग समझ ही गये होगे।

पुरोहित और सनातन को दारोगा ले गया। रतन को उसके लोग घर ले गये।

रतन पर से बडाम माता की सवारी खतम हो गयी। तभी पूजा के पसे आ गय। साथ मे हरकात की माँ ने चावल भी भेजे थ। फलस्वरूप पूजा के बाद कितना मास पका, कितना भात इसका तो कुछ कहना ही नही।

मदिर का काम शायद वर्षा के बाद शुरू होगा। मुझे जहाँ तक मालूम है गाँव मे रतन की इज्जत बहुत बढ गयी है। सभी उससे सहमते हैं। कौन जाने कही फिर न माता की सवारी हो जाय उस पर।

पर माता की सवारी अब रतन पर नहीं होगी।

यह बात रतन, मनाई, राजा वगैरह लडके ही जानते हैं।

(शारदीया पक्षिराज / 1983)

भसान

साप के काटे से आदमी मरता है तो उसे नदी मे भसा देते हैं। पता नही क्यो किसी ने एक जिंदा बच्चे को पानी मे भसा दिया था। एक छोटी सी डोंगी मे एक दूध पीते बच्चे को पानी मे भसा गया था कोई। अधर वैरागी मछली मारने गया था। उसने पानी मे घुसकर नाव को किनारे खीचा।

वैरागी तो सिर्फ अधर की पदवी है। वह कोई सचमुच का वैरागी नही है। कभी कभी अधर चोरी भी कर लेता है। बीच बीच मे जेल की हवा भी खाता है। चोरी करके सभी जेल नही जाते। अधर इसलिए जाता है कि कोई काम ढग से करना उसके वश म न था।

जेल से लौटता तो प्रतिज्ञा करता "अब कोई गलत काम नही करूँगा, सुना तुमने चूनी ? इस बार सचाई से जिंदगी बसर करूँगा। क्या मेहनत करके अपना पेट नही पाल सकता मैं ?"

"यह तो तुम्ही जानो।"

आश्चय की बात है कि अधर जैसे चोर को भी काम मिल जाता था। कोई घर उठा रहा हो तो छप्पर बाँधने मे उसका मुकाबिला नही था। अनाज भी गधे की तरह ढो लेता था। काम हो तो लगातार भूत की तरह जुटा रहता था। घरवालो को खुद ही सावधान कर देता, "देखना भाई, अपने बतन भाँडे सँभाल लेना। अधर चोर काम पर लग रहा है।"

सुट सुट बीडी के कश खीचेगा और फटाफट काम निबटायेगा। गाँव वाले कहते, "समझ नही आता कि तेरे जैसा आदमी आखिर चोरी क्या करता है? काम करे तो तेरे जसे मेहनती आदमी का कभी पेट घटेगा ?"

सब समझता हूँ भाई रे ! पर मेहनत करके पेट भरो की इच्छा नही करती। आदत जो खराब पड गयी है, समझे भाई ?"

'उमिर भी हो रही है। अब कब सुधरेगा ?'

"दो न, टँगारी दो, य लकडियाँ काटे देता हूँ। नही, अब चोरी नहीं करूँगा

"अपनी बहू का भी ख्याल नही करता।"

अधर की बहू चूनी बटाई पर बकरियाँ चराती, घास काटती, गृहस्थो के

के छोटे-मोटे काम करती, जंगली साग पात लाकर मौसी के घर पहुँचाती, जो गाँव से साग पात ले जाकर बाजार म बेच आती।

चूनी को पहले बहुत दुख होता कि उसकी गोद सूनी थी। अधेड होने को आयी। अब वह दुख भी नही रहा। कहती, 'ईश्वर भी बडा कारसाज है। ठीक ही किया उसने। या ही उसने मुझे बाँझिन नही बनाया। बच्चे हुए होत तो सभी उन्हे चोर की सतान कहते, नही ?"

"नही। अब अधर ने वह रास्ता छोड दिया है।" कोई कहता।

' रहने दीजिए उसका मैं भरोसा नही करती। चूनी जवाब देती।

चूनी बडी घर घर और आत्म सम्मानी थी। सभी जानते थ उसका पति चोर है। इसीलिए वह घास काटकर लाती तो घर के बाहर गटठर पटक देती। बकरिया को लाकर दरवाज़े पर बाँध देती। साग-पात भी मौसी के दरवाज़े पर ही उतारती। किसी के घर मे बुलाने पर भी नही जाती।

कोई घर के अन्दर बुलाता तो कहती, "नही बाबू तुम्हारे घर की कोई चीज इधर उधर हो जायगी तो मेरा नाम लगेगा। कहोगे चोर की वह घर मे घुसी थी, कौन जाने वही ले गयी हो ?"

ऐसे लोगो को गाँव वाले पसन्द कैसे करते ? थोडा परे परे ही रहते थे। चूनी हर बार सोचती अब अधर वह सब काम छोड देगा। "खेत मे काम करो ताल से मछली पकडो, अनाज ढोओ, कौन काम ऐसा है जो तुम नही कर सकते ? दो आदमियो का पेट क्या इतना भारी होता है ?'

उन दिनो भी कलकत्ता का पेट अभी बहुत नही बढा था। मैदानो म घास और पानी म सिघाडा, करमुआ का साग और छोटी मछलियाँ बहुतायत से मिलती थी।

अधर भी सोचता, 'सच, दो आदमियो का भात कोई ऐसा पहाड तो नहीं है।'

मगर दूसरे ही दिन चोरी करता। पकडा जाता। एक बार महेश सामन्त ने कहा 'अरे अधर! तू नही मानेगा क्या ? दो चार बतन जाते हैं और उससे ज्यादा खच तुझे थाने ले जाने मे ही हो जाता है। इस बार तुझे थाने नही ले जाऊँगा। तेरा सिर मुडाकर उस पर पाँच जगह बालो के जुट्टू छुडवा दूगा। शायद इससे तुझे कुछ शरम आये।'

अधर को सचमुच शरम आती कहता, 'देखिये बाबू, मेरी आदत नही जा रही है। आप लोगो को भी हैरान परेशान होना पडता है और मेरी औरत अलग जलती भुनती रहती है।"

"और तेरा भी क्या भला हो रहा है चोरी करने से ?"

'हा बाबू लोटा-थाली चुराने से क्या भला होगा ? कोई कीमती चीज तो

चुराता नही कि ।"

"जास्साला,, दूर हो।"

"नाराज हो गये बाबू ? अच्छा जरा खाट पर से उतरिये तो। देखिए कितना झोला हो रहा है ? अभी कस देता हूँ।"

'चोर का कभी भला हुआ है ?"

नही बाबू।"

बाबू से नही, बाबू' कहता अधर और चूनी को समझाता, "देख चूनी, चोरी करने से अनभल होता है यह बात नही है। कलकत्ता जाकर बहुत कुछ देख-सुन आया हूँ। वहा मोटर गाडी चोरी करके बेच देते हैं। दुकानो मे जाकर देख तौल मे चोरी कर रहे हैं। महेश बाबू के पिता ने तो चार आदमियो की जमीन चोरी-बेईमानी से ही लिखवा ली। बोल ? इन लोगो का कुछ अनभल हो रहा है ?"

चूनी उसकी बात का उत्तर नही देती।

"सेंध काटकर आदमी का सब कुछ न तो अधर ने लिया, न कभी लेगा।'

"एक बार एसा ही करो और पाच दस साल जेल मे रहो। मुझे कुछ दिनो की शान्ति मिले।"

'क्या कह रही हो ?'

'हाँ, ठीक ही कह रही हूँ।"

श्मशान घाट पर एक महाज्ञानी साधु से उसकी मुलाकात हुई। जान-पहचान हुई तो एक बार साधु ने कहा, "अधर जानता है ? तेरे दोनो हाथो मे जब चोरी करने की खुजली मचे तो समझ ले कि किसी दुष्ट आत्मा ने तेरे अदर प्रवेश कर लिया है ? पर वह सब तुझे समझाकर क्या होगा। मैं एक ताबीज दे सकता हूँ जिसके प्रभाव से साल भर तक वह दुष्टात्मा तेरे पास भी नही फटकेगी।"

नही बाबा ! तुम्हारा ताबीज पहनने पर तो मैं गया काम से। घर-दुआर छोडकर सन्यासी बनना पडगा।"

चूनी ने सुना तो बोली, "सन्यासी ही बन जाओ।"

"चूनी इस बार तू देखना ।"

तो अधर मछली पकडने गया, चोरी से जान चुराने की खातिर और वहाँ उसने डोंगी पकडी, जिसमे किसी ने एक दूध पीता बच्चा भसा दिया था। दिन का तीसरा पहर था। आषाढ़ मास का दरिद्र दिन सन्नाटा खींचे पडा था। माझी नही, पतवार नही। यह कैसी नाव ?

अधर ने नाव को पकडते समय सस्कार वश देवी देवताओ को भी स्मरण किया था। निजन स्रोतस्विनी की धार म सन्-सन् करती बिना डाँड पतवार, बिना खिवैया कोई नाव तिरती आ रही हो तो वह कोई पारलौकिक छलना भी तो हो

सकती है। पानी मे कोई लाश या कोई सन्दूक तैर रही हो तो उसे पकडना नहीं चाहिये— वह सब भूत पिशाच की माया होती है, सुना था अधर ने। पर वह तो नाव थी।

नाव मे कथरी पर एक शिशु सो रहा था। छह महीने का होगा। नाव चईगंज की तरफ से आ रही थी। यह किसका काम हो सकता है? अधर ने आगा-पीछा नही सोचा। बच्चे को गोद म उठा लिया। भगवान का रूप होता है बच्चा। अभी जिंदा है। थोडा दूध पिलाने और सेवा करने से जी जायेगा।

चूनी ताज्जुब से प्राय बेहोश होने होने को हुई। फिर भी बच्चा उसने गोद मे उठा लिया। इसी तरह की बात गाँव गिराँव म हवा पर बैठकर फैलती है। अधर सिर पर हाथ रखे इस अदभुत घटना को समझने की चेष्टा कर रहा था। चूनी ने कहा "जरा इसे पकडो। थोडा दूध का इन्तजाम करती हूँ।"

"यह क्या हुआ?" अधर के मुह से निकला।

"क्या हुआ? जरा इधर तो आओ।"

"बोलो।"

"तुम यह बच्चा रखोगे?" चूनी ने पूछा।

"क्या करूँ बोलो?"

"पाच आदमी पाच तरह की बातें करेंगे।"

"हाँ करेंगे तो सही।"

"पालपोस कर आदमी तो इसे तुम नही करोगे करूँगी तो मैं ही। कर सकती हूँ, अगर तुम सौग ध खाओ कि चोरी छोड दोगे?

"सौग ध खाता हूँ। अगर ।"

"समझ गयी। लो पकडो इसे।"

पूरा गाँव तमाशा देखने जुट गया। बच्चे का रँग गोरा था, पर हाथ-पाँव में कोई गहना न था। कमर म काला धागा बँधा था।

"अरे चूनी जिसके जात पात का जनम-करम का कुछ ठीक नही ऐसे बच्चे को तू पालेगी?" किसी ने पूछा।

"क्या करूँ फिर?"

"थाने मे दे आ। जो करना चाहे, करें।"

"वह नही कर पाऊँगी।"

आखिर मे श्मशान घाट वाले साधु ने फैसला दिया। यह स्रोत जाकर बेहुला नदी मे मिलता है, बेहुला गगा मे मिलती है। बच्चा इसमे तैरता आ रहा था। इसको पालने म कोई दोष नही है। यह तो गगा की सखी बेहुला का पुत्र है।"

सारी बातें सुनकर महेश सामत ने कहा अधर ने नाव पकडी है। उसकी मर्जी रखना चाहे रखे या थाने मे जमा करे। पर हाँ, थाने मे खबर कर देना

चाहिए उसे। अगर किसी का बच्चा चोरी हुआ हो और वह पुलिस मे रपोट करे तब ?"

थाना पहुँचने पर छोटे दारोगा ने अधर का स्वागत किया, "अरे अधर बैरागी का खुद ब खुद कैसे आना हुआ यहा ?"

"एक बात कहनी है आपसे।"

"बोल। अर वाह ! लजा रहा है तू तो ?"

"बाबू ! मै नहर मे मछली पकड रहा था ।" अधर ने सारा किस्सा कह सुनाया।

"कैसा बच्चा है ? कितना बडा ?"

"यही पाच छह महीने का होगा।'

'तू अपने पास ही रख। यहाँ थान मे उसको कौन देखेगा ? कोई पूछेगा तो खबर दूगा।"

"ठीक है।"

"एक दिन ले आना। देखकर उसकी पहचान लिख रखूगा।"

"क्या लिखेंगे, बाबू ?"

"यही कि कही तिल या कोई दाग हो तो पहचान के लिए लिख लेते है। मान ले कोई अपना खोया बच्चा ढूढने के लिए यहा रिपोट लिखाने आय तो वही सब बतायगा।"

"ले आऊँगा। पर अभी तो वह झुरा गया है। थोडा हरा हो ले।"

"झुरा गया माने ?"

"माने भूख से उसकी हालत खराब है। दूध पीन तक की ताकत नही है। थोडा खा पीकर ताजा हो जाय।"

"ठीक है। पर लाना जरूर।"

"लाऊँगा।"

"तेरे कोई कच्चा बच्चा तो है नही ?"

"नही।"

"जा। भले मानुस की तरह रह। चोरी करता है छिपा भी नही पाता। जेल की हवा खाता है। कितनी बार हो आया जेल ?'

' आपके आशिरवाद से छह बार हो गया।"

' अरे ! मैंने तो दो बार ही चालान किया था ?"

"आपके पहले भी तो यहाँ दारोगा बाबू थे।'

अधर ने प्रफुल्लित होकर थाने के आम के पेड की तरफ़ इशारा किया।

"यह पेड जब इत्ता-सा था, तभी से जेल जा रहा हूँ।"

"दुर साला ! तू महा बेहया है। जा भाग। मुझे काम करने दे।"

तभी अधर ने देखा सनातन बेरा सिर पर छाता लगाये आ रहे हैं। बड़ी-बड़ी चोरियां डकैतियां का माल वही खरीदते है। गोपालगंज म उनकी बतना की दुकान है। कलकत्त म बड़ बाजार और सियालदह के नुक्कड़ पर भी एक दुकान है।

अधर चला आया। सनातन बेरा क्या कम हैं? या कि दारोगा जी कम हैं? हां जेल जरूर सिर्फ अधर जाता है। श्मशानवासी साधुबाबा न कहा,' जो अपन हाथ से चोरी करता है यह जैसे चोर है वैसे ही वे भी चार हैं जो किसी न किसी प्रकार उसका लाभ उठाते हैं। समझे अधर?"

ये बातें निश्चय ही साधुबाबा सनातन, दारोगाजी, महेश बाबू के काका जी स नही कहते। क्योंकि साधुबाबा द्वारा प्रतिष्ठित श्मशान काली के मंदिर म साल मे चार बार पूजा होती है। और सारा दिन सदाव्रत चलता है। सारा सामान उपरोक्त महानुभावों के ही घर से आता है। व लोग स्वय भी पधारते हैं। सनातन बेरा ने काली जी की जीभ चादी से मढवायी है।

बच्चे को स्वस्थ प्रसन्न करके थाने ले जाने म काफी समय लगा। चूनी आंचल से ढक कर ले गयी। नही, उसके शरीर पर पहचान का कोई खास चिह्न नही मिला। यहाँ तक कि टीके का दाग भी नही था।

' जा, ले जा।'

" बाबू इस हम रख सकत हैं न?"

"हा।"

"यही कपडा पहने था और इस कथरी पर लेटा था।'

"रहने दे। वह सब देख कर क्या होगा?"

अधर और चूनी बच्चे को लेकर घर वापस आये। चूनी ने कहा, 'मौसी कह रही थी बच्चे को श्मशान काली का प्रसाद ला कर खिला दे। इस तरह वह शुद्ध हो जायगा।

' ठहर, जरा दुकान स चीनी ले लू।'

" क्या होगी चीनी ?

' चीनी और बाल्ली (बार्ली) खायेगा मुन्ना।

अधर के घर कोई नही आता। चूनी भी किसी के घर नही जाती। मगर जो गाव भर की मौसी और गाँव भर की प्रचार प्रसार अधिकारी है वही तारामणि एक दिन चनी के घर आयी। चूनी अवाक। तारामणि बोली, ' देख चूनी, तुम लोगो ने भी गुरु स कान नही फुकवाय। तुम्हारे हाथ का पानी शुद्ध नहीं हैं। गुरु से मतर ली होती तो किसी को कुछ कहना न पडता। '

मौसी, गुरुमतर ले कर क्या होगा? हमारे घर का पानी पीने वैसे भी कौन आता है? मेरे घरवाले को तो जानते हो। पेट का दाना जोगाड करने के लिए दिन रात एक करना पड़ता है बेचारे को। मैं भी ।'

"अरे बेटी, उसे तो दे रही हो दाना पानी। कौन जाने किस जात का बच्चा है? उसे झट् से घर मे रख लिया। चेहरे-मोहरे से तो किसी ऊँची जात का लगता है। गोरा चिट्टा घुघराले बाल। उस तो उसी हाथ से खिला पिला रही हो। एक दिन जा कर पूजा दे आओ। दरवाजे पर ऐसी जागरित काली माई बठी हैं।'

अधर ने कहा, "मौसी, वह तो पानी मे बह कर आया है। मान ला वह भी पानी का ही एक जीव है। मछली, केकडा झींगा जो खाती हो, क्या पहले शुद्ध करती हो? क्यो?"

"सुनो इसकी बातें। तू चाहे बोल, पर आचार विचार न मानने पर मैं चूनी से साग-भाजी कैसे लूगी?"

"बाबू लोग ता उससे घास लेत हैं।" अधर न फिर तक किया।

"लेते होग। मैं तो नही ले सकती।"

चूनी ने बीच मे जल्दी से कहा "ठीक है मौसी। जैसा कहोगी वैसा ही करेगें। तुम्हारे हाथ जोडती यह बात तुम्हारे मेरे बीच रहे।"

"ठीक है जो करना है जल्दी करो।"

मौसी गाँव के ढेर सारे लेडी बूची की अन्नदाता हैं। जो शहर नही जाते, वे बाजार भाव से बहुत कम दाम पर साग भाजी मौसी के हाथ बेच देते हैं। इसके अलावा वह गाँव के गरीब गुरबा को सूद पर पस देती हैं। गरीबी की रेखा के नीचे जो समाज है उसके अथतत्र मे मौसी भी एक नियता हैं।

"मौसी तो तुझे ठगती है। तू क्यो खुद शहर ले जा कर अपनी साग सब्जी नही बेचती?"

"कभी ठीक रास्ते पर ता चले नही तुम और न ही तुम्हें देश दुनिया की कोई बात मालुम है। मौसी तो साग सब्जी, अण्डे, चावल कितनी ही चीजे लेकर बेचन जाती हैं। रल के लागों स उनका मेल जोल है। और फिर बाजार म जो चाहे वह नही बठ सकता।"

"वह ता सडक पर बैठती है।

"सडक पर भी बिना किसी मेल-जोल के कोई नही बठ सकता। मैं बैटन जाऊँगी तो बैठने भी नही पाऊँगी और मौसी से दुश्मनी अलग होगी।'

'यह बुढिया अब चारो आर भापा बजायगी।'

'उसे भोपा बजाने ही क्यो दूगी?" चूनी ने सख्त मुह स कहा। फिर बोली, "बाबू लोगों को इतनी चिंता नही है। मौसी जैसे लोग ही डाह के मारे मर जा रहे हैं।'

"दुर! हमारे जैस लागा से भी भला कोई डाह करेगा?"

अधर के लिए यह बात एकदम अविश्वसनीय लगी। वह दागी चोर है। चूनी दूसरो के घर मजदूरी करती है। जमीन-जायदाद नहीं है। घर भी दूसरे की जमीन

पर बना है। एक ही टूटी फूटी छप्पर के नीचे बैठा बाँध पर एक तरफ बकरियों को रखा जाता है। दूसरी तरफ ये दोनों पति पत्नी रहते हैं। बरतन के नाम पर एक कड़ाही है लोहे की, जिस में भात पकाती है चूनी और एक पीतल की थाली है जिसमें दोनों खाते हैं। मिट्टी की कड़ाही में साग सब्जी पकती है कभी जुड़े तो मछली केकड़ा। क्या देख कर जलेंगे लोग ?

चूनी उससे ज्यादा समझदार है। उसने कहा, ' जो है उस देख कर नहीं जल रहे हैं लोग। वे सोचते हैं बच्चे के कारण अगर तुम अच्छे रास्ते पर चलने लग गये। चूनी बैरागिन को हमेशा उन लोगों ने हम दबाव डर डर कर चलते देखा है। तुम्हें अगर चोर न कह पायें मेरे ऊपर दया करने का सुजोग न मिल पाय तो ? यही सोच कर वे हमसे जल जा रहे हैं।'

"तो चल श्मशान वाली के थान पर चलते हैं।"

"चलो बच्चे को तो फेंक नहीं देंगे।'

"ठीक कहती है।'

'जा कर पहले पता लगाओ।'

"चूनी, बच्चे को जब नदी म से उठाया था तब यह बहुत गोरा लगा था। अब वैसा नही लगता ?

"शसान की सांझ थी न ! बादला स ढके सूरज की रोशनी म देखा था न, इसीलिए वैसा लगा होगा। पता नहीं किस ऐसी कुबुद्धि हुई। नही रखना था तो जनमाया क्यो ? इतना बड़ा करके पानी म भसा दिया। बच्चा मर भी तो जा सकता था ?'

'आदमी भी तरह-तरह के हैं ? एक आदमी जेल मे था। सात साल से उसके साथ रहा था। बच्चे थे। औरत पर उसे सन्देह हो गया। पहले लड़की को दूसरी जगह रख आया। फिर औरत को काट डाला और तीन महीने के बच्चे को भी मारना चाहता था पर नही मार पाया। बाहर स दरवाजे म ताला बन्द करके भाग गया और ।

'रहने दो ! तुम्हे तो जेल के अलावा कुछ सूझता नही। जसे वहाँ की रोटी नही भूलती वैसे ही जितने सब पापी दोषी हैं उनका किस्सा नही भूलता।

श्मशान वासी साधु ने इस प्रस्ताव पर खुशी स सहमति दी। यह तो उसी की जय-जयकार थी। वह जो यहा जमा बठा है तो बठा ही है। इसस गाँव वाला का नफा हो रहा हैं या नुकसान ? देखो न, एक चोर का भी कैसा हृदय परिवतन हो गया।

महेश सामत ने कहा "सब मा करा रही हैं। उन्ही की माया है।"

' उसी माँ को अभी तक इटा का मन्दिर नही जुड़ा।'

वह भी देखता हूँ।'

"सनातन बेरा चाहते हैं ।"

"नही, नही। मैं हूँ, मेरे और कुटुम वाले हैं। हमारे रहते किसी दूसरे गाँव के आदमी का नाम तो यह नहीं होगा।"

साधु ने जमीन पर हथेली पटक कर कहा, "फिर शुभ काय म देरी क्यो।"

"बरसात बीतने दीजिए।"

"माँ तुम्हें कम नही दे रही हैं। चार बार पूजा होती है, चार बार मेला लगता है। दुकान-पाट तुम्हारी होती है। मुनाफा भी तो तुम्हारा ही है।"

महेश सामत मन ही मन म एक सपना पाल रहा है। वह अपने आप कोई बडा सपना देखन मे सक्षम नही है। यह बडा सपना उसे दिखाया है साधु ने।

'हाँ मन्दिर बनेगा। धीरे धीरे लोगो के ठहरने के लिए कतार के कतार कमरे बन जायेंगे। दुकानें भी पक्की-पुख्ता बनेंगी। ढर सार लोग, ढेर सारी दुकानें। रुपयो की ढेरियाँ।"

"तो तुम जो चाहते हो करते क्यो नही? मेले म नौटकी ले आओ, कीतन मण्डली ले आओ। पर हा, धमपथ पर चलना होगा। मा के लिए उनके उपयुक्त मन्दिर बनवा दो। हा, अधर के बच्चे को देवता का दूत कह कर बताना है। उसकी बात पर ही तो मा का मन्दिर और मेरा कमरा बन कर तैयार हुआ।"

"ओह! तब तो अधर के भी दिन फिरेंगे?"

श्मशान मे वास, श्मशान काली की पूजा, मुर्दा फूकने वालो से सलामी लेना, इससे क्या? साधु एकदम पक्का हिसाबी था। मुह से पायरिया की बू फैलाते हुए जोर से हँस कर उसने कहा "यह तुमने क्या कहा, महेश? अधर की और तुम्हारी क्या बराबरी? अधर के दिन फिरें तो क्या वह तुम्हार जैसा हो जायगा? उसकी हाथो की खुजली मिटी रह यही बहुत बडी बात है। तुम्हारी ही पाचो उँगलियाँ घी म होगी अगर तुम धमपथ पर चलन रह।"

'चलूगा ही।"

मनाहर डोम साधु के प्रसाद स्वरूप हमेशा शराब और गाँजे म डूबा रहता था। महेश के चले जान के बाद बोला, सब ता माँ काली को मना कर ही होगा। महेश को लखपती बना देगी माँ और खुद क्या करेगी?"

साधु ने कहा, "जो भी होगा सब माँ का ही है। माँ का माहात्म्य जितना समझेगा आदमी उतना ही पायगा? तुझे क्या? पहले जैस खसी का सिरा पाता था अभी भी पायेगा।'

"पाऊँगा न?'

'जरूर।"

मनाहर न कहा ' लगता है सचमुच लक्का देवी का दूत है। मैंन भी तो नाव को बहुत दखा था। बटहल के पड के नीचे गाँजा पी कर लेटा था। मैं नाव पक

हता तो बच्चा मुझे मिलता, पर गाँजे के दम ने बुद्धि हर ली थी।"

"माँ नहीं चाहती थी कि तू नाव पकड़े।"

"क्या माँ चाहती थी अधर नाव पकड़े?"

"जरूर! उसी की मर्जी से चाँद सूरज उगते हैं।"

मनोहर डोम ने श्मशान काली को इतनी शक्तिशालिनी नहीं माना था। अब उसे लगा शायद साधु ठीक कह रहा है। सोचने पर उसका सिर घूमने लगता था। उसने सिर्फ इतना सोचा—"तो फिर आजकल पहले की तरह मुर्दे क्या नहीं आते घाट पर?"

इसके बाद वह सोने चला गया।

पता नहीं क्या श्मशानवासी साधु अधर पर बड़ा कृपालु हो उठा। पाँच रुपये में ही पूजा करवा दी। प्रसाद हाथ में देकर अधर से साधु बोला, "इसका नाम नयनकाली रखा है मैंने। इसी नाम से पुकारना।"

श्मशानवासी साधु मनोहर डोम और महेश सामंत तीनों के मुँह से सुना जाने लगा कि लड़का देवदूत है। मौसी की तरह के गरीबों ने यह बात मान ली। गाँव के जमींदार महेश बाबू जो कहेंगे उसे वे कैसे न मानते?

अधर और चूनी के पेट का धंधा पहले जैसा ही था। अधर मजबूर होकर भलामानुस बन गया। वह बच्चे के पास न रुके तो चूनी का निकलना मुश्किल। अधर कहता, "ऐसा कर, तू बच्चे को देख। घास मैं ही काट लाता हूँ?"

"जिसका जो काम है वही करेगा।"

अधर समझता है कि अभी भी चूनी उस पर पक्का विश्वास नहीं करती। और वह यह भी समझता है कि बच्चे के लिए चूनी की ममता उससे कहीं ज्यादा है। सांस भर कर बच्चे को गोद में लिए वह महेश के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ।

"बाबू, कुछ काम दीजिए न?"

"बच्चा गोद में ले कर क्या काम करेगा?"

"लाइए, सन दीजिए रस्सी बुनता हूँ।"

"चूनी कहाँ गयी?"

"वह जो रोज करती है वही करने गयी है।"

"कोई काम नहीं है तेरे लिए। भाग!" कहने में महेश सामंत के संस्कार बाधा दे रहे थे। यह बच्चा देवता का भेजा हुआ है, यह बात फैला कर उसने काली मन्दिर के चारों ओर व्यवसाय का एक छोटा मोटा साम्राज्य खड़ा कर लिया है। मगर कितना अभागा है वह कि उसकी लम्बी चौड़ी जायदाद का वारिस ही नहीं है। लड़का एक भी नहीं चार चार लड़कियाँ हैं। न होगा सबसे छोटी बेटी की शादी करके उसके पति को घर-जमाई रख लेगा।

"आज जा। कल आना।" ऊपर से कहा महेश ने।

"बाबू, जानते हैं यह छोकरा बडा मायावी है।"

"अच्छा !"

अधर ने चोरी छोड ही दी थी। घर की हालत पहले जैसी ही थी। खेतो का काम शुरू होता तो अधर बाहर निकलता। चूनी घर मे बच्चे को देखती।

महेश के वहा निमन्त्रण खा आये नायब दारोगा ने एक दिन अधर से कहा, "तूने चोरी छोड दी। ठीक ही किया। आजकल लोग चोर पकडते हैं तो थाने नही ले जाते। सिफ पिटाई, दे पिटाई।"

"अच्छा ? कहा ?"

"और थानो मे हो रहा है यहा भी होगा। मारते मारते खत्म कर देते है।"

"आप लोगो के लिए तो अच्छा ही है। झझट कम हुई," महेश ने टिप्पणी की।

"नही जनाब। हम लोगो के लिए अच्छा नही है।"

"अब आदमी बदल रहा है।"

"यहाँ तो खैर वह सब नही होगा। देवता के स्थान पर यह सब नही होगा।"

कुछ ही सालो मे सचमुच काली मन्दिर के चारो ओर महेश का अच्छा खासा कारोबार फैल गया। श्मशानवासी साधु की मर्जी मुताबिक तो नही बना मन्दिर, पर चबूतरा और छत पक्की हो गयी। दुकानें चटाई बाध कर बनाई गयी है, पर हैं तो दुकानें ही।

महेश सामत की इज्जत को जबदस्त धक्का पहुँचाया सनातन बेरा ने। श्मशान काली इसलिए हैं कि श्मशान मे मन्दिर है जो लोग मुर्दा फूकने आयेंगे वे धूप मे जलेंगे, वर्षा मे भीगेंगे, यह तो कोई बात नही हुई। "मा, में जानता हूँ तुम्हें इसका बडा दुख है। ठीक है मैं ही इसकी व्यवस्था करूँगा।"

ऐसी बातें करके खूब प्रचार करते हुए सनातन बेरा ने श्मशान मे मुर्दा फूकने जाने वालो के लिए एक पक्का कमरा बनवा दिया, जो दो तरफ से खुला हुआ था।

यह जरूर है कि उसके पास लकडी का टाल महेश सामत का था। पर मनोहर डोम कहता फिरा, "महेश बाबू तो सिफ पसा कमा रहे है। लकडी बेच कर, दूसरी चीजें बेच कर हाय पैसा ! हाय पसा ! इससे क्या पुन हुआ ? सनातन बेरा बाबू को देखो कैसा पुन्न का काम किया ?'

महेश सामत ने इलाके के चुनाव म खडे होन की बात कभी सोची ही नही। मगर उसे लग रहा था सनातन चुनाव मे जरूर खडा होगा। पहले स ही चाल चल रहा है।

श्मशानवासी साधु से उसन कहा ' यह बुद्धि मुझे देने म क्या हज था ? मैंने तो उसस कहा नही था कुछ करने को।'

तो क्या उसने बिना किसी क कहे यह अच्छा काम किया ?"

"वही मनोहर डोम, शायद उसी ने कहा था। पर मनोहर के मुह से निकलते ही सनातन ने झट से जो यह काम किया निश्चय ही माता की इच्छा से ही हुआ। माता ने मनोहर से कहा—"बोल," और सनातन से कहा, "मनोहर जो बोलता है वह कर।"

"मनोहर मुझसे भी तो कह सकता था? जिसने इतना किया क्या वह यह जरा सा काम और नहीं कर सकता था?"

श्मशानवासी के भी रग बदल गये हैं। अब यह टेरिलीन की लाल लुगी पह नता है और काली के लिए शराब का जो चढ़ावा चढ़ता है उसका प्रसाद पाकर टुन रहता है और दूसरो को भी बाँटता है। इधर कई सालो से यह भी नियम बन गया है,श्मशान काली की पूजा देनी हो तो गाँजा शराब साथ मे चढाना ही पडेगा।

इसलिए श्मशान वासी हमेशा प्रफुल्लचित्त रहता है। उल्लसित हो कर यह कहता है, "तुम सब काली माँ की सतान हो। लडके माँ के भोग-जोग म भाग लें तो उन पर गुस्सा क्यो? अरे साला जीवन तो दो दिन का है। फिर तो यह शरीर मनोहर के हाथ मे छोडकर टिकट कटाना ही होगा।'

यह तू-तडाक और साला साली श्मशानवासी ने पिछले एक-दो वर्षों म ही सीखा है।

"अधर के पास किसका बच्चा है?" नायब दारोगा ने दर्याफ्त किया।

"वही लडका है नयन।"

"वही जो नाव मे बहता हुआ आया था?'

"और कौन?"

"दोनो तुम्हारे यहाँ ही काम करते हैं?'

'नही। काम तो अधर ही करता है। लडका भी साथ मे आ जाता है। छोटे-मोटे काम मे उसका हाथ बँटाता है। जानवरो को बाँधना छोडना, सानी पानी यही सब करता है।"

'जानवर भी कम हैं क्या आपके वहाँ?"

'मेरी औरत तो उन्ही की साज सँभाल म रहती है। सोचती है शायद गो माता की सेवा ही फल जाय। सब किस्मत की मार है दारोगा जी। मेरी औरत की कोख म लडका था ही नही। तीन लडकियो की शादी की तो लडके हुए। छुटकी के दूल्हे को घर जमा किया तो आठ साल मे सिफ दो लडकियाँ।'

नायब दारोगा तप्ति से हँसे, 'मेरा देखिए। दो लडके हैं। अभी भी बीस साल नौकरी है। रिटायर होने के पहले दोनो को अपने पाँव पर खडा कर दूगा।"

"मेरा तो सब कुछ अभी भगवान भरोसे है।'

जमीन जायदाद और काली मदिर के बाजार के मालिक महेश सामत बहुत ही दुखी थे। किसी सम्राट की तरह वे इस बात के लिए चिंतित थ कि उनके मरने

के बाद उनका साम्राज्य टुकडे टुकडे हो जायेगा। लडकिया उसे बाट लेगी।'

तभी अधर हाजिर हुआ, बोला, "बाबू अब घर जाऊँगा।"

"क्यो? अभी क्यो?"

"रात हो रही है। लडके को नीद आ रही है।"

"देखता नही, घर पर मेहमान आये हैं?'

पता नही क्यो अधर को देखते ही आजकल महेश की पित्ती जल जाती है। अधर। अधर चोर। वह भी कसे बेटे का हाथ पकड कर चला जा रहा है।

श्मशानवासी साधु से भी किसी सहानुभूति की उम्मीद नही है महश को। महेश सामत का नाम दुनिया से मिट जायेगा इसकी यातना को वह साधु समझेगा ही नही। उलटे कहता हे, "अधर को जबसे पुत्र मिला हे तभी से तुम्हारी उन्नति शुरू हुई है। तुम भूल जाओ, पर में नही भूला हूँ।"

लो सुनो! क्या नयन को मैं मार रहा हूँ? सवेरे मुरमुरे तीसरे पहर मुरमुरे फिर शाम को भरपेट भात, पूजा पर हाफपैंट, अगोछा, क्या नही पा रहा है वह?

अधर कहता है, 'बाबू, रात का भात भले न दो, पर धान तो दो जो भी नौकर रखते है धान देते हैं।"

"जितना मिलता है उतना ही तुम्हारा पेट बढता जाता है। क्या बीच बीच मे भात नही मिलता तुझे?"

जैसे आज भी उसे भात मिलने वाला है।

भात लेकर वापस फिरते उन्हे काफी देर हो जाती है। अधर बच्चे के सिर पर हाथ फेरत हुए कहता है 'बहुत भूख लगी है न मुना?"

"हाँ बापू।'

"क्या करूँ बोल? घर की मरम्मत के लिए बाबू से बास और फूस लिया है। उनका कजदार हो गया हूँ। और फिर हमारा घर जहा बना है वह जमीन भी तो बाबू की ही है, नही तो क्यो रुकता ?'

"बापू जल्दी घर चलो। बडी नीद आ रही।"

घर पहुँचने पर बिना भात खाय नयन सो जाता है। चूनी ने कहा, "रहन दो, जगाने की जरूरत नही। सुबह भात खा कर काम पर चला जायेगा।"

नयन भी बडा हो रहा है। नौ बरस का हो गया है। और इन नौ बरसो मे अधर और चूनी क दुख कम हान की जगह बढे ही हैं। बटाई पर पाली जाने वाली बकरियो का कोठा सूना पडा है। अपने हिस्स की बकरिया बेचकर व खा गय हैं। अब घास भी महेश को ही देना पड रहा है। किसी और को देकर कुछ पान का रास्ता भी बद हो गया है। साग पात भी मिलना मुश्किल होता जा रहा है। कलकत्ता नामक राक्षस की भूख और पट भी बढ़ रहे हैं और वह हात क साग पात भी हजम करता जा रहा है। नतीजा यह है कि बूढी हो रही चूनी प्रतिद्वद्विता म

पीछे रह जाती है। साग पात म दूसरे शिकारी बाजी मार ले जाते हैं।

"मुझे क्या नही ले जाती, माँ ?" नयन पूछता है।

"ऐसी बात भूल से मत सोचना, मुन्ना। बाबू के घर कम से-कम एक बखत का भात तो मिल रहा है।

अधर कहता है 'बाबू तो दो आदमियो को भात नही देता, चुनी। बोलता है --काम पर तो अकेले तुम रखा है। एक ही खोराकी मिलगी। बाँट कर खाना हो तो खा, नही तो न सही।'

'बाँस और फूस म बदले कितना कर्ज हो गया कि वह रात को भी भात नहीं देना चाहता ? उधार भी नही देता ? न ही एक कपड़ा देता है ?"

"बाबू को तू कम चालाक समझती है ? चालता है, तेरा चोरी म नाम इतना बदनाम है। मैं ही हूँ जो तुम काम पर रख हुए हू। तुम न पसन्द हो तो छोड दे काम। मगर चुनी, मैं जब चोरी करता था तब बाबू मुझ पर इससे ज्यादा महर बान था।' ।

"इसी पाप से तो बेटे का मुह देखने को तरस रहा है।"

"चोरी से तो अब मन एकदम हट गया है रे चुनी।'

"तुम क्या सोचते हो चोरी करके पक्की हवेली म रहोग और भर-पेट भात खाओगे ? अब दिन-काल बदल गया है। एक बार भी तुमने वह काम किया तो हम तीनो को गाँव छोडकर भागना होगा। मौसी भी आजकल बदल गयी है। बाजार भाव चारो ओर बढ रहा है। मगर वह दाम घटाती जा रही है। कहती है, "बाजार मे दाम बढ रहा है तो मुझ भी तो ज्यादा पैसा देना पडता है।"

क्या करूँ बोल ?"

'नयन पानी मे बहा जा रहा था। उसे निकालकर हमने पाला पोसा। अब तो हमी बहे जा रहे हैं।"

'अब हम लोगो की उमर हुई। बुढ़ापे मे यह बच्चा मिला। अब उसका क्या होगा ?'

"साधू कुछ नही कहता ?'

'क्या कहेगा ? मन्दिर उसका है काली बाजार तो बाबू का है। बाबू का और साधू का दस आना छह आना का हिस्सा है नही तो वह नयन का और मेरा इन्तजाम कर देता। उसी न कहा था बच्चा देवता का प्रसाद है।"

"वाह रे देवता का प्रसाद। पाच बरस की उमर होते न होत साग खोटना पडा। सात बरस का जब से हुआ तुम्हारा हाथ बटा रहा है।'

'तू भी क्या करेगी ? सोचा था हम जसे खटेंगे खायगे वसे ही नयन भी पल जायेगा। इसीलिए ।"

चुनी ने अधर की बाह पर हाथ रखकर कहा "ठीक ही तो सोचा था। पर

इस समय बाबू जैसा कर रहा है मकान भी तो उसके यहाँ बन्धक हो गया है? वह चाहे तो हमे बेघर कर दे सकता है, नही?"

"हा, उसक मन पर है।"

"तब कहाँ जाओगे?"

"जायेंगे जहा सीग समायेगी। न होगा रेल लाइन के किनारे की जमीन मे झोपडी डाल लेंगे या कलकत्ता चले जायेंगे।'

कलकत्ते की बात सोचकर अभी भी चूनी और अघर दिग्‌भ्रमित से हो जाते हैं। कलकत्ता इतना पास है, फिर भी इतनी दूर लगता है। दो बार वे कलकत्ता गये हैं। नयन को भी ले जाकर कालीघाट, चिडियाघर, मैदान, विक्टोरिया पाक दिखा लाये हैं।

"लडका हमारा अगर देवता का प्रसाद होता ।"

"क्यो चूनी, बाबू का भला हो रहा है, साधू का भला हो रहा है।"

"पर हमारा क्या होगा?"

दोनो अन्धेरे मे आखें गडाये पडे रह। मन म फतिगो की तरह चिन्ताओ का अम्बार लगा था। नयन फो फो करके सो रहा था। वह जागता हो तो ये दोनो इतनी बात नही करते। अ त मे, चूनी न कहा, ' चलो, सो जाओ।"

"सनातन बाबू के यहा जायें क्या?"

"तो फिर यहाँ नही रहने पायेंगे।"

"हाँ, वह भी है।"

इसी बीच भादो का महीना आ गया। भादो, कातिक, पूस और चैत—इन चार महीनो मे चार पूजाएँ होती थी। इसके अलावा हर मगल और शनि को कोई भी पूजा दे सकता था। सनातन बेरा ने मुर्दा फूकने वाला के लिए पक्का कमरा बनवा दिया था।

गोपालगज मे भी महेश का सिर नीचा हुआ था। "नहर के किनारे हमारा बाजार है। उस गाँव की तुलना मे इसे टाउन ही कहा जायेगा। यहाँ के धनी मानी आदमी हो तुम। बडे आराम से तुम यहा एक काली मन्दिर बनवा सकते थ। जितने दिन यहा की काली माता फूस क छप्पर के नीचे गरीबी मे रह रही थी तुम्हारे लिए मौका था। अब तो खूब तरक्की हो गयी। अब तुम क्या करोगे?" सनातन के एक शुभचिंतक न उससे कहा।

सनातन बेरा ने अपनी हथली को उलट पलट कर देखा और चिढकर बोले, "उसकी क्या बिसात है? सब माता की इच्छा है। और यह भी मत भूलो कि नाम चाहे महेश का जितना भी रटा जाय उसकी गाठ से बहुत कम ही गया है। उसके एक रिश्तेदार का ईंटा का भट्टा है। इटें उसमे दी हैं। महश का एक दामाद ठीकेदार है। मसाला उसन दिया है। और फिर माता की इच्छा भी तो थी। वह

जा नाव बहती जा रही थी उसमे जो बच्चा पडा था और अधर बैरागी ने उसे पकडकर किनारे खींचा वह सब क्या या ही हुआ ? वही बच्चा इसकी जड है।"

"यह कैसे हो सकता है।'

"हाय रे अविश्वासी ! यह बात सच है या झूठ जाकर श्मशानवासी साधू से पूछ लो। महेश झूठ बोलेगा साधू तो झूठ नहीं बोलेगा। महेश, महेश सभी करते हैं। पर क्या तुम लोग जानते हो कि एक खाराकी दवर महेश अधर और उस देवता के प्रसाद बच्चे को दिन रात खटाकर मार रहा है।'

'सच ?

"जाओ, जाकर देख आओ। हाय रे कलियुग। अगर धम नाम की कोई चीज होती है तो महेश को इसका दड मिलेगा ही मिलेगा।'

अधर और उसके लडके की सहायता सनातन कर सकते हैं या नही यह बात किसी के दिमाग म नही आयी। क्योकि अधर जिन दिनो चोरी करता रहा, उन दिनो भी सनातन बेरा न कभी उसका माल नही खरीदा था। अब तो सनातन एक सम्मानित आदमी था। सभी जानते हैं वह पचायत के चुनाव म खडा होने वाला है। क्या पता वह इससे भी बडा कोई स्वप्न देख रहा हो।

सनातन कहता है "मुझ नही चाहिए नाम करना। महेश जो कर रहा है पैसे के लिए कर रहा है। मैं जो जनता की सेवा समझता हू। इसीलिए मुर्दा फूकने जाने वालो के लिए मॉं हो मा ! तुम्हारी जय हो। अधर को देखो। हमेशा का चोर था माँ की भेजी नाव छूते ही बदल गया। अब अधर और उसके लडके को जो तकलीफ दे रहा है महेश उसकी सजा वह पायेगा ही। मा की अदालत म न्याय का रूप दूसरा होता है। मैं नही चाहता, आदमी की सेवा करना चाहता हूँ सोचता हूँ काली थान पर जो पानी का पम्प है उसका चबूतरा पक्का करा दू।"

भादो मे भद्र काली की पूजा होगी। दुकान पाट सज गये थे। नयन और अधर व्यस्त हैं। बहुत व्यस्त।

ऐसे समय पता नही माँ काली के मन म क्या आया कि उनकी अदालत मे फसला सुना दिया गया। मन्दिर के विशाल प्रागण को बुहारते हुए अधर ने नयन से कहा, "घर गया था तो देखा अभी तेरी माँ नहीं आयी है। घास काटने म इतनी देर तो कभी नही हुई उसे। जा एक बार देखकर आ।"

'बाबू न कहा था तासा बजाने वाला के लिये ।'

'जा बेटा एक बार मा की खोज खबर ले आ। बूढी औरत ।'

नयन दौडा घर की तरफ।

माँ काली की अदालत म जो फसला हुआ उसके अनुसार चूनी एक हाथ मे हँसिया और दूसरे म घास का एक लच्छा पकडे मुह के बल चरागाह म पडी थी। हाथ म जहरीला साप काटे तो बचना मुश्किल ही होता है।

फिर भी अधर महेश बाबू से हाथ जोडकर बोला, ' बाबू गाडी दे दो । जरा गोपाल गज हस्पताल ले जाकर दिखा आऊँ । शायद माँ काली की दया हो जाय ।"

मौत का पारखी मनोहर डोम न चूनी की लाश को पलट दिया । फिर बोला "पता नही कितनी देर हुई काट ? पता नहीं कब की मरी पडी है ? तुम साले औरत को सवेरे घास काटने भेजते हो और शाम को उसकी खबर लेते हो ? वाह रे अक्किल ?"

"लगता है अभी जिंदा है ।'

अधर बहुत चीख पुकार करता है । आजकल मनाहर डाम पाकट मे शीशा कघा रखता है । रगीन लुगी पहनता है । शीशे को चूनी की नाक के सामने रखता है थाडी दर फिर निणयात्मक स्वर म कहता है ' गयी यह ता । शीशे पर कोई भाप नहीं पडी ।"

अधर उस पर झपट पडता है, 'नही, मेरी औरत अभी जिदा है । तुम कौन हो कहने वाले कि वह मर गयी ? कौन हो तुम ? काली थान का माल खाकर तुम भी बहुत फूल उठे हा । उस हस्पताल भी नही ले जान दागे ?'

महेश पर जमा क्रोध मनोहर पर निकल रहा था । जो भी मुह मे आया वह बकता गया । शोक मे आदमी का दिमाग ऐसा हा जाता है ।

मनोहर के लिए मौत और लाशे ही जीविका के साधन हैं । वह कभी ज्यादा विचलित नही होता । बोला, "चलो वरागी, पहले उसे आगन म निकालो । फिर जो करना हो करना । बाबू गाडी नही देंगे तो क्या और कोई गाडी नहीं है गाँव म ?

"आगन मे ले चलू चूनी को ? '

"हाँ, मुर्दे को छप्पर के नीचे नही रखत ।'

फिर भी खटोले पर लाद कर चूनी को अधर गोपालगज ले गया । रास्ते भर अधर चूनी से कितनी ही बाते करता रहा ।

"मेरा बुढापा है, चूनी । तू मुझे छाडकर मत जा । बुरा तो जरूर था मैं । तुझे तो कभी किसी न बुरा नही बताया । मैंन कभी तेर लिए कुछ नही किया । हमेशा खटती रही तू । अपना और मेरा पट पालती रही । राज ही तो घास काटने जाती थी । मुझे क्या पता चरागाह इतन दिनो पर ऐसी घात करेगा ।"

पानी, घास, चरागाह, किसी के साथ मित्रता या शत्रुता नही करते । यह बात अधर को किसी ने नही बताई । मौसी नयन का हाथ पकडे चलते हुए बोली, "बोलने दो उसे । जी हलका हो जायेगा ।'

गोपालगज के डॉक्टर न कहा "उसको मरे कई घट हा गय । जहरीले साँप / काटा है ।"

अच्छा।'

डाक्टर ने लिखा—'चूनी दासी हिन्दू, महिला, मृत अवस्था में लायी गया सांप का जहर मृत्यु का कारण ।"

फिर वे चूनी की लाश लेकर गांव आ गए। मौसी बोली, "महाश्मशान लिखा था इसकी किस्मत में।"

"नहीं।' अधर ने कहा।

"क्या? जलायेगा नहीं। आजकल तो जलाते हैं।

"नहीं।" अधर ने दुबारा कहा।

"तब?"

"नहर बेहुला में गिरती है बेहुला गंगा में पानी में बहा दूंगा। रुको एक कपड़ा खरीद लूं इसके लिए।"

नया कपड़ा लाश पर डाल दिया गया। मांग में सिन्दूर और पांवों में आलता डाल दिया गया। पर बारिश की रिमझिम रुकने का नाम नहीं ले रही थी। दूसर दिन भी काफी वक्त बीत गया। तब जा कर धूप निकली। चूनी की लाश को केले के मचान पर रखकर पानी में ठेल दिया गया। फिर बारिश होने लगी। सभी भीगते हुए घर आये। नयन को लेकर अधर घर में जा बैठा। बैठा ही रहा।

एक आषाढ़ में नयन पानी में बहता हुआ आया था। एक भाग्य यह है कि चूनी को उसी नहर में बहा दिया गया। बाढ़ नहीं, तूफान नहीं, फिर यह कैसी मसान?

"नयन।"

'क्या है बापू।"

'मेरे पास आ।'

नयन पास आया।

"भूख लगी है मुन्ना?"

"ना। माँ के लिए ।"

नयन बुक्का फाड़कर रो पड़ता है। नयन सब कुछ जानता है। गाँव वालों ने उसे बहुत सी बातें बता दी थीं। ये तेरे मां बाप नहीं हैं। अधर पहले चोरी करता था। एक आषाढ़ में नहर के पानी में नाव पर बहता हुआ नयन पाया गया था। मगर नयन किसी और माँ बाप को नहीं जानता था। नहीं, मां उसे गोद में लेकर दुलार प्यार भी नहीं करती थी। उसका बचपन भी ऐसा कोई खास नहीं बीता था। बहुत कम उमर से वह बापू के घर खटने लगा था। पर घर की सबसे अच्छी कथरी माँ उसके लिए बिछाती थी। गुड़ खरीद कर उसके कटोरे में चुपके से रख जाती। अब इस घर में मा नहीं है। वह और बापू अकेले हैं। नयन ने अपनी आँखें ढक लीं।

"ठहर लैम्प जलाता हूँ।"

लैम्प जलाकर अधर ने बीडी सुलगायी। नयन से बोला, "थोडे मुरमुरे खा ले। पानी पी ले और आकर मेरे पास सो जा। मैं तो हू, तुझे कुछ सोचने की जरूरत नही।"

नयन सो गया। अधर रात भर बैठा रहा।

दूसरे दिन सवेरे मौसी भीगती-भीगती आयी। बोली, "ये थोडे से केले और चावल की खुद्दी पडी थी घर मे।"

"रख दो, मौसी।"

"महेश बाबू के घर गयी थी मैं।"

"ओह!"

"महेश बाबू ने कहा कि अधर से कहना अभी काम पर न आये। उसे छूतक लगा है।"

"ठीक है।"

"मैंने देखा तुम्हारे लिए बठे थे बाबू।"

"क्यो?"

"ऐसा बुरा हुआ शायद मदद करेंगे नयन चला जाय तो देंगे कुछ ।"

"अच्छा।"

"ऐसे चुप्पी मार कर मत बैठो अधर। जो हुआ सो हुआ। अपघात हो गया। इस कारण तीन दिन के अदर चूनी का क्रिया करम कर देना होगा।"

"अच्छी बात है।"

मौसी दुखी होकर सिर हिलाती चली गयी। बेचारा कैसा हो गया?

अधर ने दूर से आती हुई नगाडे की आवाज सुनी। बारिश की तुलना मे नगाडे की आवाज मद्धिम लग रही थी। बहुत मद्धिम। महेश सोच रहा है अधर लडके को ले कर आने ही वाला है। हमेशा मदद के लिए उसी के पास आया है। आज भी आयेगा।

बारिश रुकी तो अधर नयन को लेकर नहा आया। चावल की खुद्दी का भात पकाया और बाप-बेटे ने खाया।

अधर ने कहा "बाबू के वहा से भात लाया था। उनका कटोरा पडा है ।"

"कल ले जाऊँगा।"

"नही तुम मत जाओ। मौसी को दे आना।"

"दे कर घर आ जाऊँ?"

"हाँ मुन्ना तुम मेरे पास ही रहो।"

महेश सामत बहुत चकित हुआ। सभी स्थितियो मे जो आदमी उसकी मदद माँगने आता था, वह ऐसी हालत मे नही आया? महेश को यह अधर की मगरूरी

लग रही थी। मगर उसकी स्त्री ने चिढ कर कहा, 'बेचारा विपत का मारा है। इतना मन दुखी होगा उसका, तभी नही आया है।"

"कटोरा देने कौन आया था?"

"मौसी।"

'नयन नही आया?"

"नही।"

"मरने दो साला को।"

श्मशानवासी साधू इन दिनो सब समय सातवें आसमान पर रहता है। कौन सी बात किसको चोट पहुँचा जायगी, इसकी परवाह नही करता। क्योकि वह खुद को साधक और दूसरो को नाली मे बिलबिलाते हुए कीडे मानता है। उसने थोडा हँसकर महेश से कहा, 'तुम क्या उसे राजा बना देते? जितने दिन तुम्हारे घर आता रहा उतने दिन तो उसको चूसते रहे अब बडा दद हो रहा है?"

"तुम कुछ समझते ही नही।"

यह जो तुम पसो से घर भर रहे हो, इसकी जड मे कौन है? अधर ने नाव पकडी बच्चे को घर लाया मरे पास विधान पूछने आया तुम भूल सकते हो, मगर मैं नही भूला।"

मनोहर डोम न अट्टहास करते हुए कहा "साधू बाबा तुमने ही भला क्या कर दिया उसके लिए? मा को कपडो का चढावा पडता है तुम सब फिर दुकानो मे बिकने के लिए झोक देते हो। एक कपडा कभी उसे भी दिया होता?"

"अबे गधे, साधू तो सिफ लेता है, देने का काम गहस्थो का है।

"अरे छोडिए गरीब को कोई नही देता। अधर बेरा के पास एक तोला भी दिमाग नही है। होता तो सनातन बेरा के पास क्व का गया होता।"

"क्यो? उसके पास क्यो जाता?" महेश गेहुअन की तरह फुफकार उठा।

"तुम्हारे घर जसे पैसो की टाल लग गयी, वैसे ही उसके घर भी लग जाती।'

'और तुम माने तो सिफ बकर बकर करोगे। तुम भी खसी का मूडा चबा रहे हो उसी की बदौलत। तुम क्या एक बार जाकर उसका खोज खबर नही ले सकते थे। घर म नही घुस सकते थे, तो क्या दरवाजे पर से हाक लगा कर भी नही पूछ सकते थ?"

मनोहर ने गम्भीर होकर उत्तर दिया, "उसके घर छतक लगा है। इसलिए जैसे उसके लिए किसी के घर जाना मना है वैसे ही श्मशान का डोम भला क्या करने जायगा? जब तक आदमी जिन्दा है तब तक न मनोहर का उससे कोई वास्ता है न उसका मनोहर से। हाँ, मरने पर और बात है।"

इन सब बातो मे महेश बडा कुठित हो रहा था। भाद्र काली की पूजा हुई।

दुकानों मे बडी रौनक थी। दारोगा जी, बी० डी० ओ० साहेब, दो स्थानीय नेता, गोपालगज के एक दो व्यवसायी सभी के आतिथ्य का भार उसी पर था। एक व्यवसायी तो खूब धमधाम से प्रचुर चढावा लेकर पूजा चढाने आया था।

फिर भी महेश को लग रहा था उसे अधर और नयन की ओर अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए थी। किस तरह ? यह बात महेश नही जानता था। अभी तक वह अपने को बडा दयालु और विवेकवान मान कर चल रहा था। कुछ देर वह खुद से प्रश्न-उत्तर करता रहा।

"मैं न होता तो एक चोर को भला कोई काम देता ?'

"मगर उस घटना के बाद तो अधर ने कभी चोरी नही की।"

"बाप बेटे दोनो को काम दे रखा है मैंने।"

' हाँ, एक आदमी का भात देकर दो का काम करा रहे हो।'

"घर की मरम्मत करने के लिए बास और फूस दिये ।"

"उसका भी दाम लगाकर खाते मे लिख रखा है मुफ्त दिया है क्या ?"

"चूनी मर गयी तो हस्पताल ले जाने का फायदा नही था, इसीलिए गाडी नहीं दी मैंने, वैसे ।'

" दे ही देते तो क्या फर्क पड जाता।

महेश के लिए यह जानकारी भी नयी है। अपने आप से बातें करना, खुद ही प्रश्न करना और खुद ही उत्तर देना, उसके लिए एक नया अनुभव था। वह बहुत थक गया। सोच विचार करने की आदत ही नही थी। कुछ सोचना शुरू करते ही वह बुरी तरह थकान महसूस करता था। चूंकि वह प्राचीन सस्कारो से बधा हो रहा था, उसे विश्वास था कि किसी न किसी तरह नयन और अधर उसके कानी तल्ला के साम्राज्य के निर्माता हैं।

इस तरह की चिंता एकदम आधारहीन है, यह बात कभी उसके मन मे नही आयी। उसे हमेशा लगता था कि सनातन बेरा नयन और अधर को सामने रख कर उसे कभी न कभी धोखा देगा।

"वह साला आ कर एक बार कहता क्या नही ? मैं उसके घर की जमीन उसके नाम कर दूगा।" उसने बुदबुदा कर कहा।

इसके बाद ही लगा वह कितना महान हो चुका है। फिर वह बुदबुदाया, "देखता हूँ, घर मे कितना काम है ? जितने आदमी हैं उतने बिछौने, उतनी मसहरियाँ।"

सनातन बेरा ने भी ये बातें इस कान से उस कान तक आते-आते सुनी। उसने पचायत के एक सदस्य से कहा, ' देवता का प्रसाद है या कुलच्छनी—यह सब मैं नहीं जानता। मैं तो एक बात जानता हू कि वह भी आदमी है। पर जो महेश सामने छडी घुमाता हुआ शान से व्यायाम करता घूम रहा है एक आदमी के भात

पर दो दो लोगों से खटनी करा रहा है, इसे बरदाश्त करना कठिन है। मेरे गाँव का न सही, अचल तो एक ही है। तुम कहोगे बड़ा आदमी है, पर देवता को भुना कर पैसा कमाना क्या भला काम है ?"

"नहीं, अच्छा काम नहीं है" पचायत का सदस्य स्वीकार करता है। 'कश्मीर नाम का एक देश है, जानते हैं।'

"अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा साला गया था अभी।

' वहाँ टूरिस (टूरिस्ट) जाते हैं तो सरकार को आमदनी होती है।"

"महेश की चर्चा मे कश्मीर कहाँ से आ गया भला ?"

"काली तल्ला मे आदमी आते हैं, इसीलिए गाँव की आर्थिक स्थिति अच्छी हो रही है। मगर तुमसे यह सब कहना बेकार है। तुम अपनी अथव्यवस्था के अलावा तो कुछ समझते हो नही ?"

"क्या कहा ? मेरी अरथवेओस्था ? देखो गाली मत दो। अरथवेओस्था का क्या मतलब ? यह सब नही समझता, इसीलिए उल्लू बना रहे हो ?"

'अच्छा ! तो अथव्यवस्था को गाली मानते हो तुम ?' पचायत का सदस्य हँसा।

"और नहीं तो क्या ? यह सब लंबी चौड़ी बात सुननी होगी तो स्कूल के सर लोगों का बुला मूगा। तुम क्या चीज हो ? मुझ पता नही है क्या ? तुम तो नवें दर्जे तक भी नहीं पहुँच पाय थे। तुम लोगों की तरह मैं रूखी बातें पकड़ा कर आदमी को विदा नही करता। अधर को आने दो, बेटे के साथ। उन्हें खाना-कपड़ा मैं दूगा। मेरा नाम सनातन बेरा है, समझे ?"

अधर को इन बातों का पता भी न चला। दो दिनो तक वह चुपचाप घर मे बैठा सोचता रहा। तीसरे दिन खूब तड़के ही उसने नयन को ठेल कर सोते से जगाया।'

"चल, उठ, बेटा नयन।"

"कहाँ चलना है बापू ?'

"चल यहाँ से चलते हैं। स्टेशन तक पैदल चलेंगे, फिर गाड़ी पर चढ़ कर कहीं चले जायेंगे। और कहीं नही तो कलकत्ता चलेंगे।

"माँ का किरिया-करम नहीं करोगे ?"

"अरे ! दुर बुद्धू। उसकी देह गगा माता को समरपन हो गयी। वह कोई पापिन थी कि पूजा-ऊजा करना होगा ?'

नयन ने मान लिया। अधर की बात मानना उसका बचपन का अभ्यास है।

"ले यह कथरी उठा अपने कपड़े बाँध ले गठरी म वह लफ (लप) ले ले चल निकल।"

रात म काली पूजा है। ताशा बजाने वाले भोर से ही प्रक्टिस कर रहे हैं।

ढाक ढमाढम ढाकुर ढुकुर।अधर और नयन पाँव बढाते हैं स्टेशन की ओर। अधर कोमल गले मे कहता है, "बाढ म घर दुआर डूब जाता है तो क्या लोग घर छोड कर दूसरी जगह नही चले जाते ?"

"हाँ जाते तो हैं।"

"तो समझ ले हम भी वही कर रहे हैं।"

चलते चलते अधर को लगता है वह गुजारा कर लेगा। कोई परेशानी नही होगी। कितने लोग है कलकत्ता मे ? कुछ न कुछ करके गुजारा कर रहे हैं सभी। हम भी कुछ न कुछ कर लगें।

"नयन जानता है, कलकत्ता बहुत बडा शहर है। तू भी तो एक बार जा चुका है छुटपन मे। मौसी तो रोज ही जाती है। वही हमार लिए कोई काम बता दे सकती हैं। वहाँ तो कूडे मे स कागज और टूटी फूटी चीजें बीन कर ही कितन ही लोग पट पाल रहे है समझा ?"

मन ही मन वह बेट से बात कर रहा है। बहुत सी बातें।

इसी तरह वे दोनो गोपालगज भी पहुँच गये। फिर आया रेलवे स्टेशन। ट्रेन खडी थी। छूटने ही वाली थी। दोना जल्दी से एक डिब्बे म सवार हो गय।

(कालेज स्ट्रीट। पूजा विशषाक। 1984)

मनौती

अनू की माँ, मनौती मान।' सदामणि ने कहा, 'सब कुछ करके तो हार गयी। अब मनौती मानना ही एक उपाय रह गया है। दस नहीं, पांच नहीं, एक ही तो बेटा है। कैसी बीमारी है मैया! कि डाक्टर भी नहीं पकड़ पा रहा है?

"मनौती मानने से बेटे की बीमारी ठीक हो जायगी?"

"मान के देख न।'

"उसके बाप को बीमारी हुई थी, तब भी मनौती मानी थी।"

'देखो मन में विश्वास न हो तो फल कहां से मिलेगा। रहने दो।"

'कौन कहता है विश्वास नहीं है। विश्वास न होता तो ऐसे अभाग के लिए कोई मनौती मानेगा?'

"यह लो। बेटा इधर बीमारी से सूख रहा है ऊपर से मरे मरदुए को कोसने बैठी है? छि! कोई मरे हुए आदमी के बारे में भला ऐसे बोलता है?

"उसके बारे में अच्छी बात तो कोई याद ही नहीं आती। हमेशा नशा भाग में मस्त रहता था। बिजली का काम जानता था पर जो कभी एक पैसा मेरे हाथ पर रखा हो उसने? बर्तन मांज कर अपना और बेटे का पेट पाला मैंने। और नहीं तो मरते समय बीमारी हालत में आकर मेरी गर्दन पर बैठ गया।"

वह सब किसे नहीं मालूम? गोलोक दास की मौत के बाद बस्ती के लोगों ने ही चंदा करके उसका दाह संस्कार और श्राद्ध किया था।

आदमी अच्छा नहीं था गोलोक दास। पैसा अच्छा कमाता था पर सब अपने उड़ाता था। पत्नी और पुत्र की देखभाल कभी नहीं की। इसीलिए

'पर मरे आदमी को गाली निकालने से इस समय क्या होगा, बेटी?" सदामणि ने तर्क दिया। 'मानती हूं तुमने बहुत किया। पर अपने पति के लिए ही तो किया। वह तो तुम्हारा कर्तव्य ही था।"

अनू की माँ ने थकी हारी आवाज में उत्तर दिया, 'हां मौसी! पर मैंने अपना कर्तव्य किया पर क्या उसका कोई कर्तव्य न था? क्या उसने अपना कर्तव्य किया? मेरे बाप ने दो भरी सोना, पांच भरी चाँदी, कपड़े, लत्ते बर्तन भांडे दे कर ही मुझे इसके घर भेजा था। सभी ।

"हम लोगो ने तो कभी तुम्हारे पास सोना चाँदी नही देखा।"

"उसके पहले ही इसका बाप वह सब लेकर ।"

"खैर ! छोडो। सामने जाग्रत देवता का वास है। लोग जो भी मनौती मान रहे हैं, सब पूरन हो रही है। तुम भी जाओ।"

"डॉक्टर ने तो अभी जवाब नही दिया है।'

"ठीक भी तो नही कर पा रहा है?"

"ठीक है। जाऊँगी मनौती मानने।"

"कितनी बार कहू ? जाओ जोडा खसी की मनौती दो। कहो, मा, तुम्हारी पूजा चढाऊँगी। खुश करूँगी।"

"पर पूजा दूगी कहाँ से ?"

"अरे बाबा। पूजा के लिए उधार मागेगी तो कोई मना करेगा क्या ?"

"उधार भी कोई कहाँ तक देगा ? लडके को सतरा और डाब भी तो नही दे पा रही हूँ।"

"विश्वास। विश्वास ही बडी चीज है। जा कर कहो, माँ, मेरे अनू को लौटा दो, तुम्हारी पूजा चढाऊँगी।"

"अच्छा ! छोन से कहूँगी।"

आजकल कोई मध्यवर्ती या दलाल न हो तो थाना, मदिर और श्मशान कही भी पहुँचाना मुश्किल है। सामने जो सडक जा रही है, उसके पहले ही मोड पर शीतला देवी का थान है। सीमट की शीतला और सीमट का ही उनका गधा। देवी और वाहन दोनो की आँखें पीतल की हैं। देवी के हाथ मे जो झाडू है वह भी पीतल की ही है। देवी टेलेक्स, नाइलान आदि कई तरह के आधुनिक कपडा की साडियाँ पहनती है। किसी भक्त न गधे के खुरा मे चाँदी की पायल पहना दी हैं। पूजा पाकर सतुष्ट होन पर या बहुत दिनों तक पूजा न पा कर देवी नाराज हो कर गधे की पीठ पर पीतल के झाडू से प्रहार करती हैं और गधा पायल झन कारता हुआ नाचा करता है। पर इस आवाज को छोन और थान के पुजारी के अलावा कोई नही सुन पाता।

किसी समय छोन मनाराम का प्रिय सवक था। उन दिनो उसका बडा रग था। कट्टा (देशी पिस्तौल) चलाने म वह सिद्धहस्त था और मनाराम के कई प्रति द्वन्द्वियो के जबडे उसके घूसो की चोट से आज भी टेढे दिखते हैं।

उभरत हुए नय दादा छोटकू एँड कम्पनी के हाथो जिस दिन मनाराम की छाती मे छेद हुआ, उसी दिन स छोन भला आदमी बन गया। इस चमत्कार के पीछे निश्चय ही छोटकू और उसके चेल ही थ।

उन्होंने एक दिन ईमानदारी स कहा था, 'छोनदा, जरा हम लागा को भी गाइडेंस दिया करिय।"

छोने ने बार-बार गहरी सांस भरते हुए कहा था, "नही रे भाई, मैं तो लाइन छोड रहा हूँ।"

' लाइन छोड देगे ? अभी ता ।"

' हा, ऐसे अच्छे दिन फिर नही आयेंगे, मालुम है, पर मन जैस वैरागी होना चाहता है ।"

"अभा स वैरागी हो जायेंगे ? '

"हा माता के पाँव पकड कर पडा रहूँगा ।'

'तुमन कठी ले ली क्या ?'

"हाँ रे ! मनादा' कितने अभागे थे ? जिसके मरने पर किसी की आँख से एक बद आँसू न बहे वह कितना अभागा होता है ? इसीलिए मैंन कठी ले ली। अगर तुम लोग चाहो तो मुझे भी मनादा की तरह।

"छि ! छि ! यह क्या कह रहे हैं आप ?

"गर्मी के दिनो मे मनादा' की पिरतौल छूकर कसम ले ली, अब इस लाइन मे नही रहूँगा।"

"ठीक है छोनेदा' । '

"तुम लोग भी माता की पूजा देना न भूलना । उस दिन मनादा' ने तो माता को प्रणाम भी नही किया था ।"

हम इस बार देवी माता के लिए यात्रा नाच करायेंगे। तुम्हारा आशीर्वाद रहेगा तो देवी और वाहन दोनो की मूर्तियां पीतल की बन जायेंगी।"

' दखना, एसा ही भाव बना रहे। बदल मत जाना ।

छाने ने कार्तिक घाट पर मना का श्राद्ध तो किया ही, फिर सभी को चकित करते हुए उसन एक और काम किया । उसने मदिर के चबूतरे पर एक सगमरमर का पत्थर लगवाया मना की याद म ।

सफेद पत्थर पर पीतल के अक्षर बिठा कर लिखा गया था, 'मनतोष राय, तुम्हे हम भूलेंगे नही ।"

पत्थर जिस दिन लगा उस दिन छोने ने बडी धूमधाम स देवी की पूजा की। लाइन के सभी लोगो ने—पके हुए दादाओ से लेकर नौसिखिए लौंडो ने—उसकी प्रशसा की। छोन ने आँसू बहात हुए कहा, 'मनादा स्वग जायेंगे सही, पर टाइम लगगा । पत्थर पर जब तक लाखो भक्तो के पाँव न पडें भला कोई स्वग कैसे जा सकता है ?'

तभी से मा शीतला और उनके भक्तो के बीच छोने एजेंट का काम करने लगा । पुजारी ने यह व्यवस्था मान ली । मानना जरूरी था क्योकि छोने के एजेंट होन पर लाइन के लडको स पूरी सुरक्षा की गारटी थी । लाइन क लडके छोने के बारे मे बहुत आदर का भाव रखन लगे थे । ' कलेजा तो देखो । गग की लडाई मे

मनाराय मारा गया। उसके मरने पर उसका क्रिया करम किया। तेरह दिन तक पानी दिया। यह आदमी तो बडा वीर निकला। इसके भीतर कही एक सयासी बैठा हुआ था।"

इसी तरह की बातें चलती रही, जिन्हें सुन कर दारोगा भी बडा प्रभावित हुआ। किसी विशेष आयोजन मे उनको निमत्रण देने गया छोने तो ज्यो ही वह द्वार पर खडा हुआ दारोगा के मुँह से निकला—"अरे ! मेरे द्वार खडा एक योगी।" छोने मुस्कराया।

उसने सिर के बाल और दाढी मूछ बढा ली थी। टरालीन की गेरुए रग की लुगी और कुर्ता पहनने लगा था। गले मे रुद्राक्ष की माला।

इसी छोने के पास अनू की माँ गयी। छोने सवेरे से ही बरगद के पेड के नीचे कुर्सी डाल कर बैठ जाता था। गोलोक दास के साथ कभी उसने तरह तरह के नशे किये थे। सभी नशाखोरी के अड्डे, जुए, के फड मनाराय के निर्देश से चलते थे। पर अब छोने ने सब नशे छोड दिये हैं। सिर्फ टैबलेट लेता है। टबलेट *आत्मा* को तुरीयावस्था में रखती है।

"तुम्हारे पास ही आयी हू।'

"कौन, गोलक की विधवा ? आओ, आओ, बेटी।"

"बडी विपदा मे हूँ, बाबा,"

पहले की तरह छोने कह कर नहीं बुलाया जा सकता। छोने अगर अपनी ही उमर की औरत को 'बेटी' कह सकता है तो उसे 'बाबा' कहे बिना गुजारा नहीं है। उस समय मदिर के चबूतरे पर बडी ही शांति और सुवास का वातावरण था। छोने ने एक सप्ताह पहले चलाये गये परिवेश प्रदूषण सप्ताह के पोस्टरो को उस इलाके मे नही लगने दिया था। कहा था, यहाँ कोई प्रदूषण नही है। कार्पोरेशन अगर प्रदूषण हटाना चाहती है तो हर इलाके म ऐसा ही एक मदिर बनवा दें। प्रदूषण अपने आप खत्म हो जाएगा।

"क्या विपदा है, बोलो।'

'मेरा बेटा बहुत बीमार है ।"

"ओह ! मनौती मानोगी ?"

"हाँ, बाबा।"

"क्या करती हो ?

'बाबू लोगो के बतन धोती हूँ।"

'लडका क्या करता है ?"

"अभी कुल बारह साल का है।'

'पढता है ?'

'कभी जाता है, कभी नही।

'अच्छा तो सुनो।"

"बोलो, बाबा।'

"जसी मनौती होगी वैसा ही करना होगा। जितनी बडी मनौती उतनी बडी पूजा। माता के दरबार म सब नियम से चलता है। नियम टूटा कि मरे।'

"तो एस मामल म क्या मनौती माननी होगी ?"

'देखो बहुत विषम परिस्थिति म फसने पर चाहे मुकदमा जीतने के लिए करो, या किरायेदार को हटान के लिए या रोग अच्छा करन क लिए एक ही नियम है।'

"क्या नियम है बाबा ?"

सुबह चार घटे और शाम चार घट छोने बहुत दिनो से बहुत ऊपर महाव्योम मे नक्षत्रो के पास रहता है। उस समय उसके लिए ठेकेदार लाल बिहारी सिंह, विलायती शराब की देशी नकल बेंचने वाले जन्मेजय बाबू, चोरी का माल खरीदने वाले पटो दत्त और अनु की मा सब बराबर हैं।

"जोडा खसी, आठ कपड पूजा, छाती चीर कर खून की पाँच बूद, बस।'

यह तो मेरे वश का नही है, बाबा।

क्यो नही है ? खसी हमसे खरीदो, माता के नाम स दुकान खुली है। कपडे भी 'शीतल समवाय भडार" से मिल जायेंगे। माता, पुजारी और मैं- तीनो ने एक कोआपरटिव शुरू किया है। समझी ?

"कितना खच होगा '

"भडार मे जाओ। कपडे मिल जायेगे।"

इतना कुछ तो मैं नही कर सकूँगी। हस्पताल म भर्ती करन क लिए ही कितनी मुश्किल हुई थी ।'

हस्पताल मे भर्ती किया है "

"डाक्टर ने कहा भर्ती कर दो।

देखो बेटी मनौती का मतलब है मन के अदर मानना। पर आजकल के आदमी तो कीचड म रहन क आदी हो गए हैं।"

' हाँ बाबा, मर घर मे भी बडी कीचड है। इसीलिए डाक्टर ने कहा बच्चे को घर म ठड लग जायगी, हस्पताल म भर्ती कर दो।

"वह कीचड नही र वह कीचड नही।' छोने गरज उठा, यह विषयभोग की कीचड है। ससारी आदमी की बुद्धि भी कीचड स सनी होती है। इसीलिए उसकी ओर स माता स पूछ लेता हू उसकी क्या मर्जी है। बच्चे की रोग मुक्ति के लिए मनौती करना चाहती हो। उसम भी मोलभाव ?'

'नही बाबा, मोलभाव नही। गरीब हूँ। बतन माँज कर पट भरती हू।

हाय र मूख ! तुम्हारे लिए सवरोग हरण पूजा देनी होगी। उसक बाद पति

को एक महीने तक 'ॐ श्री क्ष स स म ह स ' का मंत्र जपाना होगा।"

"पति नहीं, बेटा है, बाबा।"

"बेटा सही। बेटा यह मंत्र रोज सौ बार पढ़ेगा और मंत्र पढ़ कर पवित्र किया घी खायगा एक महीने तक। ' शत अष्टोत्तर जप्त्वा घृत पिवेत् मासेक पल मात्र सवरोग हरण।" यह मंत्र पढ़कर घी को पवित्र किया जायेगा। मना दा को जिसने मारा था वही हाबू ज्वर से मर रहा था। उसकी बहू ने एक महीना उसे घी खिलाया और मंत्र पढ़ाया। अब ऐसा स्वस्थ हो रहा है कि उसे देखकर पहचानना मुश्किल है। समझी?'

'देखती हूँ। कोशिश करती हूँ पैसे जोगाड़ करने की।"

"ठीक है। यह कागज लो।'

शीतला समवाय भंडार शायद दुनिया की एक मात्र दुकान है जहाँ अलौकिक देवी और लौकिक मनुष्य मिलकर कोआपरेटिव चला रहे हैं। चूंकि यह कोआपरेटिव अलौकिक पद्धति से चलता है इसलिए इसकी रजिस्ट्री नहीं हुई है। सरकारी नियम भी इस पर लागू नहीं होता। मुहल्ले के राजनैतिक युवक यह सब पसन्द नहीं करते। मगर पुराने नेता उन्हें सलाह देते हैं 'छोने को ही जब डिसिप्लिन नहीं किया जा सका, तो वह तो शीतला देवी है! उसने राजनैतिक दल को छोड़ रखा है, यही यथेष्ट है।'

"यह भी तो अपसंस्कृति है?"

"मुहल्ले में जो वीडियो सेंटर चलता है, वह क्या बन्द कर सके तुम लोग। हुँह! अपसंस्कृति!"

"ठीक है। इस पर डिसकशन चलेगा।'

उनकी आलोचना ज्यादा दूर नहीं जा सकी। वीडियो को लेकर तीन चार दल बन गये। कुछ नहीं हुआ तो तोतले पान वाले की दुकान पर जा पहुँचे और उसे डाँटा, "दुकान पर कोई अच्छी पिक्चर नहीं लगा सकते?'

शीतला समवाय भंडार के बारे में कुछ किया नहीं जा सका। क्योंकि सीमेंट की शीतला देवी के भक्त बहुत बढ़ गए थे। नेता ने कहा, 'एक तो यह स्टेशन के पास है, दूसरे इलाका भी अनपढ़ लोगों का है। यहाँ आदमी के विश्वास को लेकर कोई टीका टिप्पणी मुश्किल है। अभी कुछ दिनों से अचल थोड़ा ठंडा है। अब अगर छोने को छोड़ोगे तो वह फिर गुंडई शुरू कर देगा। वह अगर शीतला माता के साथ कोआपरेटिव चला रहा है तो चलाने दो। मरने दो वहीं पर।"

अनू की माँ शीतला समवाय भंडार पहुँची। गुलाबी पतले कागज पर छपी पर्ची उसे दी गयी। पढ़ना तो जानती न थी। पर्ची आँचल में बाँध ली उसने। किससे पढ़ाये?

तीसरे पहर से पहले तो हस्पताल नहीं ही पहुँच सकेगी। वह तो सभी बाबू

की दया थी कि बांगड हस्पताल म बेटे की भर्ती हो गयी। एक बार अपने मालिक के वहाँ भी जायेगी। पुरान मालिक फिर भी दयालु हैं। चालीस रुपये माहवार म दिन मे तीन बार फेरा लगान वाली नौकरानी कहाँ मिलेगी ? भाभी शायद पर्ची पढकर बता दें।

सदामणि न कहा, "पर्ची मिल गयी न। बस, अब सब चिंता शीतला माई पर छोड निश्चित हो जा।'

"क्या करूँ, मेरे तो हाथ-पाँव काम नही कर रह हैं।"

"सिर पर थोडा तेल रख ले। रसोई नही बनायगी ?'

अनू हस्पताल से आ जाय तभी चूल्हा जलाऊँगी।'

"अच्छा, ठहर। नहा ले। कुछ मुह मे डाल।'

अनू की माँ ने स्नान किया। दो मुट्ठी चबेना खाकर लोटा भर पानी पिया। सोचती रही। सवरोगहरण पूजा क्या है ? पहले पूजा, फिर मनौती। थोडा सा घी खाकर क्या रोग दूर हो जायेगा ?

कौन जप करेगा ? कौन घी खायेगा ? बुखार की दवा तो खा रहा था, पर बुखार उतरना ही नही चाहता। डॉक्टर कहता है—सारे लक्षण मलेरिया के हैं, फिर भी दवा काम नहीं कर रही है।

फिर नया डॉक्टर आया। नये डॉक्टर ने पूछा, "यह दवा कितने दिनो से खा रहा है ?"

"एक सप्ताह से।"

खून इक्जामिन कराया था ? ओह ! नही कराया न ? अब इस दवा पर दूसरी दवा तो काम भी नही करेगी। खैर, देखता हूँ।'

नये डाक्टर ने दूसरी दवा लिख दी। फिर चारो ओर देखकर टिप्पणी की, "इस कमरे मे रोगी को रखना ठीक नही है।'

"डाक्टर साहेब, नीचे घास फूस है। ऊपर से बिछावन ।'

'पूरे कमरे म कीचड है।"

हाँ, वह तो है। डाक्टर साहेब, बच्चा ठीक हो जायेगा न ?

"देखो, मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ।'

नयी दवा, सब कीमती कप्सूल। दो दिन तक खिलायी गयी। फिर भी कोई फक नही पडा। दूसरे दिन भोर म अनू न कहा, वह पाखाना जायेगा। अनू की माँ पाखाना ले जाने के लिए उठाने लगी कि लडका चीख उठा, ' माँ, मेरा सिर फटा जा रहा है। फिर जो गिरा तो आँखें नही खोली।

नये डाक्टर ने तुरत हस्पताल ले जाने की सिफारिश की। तभी पाखाना हो गया। नये डाक्टर ने दखकर कहा, मलेना स्टाट हो गया। जल्दी हस्पताल ले जाओ।

उसके बाद जो हुआ वह अनू की माँ के लिए एक दुःस्वप्न जैसा था। सदामणि का किरायेदार मोनी आदमी भला है, भले ही शराब गाँजा पीना खाता है। वह दौड़ा शशी बाबू के पास गया। शशी बाबू का भाजा उसी हस्पताल में काम करता है। मोनी ही टैक्सी ले आया। टैक्सी हस्पताल में घुसी ही थी कि अनू के मुँह से खून निकला। अनू की मा ने अस्फुट स्वर में कहा, "यह तो खून है!"

मोनी ने अनू की तरफ नहीं देखा। उसकी मा से फुसफुसाकर कहा, "ऐसे मत बोलिए, बच्चा घबरा जायेगा।"

हस्पताल। इमरजेन्सी। लाल रेडक्रॉस। काँच की अलमारियाँ। बत्ती अभी भी जल रही है। शशी बाबू का भाजा चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी है। उसकी पावर बहुत ज्यादा है। अनू को देखकर डाक्टर के मुंह से थोड़ी देर बोल नहीं फूटे। बड़ी मुश्किल से बेड देने को राजी हुआ। फिर शशी बाबू के भाजे से बोला, "रोगी को एकदम खतम करके हस्पताल लाते हो और अगर कुछ हो जाय तो डाक्टर को गाली देते हो। तीन चार दिन पहले भी तो ला सकते थे?"

"क्या हुआ इसे?"

"बताने से तुम क्या समझोगे? ठहरो, खून की जाँच करता हूँ। इसे खून भी चढ़ाना होगा।"

"बच जायेगा न?" अनू की माँ ने पूछा।

"कोशिश करता हूँ, मगर...।"

"बाबू, ये कुछ रुपये हैं, आप रख लीजिए।"

"रुपयों से क्या होगा? जाओ, बाहर जाकर बैठो। कितने दिनों से बीमार है?"

"यही, नौ दिन से।"

"ठीक है। तुम बाहर जाओ।"

अनू की माँ और मोनी बाहर आकर एक जगह बैठ गये। अनू की माँ दीवार से टिक गयी। थोड़ी देर बाद मोनी दो कप चाय ले आया। दोपहर बाद शशी बाबू का भाजा बाहर आया। बोला, "खून चढ़ रहा है। गैस भी दे रहे हैं। तुम लोग घर जाओ। चार बजे के बाद आना।"

"तुमने अनू को देखा? कैसा लग रहा था?"

"रोग बड़ा कठिन है, पर कोशिश खूब हो रही है। अभी तो ठीक है। जाओ तुम लोग। यहाँ बैठकर करोगे भी क्या?"

"जाऊँ फिर?"

"हाँ, जाओ।"

शशी बाबू के भाजे की आँखों में मोनी को कुछ और ही दीख रहा था। उसने बेहद नरम आवाज में कहा, "चलो, देरी मत करो। शाम को तो आना ही है।"

" एक डॉक्टर को बाहर जाते देखकर अनू की माँ ने सोचा, यही तो अनू को देख रहा था। क्या इससे हाल प्रश्न नही पूछा जा सकता ? अनू की माँ के कलेजे म जैस कोई हथौडा चला रहा था।

शशी बाबू का भाजा पुराना कमचारी है हस्पताल का। वह मोनी से बातें करते हुए कुछ दूर तक उनके साथ आया। बोला, "रोग बडा असाध्य है। पहले उतना मुश्किल न होता। वायरस डेंगू हो गया है। भीतर सब ।' स्वर का भर सब नीचा रखना पडता है। झट से व ट्राम-रास्त पर आ गये। चौबीस उनतीस नम्बर की ट्रामें आती हैं। उस पार बाँस, फूल मालाएँ और रस्सी वगरह की दुकानें हैं। अनू की माँ उधर नही ताकती।

घर वापिस आकर अनू की माँ कहती है "मणि, तुम्हारा उपकार कभी चुका नही पाऊँगी।"

इस बात के जवाब म मणि ने कहा, ' तीसरे पहर बुलाया है। तुम अकेली चली जाओगी ? या मुझे भी जाना होगा साथ म।"

नही, मैं चली जाऊँगी।"

'न हो सदा मौसी को साथ ले जाना। मैं थोडा काम निबटा आऊँ। बाद म आकर खबर ले जाऊँगा।

सदामणि इन कामो म हमेशा आगे रहती है। वह हमेशा दूसरो के मामल मे अपना दिमाग खटान को राजी रहती है। बस शत एक है कि वह अपनी बात मन वाये बिना छोडती नही।

दूसरे दिन हस्पताल स लौटते समय उसने अनू की माँ से कहा, चलो, मनौती मान आओ।

आँचल म पर्ची बाधे अनू की माँ पुरान मालिक के घर की तरफ भागी। सास अपनी बेटी क वहा गयी थी। पतोहू घर की मालकिन का पद सँभाल रही थी। अनू की मा की पर्ची पढकर पतोहू ने कहा, यह तो हजार रुपये की पर्ची है।

' हजार रुपये।"

'उससे भी ज्यादा होगा। अनू का हस्पताल मे भर्ती किया है ?

"हा।

"बात कर रहा है ?'

"नही, बहू।"

इस पर्ची का क्या ? पूजा तो तब होगी न, जब वह काम पूरा हो, जिसके लिय मनौती मानी गयी है ?

पता नही। शायद पहले कोई पूजा होगी। फिर जय होगा। मन्तर पढ कर घी खायगा अनू। रोग अच्छा होन पर पूजा होगी। अभी तो यह पर्ची मिली है।

"ओह। सवरोगहरण पूजा। इसमे भी तो सौ रुपये से कम क्या लगेगा।"

'बहू, तुम्हारे पाव पडती हू। इतने रुपये तो तुम्हारे हाथ की मैल है। मैं खट कर ये पैसे चुका दूगी।"

"आज नौ दस दिनो से काम पर भी नही आ रही हो। चलो, मानते हैं लडका बीमार है। पर नही नही करके भी तुम्हे काफी पैसे दे चुकी हू।"

"बहू इस बार और काम चला दो। मैं क्या बेकार मे डाक्टर बुलाने गयी ? इतने दिन बेकार गवा दिये। तभी अगर लडके को ले जाती और पूजा कराती तो अब तक तो ।"

' लडका बीमार है। हस्पताल म भर्ती है। हस्पताल वाले घी क्यो खिलाने देंगे भला ? हाथ मे टका ैसा भी नही है। दूसरो की बात पर नाचने की जरूरत नही है।"

"हस्पताल से न हो घर ही उठा लाऊँ ?'

"यह भी कोई बात हुई।"

"बहू, इस बार, बस एक बार और मेरी नैया ।"

बहूरानी के पाव पकडकर रोती रही अनू की मा। उसके जैसी अभागिन कौन होगी ? अनू के बाप ने जीवन भर कोई मदद नहीं की। गोद का बच्चा लिए खटती खाती रही। जीवन भर देवी देवता को याद करने का वक्त ही कहाँ मिला ? सभी कहते हैं इससे बहुत पाप हुआ है। अब मन कहता है माँ शीतला ही सहाय होगी तभी काम बनेगा। इतना किये बिना मन नही मान रहा।

"बहू जी तुम भी बाल बच्चो वाली हो। सतान पर कोई आपद विपद आये तो मा का मन तो हजार कोने भागता ही है।"

घर की मालकिन अभी जवान है। उमर तीस से ज्यादा नही होगी। अभी तक दो बार ही उसकी सतान पर आपद विपद आयी है। लडके को अंग्रेजी मीडियम स्कूल मे भर्ती न करा पाने की विपद और लडकी का स्कूल बस म जगह न दिला पाने की विपद। पर दोना ही विपदाओ से वह पार उतर गयी थी। इन दानो सकटो से निस्तार पाने के लिये ही काफ़ी दौड भाग करनी पडी थी।

वह रानी ने कभी अशिक्षिता की देवी शीतला पर विश्वास नहीं किया। बहू रानी की माँ और सास दोना ही एक अतर्राष्ट्रीय ख्याति के महापुरुष की भक्त हैं। वीडियो पर उन महापुरुष की दिनचया अमेरिका की पृष्ठभूमि म देखी जा सकती है।

उनका सब कुछ इतना सुदर अभिजात और आधुनिक है।

और यह शीतला ? खसी की बलि, कांस का घटा, असभ्य बबरो की देवी और किन रहेंगे ? धम की पहली शत है निमलता और स्वच्छता।

बहूरानी बहुत चिढ़ गयी, साथ ही पशोपश म भी पडी रही। क्या करें

की माँ के लिए उनका दिल भी दुख रहा था। अन्त मे उन्होंने बीस का एक नोट अनू की माँ के हाथ पर रखा और कहा, "और लोगो स भी मांगो।"

अनू की माँ सिर हिलाती है।

"लडके की कुछ खबर मिली है?"

अनू की मा सिर हिलाती है।

तीसरा पहर तो होने को आया। अब हस्पताल जाये या मदिर? सिर के अदर जसे हजारा हजार फतिंगे उड रहे हो। मन कुछ जसे धुधला धुधला दिख रहा है। अनू की मा न छोने स कहा 'बेटा, अनू के नाम सकल्प करके पूजा कर दो। तुम्हारी पर्ची के मुताबिक ही पूजा दूगी।'

"अभी तो देवी सो रही हैं।"

"उन्हे जगाओ।'

अनू की माँ की आखें लाल लाल और दष्टि अस्थिर थी। वह सिर झटक-झटक कर जोर जोर से बातें कर रही थी। छोने को आश्चय हुआ। उस वक्त न दोपहर और न तीसरा पहर। दूसरी टबेलेट अभी उसने नही खायी थी। प्रभाती टबलेट का असर थोडा कम हो रहा था।

'पर्ची देखी है?'

"हाँ, पर पैसे अभी मिले नही।"

'यह कैसी बात है? पैसे के बिना पूजा ।"

'वाह! बीस रुपये लायी हू तो क्या माता नही मानेंगी? छोने, हट जाओ मेरे रास्ते से। मैं बलि दूगी। अपना सिर पटक कर देवी के चौखट पर मर जाऊगी।

अचानक छोने को लगा इसमे माता की महिमा है। जो अनू की मा, यानी गोलोक की बहू कभी ऊँची आवाज म नही बोली, वही औरत सिर पर बिना पल्ला डाले, साक्षात छोने को 'छोने कह कर बुला रही है, यह किस जोर पर? बेटे के निरोग होने के लिए एक माँ को पूजा का पसा नही जुड रहा है—इसीलिए उसे भगा दिया जाये यह बात छोने को यो भी नही जँच रही थी।

छोने कुछ पल अनू की माँ का मुह ताकता रहा फिर बोला 'जरूर मानेंगी माँ, मानेंगी क्यो नही? मन लगा कर माँ को पुकारो। बेटा श्मशान से भी लौट आयेगा।"

छोने न पुजारी को बुलाया। चारो ओर हलचल मच गयी। अनू की माँ ने बीस का आठ भांज किया हुआ नोट मूर्ति के सामने पडो थाल मे डाल दिया और लम्बी होकर लेट गयी। "अनू को अच्छा कर दो। अच्छा कर दो मेरे बेटे को माँ उसे लाकर तुम्हारे पाँवों मे डाल जाती हूँ।

इसी तरह की बातें बोलती रही अनू की माँ। फिर उसकी आवाज बुदबुदाहट में बदल गयी। पिछले कई दिनो से पेट मे एक दाना नहीं गया था। रात मे नीद

नहीं। डॉक्टर के घर। फिर दवा की दुकान। बीच बीच मे मालिकों के घर। फिर नये डाक्टर के वहा। पैदल चलते चलते शरीर थकान म टूट गया था। अनू की मा पर एक समय बेहोशी छा गयी। उसे लगा वह डूबनी जा रही है। उसी नीग बेहोशी मे उसे लगा उसने मा को जगा लिया है। देवी अपने पाँवा की पायल छम छम् बजाती हुई उसके चारो ओर नाच रही हैं। नाचती ही जा रही हैं। एक बार उसकी देह कापी और वह शिथिल हो गयी। चेतना घोर तद्रा म डूब गयी। चेतना के तिरोहित होने के पहले उसक कानो म "जय मा, जय मा' की क्षीण ध्वनि समायी। काँसे का घटा बजने की आवाज और जैसे छोने कुछ बाल रहा हो। 'हूँह ! मा की महिमा अपार है। भक्ती से मुक्ती (भक्ति से मुक्ति) मिलती है कि नहीं, आप दख जायँ जो लाग माँ पर विश्वास नही करत।' एक महिला न कहा।

ऐसी कुबेला मे भी जब ट्रेन से माल उतारा जा रहा था, दुकानदार अपनी दुकाना के शटर उठा रहे थ, सब्जी वाले सब्जी पर से बोर उतार कर पानी का छिड़काव कर रहे हैं दाइयाँ घरो मे बतन मलने निकल पडी हैं—ऐसी कुबेला मे भी मदिर मे भीड़ जमा हो गयी है। पीतल की थाल म दस पसे,चवन्नी, रुपय के सिक्को की ढेरी लग गयी है। छोने नाच-नाच कर कासे का घटा बजा रहा था। और अनू की माँ जैसे किसी शाति की गहरी नदी की लहरो पर उतर रही थी। माँ के चरणा पर अपनी सब चिन्ताएँ डाल कर मन मे इतनी शाति आती है यह बात पहले वह नही जानती थी।

इसी तरह तीसरा पहर हुआ। शाम हुई।

अनू की माँ की बेहोशी टूटती है। चेतना वापिस आती है। धीरे धीरे आँखें खाल कर वह चारों तरफ ताकती है।

इतने लोग क्यों जमा हैं ? और उससे इतनी दूर क्यो खड़े हैं ? और सभी चुप क्यों हैं ? वह उनकी तरफ देखती है तो वे आँखें क्यो हटा लेते हैं ?

बाहर घना अँधेरा है। मदिर म गैस बत्ती जल रही थी। इसका मतलब है बिजली नहीं है। कितना बजा है ?

छोने दिख नही रहा है। पुजारी भी। अनू की माँ धीरे धीरे उठ खड़ी होती है। सभी देवी की मूर्ति को एक बार दखत हैं, एक बार उस।

अँधेरे म स निकल कर सदामणि आलोकित प्रागण म आती है। अपन स्वभाव के विपरीत नरम गले से कहती है। "हाथ पकड़ो। उठो।'

"उठूँ ?'

हाँ, चलो मेरे साथ।"

'कहाँ ?"

घर चला।

पीछे मणि खड़ा है। और भी कोई-कोई।

"अनू ?"

सदामणि इस प्रश्न का उत्तर नही देती। उसे कस कर पकडती है और कहती है, मणि कैसे यहाँ आया है। तुम बेहोश थी। लो, यह शबत पी लो। हटो बच्चो, किनारे हो जाओ। हमे जाने दो।

"कहाँ चलोगी।"

'हस्पताल।' मणि कहता है।

फिर दुबारा क्षोभ स बोलता है —' बुखार स शुरू हुई बीमारी। बाद म पता नही क्या कहा ? क्या कहा डाक्टर न।"

हेमोरेजिक डेंगू कहा था शायद ।" शशी बाबू क भाजे न कहा, ' भीतर की नसें फट गयी थी खून ही खून । ' मैं तो बार-बार उनके पास जाता रहा। सिर के अदर छाती म, पेट म—सभी जगह जिसे हैमरेज कहत हैं वही हुआ। डाक्टर ताज्जुब कर रहे थे कि इतना झेला कैसे लडक ने '

' रहने दो।" मणि ने कहा।

अनू की मा न फुसफुसाते हुए पूछा, "तो फिर अनू कब ?"

' बहुत देर हुई ।" सदामणि ने कहा धीरे स।

अनू की माँ की आखो क सामने सारे चेहरे, गस बत्ती मूर्ति की अपलक आँखें—सब कुछ चक्कर खान लगा। सब कुछ जसे हिल डुल रहा है। टूट रहा है टुकडे टुकडे फिर जुडकर स्थिर हो रहा है फिर छिन्न भिन्न होकर छितरा रहा है।

क्रमश फिर सब कुछ स्पष्ट हो गया, स्थिर हो गया। अनू की माँ की समझ मे सब कुछ आने लगा। इतनी देर बाद उसके दिमाग ने फिर काम करना शुरू कर दिया था।

कही से गजब की ताकत उसे मिल रही थी। खुद को सभाल कर उसने सदामणि के आलिगन से मुक्त कर लिया। तीखी और ममभेदी चीख स उसने वातावरण की गरिमा को टुकडे टुकडे कर दिया।

मगर यह क्या ? उसके मुह से पुत्रशोक का एक भी शब्द नही निकल रहा था, निकल रहा था देवी के खिलाफ प्रतिवाद भयकर अभिशाप।

"राक्षसी ! पिशाचिनी ! यही है तेरी शक्ति ? भीख माग कर पैस लायी बलि दिया उसके बदले तून मुझे यह दिया ? तुम्हारे परा म पडी रही हस्पताल भी नही गयी। विश्वास का यह बदला दिया तूने ? नाश हो तेरा नाश हो तेरा मदिर गिर जाय ।

सभी चकित और विमूढ। य बातें तो आदमी आदमी से कहता है। भला कोइ शीतला माता, देवी देवता को ऐसा शाप देता है ? सभी किसी भयानक घटना की आशका स एक बार अनू की माँ की ओर देखत फिर देवी की मूर्ति की

ओर।

छोने का कही पता न था। एक घटा पहले ही 'इसका बेटा बच गया' कह कर खूब नाच कूद कर गया था छोने। खूब ढोल ताशा, घरी घट बजाया था उसने।

अनू की मा की चीख पुकार से देवी मदिर का गौरव मिट्टी मे मिल गया था। थोडी देर मे एक प्रौढा स्त्री भाग दौड करने लगी तो लोगो का विभ्रम टूटा। 'सब भाग्य की बात है' किसी न कहा। धीरे-धीर भक्तगण खिसकने लगे।

"चुप, चुप।" सदामणि अनू की मा के मुह पर हाथ रख कर उस चुप कराने लगी पर वह किसी तरह भी चुप होने को नही आ रही थी, इस शीतला ने मेरा रुपया खा लिया मेरा समय खाया, मेरा सब कुछ खा कर मुझे धोखा दिया। यह सब मैने अपने अनू के लिए रखा था।"

उसे लोग खीच कर ले जाने लगे। मणि ने कुछ नही कहा। उसने अनू की मा को नही रोका। वह जानता था इसके बाद रुलाई आयेगी।

अभी तो लाश ले आना है बास कफन का इतजाम करना है , मणि सोच रहा है।

"पाच घरो मे मांगना होगा ।' वह बुदबुदाता है। भीख माग कर ही अनू की मां देवी की प्रणामी के लिए पैसे ले आयी थी। आरती के थाल की तरफ देखता है मणि। बीस रुपये का तह किया नोट उसमे नही था। थाली मे चवन्नी-अठन्नी और दस बीस पैसो के सिक्को का पहाड उठा हुआ था। मगर शीतला की महिमा का पहाड रसातल मे पहुच गया था।

पुजारी ने झटपट मदिर का पट बद कर लिया।

अदर एक कोने मे बैठे छोने ने अपने माथे का पसीना पोछा, 'ओह! क्या पता था शीतला मैया ऐसा फँसायेंगी ?"

(विभाव, 1984)

कुडोनी का बेटा

"माँ का नाम ?"

"कुडोनी।"

'बेटे का नाम ?"

"जूडन।"

"लडके का बाप कहाँ है ?"

"कोई कहता है खदान म मार कर फेंक दिया। कोई कहता है गड़े नाले म।"

'तुम नही जानती कुछ ?"

"नही मेरे बाप, मैं कुछ नही जानती। तुम्हारे पाँव पडती हू—जूडन के बाप के बारे म मुझसे कुछ मत पूछो।'

"यह कसी बात ?"

"मैं नही जानती मैं कुछ नही जानती ।' कहती हुई कुडोनी जगल से बाहर आती है। सिर पर लकडिया का गट्ठर था। आँचल मे जगली आलू बधा हुआ था और हाथो म गँडासी और खर्ती ।

वह गँडासी स लकडी काटती है खुरपी से जगली आलू खोदती है। इसके अलावा जगल मे पाये जानेवाले सभी तरह की सब्जियाँ जैस सूरन, जिमीकद कुम्हडे, कुदरू, पोय, आँवले, पियाल—जब जो पाती है नोच खसोट कर लाती है। खुद खाती है, बेंचती है।

"लोध की बहू की कहानी इसके सिवा और क्या होगी ? बाला क्या हागी ?" कहती है कुडोनी, "जगल ही ता लोध को बचाता है, वही तो उसका माँ-बाप है।'

अगर पूछो 'कसे ?"

तो कुडोनी तुम्हे पकड लेगी 'सुनो सुनाती हूँ—लोध लोग वनचडी की सतान हैं। बहुत पहले लाखा साल पहले जब पूरे देश मे जगल ही जगल थे, उस समय लोध जाति के आदि पुरुष जगल म शिकार खलने जाते थे।

"उनका नाम था कालकेतु। उनकी बहू का नाम था फुल्लरा। नगर वासी राजा रोज चडी माता की पूजा करता था। चडी रोज नील गधराज फूलो की

माला पहनती थी। चडी चाहती थी कालकेतु के हाथो उसकी पूजा हो। पर कालकेतु पूजा करना जानता ही न था। वह शिकार करता रहता था। उसकी बहू फुल्लरा मास, चमडा, सीग पालतू जानवर लेकर बेचने जाती थी।

'उस दिन नगर मे बडी हलचल मची थी। राजा का माली दौडधूप करते करते परेशान हो गया। फिर खाली डोलची जमीन पर पटक कर रोने लगा, हे राजा जी नीले गधराज की महक से सारा जगल महक रहा है, पर एक भी फूल कही नही मिला। छिमा करिय, महराज।'

राजा ने कहा जो फूल ले आयगा, उसे धन-दौलत मिलेगा, जो मॉगेगा वह मिलेगा घर टूटा होगा तो नया हो जायेगा गोशाला खाली होगी तो पशुओ से भर जायगी।

'राजा की प्रजा गरीब भी हो। चारो ओर टूटे फूटे मकान थ, कितने ही गोशाले खाली मुह बाये थ, धान के गोलो म धान नही था। आदमी गिरते पडते चारो दिशाओ म दौडे। पर नीला गधराज नही मिला तो नही ही मिला। लोग पूछते 'फूल तुम कहाँ हो ?' 'जगल म है फूल का झाड, जो मुझे देखे उसी का यार', आवाज आती। पर फूल किसी को भी दिखाई न देता। उधर मन्दिर म बैठी था-चडी क्या आकुल-व्याकुल! उसने कहा, मैं हूँ वनचडी, कालकेतु वन का व्याध। मैं लूगी उसकी पूजा, वह फूल नही क्यो लाता ?'

"और कालकेतु सनसनाता हुआ जगल मे जाता है। 'अरे! आज का म हाथी नही चिंघाडता सिह नही गरजता, हिरण नही दौडता, मोर नही नाचता? तो क्या आज वन मे पशु नही है? शिकार करता तो मॉस पाता, वह मॉस बाजार मे बेचकर फुल्लरा चावल ले आती। तब मैं भात खाता।'

"पशु तो नही है। तो फिर वह जो पीले गुलाब के रग का टिड्डा है, घास मे लोट कर मुझे टुकुर टुकुर ताक रहा है—कितना विलच्छन है? चलो उस सुनहरे टिड्डे को ही पकडता हूँ।

'नहीं, नही! पहले फूल की खोज करनी चाहिए। अरे! यह देखो नीले गधराज के कितने ही फूल, गहरे हरे बन म जुगनुओ की तरह चमक रहे हैं। हवा मह मह कर रही है। फूल न होने से आज देवी की पूजा ही नही हुई। कालकेतु ने ढेर सारे फल अपनी चादर मे बॉध लिये। फिर मन्दिर की ओर दौडा।

"हे पुजारी देवता! लो, फूल लो। देवी की पूजा करो। बुलाओ राजा को। दिखाओ, कितने फूल लाया है कालकेतु। मैं व्याध हूँ, मुझ राजा क्या देगा? राजा से कहो बाजार के व्यापारियो म बोल दे कि वे कालकेतु से लाख, चाम और जडी के पत्ते, सीग, मधु मोम वगरह काफी कौडी के मोल म खरीदें। मेरे पास न गोशाला है, न गोला। महँगी चीज, औने-पौने बेचना पडता है कही मेरा द ख है।

"अरे ! अरे ! तू व्याध होकर देवी के मन्दिर मे घुस आया। सब अपवित्र कर दिया।

"पुरोहित ने पहरेदार को बुलाया। पहरेदार ने कोड़ा मार-मार कर मन्दिर से बाहर भगा दिया। दु:ख और अपमान से आहत होकर कालकेतु ने फूल फेंक दिये और वन की ओर भागा। 'देवी ! बनचडी ! तेरी पूजा के फूल ले जाकर मैं अपमानित हुआ। तेरे वन को आज उजाड़ कर दूँगा। सारे पशुओ को मार कर खत्म कर दूँगा।

"हाय ! एक भी पशु कही नही दिखा। अकेला गोधा बड़े ताज्जुब से क्रोधित कालकेतु को विटर विटर ताक रहा था। कालकेतु उसे बांध छानकर घर ले गया।

"फुल्लरा ! जा, चावल मांगकर ले आ। मैं नहाने जा रहा हू। आज गोधा का ही मांस खाऊँगा।

"फुल्लरा और कालकेतु दोनो एक साथ घर से निकल कर दो दिशाओ मे चले गये। पता नही कब लौटें।

"लौटे तो देखा गधराज की माला पहले बनचडी देवी उनके घर मे बैठी हुई थी। 'बेटा कालकेतु ! तुम व्याध नगर बसाओ। मेरा मन्दिर बनवाओ।'

"कालकेतु और फुल्लरा ने हाथ जोड़कर देवी को प्रणाम किया। यही है हमारे पूर्वजो की कहानी। कालकेतु के कारण ही आज भी लोध जाति जिंदा है।"

"समझे, जूडन ?"

"शिकार पर जाते समय गोधा को देखकर असगुन मानते हैं लोध। और दुर्गाष्टमी के दिन जो लोध गोखरू सांप मारता है वह कालकेतु के समान महावीर माना जाता है।"

ये सब बातें बुडोनी बताती हैं जूडन को। जूडन यह सब जानता है। जानता क्यो नही ? जूडन का बाप नामी जादूगर था। वह लोध जाति का हीरा था। लोधो को बुलाकर उनसे पूछता "क्या लोगों के जीवन मे कोई अच्छी बात नही है ? क्या हमारे जीवन मे सिर्फ अँधेरा है ?'

'और क्या है ?"

"तो सुनो।

"बोलो।"

खियासोल गाँव के किसी भी लोध के घर उस रात बत्ती नही जली। मिट्टी का तेल कहाँ से पावें ? मुश्किल से कुप्पी जलाने भर को मिट्टी का तेल मिलता था। टूटे फूटे घर थे उनके। वे पानी मे डूबे खेतो मे काम करते हैं।

"आओ भाई, इधर चबूतरे पर बैठो। बोलो, आज क्या खाया ?"

"हाँ खाया है। सवेरे से कई चीजें खा चुके हैं। सवेरे जगल मे पीठ पर गाड की लाठी खायी, लकड़ी बेचने गयी मेरी बहू बाबू लोगो की लाठी का हूरा खाकर

आयी है, और मेरा बेटा, जो चरवाही करता है, उसने आज बाबू के लडके से बेंत की पिटाई खायी—पिल्ले की तरह। इस तरह हम सभी के पेट ठूस कर भरे हुए हैं।"

"हाँ, भाई, हम सभी के पेट ऐसे ही भोजन से भरे हैं।"

"लोध को भला और कैसा भोजन मिलेगा। बाबू लोग ठीक ही कहते हैं—जिसने मुह चीरा है, वही पेट भी भरता है।"

"हाँ, हाँ, जिन्होंने हमे सिरजा है, उन्होंने लात घूसे, जूते, जेल की पिटाई, गाली गुप्तार जैसे पाँच प्रकार के व्यजन साथ मे भेजे हैं।"

'बाबुओं को भी जिन्होंने मुह चीरा है वे ही पेट भरते हैं, मगर उनके लिए भात, चना-लाई, मछली मास, साग-सब्जी सब देकर भेजा है।"

"इसीलिए तो कहता हूँ भाई। लोध के जीवन मे जो कुछ है उसे अच्छी तरह जानना होगा।"

"तो बताओ न।"

"जूडन का बाप कालकेतु की कथा कहता था, रागहाडी की चडी की कथा कहता था, कालरुद्र देवता की कथा कहता था। एक लोध के घर रक्षित जगन्नाथ देवता की कथा कहता था।"

लोध जाति का दुर्भाग्य कि उनका सब कुछ बाहरी लोगो ने छीन लिया। इसीलिए कालकेतु ने जिस राज्य की स्थापना की थी, वह उसके वशजो के हाथ म नही रह गया। उसकी सन्तान बनचडी के आँचल मे रह गयी।

लोध जाति का दुर्भाग्य कि जगन्नाथ को ब्राह्मण लोग उठाकर पुरी ले गये। लोध आज सबसे पीछे हैं।

कुडोनी बेटे को सुलाते समय यह सब बातें सुनाती—सोचती। सभी कहते, 'कुडोनी, तेरे आदमी लोचन दिगार की तरह ज्ञानी-गुनी लोध जाति मे नही है।"

कुडोनी को सब याद है। जब वह जगल म घुसती है और कोई आस-पास नही होता—सिर्फ कुडोनी और बिजूबन होते हैं, तब धीरे-धीरे, अनजाने गधराज की महक उसके मन की तृणभूमि को व्याप्त कर लेती। यह महक घटाओ की तरह घनी और ममतामयी होती। फिर मन के चराचर मे व्याप्त महक के बादलो मे बनचडी प्रकट होती।

एकदम लोध के घर की सुन्दरी जसी होती बनचडी। कुडोनी उसे आँखो स नही देख पाती थी, पर महसूस करती थी। देवी का रग माँजे गये ताँबे के बतन की तरह होता। रूखे बाल ऊपर को उठाकर तिरछे खोपे म सजे होते। गले मे गुजो की माला होती। कानो मे पीतल के कुडल और कमर मे डोरीहार कपडा बधा होता। देवी के दोनो पाँव धूल से सने होते।

"माँ, बनचडी माँ।

"मैं बनचडी हूँ। बोलो, क्या चाहती हो ?"

' एक बार इन्हे देखना चाहती हूँ।"

"किसे ?"

"जुडन के बाप को।"

"क्यो ?"

'मुझसे अकेले रहा नही जाता।"

'अकेली नही रह पा रही हो ?"

कुडोनी की करुण-कथा सुनकर जसे बनचडी गहरी साँसें भरती है और अन्तर्ध्यान हो जाती है। पेड पौधे सरसराने लगते हैं, पेड के पत्ते झर झर थरने लगते हैं। वन की हवा साँय साँय करने लगती है।

कुडोनी एक पेड से टिककर खडी हो जाती है। बारह साल म ब्याह, सोलह मे माँ बनी और बाइस मे विधवा हो गयी। विधवा हुए भी तीन साल बीत गय।

अभी भी उनकी बाते क्या याद आती हैं ?

पता नही किन लोगो ने उसके ब्याह मे यह गीत गाया था।

वह धीरे धीरे गुनगुनाने लगती है

हम पहाड पर जायेंगे, आलू तुगा खायेंगे,
जिसके हाथ मे खती-कुदाल, उसके सग म जायेंगे।
धरती पर मारेंगे शाबल, खोद निकालेंगे आलू,
और पेट भर कर फिर करेंगे हम उसका ब्यालू
हम पहाड पर जायेंगे, आलू तुगा खायेंगे।

इस तरह गुनगुनाती वह घर की तरफ चल पडती। बनचडी को पीछे जगल मे छोडकर वह रोज ही घर लौट आती।

"आज क्या मिला कुडोनी ?'

"तुगा पाया रे दीदी।

'बहन, बन है तो हम जिंदा हैं।"

पर वन तो खतम हो गया।

"बनचडी अब हमारी ओर नही देखती।'

"दीदी, वन गया तो बनचडी गयी। बन था तो बनचडी भी थी। बन न रहे तो बनचडी कहाँ रहगी ?'

"लोध अब क्या करेंगे ?'

कह नही सकती।

कुडोनी नही जानती। बनचडी की क्षमता पर भी क्या उसे विश्वास रह गया है ? देवी लाचन को नही बचा सकी। देवी माहात्म्य का कथाकार लोचन आज कहाँ है ? दवी का बन भी कहाँ रहा ? शाल के पेडो की हत्या कर दी गयी। इस

अपराध की कोई माफी नही। अब सारे जगल पचायतो के हैं। यूकिलिप्टस ! वनो की मिट्टी जली जा रही है। झाड-झखाड मे कन्द मूल कहा उगेगा ? कुडोनी और दूसरे लोध कहा जाये।

कुडोनी घर लौटती है। लता-पत्र, लकडी, आग की व्यवस्था करके नहाने जाती है। लोचन बरसाती गडढे मे नहाता था। पचायती पोखर उसके समय मे नहो थी। इस इलाके मे लोधो के उन्नयन के लिए हर साल, शायद ढेर से रुपये आते हैं।

लोध लोगो ने कभी उन पैसो के दशन नही किये।

जूडन के बाप हो ! लोधो ने वह पैस कभी नही देखे। सिफ बाबू लोगो ने देखे हैं।

इसके बाद पोखर की खोदाई हुई।

शायद नाटो के दिन आ रहे है ?

नयी पोखर म नहाकर कुडोनी घर लौटती है। भात पकाती है, साग पकाती है।

और नयी पोखर मे जब सितारो की परछाईं पडने लगी तब जूडन आकर उसके पास खडा हुआ।

"मा !"

'आ गया बेटा ?'

'हाँ, माँ।"

' बठ, खाना परोसती हूँ।"

दोनो ही एक थाली मे साथ साथ बैठकर खाना खाते हैं। फिर बेटे को साथ लेकर कुडोनी लौट जाती।

"बाबू ने आज भी मारा था ?"

"नही, मा।"

सुना है चरन बाबू गाँव मे नही हैं। आन पर तुझ उनके वहाँ स छुडा दूगी।"

"सच !"

"हाँ बेटा, आज क्या खाया था ?"

' क्यो ? दाल भात।"

' मछली नही पकी थी ?'

' क्यो नही ? आज पोखर म जाल डाला था। इतनी मछली निकली है कि वे खा भी नहीं पायेंगे।'

"फिर भी तुझे नही दिया ?"

मुझे कभी देते हैं जो आज दत ?

बुडोनी जूडन की देह पर हाथ फिराती है। कौन कहेगा यह दस साल का होने वाला है। अभी भी सात का सा लगता है। क्या करूँ, पेट तो भरता नही। वर्ना चरन बाबू ने तो इस बार बहुत गुल-गपाडा किया था।

"गाँव मे इसकूल है तो लोधो के लडके क्या नही जाते ? यह कैसी बात है ?'

"हाँ, यह बात तो है।"

"क्या बात ?"

"बाबू ! मेरी तरफ आँख फाडकर देखते हुए अगर तुम मुझसे पूछा भुवन ! तुम्हारे लडके क्या नही जाते ? तो मैं लाचार हो जाऊँगा।"

"क्या कह रहे हो ?"

गुलाबी आगे बढ़कर बोली "मैं बताती हूँ। साफ बात है। हमारे लडके चार साल पढने पर भी अ-आ नही सीख पाते। क्यों भेजें अपने लडको को ? लोध के बच्चो को देखते ही मासटर कहता है तू सब पढेगा तो बाबू लोगों का बेगार कौन करेगा ?"

इसके बाद सभी औरतें काँव-काँव करने लगीं। उस दिन लोधो की औरतो के अन्दर एक तरह का विद्रोह उभरा था।

"हमारे बच्चो को देखते ही बोलते हैं, चल क्यारी मे पानी चला, लकडी काट।"

"कहते हैं, तू सब नगा-लुच्चा है।'

कहते हैं करना तो चोरी ही है तो जा चोरी विद्या सीख।

'हाँ, लोधा जाति मे जो चोरी करते हैं वो तो करते ही हैं। खियासाल मे चोर कौन है ?

'हमार घर म तो भात है नही। बच्चो को बेगारी म लगा देने से कम-से-कम उनके लिए भात का सुभीता हो जाता। फिर भी बार-बार हूरा खाकर कुछ बच्चो को इसकूल भेज रहे थे। इस पर मासटर उन्हे दुरदुराये, तो बच्चे ठहरे। वे भला क्यो जाना चाहेगे।'

'इसके बाद किताब दो कापी दो। तुमने तो कहा था सब सरकार देगी ?"

"बच्चो के लिए ऊनीफारम आया था वह कहाँ बिक गया ? तुम नही जानते ?" लोग कहते है लोध चोरी करते हैं और बाबू लोग तो चोरी का नाम ही नही जानते ?

"कोई फायदा नही बात करने का। सथाल या लोध मासटर नही दे सकते ?'

लोध महिलाओ की बातो मे चरण एकदम अरदब मे आ गया मगर उसके पास अभी भी एक तुरुप की चाल थी वही उसने चली। बोला, एक बात है कहो तो कहूँ ?

"कहो न।"

"मैं क्या तुम लोगो के साथ खराब व्यवहार करता हूँ। तुम से घिन करता हूँ?"

"नही, तुम नही करते।"

"मान लो मैं ही मास्टर होकर आऊँ?"

"यहा? खियासोल मे?"

"हाँ, यहाँ।"

"तब तो ।" गुलाबी ने सभी को चुप कराकर कहा था, "तो तुम हमारे बच्चो को किताब-कापी दोगे और दोपहर को खाने को दोगे, क्यो?"

"जरूर।"

"तो फिर हमारे बच्चे जायेंगे।'

"मैं जरा शहर से लौट आऊँ।"

"तुम्हे वे लोग यह सब देंगे क्यो, तुम तो पारटी नही करते?"

वह सब मै देख लूगा।

चरन के परिवार वाले इस अचल के धनी जमीदार हैं। इसलिए सालो से उसके परिवार के कई लोग अपनी धन दौलत की रक्षा के लिए पार्टी का काम करते हैं। उसी के बल पर चरन ने यह सब व्यवस्था की है।

मगर चरन तो अभी भी नही आया। और ऐसे ही समय मे जब चरन गाँव मे नही था एक दिन कुडोनी का बेटा झूडन महापात्र बाबू के घर गोरू चराने के काम मे लग गया। महाल बाबू बहुत दिनो से कुडोनी के पीछे लगे हुए थे, कहते थे "कुडोनी, तू अपना बच्चा हमे दे दे। घर के बच्चे की तरह रखूगा। महीने मे तीन रुपय नगद, सबेरे जलपान, दोपहर मे भात, और बरस मे एक निक्कर और एक गमछा दूगा।"

'मगर चरन बाबू के आने पर वह इसकूल जायेगा, बाबू।"

"अरे पगली! चरना की बात पर जायगी तो भूखो मरेगी, मुझे क्या एक छोड दस बेगार मिल जायेंगे, मगर मैं तो सोचता हू मेरे लोचन का बेटा है, लोचन भी तो मेरे ही घर काम करता था। लोचन को तो भगवान ने उठा लिया, पर मेरा मन तो अभी भी उसके बच्चो मे लगा रहता है।'

"बाबू, उसने तो चोरी नही की थी, वह तो अपनी बुआ के घर चादाबिला गया था। जाडे का बखत था, आग जलाने की खातिर तुम्हारे खलिहान से चार ठो खर उठाया था उसने। चोरी तो नही की थी।"

"अरे भाई। चोर-चोर की आवाज मे अंधेरे मे जिसे पकडकर लोग पीट रहे हैं वह लोचन है यह मैं कैसे जानता?'

"बाबू! मैं तो उन्हें देख भी नही पायी। एक बार पुलिस उन्हें झाडग्राम ले

गयी तो फिर लौटकर वह नही आये।'

'ईश्वर की मर्जी, जो होना था सो हो गया।'

जूडन इतना छोटा है। काम कर पायेगा ?"

"कर क्यो नही पायेगा नही करेगा तो तेरा चलेगा कसे ? अब देख न, तेरी झोपडी भी तो सनातन बाबू के हाथ बेच गया है लोचन ! मगर तू चिंता मत कर, मैंने सनातन बाबू से बोल दिया है दखल मत कीजियेगा, हमारे लोग है। आपका अढाई सौ रुपया मैं भर दूगा।"

'सनातन बाबू के हाथ झोपडी बेच गये हैं वे ?"

'हा रे ! पर उसका रुपया तो समझ ले मैंने चुकता कर दिया मगर यह भी तो जो है—सो एक उपकार ही कहा जायेगा।'

ये सब बातें महापात्र बाबू बहुत ही कोमल स्वर मे कह रहे थे। लग रहा था जसे तन पर से उतरी रोगी पर मलाई बिछाकर चीनी बुरक रहे हो। मगर इस मुलायमियत और मिठास के पीछे जो कटार की नोक जैसी धमकी थी उसे कुडानी अच्छी तरह महसूस कर रही थी।

'अच्छा बाबू सोचकर बताऊगी।'

"तुझे भी तो मैंन अपने घर काम पर रखना चाहा था।"

लोध औरतें सुदर होती है। कुडोनी किसी से ज्यादा नही तो किसी से कम भी न थी। इतनी तकलीफ म भी उसकी शक्ल चाह उपजाती थी। देखकर समझना मुश्किल नही था कि पेट भर खाना और तन भर कपडा पाते ही वह देह कमल की तरह खिल जायगी। उसको अपने घर मे नौकर रखने के लिए महापात्र बाबू के प्रस्ताव के पीछे यही सभावना काम कर रही थी।

कुडोनी ने इस प्रस्ताव पर धूल फेंक दिया। जिन्होंने लोचन को, मेरे लोचन को पीट पीटकर मार डाला उनके घर नौकरी करने की बात भी उसके लिए घृणास्पद थी। उसने जब सुना था कि उन्होने लोचन को मार डाला है तो वह बेहोश होकर गिर पडी थी। इसीलिए वह अंत समय म लोचन को देख भी न पायी थी। पुलिस उसकी लाश झाडग्राम थाने ले गयी। एक लोध को मार डालने से जो हल्ला गुल्ला होता है, इस बार भी हुआ। फिर सब कुछ पूर्ववत हो गया।

लोचन की लाश की चीर फाड की गयी, फिर उसे किसी गडढे मे या झाडग्राम पेपर मिल के नाले मे दफना दिया गया। पुलिस का काम पूरा हो गया। लोचन के खाते मे पुलिस ने अंतिम रिपोट लगा दी।

क्यो न अंतिम रिपोट लगाती पुलिस। आप ही बताइये आपने कभी सुना है कि लोध को मार डालने पर कभी पुलिस ने खूनी को पकडा है ? किसी लोध का खून करके आने के बाद चिंता करने की कोई जरूरत नही है। आप आराम से बाजार जा सकते है खेत पर जा सकते है, बच्चे को गोद म बिठाकर खिला सकते

हैं अपने पडोसी से गप्प कर सकते हैं वगैरह वगैरह।

लोचन की तरह के एक जाने माने निरीह लोध का खून करने के बाद भी उसकी जवान पत्नी का अपने घर मे नौकर रखने का प्रस्ताव आप कर सकते हैं। लोध लोगो का सब कुछ बाबुओ का ही है।

किसी लोध के मरने पर उसकी माँ बहन और बीवी घर के अन्दर रोती हैं मगर बाहर निकलने पर अपने चेहरे पर से वह सारा दुख पोछ डालती है।

मगर कुडोनी की बात और है। वह आज भी लोचन के दुख को चादर की तरह ओढे हुए है।

महापात्र बाबू के घर से लौटते ही वह सनातन किसकू के वहाँ पहुँची।

"तुमने अढाई सौ रुपये मे हमारा घर कब खरीदा माँझी ?"

इस गाँव मे सनातन की जाति के सिर्फ तीन घर हैं। सनातन महापात्र बाबू के यहाँ मुनीमी करता है, उसके बाप-दादो ने कब महापात्र बाबू के बाप-दादो से कुछ रुपये उधार लिये थे, महापात्र बाबू का मुनीम होने के पहले कैसे उसे अपनी सारी जमीन से हाथ धोना पडा था, वह महापात्र बाबू का मुनीम कैसे बना— आज कुछ भी उसे याद नही।

उस समय कुडोनी की बात सुनकर मलेरिया से पीली पडी अपनी दोनो करुण और मलिन आखो को आगन्तुक के चेहरे पर गडाकर पूछा—"कौन-कौन ? जूडन की माँ ?"

"हाँ, हो माँझी।"

"क्या पूछा तुमने ?"

कुडोनी अपनी बात फिर दोहराती है।

"जूडन की माँ! खाते मे तो मैं बँटाईदार भी हूँ मगर बटाई तो कभी पाता नही। यह बात भी एक जालसाजी है। अपने नाम से खरीद नही सकता इसीलिए कागज मे दिखाता है। आदिवासी सनातन ने आदिवासी लोचन की जमीन खरीदी। असल मे वह तुम्हारे और तुम्हारे बच्चे पर कब्जा करना चाहता है। और कोई बात नही है।'

"क्या माँझी ?'

'बेटी, तुम इतना भी नही समझती ? तुम अभी जवान हो, बाबू को तुम नही जानती ?'

मुए को कटारी से काटकर टुकडा-टुकडा कर दूगी।"

बेटी, तुम तो जानती हो आजकल महापात्र बाबू का कितना जोर है।'

सब कुछ जानबूझकर भी कुडोनी ने जूडन को काम पर लगाया था। जूडन ने रोकर कहा था तुमने तो कहा था मैं पढने जाऊँगा ?'

'चरन आये तो पढ़ने।

"माँ, मैं बेगारी करने नहीं जाना चाहता।"

कुडोनी ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर मन ही मन उसने बेटे को समझाया— क्या करूं बाछा ? घर में भात होता तो क्या तुम्हें मैं उस पिचास के पास भेजती ? जगल तो रोज ही जाती हूँ, परमिट भी है, फिर भी गाट (गाड) लोग कितना हैरान करते हैं, जुरमाना कर देते हैं। तरा बाप जाते जात अगर मेरी जवानी भी लेता गया होता तो इतना आग पानी नही झेलना पडता। तुझ से ये बातें क्या कहूँ, कैसे कहूँ।

ऊपर से शात गले स कुडोनी ने कहा, 'बेटा जूडन घर मे भात नही जुडता। बाबू के यहाँ तो फिर भी तुम्हारा पेट भरेगा। चरन के आते ही तुझे छुडा दूगी।"

"बाबू लोग खाने को देंगे ?"

"कहा तो है जो खायेंगे, वही खिलायेंगे।"

इस बात से जूडन बहुत खुश हुआ। बाबू लोग तरह-तरह की चीजें खाते है और रोज ही पेटभर कर खाते हैं। वाह ! जो बाबू लोग खायेंगे जूडन भी वही खायेगा।

कुछ दिन पहले जूडन और उसके कुछ साथी पतग उडा रहे थे। जमीदार के मुनीम सनातन का बेटा किरण उनके साथ था। उन्हे प्यास लगी तो किरण उन्हें जमीदार के बाग मे ले गया। बागान मे एक हाथनल था। उसी से पानी पीते वे। सभी को प्यास लगी थी।

जमीदार के काका वही थे। उन्होने बच्चो को बाग म घुसने ही नही दिया। बोले, "ये तो हैं ही शतान और तुम लोग भी जरा ज्यादा ही सिर चढ रहे हो। हैडपप को तुम लोग छूते हो यह भी जानता हूँ। मगर मैं अपने सामने हैंडपप छूने नही दूगा। बाग मे फूलो के पौधे हैं। फूल देवता को चढाते हैं हम। मेरी आँखो के सामने लोध, सथाल पानी छूकर अपवित्र करें यह बात मेरी बर्दाश्त के बाहर है।'

जमीदार बाबू आजकल पचायत के कणधार हैं। वे छुआछूत नही मानते। यह अस्पश्यता निवारण सिफ बाहर के हाथनल तक सीमित है। घर के अदर के हाथनल पर ? बाप रे ?

इस पर कोई टिप्पणी करता है तो जमीदार बाबू कहते हैं— 'हम ठहरे रोशनी के आदमी। बाहर हमारा राज है। वहाँ हम यह सब नही मानते। पर भीतर की बात और है। वहाँ माँ का राज है। वहा मेरा कुछ वश नही।" बाबू लोग पहले आदिवासियो स छुआछत मानते थ। अब उतनी कडाई नही है, पर छुआछूत अभी भी है।

माँओ की बात महत्वपूण है। जमीदार बाबू की तीन माताएँ हैं और तीनो जीवित हैं। सबसे छोटी माँ जमीदार बाबू की ही उमर की हैं। इस इलाके मे एक

से ज्यादा ब्याह करने की प्रथा है।

जडन पूछता है, "मुझ खाना देंगे, पानी देंगे, पूछ लिया है न बाबू से ?"

"हाँ" कुडोनी कहती है।

"मगर मुझे जल्दी ही छुड़ा लाना।"

"हा।'

कुडोनी झूठ नही कह रही थी। लाचन कहता था, 'हमारा तो कुछ बना नही। लडका अगर पढ लिख ल ता मन का शाति मिलेगी। शालवनी, नारायन गज, घेबरा म तो फिर भी स्कूल चलते हैं। हमारे वेलवाडी म तो कुछ भी नही है। कोई भी नही पढता। कोई कुछ दिन स्कूल जाता भी है तो कुछ ही दिना बाद भाग लता है।"

"घर म तो खान का है नही, हम पढायेंगे कैसे ?" कुडोनी प्रतिवाद करती।

"हम-तुम खाने का इतजाम करेंगे। देख कुडोनी पढना लिखना करन म आदमी की आख खुलती है। लोध जाति तो आँखें रहत भी अधी है। नही ता हम क्या हमे शा ऐसे ही थे ?"

"क्या कभी हमारी जाति म अच्छे दिन भी थे ?"

"जरूर थे नही तो जगह जगह देवता के मदिर म हमारी जाति के लाग पुजारी कसे बन जाते ? कभी लोध जाति जरूर ही ऊपर रही होगी, वर्ना दवता का पुजारी उन्हे कैसे बनाते लोग ?'

"कब से वह जमाना खतम हुआ ?"

"यह तो मैं नही कह सकता। पढना लिखना सीखा होता तो खोज कर पाता। कमर मे इजारबद नही था, तभी स चरवाहा बन गया, फिर भतुआ (भृत्य) फिर हलवाहा। लोध क बिना बाबू लोगा का काम भी नही चलता और प्रचार करत हैं कि लोध लोग काम चोर होत है।"

'अच्छा, एक बात बताओ। क्या देश मे जितनी भी चोरियाँ होती हैं, सब हमारी बिरादरी के ही लोग करते हैं ?'

"नहीं रे, लाध तो कानी कौडी पाता है और मार खाता है। असली चोरी ता करत हैं बाबू लोग। लोधो के घर बनान के लिए उन्ह बकरियाँ दन क लिए जमीन दने के लिए कितना कितना पैसा पचायत म आता है। लोध को तो वही कानी कौडी मिलती है और बाबू लोगो के कोठा-दालान, दुकान-पाट गन खलिहान बढ़ते जात हैं।"

'तुम ठीक कहत हो ए जूडन क बाप। मौसी के गाँव जाती थी। व लोग जिस पानी म बतन-बासन धाते थ, उसम सूअर भी उतरन म घिनाता था।"

'पढायेंगे हम जूडन को, जरूर पढ़ायेंगे।'

लोचन तो रहा नहीं। शात, निरीह आदमी, हँसती हुई आँखों और बाल

घुघराले बालो वाला लोचन। उग बार झमाझम बरसते पानी म उसन कुडानी को अँकवार भर के उठा लिया था और आँगन म खूब भिगोया था। और वह आम का पेड ? जूडन आम खायगा। अभी भी पेड पर मौर नही लगता।

लोचन की मत्यु क कई महीने बाद आस-पडोस के लोग और नात रिश्तेदार सक्रिय हुए थे और सभी न सुझाव दिया था कि कुडानी अपने देवर पँचकौडी के घर बैठ जाय।

कुडोनी ने नही म सिर हिलाया था। लोचन की जगह पँचकौडी ? नही, यह नही हो सकता।

जूडन को खूब समझा-बुझाकर कुडोनी जमींदार बाबू के घर काम पर लगा आयी थी।

अब जगल जाते समय कुडोनी देखती बाबू के मवेशी लेकर जूडन उन्हें चराने जा रहा है। कभी देखती जूडन अपने बाबू के साथ हाट जा रहा है। कभी पीठ पर तरकारी का बोझा लादे उस बस के रास्ते पर जाती। बिक्री के लिए जमींदार बाबू दूर दूर के हाटो मे सब्जी तरकारी भेजता था।

देखकर कुडोनी का कलेजा फटता है। यह कोई नई बात तो न थी। सभी लोध माताएँ अपने कम उम्र बच्चो को इसी तरह खटते देखती रहती ह तो फिर कुडोनी का कलेजा क्यो मुह को आता है ?

कलेजा तो सभी माताओ का फटता है पर बच्चे को एक वक्त भात नही देना होगा, इसीलिए वे चुप लगा जाती हैं।

इसी तरह दिन बीत रहे थ कि एक दिन जमीदार बाबू ने कुडोनी को बुला भेजा।

'क्यो रे ? तुझे जडन रुपय देता है न ?'

"और किसे देगा बाबू ?'

'एक दिन देखा था लेमनचूस खा रहा था ?

मैंने दिये थे।

'अच्छा ! अच्छा ! ह हे हे मैंने सोचा कही चुराकर तो नही लाया। लोचन जरूर पर आखिर लोध हो तो है। चोरी तो उसकी हे हें हे।'

'हाँ बाबू लोध तो बिना चोरी किये चोर बिना डकैती किय डकत कहलाता है। बाबू अगर आपको शक हो तो उस छुडा दीजिए। उसका बाप भी तो बिना चोरी किये चोर ठहराया गया था। बुला दीजिए साथ ले जाती हूँ।"

अरे ! तू तो एकदम पगली है। सनातन से कह कर मैंने तेरी इतनी बडी मुसीबत रुकवा दी। उस पसे का तो कोई हिसाब भी नही किया मैंने। तेरे बेटे को भी माहवारी देता हूँ। तीन रुपया महीना ल रहा है। तू भी गौशाला म लग जाती तो दस रुपय महीने के हिसाब से तेरा कज दो साल म निबट जाता।

कुडोनी एकटक जमींदार बाबू को देखती रही। उसकी नजर से कुछ भी प्रकट नहीं हो रहा था। उसकी पुतलियों म कोई भाव नहीं है। आदिवासी, हरिजन या दूसरी किसी गरीब कौम का आदमी जब गाँव के किसी धनी मानी आदमी की तरफ देखता है तो उसकी आँखें ऐसी ही दिखती हैं। धनी मानी लोगों के लिए गरीबों के बारे म सबसे आपत्तिजनक कोई चीज है तो उसकी यह दृष्टि है जिसमे इस बात का एकदम पता नहीं चलता कि व क्या सोच रहे हैं।

"अच्छा बाबू, चलती हूँ।' थोडी देर यस ही सूनी आँखो जमींदार को देखने के बाद कहा कुडोनी ने।

कुडोनी लकडी का भारी बोझ सिर पर उठाकर चल पडी। उसको जाते देख कर जमींदार के कलेजे म आग धधक उठी। खान पीन को मिले तो इसकी देह कैसी अद्भुत हो जायगी? ऐसी सुन्दरता उसके हाथ के पास पडी बेकार नष्ट हो रही है और वह पा नहीं रहा है। यह कितना बडा अन्याय है? कैसे इसको हाथ म किया जाय?

बडी गडबड हो रही है। गाँव की ये छोटी जात की औरतें अब बाबू लोगो का भोग नहीं बनना चाहती। दो चार है तो सही पर अब काम की नहीं रही।

जमींदार बाबू को कुडोनी पर बडा गुस्सा आता है। कुडोनी का गुस्सा उतरा जूडन पर।

"गोरू छोड कर गुल्ली डडा न खेलन लग जाना। काम करने आया है या खेलन?"

"खेलता नहीं हू, बाबू।'

जमींदारनी हसकर बोली, "खेलता तो अच्छा ही था। तुम उसका मतलब नहीं समझे, काम तो जरा मरा करता है। बस बडकू के पीछे पीछे घूमता है।"

"क्या?'

"पूछता है अ' कैसे लिखू 'आ' कैसे लिखू? करेगा चोरी और चला है पढने। तो क्या आजकल बिना पढाई लिखाई के लोधा लोग चोरी भी नहीं कर पाते? क्या जमाना आ गया है?"

"ऐं, तो क्या यह विद्या का रास्ता पकड रहा है।"

"हाँ जी, लोधा का बेटा विद्यासागर बनेगा समझे?'

जमींदार बाबू न इस बात को यथष्ट गुरुत्व दिया। इसके तीन कारण थे—एक जडन अगर इनके यहाँ अँटका रहेगा तो कुडोनी भी उसके हाथ मे रहेगी। दो जडन है तो अभी बच्चा, पर लोचन की योग्य सतान है। उसका हाथ बहुत अच्छा है। यह मदान जितना बडा जो आँगन है इसे बुहार कर कैसा चमकाता है! बाग की गदगी साफ करके उसे कैसा टच करना है! तीन जूडन को ले जा कर

स्कूल मे भर्ती कराने की कुडोनी की योजना मे कही स्वाधीन भाव से काम करने का एक भाव है। यही ज़मीदार बाबू के लिए विशेष आपत्ति का विषय है।

गाँव के सभी गरीबो को लिखना पढना सिखाया जायेगा, यह सिर्फ सरकारी प्रचार है। घर मे दाना नही, तो बच्चे पढ़ेंगे कैसे ? चरवाही से ही जीवन शुरू करना होगा। फिर भी अगर कुडोनी वगैरह जूडन वगैरह को स्कूल भेजने लग जायें तो बाबू लोगो का वचस्व हिलेगा ही। वचस्व अभी भी बना हुआ है, पर अगर वह हिल गया तो सवनाश हो जायेगा। ज़मीदार क्या कभी सरकार का विरोध करता है ? अभी भी समथन करेगा। पर क्या दखल छोडा जा सकता है।

बुरी तरह चिढकर जमीदार बाबू जूडन के ऊपर दात पीसते हैं, "साला, गरीब समझ कर दया दिखायी तो मुझे ही खोलकर दिखा रहा ? 'अ' कैसा होता है ? साला, तुझे मरोड कर अ' बनाकर पेड पर टाँग दूगा। हमेशा हमारी जूठन पर पले, या हमारी चोरी करके खाया, आज बिना पढाई लिखाई किये काम नही चल रहा है साला का। अरे सालो, हर साल इस इलाके मे पन्द्रह बीस लोध काट कर फेंक दिये जाते हैं इस पर भी दिमाग ठीक नही हो रहा है।"

यह सब सुनकर जूडन ने सिर नीचा करके कहा, "हा, बाबू।' और दौड दौड कर गोबर के ढेर साफ करने लगा। मगर बाद मे उसने सनातन से पूछा, 'दादू चोरी करने पर लोधों को मारते है, यह जानता हूँ। पर बाबू कह रहे थे लिखना पढना सीखन पर भी मारेंगे ? तुम जानते हो कुछ ?"

"अरे धत ! तुझे डरा रहे थे।'

"मेरे बाप ने तो चोरी नही की थी। फिर उसे चोर कह कर मार क्यो डाला ?"

'तेरा बाप लोध था, जूडन, इसलिए—।'

जूडन चुप लगा गया। लोध होने से—लोध के घर पैदा होना इतनी बुरी बात है, जूडन पहले नही जानता था। बाप की मौत के समय उसने जाना। हालांकि तब उसकी उमर सिर्फ छह साल की थी पर वहाँ इकटठा लोगो की बातें सुनकर वह एक दिन मे ही कई साल बडा हो गया था। तीन साल हो गये फिर भी उसकी स्मति मे आज भी सबकुछ ज्यो-का त्यो सुरक्षित है।

बाप की काई खास याद नही है जूडन को। फिर भी इतना याद है कि लोहे मे बँधी एक रगी हुई लाठी उसके हाथ में थमाकर किसी ने कहा था "लडके के लिए लाया हू।'

बाप की कोई खास याद नही है। छह बरस का जूडन अब दस का होने जा रहा है। अब उसके भीतर तेज बदलाव आ रहा है। मगर गुलाबी मौसी की कलेजा फाड रुलाई अभी उसे याद है। जो लोचन इतना भला था, इतना अच्छा, वह कैसे मरा ? इसलिए कि वह लोध था ? सभी लोधो को बुला लाती हूँ। बाबू

लोग, सभी लोगों को एक साथ काटकर खतम कर दो तुम लोग और शांति से रहो। आज एक कल दस, परसों पांच—इस तरह सेपा में मारने की जरूरत नहीं। सभी को मार कर शांति से रहो।"

जूडन को नाक कर उन्होंने बाप के खून से लथपथ पांवों पर डाल दिया था। किसी ने कहा था, "अब तो बाप का मुंह देखने को नहीं मिलेगा, देख ले। तेरे हाथ की आग भी उसे नहीं मिल पायी।"

सनातन कहता, "चरन बाबू आयें तो तू पढ़ने चला जा, नहीं तो ये तुझे मार डालेंगे।"

जूडन थप्पड़ घूंसे, जूतों की मार खाता है। माँ कहती "बेटा तू जब पढ़ेगा तो तेरा सब दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा।"

"पढ़ने से दुख दूर हो जाता है?"

"तेरा बाप तो यही कहता था।"

"बाप को सब पता था?"

"सब पता था। तू भी सब जान जायगा। तेरे बाप की बातें सुनने जैसे लोग आते थे वैसे ही तेरी बातें सुनने भी आयेंगे। यह आंगन भर जायेगा।"

"तब हम एक लालटेन खरीदेंगे।"

"खरीदना, हम तो नहीं खरीद पाये।"

तब लालटेन जलेगी घर में। शायद जूडन बड़ा होकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाय तो घर भी अच्छा बन जाय। जूडन की एक दिन शादी भी होगी। पर उस अनागत पुत्रवधू के जीवन में ऐसा न हो जैसा इस गीत में है

जिसके हाथ में खंती-कुदाल,
जायेंगे हम उसी के साथ।

एक समय खंती-कुदाल और शाबल लेकर वे चलते थे। अब नहीं चलते, चलना संभव भी नहीं है।

शाबल का खोंचा मारेंगे हम,
बाहर निकालेंगे आलू-तुंगा हम।

वे दिन अब नहीं रहे। जंगल अब नहीं रहे। रहने ही नहीं दे रहे हैं। जिन जंगलों में आलू तुंगा पैदा होते थे उन शाल, आंवला, अर्जुन बेहया आदि से भरे जंगलों को वे खतम किये दे रहे हैं। फारेस्ट बाबू, ठेकेदार बाबू सब मिलकर जंगल को खत्म कर रहे हैं और चीख रहे हैं कि गांव वाले जंगल खत्म किये दे रहे हैं।

आजकल तो वन के नाम पर युकिलिप्टस हैं, जिनसे न जलावन मिलता है, न दातौन न पत्ते, न फल, न छाल—जो कुछ नहीं देते और जमीन को चूसकर खत्म किये दे रहे हैं।

अब खेती-कुदाल लिए आगे-आगे लोध और उसके पीछे उसकी बहू की बात सोचना भी बेकार है।

जूडन को बड़ा होने दो। उसके समय म सब कुछ बदल जायगा। ब्याह के समय ब्याह की रीति के अनुसार तो जूडन जरूर ही एक छान पर चढ़ेगा और भय का नाटक करते हुए कहेगा, "मैं गिर पड़ूगा और गिर पड़ा तो मर जाऊँगा।"

तब जूडन की नई बहू कहेगी, "तुम उतर आओ। मैं आलू-तुगा खोद कर लाऊँगी और तुम्हे खिलाऊँगी।"

पर वह होगी एक रीति, पर असल मे जूडन या तो नौकरी करता होगा या दुकान करेगा। उसकी बहू मुर्गी-बत्तख पालेगी और घर गृहस्थी देखेगी।

इसी तरह दिन बीत रहे थे। लाख अभाव हो तो भी कुडोनी जूडन की माहवारी पैसे टिन के डिब्बे मे रखकर मिट्टी म दबाना नही भूलती थी।

जूडन से अवश्य यह बात वह नही बताती। कहती है, "तीन तो रुपया है बेटा, सब खच हो जाता है।"

मगर वह पैसे इकट्ठा कर रही है। कुछ पसे इकट्ठा होने पर ही तो वह चीज खरीदी जा सकती है जिसे लालटेन कहते हैं। लोध लोग सचय करना नहीं जानते। मगर उसके पति लोचन ने उसे सचय करने का महत्व बताया था। कहा था, "चाहे इस पैसे हो छुपा कर रख दे। समझ ले कुछ है ही नही तेरे पास।'

इसी तरह दिन बीत रहे थे कि एक दिन भरत कोटाल ने उससे कहा "कुछ सुना कुडोनी ?

"क्या ?'

"चरन बाबू आ रहे हैं।

'मास्टर होकर ?"

' हाँ रे, मास्टर तो वह पहले ही हो गये थे। सिफ खिमासोल गाँव म आने के लिए इतजाम करने शहर गये थे।"

' तब तो बहुत अच्छा हुआ, बहुत ही अच्छा।"

एक दिन चरन आ भी गया। सिचरन पाटनाइक अपने भाजे को लाना चाहता था। मगर चरन ने कहा "वह सब भूल जाइए दादा। शेडूल ट्राइब इलाके के स्कूल मे शेडूल ट्राइब पढ़ेंगे। आप लोगो के रहते तो उनका पढना मुश्किल है।"

"ठीक कहते हो।"

"जी हाँ, ठीक तो कही रहा हूँ।'

चरन ने तडातड चारो ओर तहलका मचा दिया। अब भात कसे जुटेगा ? "बेटो को भेजो बेटी को भेजो। मैं तुम्हारे बच्चो को दिखा कर स्कूल को आठवी

तब करवा दूंगा और पचास शेडूल ट्राइब बच्चे दिखा सकू तो बोर्डिंग पास करा लूगा। लोध और सथान के घर गरीबी तो हमेशा की चीज है। पर बच्चो का जैम भी हो पढ़न को भेजो। वर्ना मेरे मुह पर कालिख पुत जायगी।"

उधर जूडन ने जमीदार बाबू कहते हैं 'पढ़ेगा जूडन ? वाह, बहुत अच्छी बात है। किसने पढ़ाने को कहा ? चरन न ? आखिर मे चरन के फदे म फँस गयी न तुम जूडन की मां ? तुम्हारे बच्चे पढ़ेंगे, नाम कमायेंगे। बेटा पचायत म चुनाव लड़ेगा, क्यो ?"

बुडोनी ने कोई जवाब नही दिया।

'मेरा हिसाब कर दो।"

"कैसा हिसाब ?"

"तुम्हारे घर का जो पैसा चुकाना था।'

"मैं तो हिसाब समझती नही। चरन बाबू को बोलूगी, आकर हिसाब कर जायेंगे।"

'चरन का हिसाब मैं नही मानता। उसके काका के साथ मेरे बड़े भाई का मुकदमा हुआ था। वह जो हिसाब करेगा उसम उलटा पलटा जरूर होगा।"

तुम कौन सा हिसाब मानोगे फिर ?"

"न हो तो तू मेरे वहाँ काम कर। हिसाब होता रहेगा।'

"क्या करना होगा ?"

"गोशाला मे काम कर।"

बुडोनी न कोई उत्तर नही दिया। वापसी म वह चरन के पास गयी। चरन घर पर नही था। गुलाबो ने कहा, "सब झूठ है। लोचन अपना घर बेचता तो हम पता न होता ? और फिर घर बेचकर जो पैसे मिले उनका उसने क्या किया ?"

"तो तुम्ही बताओ, मैं क्या करूँ ?"

'क्या करेगी ? तूने बयाना तो नही लिया ?"

"नही। वह साप की तरह ताकता है। मुझे बडा डर लगता है। बयाना लने के लिए तो बात करनी होगी। म उससे बात करने मे भी डरती हूँ।'

'ठीक है। जूडन को कल से मत भेजना।"

"यह क्या धम होगा ?'

"दुर ! जमीदार के साथ कैसा धम ? वह तो धम म नही चलता। बाघ को देख कर कीतन करो और साँप को प्रणाम तो क्या वह तुम्हें छोड़ देगा ?"

'चलो कल जाने दो। परसो स रोक लूगी। क्या हम आग गुप्तमणि मदिर जाकर पूजा कर आयें।"

गुलाबी खुश हो गयी 'ठीक है, चल। क्या है, आग म जीवन म ? आराम नही, सुख नही। खूब सबेरे चलेंगे। वे दूसील म रह म आराम करेंगे। रे

वहिन का घर है। गुप्तमणि की ठकुराइन तो हमी लोगो की देवी है। पुजारी भी लोध जाति का है। उस देवी को पूजा नही देंगे तो काम नही चलेगा।"

कुडोनी ने जूडन की कमाई के रुपये लिये और कुछ अपने पास से। तय किया कि गोपाल महतो की दुकान से बारह रुपये दे कर लालटेन ले आयगी। बाकी चार रुपये अगले हफ्ते दे देगी। लालटेन की रोशनी मे बैठकर जूडन 'अ आ इ ई' पढेगा। पैंट उसका फट गया है। पूजा के पहले गांधीराम कपडे बेचने आयगा तो उससे एक पैंट खरीद लेगी।

गुप्तमणि के थान पर कुडोनी ने जूडन के नाम पर और लोचन की आत्मा की शांति के लिए पूजा चढाया था। हाय! लोचन की सदगति तो हुई नही होगी। झाडग्राम मे चीर-फाड हुई, फिर लाश कहीं कहीं फेंक दी गयी। लोध जीवन का अभिशाप। "देखो,तुम जहा भी रहो शाति से रहो। तुम्हारा जूडन पढने जायगा। तुम कहते थे न कि लोध का बच्चा पढ़ेगा नही तो उसका भला नहीं होगा।"

पूजा दे कर और लालटेन खरीद कर वह बहुत खुश हुई। कुडोनी एक लोध की औरत और एक लोध की मां है। उसका हृदय एक अपार अरण्य है। हृदय के उस अरण्य मे आज एक नीला गंधराज खिला है। उसी गंधराज की खुशबू से हृदय शांत है।

और खियासोल मे पांव रखते ही गुलाबी की लडकी छिरु, शंकर और दूसरे बच्चे दौडे आये थे।

"मौसी, तुम कहा थी इतनी देर। जूडन को बाबू ने मार डाला।'

जूडन को ?"

कुडोनी ने लालटेन फेंक दिया। प्रसाद चारो ओर बिखर गया। आशंका से बिफरी हुई बाघिन सी वह दौड पडी। 'बाबू! तुमने मेरा मरद खा लिया, अब बेटे की जान लेगा? अच्छा! देख तू। आज तुझे कटारी से काट डालूंगी। भले फांसी चढू।"

कुडोनी जैसे हवा के भी आगे-आगे उड रही थी। चील की तरह अपने डैने फडफडाती रिरिया रही थी—"जूडन रे ए"।

जमीदार बाबू के दरवाजे पर अच्छी खासी भीड थी। गैस जल रहा था। तं फिर जूडन कहां है? जूडन नही है क्या? जूडन न। कुडोनी आ पहुंची।

भरत कोटाल, सनातन और दूसरे लोध और माझी पाडा के कितने ही लोग वहा उपस्थित थे। जूडन कहा है? भरत बहू,बताती क्यो नहीं? अरे मौसी हो, तुम्ही तो जूडन को इस धरती पर लाई थी। उसे गोद मे लेकर इस तरह गुमसुम क्यो बैठी हो? अरे मारे जूडन रे।' कुडोनी छाती पीट कर रो उठा।

"अरे चुप छोकरी, तेरा बेटा जिंदा है। चरन डाक्टर लेने गया है।

जिंदा है मेरा बेटा, जूडन जिंदा है? दो, मेरी गोद मे दो देख ता। कहाँ

लगी है।"

"यहाँ।"

"मारा क्यो ?"

'पता नही। सनातन ने जा कर बताया कि जूडन मर जायेगा तो हम सब यहाँ आय। भुवन ने चरन को उसके घर से बुलाया। हमने यहाँ आ कर देखा वह उस खवे स बँधा था। उसने शायद काँस की थाली चुराई है।"

"थाली चुरायी है इसने ?"

बेहोश बेट को गोद मे लिए उपवास से पीले कुडोनी के चेहरे पर हँसी उभरी। एक रहस्यमय हँसी।

डॉक्टर ले कर चरन आ गया। ग्रामसेवक विष्णु महतो भी दिखलाई पडे। चरन ही उसे भी खीच लाया था और बेचारा ग्रामसेवक परम पराक्रमी जमीदार के घर विरोधी दल के साथ आया है। इस बात से बेहद डरा हुआ था अन्दर ही अन्दर।

"बच्चे को नीचे सुलाओ।" डाक्टर ने कुडानी से कहा।

देख-सुन कर फिर बोला "दवा दे रहा हूँ। पर अगर एक बार केन्दूसोल ले जाते तो अच्छा था। स्वास्थ्य केन्द्र मे घाव की सिलाई हो जायेगी और इजेक्शन वगैरह भी लग जायगा।"

चरन के पास उस वक्त जनता की ताकत थी। और इस घटना का केन्द्र मे रखकर मजबूती से अपनी भूमिका निभान पर उसके पाँवो के नीचे की जमीन और ठोस होगी यह वह जानता है। इसके अलावा वह यहाँ अपने भीतर की पुकार पर आया है।

बलगाडी तैयार कराइए।" उसने जमीदार बाबू से कहा।

जमीदार ने अपने लडके से कहा, "जा, बलगाडी नाँध ला।'

कुडोनी ने चरन की ओर देखा, ' जूडन बच जायेगा न ?"

'हाँ, हाँ, बच जायेगा।'

कुडोनी के चेहरे पर फिर एक बार कटारी की धार जसी मुसकान चमका। वह एक पल बाद अपन-आप बोली, "जूडन का बाप आग जलान क लिए खर ले रहा था तो उसे बाबू न मरवा दिया।

सभी जानत हैं।" किसी ने गवाही दी।

"उसका काई नियाव नही है ?

"अरे ! अब जो बीत गयी सो बात गयी।" किसी और ने कहा।

बाबू कहता है तुझ काम करना होगा। क्यो बाबू ? बोलत ये न ? जडन स काम लोग और वह नही करेगा ता मुझ करना होगा।'

जमीदार बाबू निरुत्तर हैं।

क्यों करना होगा मुझे काम ? शायद जूड़न के बाप ने सनातन के हाथ अपना घर बेंच कर अढाई सौ रुपये लिए थे। बाबू दया के अवतार हैं। इन्होंने सनातन का वह रुपये चुका दिए थे। इसी के बदले में मुझे उनके गोहाल में काम करना होगा। यही न ?'

इस पर सभी आपस में उत्तेजित होकर बक-बक करने लगते हैं। ज़मींदार बाबू कुछ कहना चाहते हैं। मगर कुड़ोनी बीच में ही चीख कर कहती है, "जूड़न के बाप को अढाई सौ रुपये मिले और मुझे इसका पता ही न चला। सनातन से पूछा मैंने। उसने बताया कि बाबू ने उसके नाम से बर्गा लिखवाया है। आदिवासी लोध का घर ज़मींदार नहीं खरीद सकता, इसलिए उसके नाम से लिखवाया। जिसने बेचा वह जानता नहीं, जिसने खरीदा उसे भी पता नहीं। तो फिर तुम लोग समझो, इसमें क्या खेल है।"

विष्णु महतो ने कहा 'अगर कर्जा लिया हो तो ऐसा हो सकता है।"

क्यों विष्णु बाबू, तुम भी किस खवे का सहारा ले रहे हो ? खैर मुझे तो इस मामले को आखिर तक ले जाना है।" चरन ने कहा।

चरन के मुह पर विजय की हँसी खेल रही थी।

सभी ज़मींदार बाबू की तरफ देख रहे हैं। बाबू थोडी देर उनकी ओर देखता है *फिर मुड़ कर घर के अंदर चला जाता है।*

बैलगाडी आती है। जूड़न को उसमें सुलाया जाता है। कुड़ोनी बेटे के पास बैठ जाती है। गुलाबी उसके हाथ में लालटेन पकडा देती है। कुड़ोनी लालटेन को जूड़न के चेहरे के पास रखती है। सोचती है "जब जूड़न को होश आयेगा तो उसे लालटेन दिखाऊँगी।'

बैलगाडी चू चरर करती धीरे धीरे चल रही है। भात वगैरह कई लोग पीछे पीछे चलते हैं। सड़क आने पर बैलगाडी को ठेल कर सड़क पर चढ़ाना होगा। सड़क काफी ऊँचाई पर है।

कुड़ोनी जूड़न को गोद में चिपकाये बैठी है।

पता नहीं उसके चारो ओर यह कैसी गमक है ?

नीले गंधराज की ?

तो फिर दूसरों को यह महक क्यों नहीं मिल रही है ?

क्रमशः कुड़ोनी का मन शांत होता है।

बैलगाडी चू चरर करती चली जा रही है।

(शारदीय अनुष्टुप, 1983)

अर्जुन

अगहन बीतने वाला था, पूस अभी शुरू नहीं हुआ था और अभी भी उतनी ठड नहीं पडी थी न धूप म वैसी नरमी आयी थी। विशाल महतो के धान के खेत मे कटिया चल रही थी। केतु शबर ने भी दिन भर खेत म धान काटा था। शाम को धुधलके म बैठा सोच रहा था थोडी कच्ची कही से मिल जाती तो कितना मजा आता। वह जानता है मिलेगी नही पर मोचन म क्या लगता है?

उसकी बहू मरनी घर पर नही है। पति जब जेल हाजत मे होता है तो वह धान काटने मान बाजार जाती है। धान काटने के अलावा, मिट्टी काटकर जगल म घूमकर शिकार करके वह गुजारा करती है जब पति जेल म होता है। जगल कटवाता है राम हालदार और जेल काटते हैं केतु वगरह। केतु क्या करे। उसे शाम को चार रुपये चाहिए ही चाहिए कहो तो पेड काटूँ, कहो तो आदमी काट दूँ" वह राम हालदार से कहता है।

सचमुच चार रुपये के बदल वह आदमी का गला काट देगा या नही, इसका पता लगाने की किसी न अभी तक कोशिश नही की। बस यह तो बात की तुक के लिए कहता है वह। लोग समझना नही चाहते।

सरकारी जगल काटने के अपराध मे केतु जेल जाता है।

राम हालदार दूसरे कतुओ की तलाश म घूमता है।

केतु ज्यादा सोच नही पाता। पुरलिया के शबर परिवार म जन्म लेने के बाद जगल म हाथ लगाना ही होगा, जेल भी जाना होगा, यह एक नियम है।

कतु जेल जायगा तो मरनी काम ढूढने बाहर जायेगी ही—यह भी वसा ही नियम है।

ऐस नियमित जीवन मे भी सूनी खोपडी का धुधलापन काटने को दौडता है। टूटता हुआ शरीर कच्ची की माँग करता है – थोडा नशा थोडा विस्मरण।

ऐस मे आ पहुँचा विशाल महतो, बोला केतु रे, तेरे स बात करनी है।"

"भोट की बात बाबू?"

अर नही रे, यह ता मै जिसे कहूँगा उस ही देगा, है कि नही?

हाँ बाबू।

'राम हालदार क्या कह रहा था ?"

'वही, जो तुम कह रहे हो।"

'तूने क्या कहा।"

वही जो तुमने कहा है।"

'यह क्या रे।"

'क्या करूँ बाबू, बुद्धि नही है न हमारी खोपडी म।

खर, वोट की बात रहन दे। एक काम की बात है, सुन, तो सुनाऊँ।"

राम हालदार और विशाल महतो दो अलग-अलग झडा के अलबरदार हो सकते हैं, मगर केतु की नजर म दोना ही एक समान हैं। उनकी नजर मे वह बुद्धू बना रहता है और उनकी बातो क जवाब बेवकूफ की तरह देता है। उसे इन दोनो की जरूरत है। इन दोनों देवताओं को सतुष्ट रखे बिना उस इलाके म टिकना मुश्किल है।

वे दोना भी जानते हैं कि काम कराने के लिए शबर हैं ही। जेल काटने का उनका पुराना रिकाड है। झडा बाबुओ की बात को इनकार करने की हिम्मत कहाँ है उनमे।

कतु को जिज्ञासा हाती है। वोट पडने वाले हैं। चुनाव सामने हैं। विशाल बाबू नाचते फिर रहे हैं यहाँ-वहाँ सभाए, मीटिंगें करते हुये। फिर भी वोट की बात नही है ता कोई बुरा काम ही होगा।

"क्या काम है बाबू ?'

'तिराहे पर का अजुन का पेड काटना है।'

'किसलिए, बाबू ?'

'बस काटना है।'

बाबू, अभी-अभी ता जेल स आया हूँ ?"

तुझे फिर जेल भिजवाना चाहूँ तो तू रोक लेगा ?"

'नही बाबू।"

यह क्या राम हालदार क कहन पर जगल काटना है कि जेल जाना पडेगा ? मेर कहने पर तिराहे पर का पड काटने जा रहा है। किसकी मजाल है तुझे जेल भेजे ?

केतु के दिमाग म कुहासा छटने लगता है। सच ही तो है, उसने इस पर विचार नही किया है। राम हालदार के कहन पर जगल काटो तो जेल जाना पडता है। मगर विशाल बाबू तो इन दिनो हाकिम हुक्काम हैं, वे ही देश का चला रहे हैं। इसीलिए विशाल बाबू के कहने पर सरकारी सडक के किनारे क विशाल छायादार पड काटकर गिरा देने पर भी जेल हाजत नही होगी।

अचानक उसने एक बात कही, बाबू, चुनाव होन वाला है इसलिए इस बार

राम हालदार का एक नो पड का कारोबार नही है। वन बचाओं का का इश्तहार पहले लगवाता है, फिर सरकारी जगल पर डाका डालता है, गर कानूनी तौर पर जगल के जगल उजाड कर देता है। जो हाथ इन जगलों को काटने के लिय टाँगी उठात हैं, उनम किसी म टाच, तो किसी मे चमाचम रेडियो, तो किसी मे साइकिल या ग्रामोफोन पकडा देता है। हर चीज के साथ शराब की बोतल जरूर होती है। दोष करे या निर्दोष हो शबरो पर फारेस्ट आफिसर और पुलिस इसपक्टर कितने ही केस चलाते रहते हैं। एस लोगो को इतने पैस कौन देता है। मगर विशाल बाबू दे रहा है।

"अच्छा! मैं अब शहर जा रहा हूँ, मीटिंग करनी है। गाँव म क्या है? न दीवारें हैं, न बिना दीवारो क चुनाव प्रचार किया जा सकता है। इश्तहार ले आऊँगा।'

"बाबू थोडे इश्तहार मुझे देना।"

"क्या करेगा? तेरे पास दीवार कहाँ है?"

"जमीन पर बिछाऊँगा। बिछाने से ठड नही लगती।"

"दूगा, दूगा। तू दो चार दिन मे अन्दर पेड काट दे, मैं शहर स वापस आकर उठवा लूगा।"

"अर्जुन का पेड।"

"हाँ रे, वही।"

बदर टोपी और स्वेटर मे शोभित विशाल का शरीर कुहासे म छिप जाता है। केतु बेहद परेशान और चिंतित होकर वनमाली, दिगा और पीताम्बर के पास जाता है। चूकि वह शराब भी साथ मे ले गया था, हर जगह उसकी बहुत आव भगत हुई। सभी जेल काटकर लौटे थे। जो टाँगी हाथ म लेगा, जेल वही जायगा नियम ही यही है। राम हालदार की बाकुडा और पुरुलिया मे कोठी उठेगी—यह भी नियम है। नियम के राज मे नियम के खिलाफ चलना मुश्किल है। इनके बीच दिगा की इज्जत थोडी ज्यादा है। क्योकि उँगली पर गिनकर चार दिन वह पढने के लिए स्कूल गया था। दिगा की गभवती बहू ने मुरमुरे और मिर्चे लाकर दी। दिगा ने सारी बात सुनकर सिफ इतना कहा, 'सोचूगा।"

उपरोक्त चारो शबर शराब के नशे में धुत होकर सोच रहे हैं। व सोच रहे है —ब्याह मे या किसी पव त्योहार पर हम वहाँ जाकर ढोल ताशा बजाते हैं, किसी बच्चे का मुडन हो तो उसके केश उसी पेड के नीचे गाडते है। दिगा का बाप कहता था— यह तो न्वाई का पड है। पीताबर ने फुसफुसा कर कहा, बाँधना जागरण के दिन सथाल उसी पेड के नीचे गाड नचाने जाते हैं।'

पेड काटने पर जेल न काटने पर भी जेल वन विभाग की जमीन पर बसा है समद्ध बानडीही गाँव खेडिया शबर का कोई अधिकार नही। काफी देर बाद

दिगा ने कहा, "तो हम अकेले क्यों मरें ? दूसरों को भी बता दूंगा। झूठे केस मे फँसेगा तो शबर ही। मगर इस पेड़ पर सभी की भक्ति है। है कि नहीं ?"

अर्जुन का पेड़ तिराहे पर पता नहीं कब से खड़ा है, लगता है अनादि-काल से खड़ा है अनत काल तक रहेगा। कोई इस तरफ ध्यान नहीं देता। मगर अब जैसे सभी को लगता है उसके काट जाने की बात कलेजे मे गड रही है। वन विभाग की ज़मीन का मतलब यह नहीं है कि वहाँ वन है बल्कि उसका मतलब है—बेकार पड़ी ज़मीन। शबर लोग वहाँ जा बसे। तब वहाँ जगल था। पर जगल चला गया। पता नहीं किन लोगों ने सब जगल बेच दिया। शबर फिर त्रिशकु हो गये। मगर जब यह पेड तरुण था तब सभी शबर उसके नीचे पूजा देकर ही शिकार पर निकलते थे। अब बुढ़ापे म भी वह कितना सुन्दर दिखता है। उजला शरीर और आकाश म तना हुआ सिर। पूणमासी की चाँदनी मे असर से पेड और चाँदनी जैसे एक हो रह हैं। चत, वैशाख मे छाँह देता हैं। तिराहे पर का यह अर्जुन पेड हमे ।

"कितन दिनो से यहाँ हमारा पहरा दे रहा है ?" पीताबर ने कहा, "वन के नाम पर बस वही बचा है और वन की सतानो के नाम पर हमारे कुछ घर। वह पेड चाहिए।

"सभी कुछ तो विशाल बाबू और राम बाबू का है।" केतु ने साँस भर कर कहा।

' जब घर नहीं बनाया था, "पीताबर ने कहा, "तो कितन दिन उसी पेड के नीचे रहा मैं। बाद म महतो लोगो ने घर बनाने की जमीन दी थी।'

दिगा ने कहा, "राम बाबू ने जब सथालो के घर फूक दिये थे तो क्या वे सब नहीं वहाँ रहे कुछ दिन ?"

धीरे धीरे उस पेड के बारे मे अनेक लोगों को अनेक घटनायें याद आने लगी। और वे मुट्ठी भर लोग, जिन्हें सरकार और समाज बार बार उजाडता है उनका उपयोग करता है, फिर जेल भिजवा देता है, सहसा समझ गये कि उस पेड की स्थिति भी उन्ही की तरह है।

"विशाल बाबू तो शहर जा रहे है। पैसे माँग लेता हू।'

"काटोगे पेड तुम ?"

"पाँच आदमी काफी है। सौ रुपये माँगे हम।'

"जेल जाना होगा।'

दिगा धूर्त और चालाक हँसी हँसता है। बहुत बार जेल जाकर, समाज के अन्य कामो मे बार-बार इस्तेमाल होकर शबर के चेहरे पर भी मुखौटा चढ गया है। एक मुख विशाल बाबू और दूसरे लोगो के लिए हैं। असली मुख छिपा रहता है। वह हरी मिर्च चबाते चबाते बोला, अगरेजो के अमल म पुरुलिया मे उनका

थाना फूकने के लिए और इस अमल म दूसरे की जमीन पर दखल करन के लिए, दूसरे का धान काटन के लिए, दूसरे की जान मारने के लिए, सरकारी जगल काटने के लिए बाबू लोगो का भरासा तो बस शबर ही हैं। अब पेड काटकर जेल कौन जायेगा ? थाई बात कुछ समझ म ?"

अ' से 'श' तक अक्षर सीख कर पडित और चाइवासा, मेदिनीपुर, और बाँकुडा के जेल जीवन मे अनुभवी दिगा शबर ने विशाल बाबू को माँ की तरह विश्वास दिलाया। "बाबू, तू निश्चित होकर जा और भोट की मीटिंग कर। पैसा दे जा। परसो आ कर देखना पेड गायब मिलेगा।"

' राम बाबू नाराज होगा।"

' देखा जायगा। ट्रक तो तुम्हें वही देगा।"

'ऊपर से खूब गजन तजन करेगा।'

"देखा जायेगा। '

एक झडे का दूसरे के साथ झगडा ऊपरी है भीतर तो वे दूध मिश्री हो रहे हैं। विशाल बाबू हो ! मूरख शबरा को बहुत सिखा दिया तुमने। वही, जिसे खुली शिक्षा कहते हैं।

विशाल महतो सन्तुष्ट होकर चला जाता है। दोनो ग्रामाचल के नेता पूण सख्य भाव से विदा होते हैं। अब जनसभाओ मे एक दूसरे को गाली गलौज करेंगे व। उनके अनुयायी भीतरी बात नही समझते। वे एक दूसरे के दल वालो को मारेंगे पीटेंगे। यह तो चलता ही है। अजुन के पेड को लेकर भी तलवारें खिच सक्ती हैं। पर गाव म राम के चमचे हैं ही कितन ? चारो ओर विशाल की तूती बोलती है।

शहर पहुँचते ही हर बाजार म सभा, मुख्य बाजार म सभा। शहर जाकर भी भाग दौड ही रहती है। मोपेड की हैड लाइट ठीक करानी है नयी गैसबत्ती खरीदनी है बहू के लिए एक गरम शाल और दवाइया खरीदनी हैं कितन ही काम हैं।

बहुत निश्चित होकर विशाल बानडीही लौटता है। हाय ! सडक नही बनी। कितनी परेशानी है। नेंसाई स पटको जाओ, एक नदी के बाद दूसरी पार करो, फिर बस पकडो। अब उत्तर पश्चिम दिशा म तेल से चिकने चैंडिल रॉक बिछी सडक पर ऊचे नीचे रास्ते पर चलो। चुनाव के आसार तो अच्छे ही दीख रहे है।

पर गाँव के पास आते-आते उसका सिर घूमने लगता है। आकाश म सिर उठाये तजस्वी अजुन वक्ष खडा सिर हिला रहा है। जस गाँव का पहरेदार हा। कभी लाख लाख पेड सेना की तरह उस भूमि की रखवाली करते थे। अब वह अकेला है। निश्चिन्ह हो गय साथियो की याद ने उमे अकेला और चौकन्ना कर दिया है। वह अपनी ताकत भर मानभूम की उस उपेक्षिता भूमि की पहरेदारी

कर रहा है।

"अजुन वृक्ष के पत्ते आदमी की जीभ की तरह हाते हैं।"

और सुनाई पड़ता है ढोल नगाड़ा ताशा, तुरही आदि का उन्मत्त समवेत स्वर। उत्तेजित विशाल गाँव म घुसता ह। पड का भर कर भीड़ उमड रही है। पड के तन म फूलमालाएँ लिपटी हुई हैं।

राम हालदार साइकिल पकडे खडा है।

"क्या बात है?"

"भद्राम (ग्राम) देवता बना दिया पड को।"

"किसने किस हरामी ने?"

"दिगा मवर को सपना आया था, तुमन भी स्पष्ट दिख हैं। पत्थर घेर कर पेड के चारो आर चबूतरा बनाने को कहा, पूजा चल रही है। सथाल, खेड़िया, तहिस, भूमिज, कितनी जातियाँ क लोग हैं।'

'ग्राम दवता।'

"हाँ लोग तो चले ही आ रहे हैं। मेला लग गया है। हम इनको बुद्धू समझत थे। इन्होंने तो हमें ही उल्लू बना दिया।"

विशाल महतो पराजय स्वीकार करके आगे बढ गया।

भीड! क्या भीड थी! केतु ढालक बजा कर नाच रहा था। घूम-घूम कर नाच रहा है। पता नहीं क्या विशाल को डर लगता है। खुद को कमजोर महसूस करता है। यह पड, य आदमी, सभी तो उसके परिचित हैं। खूब जाने पहचाने। पर आज य सब क्यों अजनबी लग रहे हैं?

भय, भयकर भय लग रहा है उसे।

(वर्तमान, 9-12 1984)